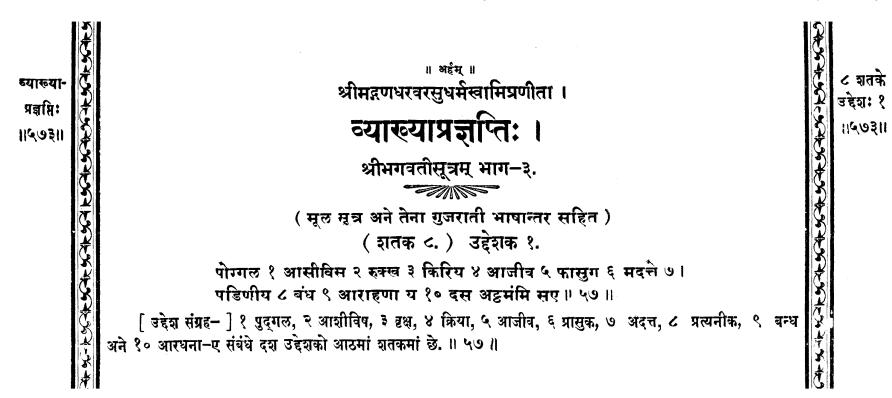
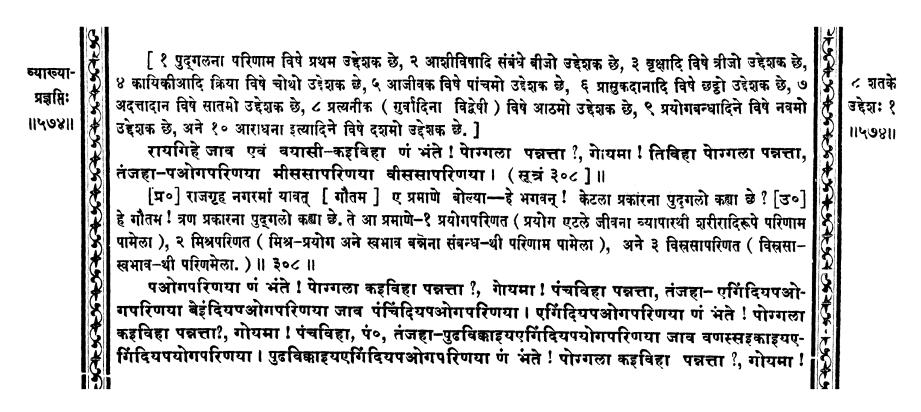


For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra





व्याख्या- प्रह्यतिः प्रह्यतिः ।(६७५॥	मणुस्स॰ देवपंचिदिय॰, नेरइयपार्चदियपओग॰ पुच्छा, गोयमा ! सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा-रयणप्पभापुढवि- नेरइयपयोगपरिणयावि जाव अहेसत्तमपुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणयावि, [प्र॰] हे भगवन् ! प्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे एकेन्द्रियप्रयोगपरिणत (एकेन्द्रिय जीवना व्यापारवडें परिणाम पामेला), वेइन्द्रियप्रयोगपरिणत, यावत् पंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो. [प्र॰] हे भगवन् ! एकेन्द्रिय जीवना व्यापारवडें परिणाम पामेला), वेइन्द्रियप्रयोगपरिणत, यावत् पंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो. [प्र॰] हे भगवन् ! एकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे-पृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो, यावत् वनस्पतिकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो. [प्र॰] हे भगवन् ! प्रथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारना कह्या छे, ते आ	* 1199911 ** ** **	2
100 - 100 - 100 - 100 - 100 - 100 - 100 - 100 - 100 - 100 - 100 - 100 - 100 - 100 - 100 - 100 - 100 - 100 - 100	प्रमाणे–सक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो, अने बादरपृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो, ए प्रमाणे अप्कायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो (वे प्रकारे) जाणवा, ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिकप्रयोगपरिणत पुद्गलो पण वे प्रकारना जाणवा. [प्र०] हे भगवन् ! बेइन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना छे ? [उ०] हे गौतम ! ते अनेक प्रकारना	1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1	

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५७६॥	of the the state of the states	कह्या छे. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो पण जाणवा. [प०] हे भगवन ! पंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! ते चार प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे-नारकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत, तियचपंचे- न्द्रियप्रयोगपरिणत, ए प्रमाणे मनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने देवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत. [प०] हे भगवन ! नैरयिकपंचेन्द्रिय- प्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो सात प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे-रलप्रभाषृथिवीनैरयिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत, अने यावत् नीचे सप्तमनरकष्टथिवीनैरयिकप्रयोगपरिणत पुद्गलो सात प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे-रलप्रभाषृथिवीनैरयिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत, अने यावत् नीचे सप्तमनरकष्टथिवीनैरयिकप्रयोगपरिणत पुद्गलो. तिरिक्खजाणियपंचिंदियपञ्जोगपरिणयाणं पुच्छा,गेायमा ! तिविहा पन्नत्ता, तंजहा-जलचरपंचिंदियतिरि- क्खजाणिय० थत्वचरतिरिक्खजाणियपंचिंदिय०,खहचरतिरिक्खपंचिंदिय०,जलयरतिरिक्खजाणियपओगपुच्छा, गेायमा!दुविहा पन्नत्ता,तंजहा-संमुच्छिमजलयर० गब्भवक्वंतियजलयर०,थलयरतिरिक्खजेणियपओगपरणता पुद्दाहा पन्नत्ता, तंजहा-चउप्पयथलयर० परिसप्पथलयर०, चडप्पयथलयर० पुच्छा, गेायमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा- संमुच्छिमचउप्पयथलयर० गब्भवक्वंतियचउप्पथलयर०, एवं एएणं अभिलावेणं परिसप्पा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-उरपरिसप्पा य भुयपरिसप्पा य, उरपरिसप्पा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-संमुच्छिमा य गब्भवक्वंतिया य, एवं खुयपरिसप्पावि, एवं खहयरावि। [प०] हे भगवन ! तिर्थचयोतिवर्धचेत्वियप्रयोगपरिणत प्रदालो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! तिर्थचयोगि-	30430 500 500 500 500 500 500 500 500 500 5	८ शतके डद्देशः १ ॥५७६॥	
		य, एव अयपारसप्पाव, एव खहयरावि । [म॰] हे भगवन् ! तिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कद्या छे ? [उ॰] हे गौतम ! तिर्यंचयोनि- कपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो त्रण प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—जलचरतिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत, खलचरति-	1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-1-		

	र् युँ यँचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने खेचरतिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रिप्रयोगपरिणत पुद्गलो. [प्र॰] हे भगवन्! जलचरतिर्यंचयोनिक-	<i>¥</i>
ड्याग्ड्या-		र् २ व्यतके
प्रज्ञप्तिः	े वे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे-संमुर्छिमजलचरतिर्यचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने गर्भजजलचरतिर्यंचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत.	🔆 उद्देशः १
1149911		1160911
	कपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत धुदुगलो वे प्रकारना कढा छे; ते आ प्रमाणे-चतुष्पदस्थलचरपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने परिसर्पस्थलचरति-	
	र्थं यंचपंचेन्द्रियप्रथोगपरिणत. [प्र०] हे भगवन् ! चतुष्पदस्थलचरतिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या	
	रे छे ? [उ०] हे गौतम ! चतुप्पदस्थलचरतिर्यचयोपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुदुगलो वे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे-संमूछिमच-	Č.
	🖌 तुष्पदस्थलचरतिर्थंचपंचेन्द्रियग्रयोगपरिणत अने गर्भजचतुष्पदस्थलचरतिर्यचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे ए अभिलाप (पाठ)	¥
	🔨 वडे परिसर्पो वे प्रकारना कहा छे-उरपरिसर्प अने सजपरिसर्पो. उरपरिसर्पो वे प्रकारना कह्या छे- संमूर्छिम अने गर्भज. ए प्रमाणे	S.
	🕻 सुजगरिसपों अने खेवरो (पक्षीओ) पण वे प्रकारना कह्या छे.	Q.
	🖌 मणुस्सर्पचिंदियपयोगपुच्छा, गे।यमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-मंग्रुच्छिममणुस्स० गव्भवर्क्षतियमणुस्स० ।	2
1	े देवपंचिंदियपयेागपुच्छा,गेग्यमा! चउव्विहा पन्नत्ता,तंजहा-भवणवासिदेवपं।चिंदियपयेाग० एवं जाव वेमाणिया ।	5
s	🖔 भवणवासिदेवपंचिंदियपच्छा. गायमा ! दमबिहा पन्नता. तंजहा-असरकमारा जाव थणियकमारा प्रवं एएणं	
1	्रे अभिलावेणं अट्टविहा वाणमंतरा पिसाया जावगंधव्वा,जाेइसिया पचविहा पन्नत्ता,तंजहा-चंदविमाणजाेतिसिय	¥.
		10 AL

∙याख्या• प्रज्ञक्षिः ॥५७८॥	कष्पीवगा दुवालस बिहा पण्णत्ता, तंजहा-सेाहम्मकप्पोवग० जाव अच्चुयकप्पोवगवेमाणिया। कप्पार्तात०, गेा०! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-गेवेज्जकष्पातीतवे० अणुत्तरेाववाइयकप्पातीतवे०, गेवेज्जकप्पातीतगा नवविहा पण्णत्ता, तंजहा-हेट्टिम २ गेवेज्जगकप्पातीतगवे० जाव उवरिम२गेविज्जगकप्पातीय०। [प०] हे भगवन् ! मनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गले। केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! मनुष्यपंचेन्द्रियप्र योगपरिणत पुद्गले। वे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—संमूर्छिममनुष्यप्रयोगपरिणत अने गर्भजमनुष्यपंचन्द्रियप्रयोगपरिणत. [प०] हे भगवन् ! मनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गले। केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! मनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत. [प०] हे भगवन् ! देवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गले। केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! देवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत (प्रदेगले। चार प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—संमूर्छिममनुष्यप्रयोगपरिणत, अने गर्भजमनुष्यपंचन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गले। चार प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—भवनवासिदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत, अने यावत् वैमानिकदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिग पत पुद्गलो. [प०] हे भगवन् ! भवनवासिदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गले। केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! द्व प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—अवनवासिदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत, अने यावत् वैमानिकदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिग प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—अवरकुमारप्रयोगपरिणत, यावत् स्वनितकुमारप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे ए अभिलापवर्ड आठ प्रकारना वानव्यंतरो, पिशाचो यावत् गान्ध्र्या कहेवा ले प्रकारना कह्या छेः ते आ प्रमाणे चन्द्रविमानज्योग्	भिक्ति द शतवे उद्देशः अपिक्ति उद्देशः ॥५७८	१
	तिषिकदेव, यावत ताराविमानज्योतिषिकदेव. वैमानिक देवो बे प्रकारना कह्या छेः ते आ प्रमाणे—कल्पोपपत्रकवैमानिकदेव अने कल्पातीतवैमानिक देव. कल्पोपपत्रकवैमानिक बार प्रकारना कह्या छेः सौधर्मकल्पोपत्रक,यावत् अच्युतकल्पोपत्रक. कल्पातीतवैमानिको हे गौतम ! बे प्रकारे कह्या छे; ते आ प्रमाणे–ग्रैवेयककल्पातीतवैमानिक देव अने अनुत्तरौपपातिककल्पातीत वैमानिक देव. ग्रैवेय-	ないない	

प्रइप्तिः अणुत्तरेविवाइयकप्पातीतगवेमाणियदेवपंचिंदियपयेगगपरिणया णं अंते ! पेग्गिला कड्विहा पण्णत्ता ?,	शतके शः १ ७९॥
---	---------------------

	🖌 गपरिणत (दं. १.) [प्र०] हे भगवन् ! सक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे 🧩	
रुयाख्या-	मी गोतम ! वे प्रकारता कहा के ते आ प्रमाणे-पर्याप्तसक्षमपथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तसक्षमप्रथिवीकायिकएके-	८ शतके
प्रज्ञप्तिः	了 न्द्रियप्रयोगपरिणत. आ स्थले (बीजी वाचनामां) कोइ अपर्यांप्तने प्रथम कहे छे. अने पछी पर्याप्तने कहे छे. ए प्रमाणे बादरप्रथिवी- 🔇 उ	उद्देशः १
५८०	कायिकएकेन्द्रिय यावत वनस्पतिकायिक कहेवा. ते बधा बबे प्रकारे छे-सक्ष्म अने बादर. तथा पर्याप्त अने अपयोप्त. मि० ई 🌾 ।	1142011
	× भगवर ! वेइन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे−	
	💃 पर्याप्तवेइन्द्रियप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तवेइन्द्रियप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे त्रीइन्द्रियो अने चउरिन्द्रियो पण जाणवा. [म०] हे 💃 🔆 भगवन् ! रत्नप्रभावृथिवीनैरयिकप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारना कह्या छे; 🧩	
	¥ भगवन् ! रत्नप्रभाग्रथिवीनैरयिकप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कढा छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारना कढा छे; ¥ र्ने आ प्रमाणे–पर्याप्तरत्नप्रभाष्रथिवीनैरयिकप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तरत्नप्रभाष्रथिवीनैरयियप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे यावत् नीचे र्भू	
	र्दे सातमी नरकपृथ्वी सधी जाणवुं.	
	में संमुच्छिमजल्यरतिरिक्खपुच्छा, गायमा! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-पज्जत्तग० अपज्जत्तग०, एवं गब्भवर्कति-	
	🏌 यावि, संमुच्छिमचउप्पयथलयरा, एवं चेव गब्भवर्क्षतिया य, एवं जाव संमुच्छिमखहयरगब्भवर्क्षतिया य एक्षेक्षे [
	्रि पंजनगा य अपजनगा य भाषिगब्बा। समाच्छममणुस्मपाचादयपुच्छा,गायमा! एगावहा पन्नता, अपजनगा 📳	
	ूर पंजत्तगा य अपजत्तगा य भाषिगव्वा। समुाच्छममणुस्सपाचादयपुच्छा,गायमा! एगावहा पन्नत्ता, अपजत्तगा भ चेव। गब्भवक्षंतियमणुस्सपंचिंदियपुच्छा, गोयमा! दुविहा पन्नत्ता,तंजहा-पजत्तगगब्भक्षंतियावि अपजत्त- र् गगब्भवक्कतियावि। अखुरकुमारभवणवासिदेवाणं पुच्छा, गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तंजहापज्जत्तगअसुर०	
	। गग्ङभवद्भातयावि । असुरकुमारभवणवासिद्वाणं पुच्छा, गायमाः दुविहां पन्नता, तजहा—-पज्जतगअसुर०। №	

^{ड्} याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५८१॥	ことろようなならないない	वाणं पुच्छा, गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-पज्जत्तगअसुरकुमार०अपज्जत्तगअसुर०, एवं जाव थणियकुमारा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य, एवं एएणं अभिलावेणं दुयएणं भेदेणं पिसाया य जाव गंधव्वा, चंदा जाव तारा- विमाणा०, सोहम्मकप्पोवगा जाव अच्चुओ, हिट्टिमहिट्टिमगेविज्जगकप्पातीय जाव उवरिमउवरिमगेविज्ज०, बिजयअणुत्तरो० जाव अपराजिय० [प्र०] हे भगवन् ! संमूर्श्विमजलवरतिर्यंचयोनिकप्रयोगपरिणत पुद्रगले केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! बे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे-पर्याप्तसंमूर्श्विमजलवरप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे गर्भज जलवरो पण जाणवा. ए प्रमाणे संमूर्श्विम तथा गर्भज चतुष्पदस्थलचर जीवो जाणवा, ए प्रमाणे यावत् संमूर्श्विम तथा गर्भज खेचरो पण जाणवा; ते दरेकना पर्याप्त अने अपर्याप्त वे मेदो कहेवा. [प्र०] हे भगवन् ! संमूर्श्विममनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गले केटला प्रका रना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! ते एक प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे-अपर्याप्तसंमूर्श्विममनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत. [प्र०] हे भगवन् ! गर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गले केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम. व्रा छे हे भगवन् ! गर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गले केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम हे ते आ	x ~ x ~ x ~ x	८ शतके उद्देशः १ ॥५८१॥
	1- ちょうちょう	रना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! ते एक प्रकारना कह्या छ, ते आ प्रमाण-अपयात्तसमूछिममनुष्यपचान्द्रयत्रयागपारणत. [मण] हे भगवन् ! गर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुर्दगलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रभाणे—पर्याप्तगर्भजप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तगर्भजप्रयोगपरिणत. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारभवनवासिदेवप्रयोगपरिणत पुर्दगलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे-पर्याप्त असुरकुमारभवनवासिदेवप्रयोगपरिणत पुर्दगलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे-पर्याप्तअसुरकुमारप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तअसुरकुमारप्रयोगपरिणत; ए प्रमाणे यावत् स्तनितक्रमारो पर्याप्त अने अपर्याप्त जाणवा. ए प्रमाणे ए अभिलापवडे वे भेदो पिशाचो यावत् गांधवोना जाणवा. तेमज चन्द्रो यावत् ताराविमानो. सौधर्मकल्पोपपन्नक, यावत् अच्युत कल्पोपपन्नक,	そうちょうちょう	

⁵याख्या- प्रज्ञक्षिः ॥५८२॥	x to the the set of the set of the set of the set of	तथा नीचे नीचेनी श्रेवेयक कश्यातीत यावत् उपर उपरना श्रेवेयकयव्यातीतदेवप्रयोगपरिणत, विजयअनुत्तरौपपातिक, सव्वद्टसिद्धकप्पातीयपुच्छा, गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-पज्जत्तसव्वद्टसिद्धअणुत्तरो० अपज्ज- त्तगसव्वद्ट जाव परिणयावि, २ दंडगा ॥ जे अपज्जत्ता सुहुमपुढवीकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ते ओराल्यितेयाकम्मगसरीरप्पयोगपरिणया, जे पज्जत्ता सुहुमप्र वीकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ते ओराल्यितेयाकम्मगसरीरप्पयोगपरिणया, जे पज्जत्ता सुहुम्भ० जाव परिणया ते ओराल्यितेयाकम्म- गसरीरप्पयोगपरिणया, एवं जाव चउरिंदिया पज्जत्ता, नवरं जे पज्जत्तबादरवाउकाइयएगिंदियपयोग- परिणया ते ओराल्यिवेउव्वियतेयाकम्मसरीर जाव परिणता, सेसं तं चेव, जे अपज्जत्तरयणप्पभापु- ढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया ते वेउव्वियतेयाकम्मसरीरप्त्पयोगपरिणया, एवं पज्जत्तरयणप्पभापु- ढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया ते वेउव्वियतेयाकम्मसरीरप्त्पयोगपरिणया, एवं पज्जत्त्तयावि, एवं जाव अहे- सत्तमा। जे अपज्जत्त्तासम्राल्चमजल्यरजावपरिणया ते ओराल्यितेयाकम्मासरीर जाव परिणया एवं पज्ज- त्तगावि, गब्भवक्कंतिया अपज्जत्तया एवं चेव, पज्जत्त्याणं एवं चेव, नवरं सरीरगाणि चत्तारि जहा बादरवाउ- काइयाणं पज्जत्तगाणं, एवं जहा जलचरेसु चत्तारि आलावगा भणिया एवं चउप्पयउरपरिसप्पसुयपरिसप्प- खहयरेसुवि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा। जे संमुच्छिममणुस्सपंचिंदियपयोगपरिणया ते ओराल्यिते याकम्मासरीर जाव परिणया, एवं गब्दरकुमारभवणवासि जहा नेरइया तहेव, एवं पज्जत्तगावि, एवं दुय- भू	८ शतके उद्देशः १ ॥५८२॥
	X	पंच भाणियव्वाणि, जे अपज्रत्ता असुरकुमारभवणवासि जहा नेरहया तहेव, एवं पज्रत्तगावि, एवं दुय-	

ण्याण्या प्रज्ञग्निः हेट्रिम २ गेवेज्जजावडवरिम २ गेवेज्ज०, विजयअणुत्तरोववाइए जाव सच्वट्टसिद्धअणु०, एककेणं दुग्रओ भेदेा भाणियव्वेा जाव जे पज्जत्ता सव्वट्टसिद्धअणुत्तरोववाइया जाव परिणया ते वेउव्वियतेयाकम्मासरी- रपयोगपरिणया, दडगा ३ ॥ [प्र०] हे भगवन ! सर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिककल्पातीतदेवप्रयोगपरिणत पुद्गले केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! ते वे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे-पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिक; यावत् अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धप्रयोगपरिणत. ए [प्रमाणे वे दंडको जाणवा.] जे पुद्गलो अपर्याप्तसद्धभप्रधिवीकायएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते औदारिक, तैजग्न अने कार्मणग्नरीरप्रयोगप- रिणत छे; अने जे पुद्गलो पर्याप्तसद्धभप्रधिवीकायएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते औदारिक, तैजग्न अने कार्मणग्नरीरप्रयोगप- रिणत छे; अने जे पुद्गलो पर्याप्तसद्धभप्रधिवीकायएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते औदारिक, तैजग्न अने कार्मणग्नरीरप्रयोगपरिणत छे. ए प्रमाणे यावत् चउरिन्द्रिय पर्याप्ता जाणवा, परन्तु विशेष ए छे के जे पुद्रालो पर्याप्तवत्तवायुकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते औदारिक, वैक्रिय, तैजस अने कार्मणग्नरीरपयोगपरिणत छे, बाकीच्चं सर्व पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. जे पुद्रगलो अपर्याप्तत्वप्रमा- पृथिवीनारकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वैक्रिय, तैजस अने कार्मणग्ररीरप्रयोगपरिणत छे. ए प्रमाणे पर्वाप्तनारको पण जाणवा. ए प्रमाणे यावत् सप्तम पृथिवी संघी जाणवुं. जे पुद्रालो अपर्याप्तसंमूछिंमजलचरप्रयोगपरिणत छे ते औदारिक, तजस, अने कार्मण शरीर यावत् परिणत छे. ए प्रमाणे पर्याप्त [संमूर्छिम जलचर] पण जाणवा. गर्भजअपर्याप्त अने गर्भजर्थ्यात्र पण एमज जाणवा. परन्तु विशेष ए छे के पर्याप्तवादरवायुकायिकनी पेठे तेओने चार शरीर होय छे. ए प्रमाणे जेम जञ्र्यरोर्गा आल्यक कहेला	र उद्देशः १ १९५८३॥ १९५८३॥
---	---------------------------------

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५८४॥	छे, ते औदारिक, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे; ए प्रमाणे गर्भज अपर्याप्ता जाणवा, पर्याप्ता पण एमज जाणवा. परन्तु विशेष ए के तेओने पांच शरीर कहेवां. जेम नैरयिको संबन्धे कधुं, तेम अपर्याप्त असुंरकुमारभवनवासि देवो संबंन्धे पण जाणवुं, तेम पर्याप्ता संबन्धे पण जाणवुं ए प्रकारे ए बे भेदवडे यावत् स्तनितकुमारो पण जाणवा. ए प्रमाणे पिशाचो अने यावत् गधांवों जाणवा. चंद्रो यावत् तारा विमाने, सौधर्मकल्प यावत् अच्युतकल्प, नीचेनी त्रिकमां नीचेना प्रैवेयक यावत् उपरनी त्रिकमां उपरना प्रैवेयक अने विजयअनुत्तरौपपातिक यावत् सर्वार्थसिद्ध. अनुत्तरौपपातिकना प्रत्येके वबे भेद कहेवा; यावत् जे पुढ्गाले अपर्यातसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिक यावत् [पर्याप्त सर्वार्थसिद्ध. अनुत्तरौपपातिकना प्रत्येके वबे भेद कहेवा; यावत् जे पुढ्गाले अपर्यातसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिक यावत् [पर्याप्त सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरौपपातिक] प्रयोगपरिणत छे, ते वैक्रिय, तैजस अने कार्मण- श्ररीरप्रयोगपरिणत छे. ए प्रमाणे त्रण दंडक कह्या. जे अपज्जत्ता स्टुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणता ते फासिंदियपयोगपरिणया, जे पज्जत्ता सुहुमपुढविकाइया एवं चेव, जे अपज्जत्ता बादरपुढविकाइया एवं चेव, एवं पज्जत्तगावि, एवं चउक्कएणं भेदेणं जाव वणस्सइकाइया, जे अपज्जत्ता बेइंदियपयोगपरिणया ते जिन्हिंभदियफा- सिंदियपयोगपरिणया, जे पज्जत्ता बेइंदिया एवं चेव, एवं जाव चउरिंदिया, नवरं एक्केकं इंदियं वड्ढेयच्वं जाव अपज्जत्ता रयणपपभापुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया ते सोइंदियचर्किखदियघार्णिंदियज्ञिल्भ-	र अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ अ
the second second	जाव अपजत्ता रयणप्पभा9ढविनेरइयपंचिंदियपयागपरिणया ते सोइंदियचर्किंखदियघाणिंदियजिब्भि- दियफासिंदियपयोगपरिणया एवं पजत्तगावि, एवं सब्वे भाणियब्वा, तिरिक्खजोणियमणुस्सदेवा जाव जे	

वनस्पतिकायिकोना जाणवा. जे धुद्गली अपर्याप्तवेइन्द्रियप्रयोगपरिएत छे ते जिह्लाइन्द्रिय अने स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिएत छे. जे पर्याप्तवेइन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते ए प्रमाणे जाणवा. ए प्रकारे यावत् चउरिन्द्रिय जीवो जाणवा; परन्तु एक एक इन्द्रिय वधारवी [अथात् त्रीइन्द्रियजीवोने स्पर्श्वेन्द्रिय, रसेन्द्रिय अने घाणेन्द्रिय कहेवी, अने चउरिन्द्रियजीवोने एक चक्षुरिन्द्रिय वधारवी.] यावत् जे पुद्गलो अपर्याप्तरत्नप्रभाष्थिवीनारकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते श्रोत्रेन्द्रियजीवोने एक चक्षुरिन्द्रिय वधारवी.] यावत् जे पुद्गलो अपर्याप्तरत्नप्रभाष्थिवीनारकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घाणेन्द्रिय, जिह्लेन्द्रिय अने स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे. ए प्रमाणे पर्याप्तनारकप्रयोगपरिणत पुद्गलो पण जाणवा. सर्व तिर्यंचयोनिको, मनुष्यो अने देवो पण ए प्रकारे कहेवा. यावत् जे पुद्गले पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवप्रयोगपरिणत छे ते श्रोत्रेन्द्रिय चक्षुरिन्द्रिय इत्यादि यावत् परिणत छे. [दं. ४] जे अपज्जत्ता सुहुमपुढचिकाइयएगिंदियओरालियतेयकम्मासरीरप्पयोगपरिणया तेफासिदियपयोगपरिणया देवो पज्जत्ता सुहुम० एवं चेव बादर०, अपज्जत्ता एवं चेव,एवं पज्जत्तगाबि,एवं एएणं अभिलावेणं जस्स जइंदियाणि	本 く 記 市 市 で 宅 記 : ? : ! い ら と 記 市 市 : ? : ? : ? : ! : ? : ? : ? : ? : ? : ? : ? : ?
स्रीराणि य ताणि भाणियव्वाणि, जाव जे य पज्जत्ता सन्वद्वसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवर्णचिंदियवेउव्वियतेया	1 3

व्याख्या- प्रज्ञक्षिः	कम्मासरीरपयोगपरिणया ते साइंदियचर्किंखदिय जाव फासिंदियपयोगपरिणया ५ ॥ जे पुर्गलो अपर्याप्तसक्षमपृथिवीकायिकएकेन्द्रिय औदारिक, तैजस अने कार्मणश्ररीरप्रयोगपरिणत् छे ते स्पर्श्वेन्द्रियप्रयोगपरिणत्	र्भ ८ भवर्ष ए उद्देशः	
1	है छे. जे पुर्रगलो पर्याप्तसङ्मपृथिवीकायिकप्रयोगपरिणत छे ते ए प्रमाणे [स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत] छे. अपर्याप्तबादरपृथिवीकायिक	K	
૬૮૬૧	🛧 अने पर्याप्तबादरपृथिवीकायिक पण ए प्रमाणे जाणवा. ए प्रकारे ए अभिलाप (पाठ) वडे जेने जेटली इन्द्रियो अने शरीरो होय		11
	🕺 तेने तेटलां कहेवां. यावत् जे पुद्गलो पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवपश्चेन्द्रिय वैक्रिय, तैजस अने कार्मणञरीरप्रयोगपरिणत	3	
	🛠 छे ते श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरणत छे. [दं ५]	<u>S</u>	
	के अपजत्ता सुहुमपुढविकाइयएगिदियपयोगपरिणया ते वन्नओ कालवन्नपरिणयावि नील०लोहिय०हालिद्द०	¥	
1	👔 सुक्तिछ॰गंधओ सुब्भिगंधपरिणयावि दुब्भिगंधपरिणयावि, रसओ तित्तरसपरिणयावि कडुयरसपरिणयावि	S	
	र कसायरसप॰ अंबिलरसप॰ महुररसप॰,फासओ कक्खडफासपरि॰ जाव लुक्खफासपरि॰,संठाणओ परिमंडल-	Š	
	🥇 संठाणपरिणयावि वद्द॰ तंस॰ चउरंस॰ आयतसंठाणपरिणयावि,जे पज्जचा सुहुमपुढवि॰ एवं चेव,एवं जहाणुपु-		
	🎾 व्वीए नेयव्वं जाव जे पज्जत्ता सब्बइसिद्धअणुत्तरोदवाइय जाव परिणयावि ते वन्नओ कालवन्नपरिणयावि जाव	X	
	🕺 आययसठाणपरिणयावि ६ ॥	S.	
	त्र आययसठाणपरिणयावि ६ ॥ जे पुद्गलो अपर्याप्तसक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी काळावर्णे, नीलवर्णे, रक्तवर्णे,पीतवर्णे अने शुक्लवर्णे पण परिणत छे; गन्धथी सुरभिगन्ध अने दुरभिगन्धपणे पण परिणत छे. रसथी तिक्तरस, कदुकरस, कषायरस, अम्लरस अने मधु-	$\overline{\mathbf{x}}$	
	भे पण परिणत छे; गन्धथी सुरभिगन्ध अने दुरभिगन्धपणे पण परिणत छे. रसथी तिक्तरस, कटुकरस, कषायरस, अम्लरस अने मधु-	8	
		F	

प्रज्ञप्तिः ॥५८७॥	*************	जे पुद्गलो अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिक, तैजस अने कार्मणश्ररीरप्रयोगपरिणत छे, ते वर्णथी कालावर्णे पण परिणत छे, यावत् आयतसंख्यानरूपे पण परिणत छे. ए प्रमाणे पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकप्रयोगपरिणत पुद्गलो पण जाणवा.	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	८ श्रतके उद्देशः १ ॥५८७॥
	* *		1	.

च्याख्या- प्रज्ञक्षिः ॥५८८॥	संठाणपरिणयावि, जे पज्जत्ता सुहुमपुढवि एवं चेव, एवं जहाणुपुब्वीए जस्स जह इंदियाणि तस्स तत्तियाणि भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्ता सव्वद्वसिद्धअणुत्तरजावदेवपंचिंदियसोइंदिय जाव फासिंदियपयोगपरिणयावि ते वन्नओ कालवन्नपरिणयावि जाव आययसंठाणपरिणयावि ८ ॥ जे पुद्रगलो अपर्याप्तदक्षमपृथिवीकायिकएकेन्द्रियस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे परिणत छे, यावत् आयतसं- स्थानरूपे पण परिणत छे. जे पुद्रगलो पर्याप्तदक्ष्मपृथिवीकायिक एकेन्द्रियस्पर्शेन्द्र्यप्रयोगपरिणत छे ते पण ए प्रमाणे जाणवा. ए प्रकारे सर्व अनुक्रमे जाणवुं, जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटली कहेवी; यावत् जे पुद्रगलो पर्याप्तसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेव- पंचेन्द्रिय आंत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे परिणत छे, यावत् आयतसं- एंचेन्द्रिय आंत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे परिणत छे, यावत् आयतसंस्थानपणे परिणत छे [दं ८] जे अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइयएर्गिदियओरालियतेयाकम्माफासिंदियपयोगपरिणया ते वन्नओ कालव- नपरिणयावि जाव आयतसंठायप्प॰, जे पज्जत्ता सुहुमपुढवि॰ एवं चेव, एवं जहाणुपुठ्वीए जस्स जह सरीराणि इंदियाणि य तस्स तह भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्ता सन्वद्वसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदियवेउन्वि- यतेयाकम्मा सोइंदिय जाव फार्सिदियपयोगपरि॰ ते वन्नओ कालवन्नपरि॰ जाव आययसंठाणपरिणयावि, एवं एए नव दंडगा ९॥ (सूत्र ३०९)॥ जे प्रदालो अपर्याप्रमक्ष्मपश्चिकायिकप्रकेन्दिय् औदारिक, तेज्म अने कार्भण, अने स्पर्शेन्द्र्यप्र्योगपरिणत्त छे ते वर्णशी	८ शतके उद्देशः १ ॥५८८॥
	र्भ एवं एए नव दंडगा ९ ॥ (सूत्र ३०९) ॥ जे पुर्रगलो अपर्याप्तसूक्ष्मप्रथिवीकायिकएकेन्द्रिय औदारिक, तैजस अने कार्मण, अने स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी स्वालावर्णे पण परिणत छे, यावत् आयतसंस्थानपणे पण परिणत छे. जे पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिक-[एकेन्द्रिय औदारिक, तैजस अने	

54-34- 34-34 F 34-34-36-34-36-3	कार्मण तथा स्पर्ग्नेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते पण] ए प्रमाणे जाणवा. ए प्रकारे अनुकमे सर्व जाणवुं. जेने जेटलां ग्ररीर अने इन्द्रियो होय तेने तेटलां कहेवां, यावत् जे पुद्गलो पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवपंचेन्द्रिय-वैक्रिय, तैजस अने कार्मण तथा श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्धेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे अने यावत् आयतसंस्थानपणे पण परिणत छे. ए प्रमाणे ए नव दंडको कह्या. ॥ ३०९ ॥ मीसापरिणया णां भंते ! पोग्गला कतिथिहा पण्णत्ता ?, गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा-एर्गिदिय- मीसापरिणया जाव पंचिंदियमीसापरिणया, एर्गिदियमीसापरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता?, गोयमा ! एवं जहा पओगपरिणणहिं नव दंडगा भणिया एवं मीसापरिणएहिवि नव दंडगा भाणियव्वा, तहेव सच्वं निरवसेसं, नवरं अभिलावो मीसापरिणया भाणियव्व, सेसं तं चेव, जाव जे पज्जत्ता सव्वद्टसिद्धअणुत्त- र जाव आययसंटाणगरिणपावि ॥ (स्त्रं ३१०) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! मिश्रपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे एकेन्द्रियमिश्रपरिणत अने यावत् पंचेन्द्रियमिश्रपरिणत. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियमिश्रपरिणतपुद्र्गलो केटला प्रकारना छ ?	२ शतके उद्देशः १ २ २ शतके उद्देशः १ १।५८९।। २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २	•
- 2964 - 2	एकान्द्रयामश्रपरिणत अने यावत् पंचान्द्रयामश्रपरिणत. [घठ] ह मगवपुर एकान्द्रयामश्रपरिणतपुर्गला कडल श्रमात्सा छुट [उ०] हे गौतम ! जेम प्रयोगपरिणत पुद्गलो संबन्धे नव दंडक कह्या तेम मिश्रपरिणतपुद्गलो संबन्धे पण नव दंडक कहेवा, तेम बाकीन्तुं सब कहेवुं, परन्तु विशेष ए छे के [प्रयोग परिणतने स्थाने] 'मिश्रपरिणत' एवो पाठ कहेवो. बाकी बधुं ते प्रमाणे जाणवुं. यावत् जे पुद्गलो पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकप्रयोगपरिणत छे ते आयतसंस्थानरूपे पण परिणत छे. ॥ ३१० ॥		

च्याख्या- प्रज्ञातिः ॥५९०॥	चीससापरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पन्नत्ता ?, गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता. तंजहा-वन्नपरिणया गंधपरिणया रसपरिणया कासपरिणया संठाणपरिणया, जे वन्नपरिणया ते पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा-काल्य न्नपरिणया जाव सुक्तिस्तवन्नपरिणया, जे गंधपरिणया ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-सुब्भिगंधपरिणयावि दुब्भिगंधपरिणयावि, एवं जहा पन्नवणापदे तहेव निरवसेसं जाव जे संठाणओ आयतसंठाणपरिणया ति वन्नओ काल्वन्नपरिणयावि जाव त्तुक्खफासपरिणयावि ॥ (सूत्रं ३११) ॥ [प्र॰] हे नगवन् ! वीन्नसापरिणत (खभावथी परिणामने प्राप्त थलेत) पुर्वगले केटला प्रकारना कहा छे ? [उ॰] हे गौतम ! पांच प्रकारना कहा छे; ते आ प्रमाणे-वर्णपरिणत, गंधपरिणत, रसपरिणत, स्पर्भपरिणत अने संख्यानपरिणत. जे वर्णपरिणत पुर्वगले छे ते पांच प्रकारना कहा छे; ते आ प्रमाणे-कालावर्णरूपे परिणत, रावत् शुक्लवर्णरूपे परणत. जे गंधपरिणत छे ते वे प्रकारना छे; ते आ प्रमाणे-सुगंधपरिणत अने दुर्गधपरिणत. प प्रमाणे जेम प्रज्ञापना पदमां कर्खु छे तेम सर्व जाणवुं. यावत् जे (पुर्वगले) संख्या- नयी आयतसंख्यानरूपे परिणत छे ते वर्णथी काळावर्णरूपे पण परिणत छे, यावत् रुख्नर्थरूप परणत हे. ॥ ३११ ॥ एगे भंते ! दब्वे किं पयोगपरिणए मीसापरिणए वीससापरिणए?, गोयमा ! पयोगपरिणए वा मीसाप- रिणए वा बीससापरिणए वा । जइ पयोगपरिणए किं मणप्ययोगपरिणए वा कायव्यओगपरिणए वा, जइ मणप्पओग- रिणए ?, गोयमा ! मणप्पयोगपरिणए वा वहप्पयोगपरिणए वा कायव्यओगपरिणए वा, जइ मणप्पओग-	क्रिके प्रकार के कि कि कि ने कि में कि में कि में कि में कि कि कि कि कि कि कि कि कि में कि म	: १
	ारणए !, गायमा ! मणप्पयागपारणए वा वर्रपयागपारणए वा कायपजागगरण या, जर पगपजाग परिणए किं सचमणप्पओगपरिणए मोसमणप्पयोग० सचामोसमणप्पयो० असचामोसमणप्पयो० ?, गोयमा !		

तो छुं मनःप्रयोगपरिणत होय, वाक्यप्रयोगपरिणत होय, के कायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते मनःप्रयोगपरिणत होय, वाक्यप्रयोगपरिणत होय के कायप्रयोगपरिणत होय. [प्र॰] हे भगवन् ! जो ते एकद्रव्य मनःप्रयोगपरिणत होय तो छुं सत्यमनः प्रयोगपरिणत होय, मृपामनःप्रयोगपरिणत होय, सत्यमृपामनःप्रयोगपरिणत होय के असत्यामृपामनःप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, मृषामनःप्रयोगपरिणत होय, सत्यमृपामनःप्रयोगपरिणत होय के असत्यामृपामनःप्रयोग गपरिणत होय. [प्र॰] हे भगवन् ! जो ते एकद्रव्य सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय तो छुं आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, अनारंभ- सत्यमनः प्रयोगपरिणत होय, संरंभसत्यमनःश्रयोगपरिणत होय, असंरंथसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, समारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत पत होय के असमारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, यावत् असमारंभ- सत्यमनःप्रयोगपरिणत पण होयं.	च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५९१॥	प्पओगप० किं आरंभसचमणप्पयो० अणारंभसचमणप्पयोगपरि० सारंभसचमणप्पयोग० असारंभसचमण० समारंभसचमणप्पयोगपरि० असमारंभसचमणप्पयोगपरिणए ?, गोयमा ! आरंभसचमणप्पओगपरिणए वा जाव असमारंभसचमणप्पयोगपरिणए वा, [प्र॰] हे भगवन् ! एक द्रब्य छुं प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विस्तसापरिणत होय ? [उ॰] हे गौतम ! एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विस्तसापरिगत पण होय. [प्र॰] हे भगवन् ! जो ते [एकद्रव्य] प्रयोगपरिणत होय तो छुं मनःप्रयोगपरिणत होय, वाक्यप्रयोगपरिणत होय, के कायप्रयोगपरिणत होय ? [उ॰] हे गौतम ! एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय, वाक्यप्रयोगपरिणत होय, के कायप्रयोगपरिणत होय ? [उ॰] हे गौतम ! ते मनःप्रयोगपरिणत होय तो छुं मनःप्रयोगपरिणत होय, वाक्यप्रयोगपरिणत होय. [प्र॰] हे भगवन् ! जो ते [एकद्रव्य] प्रयोगपरिणत होय, वाक्यप्रयोगपरिणत होय के कायप्रयोगपरिणत होय. [प्र॰] हे भगवन् ! जो ते एकद्रव्य मनःप्रयोगपरिणत होय तो छुं सत्यमनः प्रयोगपरिणत होय, म्र्थामनःप्रयोगपरिणत होय; सत्यम्धामनःप्रयोगपरिणत होय के असत्याम्धामनःप्रयोगपरिणत होय ? [उ॰] हे गौतम ! ते सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय; सत्यम्धामनःप्रयोगपरिणत होय के असत्याम्धामनःप्रयोगपरिणत होय ? [उ॰] हे गौतम ! ते सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, मुर्धामनःप्रयोगपरिणत होय, सत्यम्धामनःप्रयोगपरिणत होय के असत्याम्धामनःप्रयो- गपरिणत होय. [प्र॰] हे भगवन् ! जो ते एकद्रव्य सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय तो छुं आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, अनारंभ- सत्यमनः प्रयोगपरिणत होय, संरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, असंरंथसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, समारंभसत्यमनःप्रयोगपरि- जत होय के असमारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय ? [उ॰] हे गौतम ! ते आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिण्त होय, यावत् असमारंभ-	ころれのみのあったろうちょう	शतके शः १ ९१॥
---	-----------------------------------	--	----------------	---------------------

E	जर मोस्प्रणप्रकोग्यनिवान दि अपंथ्यमोस्प्रणप्रकोग्यनिवान स्थितं जस स्वेणं तरा मोसेणवि एवं सज्ञा-	
च्याख्यां-	जइ मोसमणप्पयोगपरिणए किं आरंभमोसमणप्पयोगपरिणए वा? एवं जहा संचणं तहा मोसेणवि,एवं सचा- मोसमणप्पओगपरिणएणवि, एवं असचामोसमणप्पयोगेणवि। जह वहप्पयोगपरिणए किं सचवहप्पयोगपरिणए	🕈 ८ शतके
प्रज्ञतिः	मोसवयप्पयोगपरिणए०एवं जहा मणप्पयोगपरिणए तहा वयप्पयोगपरिणएवि जाव असमारंभवयप्पयोगपरिणए	🕈 डदेशः १
ાાપલરા	वा। जइ कायप्पयोगपरिणए किं ओरालियसरीरकायप्पयोगपरिणए ओरालियमीमासरीरकायप्पयो० वेउच्चि	ને ાાયલરાા
8	यसरीरकायप्पयो० वेउव्वियमीसासरीरकायप्पयोगपरिणए आहारगसरीरकायप्पओगपरिणए आहारकमीसा- र सरीरकायप्पयोगपरिणए कम्मासरीरकायप्पओगपरिणए?, गोयमा ! ओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए वा जाव	R
	कम्मासरीरकायप्पओगपरिणए वा,जइ ओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए किं एगिंदियओरालियसरीरकायप्प-	*
	ओगपरिणए एवं जाव पंचिंदियओरालिय जाव परि०? गोयमा ! एगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए वा	Ś
C	बेंदियजाव परिणए वा जाव पंचिंदिय जाव परिणए वा,	8
Č	[प्र॰] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य सृषामनः प्रयोगपरिणत होय तो छं आरंभमृषामनः प्रयोगपरिणत होय ? [उ॰] ए प्रमाणे	
	जेम सत्यमनःप्रयोगपरिणतने विषे कह्युं तेम मृषामनःप्रयोगपरिणत विषे जाणवुं. ए प्रमाणे सत्यमृषामनःप्रयोगने विषे अने असत्या- मृषामनःप्रयोगने विषे पण जाणवुं. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य वाक्यप्रयोगपरिणत होय तो छुं सत्यवाक्यप्रयोगपरिणत	t
×		X
	योगपरिणत होय. [प्र॰] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य कायप्रयोगपरिणत होय तो छं १ औदारिकश्वरीरकायप्रयोगपरिणत होय, २	
		K▼ I∎

	अौदारिक मिश्रज्ञरीरकायप्रयोगपरिणत होय, ३ वैक्रियज्ञरीरकायप्रयोगपरिणत होय, ४ वैक्रियमिश्रज्ञरीरकायपयोगपरिणत होय, ५ आहारकज्ञरीरकायप्रयोगपरिणत होय, ६ आहारकमिश्रज्ञरीरकायप्रयोगपरिणत होय के ७ कार्मणज्ञरीरप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते एक द्रव्य औदारिकज्ञरीरकायप्रयोगपरिणत पण होय, यावत् कार्मणज्ञरीरकायप्रयोगपरिणत पण होय. [प्र०] जो ते	
च्याख्या- प्रज्ञप्तिः	आहारकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय. ६ आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के ७ कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत होय ? [उ॰] हे	८ शतके
ઝજ્ઞાસઃ ૬९३	र गौतम ! ते एक द्रव्य औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत पण होय, यावत् कार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत पण होय. [प्र०] जो ते	उद्देशः १
11373411	🕻 (एक द्रव्य) औदारिकञ्चरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं एकेन्द्रियऔदारिकञ्चरीरकायप्रयोगपरिणत होय, बेइन्द्रियऔदारिकञ्चरीरका-	।।५९३॥
	M UUTIDITITITE at a state sector construction and $ M $	4
	हे कशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, बेइन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय, यावत् पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय.)
	🐧 जइ एगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए किं पुढविकाइयएगिंदिय जाव परिणए जाव वणस्सइ-	
	🔁 काइयएगिंदियओरालियमरीरकायप्पओगपरिणए वा ?, गोयमा ! पुढविक्काइयएगिंदियपयोग जाव परिणए	
	त्रे वा जाव वणस्सइकाइयएगिंदिय जाव परिणए वा, जइ पुढविकाइयएगिंदियओरालियसरीर जाव परिणए	$\mathbf{\hat{b}}$
	🕻 किं सुहुमपुढविकाइय जाव परिणए बायरपुढविकाइयएगिंदिय जाव परिणए ?, गोयमा ! सुहुमपुढवि-	
	🗚 क्काइयएगिंदिय जाव परिणए वा बायरपुढविक्काइय जाव परिणए वा, जइ सुहुमपुढविकाइय जाव	
	करारीरकायप्रयोगपरिणत होय, के यावत् पंचान्द्रयकादगारकरारारकायप्रयोगपरिणत होय ! [30] ह गातम ? ते एक प्रवे एकान्द्रप्रवासित करारीरकायप्रयोगपरिणत होय, केइन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय, यावत् पंचेन्द्रियऔदारिकत्ररारकायप्रयोगपरिणत होय. जह एगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए किं पुढविक्काइयएगिंदिय जाव परिणए जाव वणस्सइ- काइयएगिंदियओरालियमरीरकायप्पओगपरिणए वा ?, गोयमा ! पुढविक्काइयएगिंदिययोग जाव परिणए वा जाव वणस्सइकाइयएगिंदिय जाव परिणए वा, जइ पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीर जाव परिणए किं सुहुमपुढविकाइय जाव परिणए बायरपुढविक्काइयएगिंदिय जाव परिणए ?, गोयमा ! सुहुमपुढवि- क्काइयएगिंदिय जाव परिणए वा बायरपुढविक्काइयएगिंदिय जाव परिणए ?, गोयमा ! सुहुमपुढवि- क्काइयएगिंदिय जाव परिणए वा बायरपुढविक्काइय जाव परिणए वा, जइ सुहुमपुढविकाइय जाव परिणए किं पज्जत्तसुहुमपुढवि जाव परिणए अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइय जाव परिणए ?, गोयमा ! पुज्जत्तसुहुमपुढविकाइय जाव परिणए वा अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइय जाव परिणए वा, एवं बाद- रे	\geq
	🐧 पज्जत्तसुहुमपुढविकाइय जाव परिणए वा अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइय जाव परिणए वा, एवं वाद- 🕏	
	र्दे पज्जत्तसुहुमपुढविकाइय जाव परिणए वा अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइय जाव परिणए वा, एवं बाद-	

^{हे} याख्या- प्रज्ञक्षिः ॥५९४॥	स्सपांचिंदिय जाव परिणए वा, जइ तिरिक्खजोणिय जाव परिणए किं जलचरतिरिक्खजोणिय जाव परि एए वा थलचर० खहचर०, एवं चडक्कओ भेदो जाव खहचराणं। [प्र॰] हे भगवन्! जो ते एक द्रव्य एकेन्द्रियऔदारिकशरीरकप्रयोगपरिणत होय तो शुं पृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरी- रक्षायप्रयोगपरिणत होय के यावत् वनस्पतिकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! पृथिवीका- रक्षायप्रयोगपरिणत होय के यावत् वनस्पतिकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! पृथिवीका- यिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् वनस्पतिकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! पृथिवीका- यिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् वनस्पतिकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय . [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य पृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगपरिणत होय शुं सक्ष्मपृथिवीकायिक-एकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय के बादरप्ट- थिवीकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय ! [उ०] हे गौतम ! सक्ष्मपृथिवीकायिक-एकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय के बादरप्ट- थिवीकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय . [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य सक्ष्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय के बादरप्ट- रि थिवीकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय . [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य सक्ष्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय के बादरप्र- रे या पर्याप्रसंसक्ष्मप्रथीकायिककायप्रयोगपरिणत होय . [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य सक्ष्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय के बादरप्र-	८ शतके उद्देशः १ ॥५९४॥
•	शिवाकायिकएक न्द्रयकायप्रयोगपरिणत होय. [प्रण] ह मगवन् 1 जा त एक द्रव्य सर्स्मपृथिवाकायिककायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! शु पर्याप्तसर्स्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय के अपर्याप्तसर्स्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! पर्याप्तसर्स्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय के अपर्याप्तसर्स्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय. ए प्रमाणे बादरपृथिवी- कायिको जाणवा. ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिकना चार मेद (सर्स्म, बादर, पर्याप्त अने अपर्याप्त) अने बेइन्द्रिय, त्रीइन्द्रिय, अने चउरिन्द्रिय जीवोना बे मेद पर्याप्त अने अपर्याप्त जाणवा. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयो-	

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ∦५९५॥		गपरिणत होय तो शुं तिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियऔदाग्किशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के मनुष्यपंचेन्द्रियऔदाग्किशरीरकायप्रयोग- रिणत होय? [उ०] हे गौतम! तिर्यंचयोनिकऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के मनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोग- परिणत होय. [प०] हे भगवन्! जो ते एक द्रव्य तिर्यंचयोनिककायप्रयोगपरिणत होय तो शुं जलचरतिर्यंचयोनिककायप्रयोगप- रिणत होय. [प०] हे भगवन्! जो ते एक द्रव्य तिर्यंचयोनिककायप्रयोगपरिणत होय तो शुं जलचरतिर्यंचयोनिककायप्रयोगपरिणत होय के सनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगप- रिणत होय के स्वलचर अने खेचरथोनिककायप्रयोगपरिणत होय? [उ०] पूर्व प्रमाणे यावत् खेचगेना [संमूर्छिम, गर्भज, पर्याप्त अनं अपर्याप्त] चार मेदो जाणवा. जह मणुरसपंाचंदिय जाध परिणए किं संमुच्छिममणुरसपंचिंदिय जाव परिणए गब्भवक्कंतियमणुरस जाब परिणए ?, गोयमा ! दोस्रुवि, जह गब्भवक्कंतियमणुरस जाव परिणए किं पज्जत्तगब्भवक्कंतिय जाव परिणए अपज्जत्तगबभवक्कंतियमणुरसपंचिंदियओरालियसरीरकायप्रयोगपरिणए ?, गोयमा ! पज्जत्तगब्भवक्कंतिय जाव परिणए अपज्जत्तगबभवक्कंतियमणुरसपंचिंदियओरालियसरीरकायप्रयोगपरिणए ?, गोयमा ! पज्जत्तगबभवक्कंतिय जाव परिणए वा अपज्जत्तगबभवक्कंतिय जाव परिणए १ । जह ओरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए किं एगिंदिय- ओरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए बेइंदियजावपरिणए जाव पंचेदियओरालिय जाव परिणए ?, गोयमा ! एर्भिदियओरालिय एवं जहा ओरालियसरीरकायप्पयोगपरिणएणं आलावगो भणिओ तहा ओरालियमीसा- सरीरकायप्पओगपरिणएणवि आलावगो भाणियव्वो, नवरं बायरवाउकाइयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्ख जोणियगबभवक्कंतियमणुरसाणं एएसि णं पज्जत्तापज्जत्तगाणं, सेसाणं अपजत्त्ताणां २ । जह वेउव्वि- यसरीरकायप्पयोगपरिणए किं एगिदियवेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए जाव पंचिंदियवेउव्वियसरीर जाव-	CHERTER STREET STRE	८ शतके उद्देशः १ नाद९५॥) 1
-----------------------------------	--	---	--	-------------------------------	--------

परिणत होय. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य गर्भजमनुष्यकायप्रयोगपरिणत होय तो ग्रुं पर्याप्तगर्भजमनुष्यकायप्रयोगपरिणत होय के अपर्याप्तगर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय? [उ०] हे गौतम ! पर्याप्तगर्भजमनुष्यकायप्रयोगपरिणत होय के अपर्याप्तगर्भजमनुष्यकायप्रयोगपरिणत होय. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो ग्रुं एकेन्द्रियऔदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, वेइन्द्रियऔदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् पंचेन्द्रि- यऔदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! एकेन्द्रियऔदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत होय. जेम 'औदारिक्शरीर- कायप्रयोगपरिणत' नो आलापक कह्यो तेम 'औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत' नो पण आलापक कहेवो. परन्तु विशेष ए छे के 'औदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत'नो आलापक बादरवायुकायिक, गर्भजपंचेन्द्रियतिर्थंच अने गर्भजमनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता एओने अने ते शिवाय बाकीना अपर्याप्ता जीवोने कहेवो. [प्र०] हे भगवन् ! जो एक द्रव्य वैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो ग्रु	॥५९६॥
एकेन्द्रियवैकियश्वरीरकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् पंचेन्द्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते एकेन्द्रि- यवैक्रियकायप्रयोगपरिणत होय के पंचेन्द्रियवैक्रियकायप्रयोगपरिणत होय. जह एगिंदिय जाव परिणए किं वाउकाइयएगिंदिय जाव परिणए अवाउकाइयएगिंदिय जाय परिणए ?,	

च्याख्या-	[प्र॰] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य एकेन्द्रियवैक्रियकायप्रयोगपरिणत होय तो छुं वायुकायिकएकेन्द्रियवैक्रियकायप्रयोगपरिणत	८ शतके
प्रज्ञप्तिः	होय के वायुकायिक शिवाय एकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते एक द्रव्य वायुकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगप-	उद्देशः १
॥५९७॥	रिणत होय, पण वायुकायिक शिवाय एकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत न होय. ए प्रमाणे ए अभिलाप (पाठ) थी प्रज्ञापना स्वत्रना 🖈	॥५९७॥
4	'अवगाहनासंख्यान' पदने विषे वैक्रियशरीरसंबन्धे कड्युं छे तेम अहीं पण कहेडुं; यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिककल्पातीत-	

व्याख्या- 🏌 ते एक द्रव्य वक्रियमिश्वशरीरकापप्रयोगपरिणत होय तो छं एकेन्द्रियवैक्रियमिश्वशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् पंचेन्द्रिय- प्रज्ञप्तिः 💃 वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! जेम वैक्रियशरीरप्रोगसंबन्धे कह्य, तेम वैक्रियमिश्रकायप्रयोगसंबन्धे	うそうそうやうやうやうとう	८ शतके उद्देशः १ ॥५९८॥	
---	---------------	------------------------------	--

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥५९९॥ ४ परिणए वा पज्जत्तसब्वद् जाव कम्मा १ णत होय ? इत वन् ! जो ते प भ मणशरीरकायय प्रज्ञापना सत्रन कार्मणशरीरका	परिणए वा ७॥ जइ मीसापरिणए किं मणमीसापरिणए वयमीसापरिणए कायमीसापरिणए ?, णमीसापरिणए वा वयमीसा० वा कायमीसापरिणए वा, जइ मणमीसापरिणए किं सचमणमीसा- मोसमणमीसापरीणए वा जहा पओगपरिंगए तहा मीसापरिणएवि भाणियव्वं निरवसेसं जाव स्तिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदियकम्मासरीरगमीसापरिणए वा अपज्जत्तसव्वट्टसिद्धअणु० सरीरमीसापरिणए वा । अगवन् ! जो ते एक द्रव्य आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो छं मनुष्याहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरि- यादि. [उ०] हे गौतम ! जेम आहारकशरीरसंवन्ये कढुं तेम आहारकमिश्रसंवन्ये पण कहेवुं. (६,) [प०] हे भग- एक द्रव्य कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत होय तो छं प्रतुष्याहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरि- यादि. [उ०] हे गौतम ! जेम आहारकशरीरसंवन्ये कढुं तेम आहारकमिश्रसंवन्ये पण कहेवुं. (६,) [प०] हे भग- योगपरिणत होय ! [उ०] हे गौतम ! ते एक द्रव्य एकेन्द्रियकार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् पंचेन्द्रियका- योगपरिणत होय ! [उ०] हे गौतम ! ते एक द्रव्य एकेन्द्रियकार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत होय. ए प्रमाणे जेम ा 'अवगाहनासंस्थान' पदने विषे कहुं छे तेम अहीं पण जाणवुं, यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवपंचेन्द्रिय- यप्रयोगपरिणत होय, के अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिककार्मणकायप्रयोगपरिणत होय. [प्र०] हे भगवन् ! जो	१
्रि ने सब बहुम 1	यत्रयागपारणत हाय, क अपयाससवायासद्धअनु परापपातिककानणकायत्रयागपारणत हाय. [मण्] ह नगपपूरणा मिश्रपरिणत मिश्रपरिणत होय तो शुं मनोमिश्रपरिणत होय, वचनमिश्रपरिणत होय, के कायमिश्रपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! रेणत वचनमिश्रपरिणत होय, के कायमिश्रपरिणत होय. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य मनोमिश्रपरिणत होय रोमिश्रपरिणत होय, मुषामनोमिश्रपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! जेम प्रयोगपरिणत पुद्गलो संबन्धे कह्युं तेम	

ष्याख्या- म्रज्ञाक्षेः म्रज्ञाक्षेः म्रज्ञाक्षेः ॥६००॥ भिश्र्यारेणतसंबन्धे सर्व कहेत्रुं. यावत् पर्याप्तसर्वार्धसिद्ध अुत्तरौपपातिकदेवपंचेन्द्रियकार्मगद्यरिभिश्रपरिणत होय, के अपर्याप्तसर्वा- भ्रेषिद्ध अनुषरौपपातिककार्मणञ्चरीरमिश्रपरिणत होय. जह वीससापरिणए कि वन्नपरिणए गांधपरिणए रसपरिणए फासपरिणए संठाणपरिणए ?, गोयमा ! नन्नपरिणए वा गंधपरिणए वा रसपरिणए वा फासपरिणए वा संठाणवरिणए वा, जह वन्नपरिणए कि कालवन्नपरिणए नील जाव सुक्तिल्खन्नपरिणए ?, गोयमा ! कालवन्नपरिणए जाव सुक्तिल्खन नपरिणए, जइ गंधपरिणए किं सुन्धिभगंधपरिणए दुन्धिगंधपरिणए ?, गोयमा ! कालवन्नपरिणए वा जाव महुरस्य- मर्यारेणए, जइ गंधपरिणए किं सुन्धिभगंधपरिणए दुन्धिगंधपरिणए ?, गोयमा ! तत्तरसपरिणए वा जाव महुरस्य- मरारिणए वा, जइ रसपरिणए किं तत्तिरसपरिणए ? ५, पुच्छा, गोयमा ! तत्तरसपरिणए वा जाव महुररसप- रिणए वा जइ फासपरिणए किं तत्तरसपरिणए पुच्छा, गोयमा ! तत्त्तरसपरिणए वा जाव आययसं- राणपरिणए वा ॥ (सूत्रं ३१२) ॥ [प०] हे मगवन् ! जो ते एक द्रव्य विस्नापरिणत-स्वभावपरिणत होय तो छं ते वर्णपरिणत होय, गंधपरिणत होय, रस- परिणत होय, स्पर्धपरिणत होय के संस्थानपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते काळावर्णपने परिणत होय, रावत् होय, नील्वर्थपणे परिणत होय के यावत् छाड्वर्थपपे परिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते काळावर्णपने परिणत होय, यावत्	१
---	---

ट्याख्या- प्रजातिः प्रजातिः प्रजातिः प्रजात होय ? [उ०] हे गौतम ! ते सुगंधपणे परिणत होय अने दुर्गंधपणे पण परिणत होय. [प०] जो ते एक द्रव्य रस- परिणत होय तो शुं तिक्तरसपरिणत होय ? इत्यादि. [उ०] हे गौतम ! ते तिक्तरसपरिणत होय यावत मधुररसपणे परिणत होय. [प०] हे भगवन् ! जो एक द्रव्य रस्भेपरिणत होय तो ते शुं कर्कभपरिणत होय के यावत् रूक्षस्पर्धपति होय? [उ०] हे गौतम ! ते कर्कशस्पर्धपणे परिणत होय, यावत् स्क्षस्पर्धपणे परिणत होय. [प०] हे भगवन् ! एक द्रव्य रसंखानपणे परिणत होय तो ते शुं कर्कभपरिणत होय के यावत् रूक्षस्पर्धपति होय? [उ०] हे गौतम ! ते कर्कशस्पर्धपणे परिणत होय, यावत् स्क्षस्पर्धपणे परिणत होय. [प०] हे भगवन् ! एक द्रव्य संखानपरिणत होय तो शुं ते परिमंडलसंखानपणे परिणत होय के यावत् आयतसंखानपणे परिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते परिमंडलसंखानपणे परिणत होय के यावत् आयतसंखानपणे पग परिणत होय. ॥ ३१२ ॥ दो भंते ! दच्वा किं पयोगपरिणया वा ३ आहवा एगे मीसापरिणया ?, गोयमा ! पओगपरिण्पया वा ? मीसापरिणया वा २ वीससापरिणया वा ३ आहवा एगे मीसापरिणए एगे वीससापरिणए, एवं ६। जङ् पओगपरि- णया किं मणप्पयोगपरिणया वइप्पयोग० कायप्पयोगपरिणया ?, गोयमा ! मणप्पयो० वइप्पयोगप० , आहवेगे पर्पयोगपरिणया वा, आहवेगे मणप्पयोगप० एगे वयप्पयोगप०, आहवेगे मणप्पयोगपरिणए एगे कायप०, आहवेगे वयप्पयोगप० एगे कायप्पओगपरि०, जड मणप्पयोगप० किं सचनणप्पयोगपरिणए एगे मोसमणप्पओगपर गपरिणया वा जाव असवामोसमणप्पयोगप० १ अहवा एगे सबनणप्पयोगपरिणए एगे मोसमणप्पओगपर	३ दरा• ६ ॥ ६०१॥
---	---------------------------

 दिणए १ अहवा एगे सच्चमणप्पओगप० एगे सचामोसमणप्पओगपरिणए २ अहवा एगे सचमणप्पयोगप- रिणए एगे असचामोसमणप्पओगप० एगे असचा पो मोसमणप्पयोगप० एगे सचामोसमणप्पयोगप० १ अहवा एगे मोसमणप्पयोगप० एगे असचामोसमणप्पयोगप० ५ अहवा एगे सचामोसमणप्पओगप० एगे असचामोसमणप्पओगप० ६। [प्र०] हे भगवन् ! वे द्रव्यो ग्रं प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विस्तापरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते प्रयोगपरिणत होय. १ अथवा एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय अने वीज़ं विस्तापरिणत होय. १ अथवा एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय अने वीज़ं विस्तापरिणत होय. मिश्रपरिणत होय के विस्तापरिणत पण होय. १ अथवा एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय अने वीज़ं तिस्तापरिणत होय. [प्र०] हे भगवन् ! जे ते वे द्रव्यो प्रयोगपरिणत होय. ३ अथवा एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय अने वीज़ं विस्तापरिणत होय. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते वे द्रव्यो प्रयोगपरिणत होय. ३ अथवा एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय अने वीज़ं विस्तापरिणत होय. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते वे द्रव्यो प्रयोगपरिणत होय ते छं मनःप्रयोगपरिणत होय अने वीज़ं विस्तापरिणत होय. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते वे द्रव्यो प्रयोगपरिणत होय त्वचनप्रयोगपरिणत होय. ३ अथवा एक मनःप्रयोगपरिणत होय के कायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते वे द्रव्यो मतःप्रयोगपरिणत होय. २ अथवा एक मनःप्रयोग- रारिणत होय. १ अथवा एक द्रव्य मनःप्रयोगपरिणत होय अने वीजुं वचनप्रयोगपरिणत होय. २ अथवा एक मनःप्रयोग- परिणत होय अने वीजुं कायप्रयोगपरिणत होय. ३ अथवा एक वचनप्रयोगपरिणत होय अने वीजुं कायप्रयोगपरिणत होय. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते वे द्रव्यो मनःप्रयोगपरिणत होय तो धुं सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, असत्यमनःप्रयोगपरिणत होय. सत्यमुग- मनःप्रयोगपरिणत होय १ अथवा एक सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय के यावत् असत्या- स्राप्रयागरिणत होय. १ अथवा एक सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! तत्यमनःप्रयोगपरिणत होय. २ अथवा एक 	॥६०२॥ ।
---	------------

व्याख्या- प्रक्राप्तिः प्रक्राप्तिः प्रक्राप्तिः प्रक्रम्यामनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं सत्यष्ट्वापनःभयोगपरिणत होय अने बीजुं सत्यष्ट्वामनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं असत्याष्ट्रयामनःप्रयोगपरिणत होय. ४ अथवा एक म्र्यामनःभयोगपरिणत होय अने बीजुं सत्यष्ट्वामनःभ्रयोगपरिणत होय अने बीजुं एक म्र्यामनःभ्रयोगपरिणत होय अने बीजुं असत्याष्ट्रवामनःभ्रयोगपरिणत होय. ६ अथवा एक सत्यष्ट्वामनःभ्रयोगपरिणत होय अने बीजुं असत्याष्ट्रवामनःभ्रयोगपरिणत होय. अ अथवा एक म्र्यामनःभ्रयोगपरिणत होय. ६ अथवा एक सत्यष्ट्वामनःभ्रयोगपरिणत होय अने बीजुं असत्याष्ट्रवामनःभ्रयोगपरिणत होय. जह सचमणप्पयोगपरिणत होय. जह सचमणप्पयोगपरिणत होय. जह सचमणप्पयोगपरिणया वा जाव असमारंभसचमणप्पयोगपरिणया वा, अहवा एगे गोयमा ! आरंभसचमणप्पयोगपरिणिया वा जाव असमारंभसचमणप्पयोगपरिणया वा, अहवा एगे आरंभसचमणप्पयोगपरिण्या उट्टेति ते भाणियव्वा जाव सव्यट्टसिद्धगत्ति । जइ मीसाप॰ किं मणमीसापरि॰ एवं मीसापरि॰ वि॰ । जह वीससापरिणया किं वण्णपरिणया गंधप॰ एवं वीससापरिणया वि जाव अहवा एगे चउरंससंठाणपरि॰ एगे आययसंठाणपरिणए वा ॥ तिन्नि भंते ! दव्वा किं पयोगपरिणया मीसाप॰ वीससाप॰?, गोयमा ! पयोगपरिणया वा मीसापरिणया वा बीससापरिणया वा १ अहवा एगे पयोगपरिणए दो मीसाप॰ १ अहवेगे पयोगपरिणए दो वीससाप॰ २ अहवा दो पयोगपरिणया एगे मीससापरिणए ३ अहवा दो पयोग- प॰ एगे वीससाप॰ ४ अहवा एगे मीसापरिण्य दो वीससाप० ७ अह्वा दो मीससाप॰ एगे वीससाप॰ इ अहवा एगे पयोगप॰ एगे मीसापरि॰ एगे वीसासापर॰ ७ ।	तः १
---	------

व्याख्या- प्रज्ञाक्षिः ॥६०४॥	[प्र॰] हे भगवन् ! जो वे द्रव्यो सत्यमनः प्रयोगपरिणत होय तो छुं १ आरंभसत्यमनः प्रयोगपरिणत होय, २ अनारंभसत्यमनः प्रयोगपरिणत होय, ३ संरंभसत्यमनः प्रयोगपरिणत होय, ४ असंरंभसत्यमनः प्रयोगपरिणत होय, ३ संरंभसत्यमनः प्रयोगपरिणत होय, ४ असंरंभसत्यमनः प्रयोगपरिणत होय, ३ संरंभसत्यमनः प्रयोगपरिणत होय, १ असंरंभसत्यमनः त्रयोगपरिणत होय, ३ संरंभसत्यमनः प्रयोगपरिणत होय ? [उ॰] हे गौतम ! ते वे द्रव्यो आरंभसत्यमनः प्रयोगपरिणत होय, यावत् अस- होय के ६ असमारंभसत्यमनः प्रयोगपरिणत होय ? [उ॰] हे गौतम ! ते वे द्रव्यो आरंभसत्यमनः प्रयोगपरिणत होय, यावत् अस- मारंभसत्यमनः प्रयोगपरिणत होय. १ अथवा एक द्रव्य आरंभसत्यमनः प्रयोगपरिणत होय अने बीजुं अनारंभसत्यमनः प्रयोगपरिणत होय. ए प्रमाणे ए रीते द्विक संयोगो करवा. ज्यां जेटला द्विकसंयोगो थाय त्यां ते सघळा कहेवा; यावत् सर्वार्थसिद्धवैमानिकदेव सुधी कहेत्रुं. [प्र॰] हे भगवन् ! जो वे द्रव्यो मिश्रपरिणत होय तो छुं ते मनोमिश्रपरिणत होय ? इत्यादि. [उ॰] हे गौतम ! प्रयो- गपरिणत संबंधे कहुं तेम मिश्रपरिणतसंबंधे कहेत्रुं. [प्र॰] हे भगवन् ! जो वे द्रव्यो विस्तसापरिणत होय तो छुं ते वर्णपणे परिणत होय, गन्धपणे परिणत होय ? इत्यादि [उ॰] हे गौतम ! ए रीते पूर्वे कह्या प्रमाणे विस्तसापरिणतसंबन्धे पण जाणवुं, यावत् एक द्रव्य समवतुरस्नसंध्यानपणे परिणत होय अने वीजुं आयतसंध्यानपणे पण परिणत होय. [प्र॰] हे भगवन् ! त्रण द्रव्यो श्वं प्रयोग- परिणत होय, मिश्रपरिणत होय, के विस्तसापरिणत होय? [उ॰] हे गौतम ! ते (त्रणे द्रव्यो) प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय अने विस्तसापरिणत पण होय. १ अथवा एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय अने वे मिश्रपरिणत होय, २ अथवा एक प्रयोगपरिणत होय अने वे विस्तसापरिणत होय, २ अथवा एक मिश्रपरिणत होय अने एक मिश्रपरिणत होय, अथवा के प्रयोगपरिणत होय अने एक विस्तसापरिणत होय, ५ अथवा एक मिश्रपरिणत होय अने एक मिश्रपरिणत होय अने वे विस्तसापरिणत होय. ६ अथवा के एक विस्तसापरिणत होय, ५ अथवा एक मिश्रपरिणत होय, ५ अथवा एक मिश्रपरिणत होय अने वे विस्तसापरिणत होय. ६ अथवा वे	あいとうちものものものできる	८ शतके उद्देश ः १ ॥६०४॥
K X X	विस्नसापरिणत होय, ५ अथवा एक मिश्रपरिणत होय, ५ अथवा एक मिश्रपरिणत होय अने बे विस्नसापरिणत होय. ६ अथवा बे मिश्रपरिणत होय अने एक विस्नसापरिणत होय. ७ अथवा एक प्रयोगपरिणत एक मिश्रपरिणत अने एक विस्नसापरिणत होय.	- T & A	

प्रहाप्तिः 👔 गोयमा! सचमणप्पयोगपरिणया वा जाव असचामोसमणप्पयोगपरिणया वा ४,अहवा एगे सचमणप्पयोगपरिणए	८ शतके उद्देश: १ ॥६०५॥
---	------------------------------

प्याख्या- प्रज्ञतिः प्रज्ञतिः प्रज्ञतिः ॥६०६॥ त्रणे द्रच्यो मनःप्रयोगपरिणत होय तो शुं सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय . अथवा एक सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय अने वे ष्रषामनःप्रयोगप- रिणत होय. प प्रमाणे अहीं पण दिकसंयोग अने त्रिकसंयोग कहेवो. यावत् अथवा एक ज्यस्न (त्रिकोण) संस्थानपणे परिणत होय, पर्क समचतुरस्न (चोरस) संस्थानपणे परिणत होय अने त्रिकसंयोग कहेवो. यावत् अथवा एक ज्यस्न (त्रिकोण) संस्थानपणे परिणत होय, एक समचतुरस्न (चोरस) संस्थानपणे परिणत होय अने त्रिकसंयोग कहेवो. यावत् अथवा एक ज्यस्न (त्रिकोण) संस्थानपणे परिणत होय, एक समचतुरस्न (चोरस) संस्थानपणे परिणत होय अने त्रिकसंयोग कहेवो. यावत् अथवा एक त्रयोगपरिणत होय. प्रयोगपरिणत होय, धुं प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय. १ अथवा एक प्रयोगपरिणत होय अने त्रण मिश्रपरिणत होय. २ अथवा एक प्रयोग- परिणत होय अने त्रण विस्रसापरिणत होय. १ अथवा एक प्रयोगपरिणत होय अने त्रण मिश्रपरिणत होय. २ अथवा एक प्रयोग- परिणत होय अने त्रण विस्रसापरिणत होय. १ अथवा देय अगे प्रयोगपरिणत होय अने वे मिश्रपरिणत होय. २ अथवा क्र प्रयोगपरिणत होय अने वे विस्तसापरिणत होय. ५ अथवा त्रण प्रयोगपरिणत होय अने एक मिश्रपरिणत होय. ८ अथवा त्रण प्रयोगपरिणत होय अने वे विस्तसापरिणत होय. ५ अथवा त्रण प्रयोगपरिणत होय अने ज्ञण विस्तसापरिणत होय. १० अथवा व्रण प्रयोगपरिणत होय अने वे विस्तसापरिणत होय. ५ अथवा त्रण प्रयोगपरिणत होय अने ज्ञण विस्तसापरिणत होय. १० अथवा व्रण अपे को विस्तसापरिणत होय. ९ अथवा त्रण मिश्रपरिणत होय अने एक विस्तसापरिणत होय. १० अथवा एक प्रयोगपरिणत होय. १२ अथवा वे विस्तसापरिणत होय. ११ अथवा एक प्रयोगपरिणत होय अने प्रण विस्तित होय. १० अथवा एक प्रयोगपरिणत होय अने वे विस्तसापरिणत होय. ९ अथवा त्रण मिश्रपरिणत होय अने एक विस्तसापरिणत होय. १० अथवा एक प्रयोगपरिणत होय एक किंय. १२ अथवा वे प्रयोगपरिणत होय अने एक मिश्रपरिणत होय एक पिश्रपरिणत होय एक विस्तसापरिणत होय. ज्ञह पयोगपरिण्या किं मणप्पयोगपरिण्या ३?, एवं एएणं कमेणं पंच छ सत्त जाव दस संखेज्जा असंखेज्जा अणंता य दव्वा भाणियव्वा (एक्कगर्वोगोण)) दुयासजोएणं तियासंजोएणं जाव दसरांजोएणं एक्कारसंजोएणं
--

ऱ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६०७॥	The set is the set where the set of the set	जाव विसेसाहिया वा ?, गोयमा ! सब्वत्थोवा पोग्गला पयोगपरिणया, मीसापरिणया अणंतगुणा, वीससा- परिणया अणन्तगुणा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥(सूत्रं ३१४)॥ अडमसयरस पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥८-१॥ जिन्ने हे भगवन ! प्रयोगपरिणत, मिश्रपरिणत अने विस्नसापरिणत ए प्रदगलोमां कया प्रदगलो कोनाथी यावद, विशेषाधिक	そのためためをあるたちたろそうとうと	८ शतके उद्देश: १ सहव्छा।	
	2-2-3-2	पारणया अणन्तगुणा । सब भत ! सब भत ! ति । ति ॥(सूत्र २३४))) अडमसयस्स पढमा उद्दसा सम्मर्ता ॥८=९॥ [प्र०] हे भगवन् ! प्रयोगपरिणत, मिश्रपरिणत अने विस्नसापरिणत ए पुद्गलोमां कया पुद्गलो कोनाथी यावद् विशेषाधिक होय छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वथी थोडा पुद्गलो प्रयोगपरिणत छे, तेथी मिश्रपरिणत अनंतगुण छे, अने तेथी विस्नसापरिणत	*****		

च्याख्या- प्रज्ञतिः	अनंतगुण छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. (एम कही भगवान् गौतम यावत् विहरे छे) ॥ ३१४ ॥ भगवत् सुधर्मखामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसत्रना आठमा ज्ञतकमां प्रथम उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.	भू मेने ८ श उद्देश	
11६०८॥	⊀ उद्देशक २.	🖌 ।।६०	211 2
	🐒 कतिविहा णं भंते ! आसीविसा पन्नत्ता ?, गोयमा ! दुविहा आसीविसा पन्नत्ता, तंजहा–जातिआसी-	∦ ।।६० भू •	
	🛠 विसा य कम्मआसीविसा य, जाइआसीविसा णं भंते ! कतिविहा पन्नत्ता ?, गोयमा ! चउव्विहा पन्नत्ता,	<u>G</u>	
	Ҟ तंजहाविच्छुयजातिआसीविसे मडुकजाइआसीविसे उरगजातिआसीविसे मणुस्सजातिआसीविसे,	¥	
	🥻 विच्छुयजातिआसीविसस्स णं भंते ! केवतिए विसए पन्नत्ते ?, गोयमा ! पभू णं विच्छुयजातिआसीविसे	Ž	
	🗴 अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं विसदृमाणं पकरेत्तए, विसए से विसदृयाए, नो चेव णं संप-	S.	
	🟌 त्तीए करेंसु वा करेंति वा करिस्संति वा १, मंडुक्कजातिआसीविसपुच्छा, गोयमा ! पभू णं मंडुकजातिआसीविसे		
	🗿 अरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं सेसं तं चेव जाव करेस्संति वा २, एवं उरगजातिआसीविसस्सवि,	81 47 787	
	🖌 नवरं जंबुद्दीवप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं सेसंतं चेव जाव करेस्संति वा ३, मणुस्सजाति आसीविस-	S	
*. *. ·. · · ·	🕻 स्सवि एवं चेव, नवरं समयखेत्तप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेण विसपरिगयं सेसं तं चेव जाव करेस्संति वा ४।	$\overline{\mathbf{x}}$	
	प्र [प्र॰] हे भगवन ! आञ्चीविषो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौयम ! आञ्चीविषो वे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे-	P	

टयाख्या- प्रज्ञाप्तिः प्रज्ञाप्तिः प्रज्ञाति आशीविष अने कर्माशीविष. [प०] हे भगवत ! जातिआशीदिषो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! ते चार प्रका- रमा कह्या छे; ते आ प्रमाणे-? दृश्चिकजातिआशीविष, २ मंड्कजातिआशीविष, ३ उरगजातिआशीविष अने ४ मनुष्यज्ञातिआशीविष. [प०] हे भगवन् ! दृश्चिकजातिआशीविषना विषनो केटलो विषय कह्यो छे?-अर्थात् दृश्चिकजातिआशीविषोना विषद्युं सामर्थ्य केटलं चे ? [उ०] हे गौतम ! दृश्चिकजातिआशीविष अर्धभरतक्षेत्र प्रमाण शरीरने विषवडे विदलित-नाश-करता विषयी व्याप्त करवा समर्थ छे. एटलं तेना विषदुं सामर्थ्य छे, पण संप्राप्ति-संबन्धवडे तेओए तेम कर्युं नथी, तेओ करता नथी, अने करशे पण नहि. [प०] मंड्कजातिआशीविषना विषनो केटलोविषय छे ? [उ०] हे गौतम ! मंड्कजातिआशीविष पोताना विषयी भरतक्षेत्र-प्रमाण शरीरने च्याप्त करवा समर्थ छे. वाकी सर्व पूर्वनी पेठे जाणवुं. यावत् संप्राप्तिवडे तेम करशे नहि. ए प्रमाणे उरगजातिआशीविष संवन्धे पण जाणवुं, परन्तु विशेष ए छे के ते उरगजातिआशीविष जंबूद्वीपप्रमाण शरीरने पोताना विषयी व्याप्त करवा समर्थ हे; बाकी सर्व पूर्ववत् जाणवुं; यावत् संप्राप्तिर्थी तेम करशे नहि. ए प्रमाणे उरगजातिआशीविष संवन्धे पण जाणवुं, परन्तु विशेष ए छे के ते उरगजातिआशीविष जंबूद्वीपप्रमाण शरीरने पोताना विषयी व्याप्त करवा समर्थ हे; बाकी सर्व पूर्ववत् जाणवुं; यावत् संप्राप्तिथी तेम करशे नहि. जह कस्मआसीविसे किं नेरहयकस्मासीविसे तिरित्रखजोणियकम्मासीविसे मणुस्सकम्माआसी- विसे देवकम्मासीविसे ?, गोयमा ! नो नेरइयकस्मासीविसे, तिरित्रखजोणियकम्प्रासीविसे मणुस्सकम्माआसी- देवकनमासी०, जइ तिरित्रखजोणियकम्मासीविसे किं एगिदियतिरिक्खजोणियकम्प्रासीविसे जाव पंचिं-

च्याख्या- प्रज्ञक्षिः ॥६१०॥	र्मितिरिक्खेजाणियकम्मासीविस, पाचादयातारक्खेजाणियकम्मासाविस, जइ पाचादयातारक्छाणियकम्मा कम्मासीविसे किं संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियजावकम्मासीविसे गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजो- णियकम्मासीविसे १, एवं जहा वेउव्वियसरीरस्स भेदो जाव पज्जत्तासंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिर रिक्खजोणियकम्मासीविसे, नो अपज्जत्तासंखेज्जवासाउयजावकम्मासीविसे । जइ मणुस्सकम्मासीविसे किं संमुच्छिम्मणुस्सकम्मासीविसे गब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे १, गोयमा ! णो संमुच्छिम्मणुस्सकम्मा- सीविसे, गब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे, एवं जहा वेउव्वियसरीरं जाव पज्जत्तासंखेज्जवासाउयकम्मभूमग- गब्भवक्कंतियमणुसकम्मासीविसे, नो अपज्जत्ता जाव कम्मासीविसे ?, गोयमा ! णो संमुच्छिम्मणुस्सकम्मा- गब्भवक्कंतियमणुसकम्मासीविसे, नो अपज्जत्ता जाव कम्मासीविसे ! [प्र॰] हे भगवन् ! जो कर्माशीविष छे तो शुं नैरयिक कर्माशीविष छे, तिर्यचयोनिक कर्माशीविष छे, सनुष्य कर्माशीविष छे के देव कर्माशीविष छे ? [उ॰] हे गौतम ! नैरयिक कर्माशीविष नथी, पण तिर्यचयोनिक कर्माशीविष छे, मनुष्य कर्माशीविष छे अने देवकर्माशीविष छे. [प्र॰] हे भगवन् ! जो तिर्यचयोनिक कर्माशीविष छे तो शुं एकेन्द्रिय तिर्यचयोनिक कर्माशीविष छे के यावद पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक कार्माशीविष छे ? [उ॰] हे गौतम ! एकेन्द्रिय तिर्यचयोनिकथी आरंभी यावत चतरिन्द्र्य तिर्यंच	5 4 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 4 5 4 4 5 4 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4	शतके शः २ १०॥
	र्भ यावद् पचान्द्रय तियचयानिक कामाशाविष छ ? [उ०] इ गतिमा एकान्द्रय तियचयानिकथा आरमा यावत् चतारान्द्रय तियच- ट्रे योनिकपर्यन्त कर्माकीविष नथी, पण पंचेन्द्रिय तिर्थचयोनिक कर्माशीविष छे. [प्र०] हे भगवन् ! जो पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक कर्मा- क्रीविष छे तो शुं संमूर्ङिम पंचेन्द्रिय तिर्थचयोनिक कर्माशीविष छे के गर्भजपंचेन्द्रिय तिर्थंचयोनिक कर्माशीविष छे ? [उ०] हे स्र	* - 7 - 8 - 7	

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६११॥	e se re set es to se se the set	गौतम ! जेम वैक्रियग्ररीरसंबंधे जीवभेद कहो छे तेम यावर ^{जर्भ} प संख्यातवर्षना आयुष्यवाळा गर्भज कर्मभूमिमां उत्पन्न थयेला पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक कर्माशीविष होय छे, पण अपर्याप्त असंख्यातवर्षना आयुष्यवाळा यावत् कर्माशीविष नथी. [प्र०] हे मग- वन् ! जो मनुष्य कर्माशीविष छे, तो छुं संमूछिंम मनुष्य कर्म शीविष छे के गर्भज मनुष्य कर्माशीविष छे ? [उ०] हे गौतम ! संमूछिंम मनुष्य कर्माशीविष नथी, पग गर्भज मनुष्य कर्माशीविष छे. जेम वैक्रियग्ररीरसंबन्ये जीवभेद कहा छे ते प्रमाण यावत् पर्याप्त संख्यातवर्षना आयुष्यवाळा कर्मभूमिमां उत्पन्न थयेला गर्भज मनुष्य कर्माशीविष छे पण अपर्याप्त असंख्यात वर्षना आयुष्यवाळा कर्माशीविष नथी. जह देवकस्मासीविसे किं अवणवासीदेवकस्मासोविसे जाव वेमाणियदेवकस्मासीविसे?,गोयमा! भवणवासीदेवक- स्मासीविसे वाणमंतर॰जोतिसिय॰ वेमाणियदेवकस्मासीविसे,जइ भवणवासिदेवकम्मासीविसे से किं अखुरकुमा- रभवणवासिदेवकस्मासोविसे जाव थणियकुमार जाव कम्मासीविसे ?, गोयमा ! अखुरकुमारभवणवासिदेवक- म्मासी विसेविजाव थणियकुमार॰आसीविसेवि,जइ अखुरकुमार जाव कम्मासीविसे ?, गोयमा ! अखुरकुमारभवणवासिदेवक- म्मासी विसेविजाव थणियकुमार॰आसीविसेवि,जइ अखुरकुमार जाव कम्मासीविसे किं पज्जत्तअखुरकुमार जाव कम्मासीविसे अपज्जत्तअखुरकुमारभवणवासिकम्मासीविसे?,गोयमा! नो पज्जत्तअखुरकुमार जाव कम्मासीविसे अपज्जत्तअखुरकुमारभवणवासि जाव कम्मासीविसे. एवं थणियकुमाराणं, जइ वाणमंतरदेवकम्मासीविसे किं पिसायवाणमंतर॰ एवं सव्वेसिपि अपजत्तगाणं, जोइसियाणं सव्वेसिं अपज्जत्तगाणं, जइ वेमाणियदेवकम्मा सीविसे किं कप्पोवगवेनाणियदेवकम्मासीविसे कप्पतायवेमाणियदेवकम्मासीविसे ?, गोयमा ! कप्पोवगवेन्	あるようなのちのようなな	॥६११॥	
	A A A A	सीविसे किं कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे कप्पातीयवेमाणियदेवकम्मासीविसे ?, गोयमा ! कप्पोवगवे-	¥		

घ्याख्या- प्रज्ञाक्षिः ॥६१२॥	at some some some some some some some some	माणियदेवकम्मासीविसे नो कप्पातीयवेमाणियदेवकम्मासीविसे, [प्र॰] हे भगवन्! जो देव कर्माशीविष छे तो छुं भवनवासी देव कर्माशीविग छे के यावत् वैमानिकदेव कर्माशीविग छे ? [उ॰] हे गौतम ! भवनवासी देव कर्माशीविप छे तो थुं असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविग छे के यावत् स्तनितकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष छे ? [उ॰] हे गौतम ! असुरकुमार भवनवासी देव पण कर्माशीविग छे के यावत् स्तनितकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष छे ? [उ॰] हे गौतम ! असुरकुमार भवनवासी देव पण कर्माशीविग छे के यावत् स्तनितकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष छे ? [उ॰] हे गौतम ! असुरकुमार भवनवासी देव पण कर्माशीविष छे, यावत् स्तनितकुमार भवनवासी देव पण यावत् कर्माशीविष छे . [प्र॰] हे भगवन् ! जो असुरकुमार यावत् कर्माशीविष छे तो छुं पर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव पण यावत् कर्माशीविष छे. [प्र॰] हे भगवन् ! जो असुरकुमार यावत् कर्माशीविष छे तो छुं पर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष देव कर्माशीविष छे. [प्र॰] हे भगवन् ! जो असुरकुमार यावत् कर्माशीविष छे तो छुं पर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष नथी, पण अपर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष छे ? [उ॰] हे गौतम ! पर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष नथी, पण अपर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष छे ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. [प्र॰] जो वानव्यंतर देवो कर्माशीविष छे तो छुं पिशाच वानव्यंतर देवो कर्माशीविष छे? इत्यादि. [उ॰] हे गौतम ! तेओ वधा अपर्याप्तावस्थामां कर्मा- शीविष छे, तेम सघळा ज्योतिष्को पण अपर्याप्तावस्थामां कर्माशीविष छे? [उ॰] हे गौतम ! कल्योपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष छे, पण कल्प तीत वैमानिक देव कर्माशीविष च्ये. जह कप्पोवगवेमाणियदेव करम्मासीविसे किं मोहम्मकप्पोव॰ जाव कम्मासीविसे अच्चुयकप्पोवग जाव	CS)	८ शतके उद्देशः २ ॥६१२॥	
	Ste	जइ कप्पोवगवेमाणियदेव) कम्मासीविसे कि मोहम्मकप्पोव० जाव कम्मासीविसे अच्चुयकप्पोवग जाव कम्मासीविसे ?, गोयमा ! सीहम्मकप्पोवग वेमाणियदेवकम्मासीविसेवि जाव) सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेव-	オストオ		

ऱ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६१३॥	कम्मासीविसेवि, नो आणयकप्पोवग जाव नो अच्चुयकप्पोवगवेमाणियदेव०, जइ सोहम्मकप्पोवग जाव कम्मासीविसे किं पज्जत्तमोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे,एवं जाव नो पज्जत्तसहस्सारकप्पोवगवेमाणिय गवेमाणिय०,अपज्जत्तसोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे,एवं जाव नो पज्जत्तसहस्सारकप्पोवगवेमाणिय जाव कम्मासीविसे, अपज्जत्तसहस्सारकप्पोवगजावकम्मासीविसे,एवं जाव नो पज्जत्तसहस्सारकप्पोवगवेमाणिय जाव कम्मासीविसे, अपज्जत्तसहस्सारकप्पोवगजावकम्मासीविसे,एवं जाव नो पज्जत्तसहस्सारकप्पोवगवेमाणिय जाव कम्मासीविसे, अपज्जत्तसहस्सारकप्पोवगजावकम्मासीविसे ॥ (सूत्रं ३१५) ॥ [प्र0] जो कल्पोपपत्नक वैमानिक देव कर्माशीविष छे, तो छं सौधर्मकल्पोपपत्नक यावत् कर्माशीविष छे के यावत् अच्युत- कल्पोपपत्नक देव कर्माशीविप छे ? [उ0] हे गौतम ! सौधर्मकल्पोपपत्नक वेमानिक देव कर्माशीविप छे. यावत् सहस्रारकल्पोपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविप छे; पण आनतकल्पोपत्रक. यावत् अच्युतकल्पोपपत्नक वमानिक देव कर्माशीविप छे. यावत् सहस्रारकल्पोपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविप छे; पण आनतकल्पोपत्रक. यावत् अच्युतकल्पोपपत्नक वमानिक देव कर्माशीविप छे. यावत् सहस्रारकल्पोपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविप छे; पण आन्यत्रकल्पोपत्रक. यावत् अच्युतकल्पोपपत्नक वमानिक देव कर्माशीविप छे यावत् द्व कर्माशीविप छे के अपर्याप्त सौधर्मकल्पोपपत्नक वैमानिक देव कर्माशीविप छे, तो छं पर्याप्त सौधर्मकल्पोपत्रक वैमानिक देव कर्माशीविप छे के अपर्याप्त सौधर्मकल्पोपपत्नक वैमानिक देव वर्माशीविप छे? [उ0] हे गौतम ! पर्याप्त सौधर्मकल्पोपत्रक वैमानिक देव कर्माशीविप नथी, पण अपर्याप्त सौधर्मकल्पोपपत्नक वैमनिक देव यावत् कर्माशीविप छे, ॥ ३१५ ॥ दस्त ठाणाईं छउमत्थे सन्वत्रभावेणं न जाणह न पासड, तंजहा–धम्मत्थिकायं १ अधम्मत्थिकायं २ आगा- सत्थिकायं ३ जीवं असरीरपडिवद्धं ४ परमाणुपोग्गल ५ सद्तं ६ गंघ ७ वातं ८ अयं जिणे भविसस्तइ वा ण वा भविससह ९ अयं सन्वदुक्ग्लाणं अंतं करेस्सति वा न वा करेस्सह १०॥ एयाणि चेव उपन्ननाणदंसणधर्दे अरहा	****	ຈຸ
Ś	भविस्सइ ९ अयं सव्वदुकखाणं अंतं करेस्सति वा न वा करेस्सइ १०॥ एयाणि चेव उपान्ननाणदंसणघरे अरहा		

 भ्याख्या- प्रव्रक्षिः प्रव्रक्षिः प्रव्रक्षिः प्रव्रक्षिः प्रव्रक्षिः प्रव्रक्षिः प्रव्रक्षिः प्रव्रक्षिः प्रव्रक्षिः प्रव्रक्षिः प्रव्रक्षिः प्रव्रक्षिः प्रवर्षे अर्घमास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, श्ररीररहित, (इक्ति) जीव, परमाणुपुर्द्रगल, शब्द, गंध, वायु, आ जीव जिन थशे के नहि? अने अर्घमास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, श्ररीररहित, (इक्ति) जीव, परमाणुपुर्द्रगल, शब्द, गंध, वायु, आ जीव जिन थशे के नहि? अने अर्घमास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, श्ररीररहित, (इक्ति) जीव, परमाणुपुर्द्रगल, शब्द, गंध, वायु, आ जीव जिन थशे के नहि? अने आ जीव सर्व दुःखोनो अन्त करशे के नहि? ए दश स्थानोने उत्पन्न ज्ञान-दर्शनने घारण करनार अर्हत्. जिन, केवली सर्वप्रार्थ्या साक्षर्य ज्ञानेव सर्व दुःखोनो अन्त करशे के नहि? ए दश स्थानोने उत्पन्न ज्ञान-दर्शनने घारण करनार अर्हत्. जिन, केवली सर्वप्रार्थ्य साक्षर ज्ञान्थी जाणे छे अने जुए छे. जेमके धर्मास्तिकाय, यावत् आ जीव सर्वदुःखोनो अंत करशे के नहि. ॥ ३१६ ॥ कतिबिहे णं भंते ! नाणे पन्नत्ते ?, गोयमा ! पंचविहे नाणे पन्नत्ते, तंजहा-आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे ओहिनाणे मणपज्जवनाणे केवलनाणे, से क्तिं तं आभिणिबोहियनाणे ?, आभिणिबोहियनाणे चउव्विहे प्रकत्ते, तंजहा-उग्गहो ईहा अवाओ घारणा, एवं जहा रायपपसेणइए णाणाणं भेदो तहेव इहवि भाणिपव्यद्वो जाव सेत्तं केवल्जनाणे ॥ अन्नाणे णं अंते ! कतिबिहे पण्णत्ते ?, गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तंजहा- प्रगहो सुर्य अन्नाणे सुयअन्नाणे विभंगन्नाणे ! से किं तं महअन्नाणे ?, २ चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा- प्रगहो । से किं तं उग्गहे ?, २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-अत्थोग्गहे य वंजणोग्गहे य, एवं जहेव आभिणि- भा हियनाणं तहेव, नवरं एगट्टियवज्ञं जाव नोइंदियधारणा,सेत्तं घारणा,सेत्तं महअन्नाणे । से किं तं सुयअन्नाणे ! २ जं इमं अन्नाणिएहिं भिच्छदिटिएहिं जहा नदीए जाव चत्तारि वेदा संगोवंगा, सेत्तं सुयु अही । [म०] हे भगवन् ! ज्ञान देरेला प्रकारे कर्हा थ्रे ? [उ०] हे गौतम ! ज्ञान पांच प्रकारे कर्हा थ्रे छे. ते आ प्रमाणे-अभिनिकोधि-
--

र् इंयाल्या- हे गौतम ! आभिनिबोधिक ज्ञान चार प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे-अबग्रह, ईहा, अपाय अने धारणा. जेम 'राजप्रश्नीय' सत्रमां	र ८ शतके
ि हि इ गातम आमाननाधिक ज्ञान चार प्रकार छ, ते आ प्रमाण-अवग्रह, इहा, अपाय अने धारणा. जम राजप्रश्नाय स्त्रमा क्र	उद्देशः २
प्रहासिः 👔 ज्ञानोना प्रकार कहा छे तेम अहीं पण कहेवा; यावत् 'ए प्रमाणे केवलज्ञान कहुं' त्यांतुधी कहेवुं. [प्र॰] हे भगवन् ! अज्ञान केटला 🗙	1168411
ा६१५॥ 🕻 प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! अज्ञान त्रण प्रकारे कह्युं छे, ने आ प्रमाणे–मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने विभंगज्ञान. [प्र०] हे 🏅	
🜴 भगवन् ! मतिअज्ञान केंटला प्रकारे कह्युं छे? [उ०] हे गौतम ! मतिअज्ञान चार प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे-अवग्रह, यावत धारणा.	2
👔 [प०] अवग्रह केटला प्रकारे छे ? [उ०] अवग्रह वे प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणेअर्थावग्रह अने व्यंजनाग्रह-ए प्रमाणे जेम	5
🧩 समानार्थक बब्दो कहेला छे ते शिवाय यावत् नोइन्द्रियधारणा सुधी कहेवुं, ए प्रमाणे धारणा कही. ए प्रमाणे मतिअज्ञान कर्युं.	
परिष्ठपति जानगणात्रियायकशान सपत्र कर्यु छ तम जहा पर्य जागदु. परन्तु त्या जानिनमाविकशाम प्रसंग जवप्रहायमा एकायक समानार्थक शब्दो कहेला छे ते शिवाय यावत् नोइन्द्रियधारणा सुधी कहेवुं, ए प्रमाणे धारणा कही. ए प्रमाणे मतिअज्ञान कर्यु [म॰] श्रुतअज्ञान केवा प्रकारतुं छे? [उ॰] 'जे अज्ञानी एवा मिथ्यादृष्टिओए प्ररूप्युं छे'-इत्यादि नंदीसत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् सांगोपांग चार वेद ते श्रुतअज्ञान, ए प्रमाणे श्रुतअज्ञान कद्युं.	
संगोपांग चार वेद ते श्रुतअज्ञान, ए प्रमाणे श्रुतअज्ञान कद्युं.	
से किं तं विभंगनाणे ?, २ अणेगविहे पण्णत्ते, तंजहा-गामसंठिए नगरसंठिए जाव संनिवेससं-	2
ठिए दीवसंठिए समुद्दसंठिए वाससंठिए वासहरसंठिए पव्वयसंठिए रुव्यसंठिए थूभसंठिए हयसंठिए गय-	<u>}</u>
र्भेडिए नरसंठिए किंनरसंठिए किंदुरिससंठिए महोरगगंधव्वसंठिए उसभसंठिए पसुपसायविहगवानरणाणा-	
x miss method in the state of the second	
र संठाणसंठिए पण्णते ॥ जीवा णं भंते ! किं नाणी अन्नाणो ?, गोयमा ! जीवा नाणीवि अन्नाणीवि, जे	

आकार, वर्ष (भारतादिक्षत्र) न आकार, वर्षधपवतने आकार, पवतने आकार, इक्षना आकार, स्तूपना आकार, घाडाना आकार, हाथीना आकारे, मनुष्यना आकारे, किंनरना आकारे, किंपुरुषना आकारे, महोरगना आकारे, गंधर्वना आकारे, ष्ट्रषभना आकारे, पशु, पसय, पक्षी अने वानरना आकारे-प प्रमाणे अनेक आकारे विभंगज्ञान कहेलुं छे. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. जे जीवो ज्ञानी छे तेमां केटलाएक बे ज्ञानवाळा, केट लाएक त्रण ज्ञानवाळा, केटलाक चार ज्ञानवाळा अने केटलाक एक ज्ञानवाळा छे, जे बे ज्ञानवाळा छे ते मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान- बाळा जे त्रण ज्ञानवाळा छे ते मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अने अवधिज्ञानवाळा छे, अथवा मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अने मनःपर्यवज्ञानवाळा छे, जे चारज्ञानवाळा छे ते मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञानवाळा छे. जे एक ज्ञानवाळा छे ते अवश्य एक केवळ्ज्ञा-	याख्या- प्रज्ञतिः ॥६१६॥	प्राप्त आगमणिबाहियनाणा य सुयनाणा य, ज तम्राणा त आगमणिबाहियनाणा सुयनाणा आहिनाणा अहवा आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी मणपज्जवनाणी, जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी, ओहिनाणी मणपज्जवनाणी, जे एगनाणी ते नियमा केवलताणी, जे अन्नाणी ते अत्थेगतिया दुअन्नाणी अत्थेगतिया तिअन्नाणी, जे दुअन्नाणी ते मइअन्नाणी य सुयअन्नाणी य, जे तियअन्नाणी ते मइअन्नाणी सुयअन्नाणी विभंगनाणी। [प0] हे मगवन! विभंगज्ञान केटला प्रकारनुं कधुं छे? [उ0] विभंगज्ञान अनेक प्रकारनुं कखुं छे, ते आ प्रमाणे-ग्रामने आकारे, वर्ष (भारतादिक्षेत्र) ने आकारे, वर्षधपर्वतने आकारे, पर्वतने आकारे, इक्षना आकारे, संतूरना आकारे, घोडाना आकारे, हाथीना आकारे, मनुष्यना आकारे, वर्षधपर्वतने आकारे, पर्वतने आकारे, इक्षना आकारे, संतूरना आकारे, घोडाना आकारे, हाथीना आकारे, मनुष्यना आकारे, किंनरना आकारे, किंपुरुषना आकारे, महोरगना आकारे, गंधर्वना आकारे, घोडाना आकारे, पशु, पसय, पक्षी अने वानरना आकारे–ए प्रमाणे अनेक आकारे विभंगज्ञान कहेलुं छे. [प0] हे भगवन! द्यं जीवी ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ0] हे गौतम! जीवो ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. जे जीवो ज्ञानी छे तेमां केटलाएक वे ज्ञानवाला, केट लाएक त्रण ज्ञानवाळा, केटलाक चार ज्ञानवाला अने केटलाक एक ज्ञानवाळा छे, जे बे ज्ञानवाला छे ते मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान- र वाळा जे त्रण ज्ञानवाळा छे ते मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अने अवधिज्ञानवाला छे, अथवा मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अने मनःपर्यवज्ञानवाला छे,	८ शतके उद्देशः २ ॥६१६॥
---	-------------------------------	--	------------------------------

पूर्वाळा छे. जे जीवो अज्ञानी छे तैमां केंटलाक वे अज्ञानवाळा अने केंटलाक त्रण अज्ञानवाळा छे. जे वे अज्ञानवाळा छे ते मतिअ- ज्ञान, अने श्रुतअज्ञानवाळा छे, अने जेओ त्रण अज्ञानवाळा छे तेओ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अने विभंगज्ञानवाळा छे. नेरइया णं भंते ! किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि, जे नाणी ते नियमा तिझाणी, तंजहा-आभिणिवोहि॰ सुयना॰ ओहिना॰, जे अन्नाणी ते अत्थेगतिया दुअन्नाणी अत्थेगतिया तिअन्नाणी, एवं तिन्नि अन्नाणाणि भयणाए। असुरकुमारा णं भंते ! किं नाणी अन्नाणी ?, जहेव नेरइया तहेव तिन्नि नाणाणि नियमा, तिन्नि अन्नाणाणि भयणाए, एवं जाव थणियकु॰। पुढविकाइया णं भंते ! किं नाणी अन्नाणी?, गोयमा ! नो नाणी, अन्नाणी, जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी-मइअन्नाणी य सुय- अन्ना॰, एवं जाव वणस्सइका॰। बेइंदियाणं पुच्छा, गोयमा ! णाणीवि अन्नाणीवि, जे नाणी ते नियमा दुन्नाणी, तंजहा-आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य, जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी, तं॰आभिणिबोहिय- अन्नाणी, तंजहा-आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य, जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी, तं॰आभिणिबोहिय- अन्नाणी सुयअन्नाणी, एवं तेइंदियचं उरिंदियावि. पंचिंदियतिरिक्खजो॰ पुच्छा, गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीति, तं॰आभिणिबोहिय- अन्नाणी सुयअन्नाणी, एवं तेइंदियचं दिंदियावि. पंचिंदियतिरिक्खजो॰ पुच्छा, गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि, जे नाणी ते अत्थे॰ दुन्नाणी, अत्थे॰ तिन्ना॰, एवं तिन्नि नाणाणि निन्नि अन्नाणाणि य भयणाए । मणुस्सा जहा जीवा तहेव पंच नाणाणि तिन्नि अन्नाणाणि भयणाए । वाणमंत॰ जहा ने॰, जोइसियवेमाणियाणं	८ शतके उद्देशः २ अदृ१७॥
त्र पाणा से अत्येष दुन्नाणा, अत्येष तन्नाप, उप तिन्न पाणाण गिनन अन्नाणाण य मयणाए म्युस्सा जहा जीवा तहेव पंच नाणाणि तिन्नि अन्नाणाणि भयणाए। वाणमंत॰ जहा ने॰, जोइसियवेमाणियाणं तिन्नि नाणा तिन्नि अन्नाणा नियमा। सिद्धा णं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! णाणी, नो अन्नाणी, नियमा एगमाणी ते केवलनाणी (सूत्रं ३१७)॥	

थाख्या- प्रज्ञतिः ॥६१८॥	[प्र॰] हे भगवन ! मारको शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी ? [उ॰] हे गौतम ! नारको ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. तेमां जे ज्ञानी छे ते अवश्य त्रण ज्ञानवाळा होय छे,ते आ प्रमाणे-मतिज्ञान, अतज्ञान अने अवधिज्ञानवाळा छे. जे अज्ञानी छे तेंमां केटलाक वे अज्ञानवाळा छे अने केटलाएक त्रण अज्ञानवाळा छे. ए प्रमाणे त्रण अज्ञानी भजनाए (विकल्पे) होय छे. [प्र॰] हे भगवन ! असुरकुमारो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ॰] जेम नैरयिको कह्या तेम असुरकुमारो जाणवा. अर्थात् जेओ ज्ञानी छे तेओ अवश्य त्रण ज्ञानवाळा होय छे, अने जेओ अज्ञानी छे तेओ भजनाए त्रण अज्ञानवाळा होय छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितक्रमारो सुधी जाणवुं. [प्र॰] हे भगवन् ! पृथिवीकायिको शुं ज्ञानी छे तेओ भजनाए त्रण अज्ञानवाळा होय छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितक्रमारो सुधी जाणवुं. [प्र॰] हे भगवन् ! पृथिवीकायिको शुं ज्ञानी छे तेओ भजनाए त्रण अज्ञानवाळा होय छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितक्रमारो सुधी जाणवुं. [प्र॰] हे भगवन् ! पृथिवीकायिको शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ॰] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी नथी पण अज्ञानी छे, अने ते अव- इय बे अज्ञानवाळा छे, मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी. ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिक सुधी जाणवुं. [प्र॰] बेइन्द्रिय जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. जेओ ज्ञानी छे तेओ अवश्य बे ज्ञानवाळा छे, ते आ प्रमाणे-मतिज्ञानी अने श्रुतज्ञानी. जेओ अज्ञानी थे अवक्य वे अज्ञानवाळा छे; ते आ प्रमाणे-मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी. ए प्रमाणे त्रीइन्द्रिय अने चडरिन्द्रिय जीवो संबन्धे पण जाणवुं. [प्र०] पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिको शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी छे अने अज्ञानी पण छे, जेओ ज्ञानी छे तेमां केटलाक वे ज्ञानवाळा, अने केटलाक त्रण ज्ञानवाळा छे, ए प्रमाणे त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए (विकल्पे) जाणवां, जीवोनी पेठे मनुष्योने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय		
	प्रमाणे त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए (विकल्पे) जाणवां, जीवोनी पेठे मनुष्योने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. नैरयिकोने कह्युं (स्व. २५.) तेम वानव्यतरोने जाणवुं. ज्योतिषिको अने वैमानिकोने अवश्य त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे. [प्र॰] हे भगवन् ! सिद्धो छुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! सिद्धो ज्ञानी छे पण अज्ञानी नथी. तेओ अवश्य	× 1591	

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६१९॥	एकं केवलज्ञानवाळा छे. ॥ ३१७ ॥ निरयगइया णं भंते ! जीवा किं नाणी अञ्चाणी ?, गोयमा ! माणीबि अञ्चाणीबि, तिन्नि नाणाइं नियमा, तिन्नि अञ्चाणाइं भयणाए । तिरियगइया णं भंते ! जीवा किं नाणी अञ्चाणी ?, गोयमा ! दो नाणा दो अञ्चाणा नियमा । मणुस्सगइया णं भंते ! जीवा किं नाणी अञ्चाणी ?, गोयमा ! तिनि नाणाइं भयणाए, दो अञ्चाणाइं नियमा, देवगतिया जहा निरयगतिया । सिद्धगतिया णं भंते ! जहा सिद्धा १ ॥ सहंदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अञ्चाणी ?, गोयमा ! चत्तारि नाणाइं, तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । एगिंदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी० ?, जहा पुढविकाइया बेइंदियतेइंदियचउरिंदियाणं दो नाणा दो अन्नाणा नियमा । पंचिंदिया	भू उद्देशः २ २ २ २ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	ર
	 किं नाणी० ?, जहा पुढविकाइया बेइंदियतेइंदियचउरिंदियाणं दो नाणा दो अन्नाणा नियमा। पंचिंदिया जहा सहैदिया। अणिंदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी०?, जहा सिद्धा २ ॥ सकाइया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! पंच नाणाणि, तिन्नि अन्नाणाई भयणाए । पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया नो नाणी, अन्नाणी ?, गोयमा ! पंच नाणाणि, तिन्नि अन्नाणाई भयणाए । पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया नो नाणी, अन्नाणी, नियमा दुअन्नाणी, तंजहा-मतिअन्नाणी य सुयअन्नाणी य, तसकाइया जहा सकाइया । [प्र०] हे भगवन् ! निरयगतिक-नरकगतिमां जता जीवो शुं ज्ञानी होय छे के अज्ञानी होय छ? [उ०] हे गौतम ! ते ज्ञानी पण होय छे अने अज्ञानी पण होय छे, (जेओ ज्ञानी छे) तेओने अवश्य त्रण ज्ञान होय छे अने (जे अज्ञानी होय छे? [उ०] त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यचगतिक-तर्यचगतिक-तर्यचगतिमां जता जीवो शुं ज्ञानी होय छे अने (जे अज्ञानी होय छे? [उ०] हे गौतम ! ते ज्ञानी खेत्राने.) त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यचगतिक-तर्यचगतिक-तर्यचगतिमां जता जीवो शुं ज्ञानी होय छे के अज्ञानी होय छे ते अज्ञानी होय छे? [उ०] हे गौतम ! ते ज्ञानी खे] त्रिया विक-तर्यचगतिक-तर्यचगतिमां जता जीवो शुं ज्ञानी होय छे अने (जे अज्ञानी होय छे? [उ०] हे गौतम ! ते जानी हो य छे वज्ञानी राज्य होय छे. (जेओ ज्ञानी छे) तेओने अवश्य त्रण ज्ञान होय छे अने (जे अज्ञानी होय छे? [उ०] हे गौतम ! तिर्यचगतिक-तर्यचगतिमां जता जीवो.) त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यचगतिक-तिर्यचगतिमां जता जीवो शुं ज्ञानी होय छे के अज्ञानी होय छे? [उ०] हे गौतम ! ते ज्ञानी होय छे? [उ०] 	4-13-13-13-10-1	

याख्या- प्रज्ञक्षिः ॥६२०॥	होय के अज्ञानी होय ? [उ०] हे गौतम ! तेओने भजनाए (विकरपे) त्रण ज्ञान होय छे अने अवस्य वे अज्ञान होय छे. देवग- तिक-देवगतिमां जता जीवो-निरयगतिनी पेठे (सू० २१.) जाणवा. [प०] हे भगवन ! सिद्धिगतिमां जता जीवो छं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सिद्धोनी पेठें (सू० २०) जाणवा. [प०] हे भगवन ! सेन्द्रिय-इन्द्रियवाळा-जीवो छं ज्ञानी होय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सिद्धोनी पेठें (सू० २०) जाणवा. [प०] हे भगवन ! सेन्द्रिय-इन्द्रियवाळा-जीवो छं ज्ञानी होय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सिद्धोनी भजनाए चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे. [प०] हे भगवन ! एकेन्द्रिय जीवो छं ज्ञानी होय ? [उ०] हे गौतम ! तेओने भजनाए चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे. [प०] हे भगवन ! एकेन्द्रिय जीवो छं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ०] हे गौतम ! प्रधिवीकायिकनी पेठे (स० २७.) (एकेन्द्रिय जीवो) जाणवा. बेइ- न्द्रिय, त्रींद्रिय, चर्डीरंद्रिय जीवोने अवस्य बे ज्ञान अने वे अज्ञान होय छे. पंचेंद्रिय जीवो सेन्द्रिय जीवो) जाणवा. बेइ- न्द्रिय, त्रींद्रिय, चर्डीरंद्रिय जीवोने अवस्य बे ज्ञान अने वे अज्ञान होय छे. पंचेंद्रिय जीवो सेन्द्रिय जीवोनी पेठे (स० २०.) जाणवा. [प०] हे भगवन ! अनिद्रिय-इंद्रियरहित-जीवो छं ज्ञानी होय? [उ०] हे गौतम ! तेओ सिद्धनी पेठे (स० २०.) जाणवा. [प०] हे भगवन ! सकायिक जीवो छं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय? [उ०] हे गौतम ! तेओ सिद्धनी पेठे (स० २०.) जाणवा. [प०] हे भगवन ! सकायिक जीवो छं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय? [उ०] हे गौतम ! तेओने पांच ज्ञान अने प्रण अज्ञान भजनाए होय छे. पृथिवीकायिक यावत् वनस्पतिकाथिक जीवो ज्ञानी नथी पण अज्ञानी होय छे, अने ते अवस्य वे अज्ञानवाळा होय छे, ते आ प्रमाणे-मतिअज्ञानवाळा अने श्रुतअज्ञानवाळा. त्रसकायिक जीवो सकायिक जीवोनी पेठे जाणवा. अकाइया णं भंते ! जीवा किं नाणी०? जहा सकाइया । नोस्ठिहमा णं भंते ! जीवा कि नाणी०? जहा सिद्धा ४ ॥ पज्जत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी०?, जहा सकाइया । पोस्रुहमावोबादरा णं भंते ! जीवा० जहा सिद्धा ४ ॥ पज्जत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी० ?, जहा सकाइया । पुद्धत्ता णं भंते ! नेग्इया किं नाणी० ?, तिन्नि नाणा, तिन्नि अन्नाणा नियमा, जहा नेरहए एवं जाव थणिय क्रमारा । पुढविकाइया जहा एगिंदिया, एवं जाव चउरिं-	
1	הוא שאושו ושאשו, שפו שנפג גם שום בושים איונו ו נויד וויד וויד איויד איויד אייד אייד אייד	

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥३२१॥	दिया। पज्जत्ता णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किं नाणी अज्ञाणी ?, तिक्ति नाणा तिन्नि अन्नाणा भयणाए। मणुस्सा जहा सकाइया। वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया जहा नेरइया। अपज्जत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी॰ २?,तिन्नि नाणा, तिन्नि अज्ञाणा भयणाए । अपज्जत्ता णं भंते! नेरतिया किं नाणी अज्ञाणी?,तिन्नि नाणा नियमा, तिन्नि अन्नाणा भयणाए, एवं जाव थणियक्रमारा । पुढविकाइया जाव वणस्मइकाइया जहा एगिंदिया। [प्र॰] हे भगवन् ! कायरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ॰] हे गौतम ! सिद्धोनी पेठे (स॰ ३०) तेओ जाणवा. [प्र॰] हे भगवन् ! कायरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ॰] हे गौतम ! सिद्धोनी पेठे (स॰ ३०) तेओ जाणवा. [प्र॰] हे भगवन् ! सक्ष्म जीवो शुं ज्ञानी छे हे अज्ञानी छे ? [उ॰] एथिवीकायिकोनी पेठे (स॰ २०.) जाणवा. [प्र॰] हे भग वन् ! वादरजीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ॰] हे गौतम ! सकायिक जीवोनी पेठे (स॰ २८.) जाणवा. [प्र॰] हे भगवन् ! नेसक्ष्म नोवादर जीवो शुं ज्ञानी छे ? [उ॰] हे गौतम ! सकायिक जीवोनी पेठे (स॰ २८.) जाणवा. [प्र॰] हे भगवन् ! नेसक्ष्म नोवादर जीवो शुं ज्ञानी छे ? [उ॰] सिद्धोनी पेठे (स॰ ३०.) जाणवा. [प्र॰] हे भगवन् ! पर्याप्त जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ॰] सकायिक जीवोनी पेठे (स॰ ३०.) जाणवा. [प्र॰] हे भगवन् ! पर्याप्त जीवो शुं ज्ञानी छे ? [उ॰] सकायिक जीवोनी पेठे (स॰ ३८.) जाणवा. [प्र॰] हे भगवन् ! पर्याप्त जीवो शुं ज्ञानी छे ? [उ॰] सकायिक जीवोनी पेठे (स॰ ३८.) जाणवा. [प्र॰] हे भगवन् ! पर्याप्त स्वत्ति तक्कमान छे ? [उ॰] हे गौतम ! तेओने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान अवध्य होय छे. जेम नैरयिको माटे कढ़ तेम यावत् स्तनि तक्कमार देवो माटे जाणवुं. एथिवीकायिको एकेन्द्रियनी पेठे (स॰ ३६.) जाणव ^र . ए प्रमाणे यावत् चडरिंद्रिय जीवो जाणवा. [प्र॰] हे भगवन् ! पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिको ह्यं ज्ञानी छे ? [ज्ञ] हो याववार्यात्र हो हो हो त्रान्य ? प्रत्न विक्र स्वान्य हे स्वर्यति येचे त्राय्वयोनिको हा जान्या त्यावयाव्य त्यात्र त्योन्ते त्रण ज्ञान अने त्रण	द सतक त्र उद्देशः २ म म म म म म म म म म म म म म म म म म न म
	[प्र॰] हे भगवन् ! पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिको छं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे, मनुष्यो सकायिकनी पेठे (सू० ३८) जाणवा. वानव्यंतरो, ज्योतिषिको अने वैमानिको नैयिकनी पेठे (सू० २५.) जाणवा. [प्र०] हे भगवन् ! अपर्याप्त जीवो छुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण ज्ञान अमे	あずま

याख्या-

प्रज्ञाक्षः

ાાદ્વરા

	तान भजनाए छे. [प्र॰] हे भगवन् ! अपर्याप्त नेरयिको छुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ॰] हे गौतम ! तेओने अवक्य न छे अने भजनाए त्रण अज्ञान छे, ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमार देवो जाणवा. जेम एकेन्द्रियो संबन्धे (स॰ ३६.) कखुं ार्याप्त प्रथिवीकायिकथी आरंभी वनस्पतिकायिक पर्थन्त कहेवुं. विद्याणं पुच्छा, दो नाणा दो अन्नाणा णियमा, एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं । अपज्जत्तगा णं मणुस्सा किं नाणी अन्नाणी?,तिन्नि नाणाइं भयणाए,दो अन्नाणाईं नियमा,वाणमंतरा जहा नेरहया,अपज्ज जोइसियवेमाणिया णं तिन्नि नाणा, तिन्नि अन्नाणा नियमा । नोपज्जत्तगानोअपज्जत्तगा णं भंते ! जीवा णी॰ ?, जहा सिद्धा ५ ॥ निरयभवत्था णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, जहा निरयगतिया । ाभवत्था णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, तिन्नि नाणा, तिन्नि अन्नाणा भयणाए । मणुस्सभवत्था ाहा सकाइया । देवभवत्था णं भंते ! जहा निरयभवत्था । अभवत्था जहा सिद्धा ६ ॥ भवसिद्धिया णं जीवा किं नाणी॰ ?, जहा सकाइया, । अभवसिद्धियाणं पुच्छा, गोयमा ! नो नाणी, अन्नाणी, तिन्नि ाइं भयणाए । नोभवसिद्धियानोअभवसिद्धिया णं भंते ! जीवा० जहा सिद्धा ७ ॥ सन्नीणं उच्छा जहा या, असन्नी जहा इंदिया, नोसन्नीनोअसन्नी जहा सिद्धा ८ ॥ (स्त्रं ३१८) ॥ प्रवर्भा बेइन्द्रिय जीवो ज्ञानी के ज्ञानी ? [उ॰] तेश्रेने वे ज्ञान अन्वर्थ होय छे. ए प्रमाणे यावत् य तिर्थचयोनिक सुधी जाणवुं. [प॰] हे भगवन् ! अपर्याप्त मनुष्य छुं ज्ञानी होय छे के ज्ञानी होय छे? [उ०] हे गौतम !	उद्देश्वः २ ॥६२२॥
--	--	----------------------

च्याख्या-	Š.	तेओने त्रण ज्ञान भजनाए होय छे अने अवश्य बे अज्ञान होय छे. नैरयिकोनी पेठे (सू० ४७.) बानव्यंतरोने जाणवुं. तथा अपर्याप्त ज्योतिषिको अने वैमानिकोने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान अवश्य होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! नोपर्याप्त अने नोअपर्याप्त जीवो छं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सिद्धनी पेठे (सू० ३०.) जाणवा. [प्र०] हे भगवन् ! निरयभवस्य जीवो छ	र् ८ अतके
प्रज्ञप्तिः	Ç	नाताचन जन पंतानपति प्रव शान जन पंत जरान नातन जन छ। [नज] ह पंतप्र जिल्ला पंता पंता प्रवास जीवों यां	र उद्देशः २
সহাম্য	R	शाना छ के अज्ञाना छ? उ० हि गातम र तआ तिक्षेता पठ (दर २७.) जाणवा. [म०] ह मगवर्ग गर्पणगर्पणगर्प जाग छ	יע
।।इ२३॥	G	ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ निरयगतिकनी पेठे (मू० ३१.) जाणवा. [प्र०] हे भगवन ! तिर्यगभवस्थ जीवो	।।६२३॥
	¥	शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए छे. [प्र०] हे भगवन् ! मलुष्यवस्थ	
	N)	जीवो छुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सकायिकनी पेठे (स॰ ३८.) जाणवा [प०] हे भगवन ! देवभवस्थ	5
	Ç	जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ निरयभवस्थनी पेठे (सू० ५१.) जाणवा. अभवस्थ-भवमां नहि रहेनारा	X
	X	(ग़ुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ॰] हे गौतम ! तेओ) सिद्धोनी पेठे (सू॰ ३०.) जाणत्रा. [प्र॰] हे भगवन् ! भवसिद्धिक∽भव्य	*
	1:50 A.S.	जीवो छुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सकायिकनी पेठे (ग्रू० ३८.) जाणवा. [प्रव] हे भगवन् ! अभवत्मिद्धिक	Ž.
	Ç	अभव्य जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी नथी पण अज्ञानी छे, अने तेओने त्रण अज्ञान भजनाए	<u>S</u>
	Ę	होय छे. पि०ो हे भगवन ! नोभवमिदिक नोअभवसिदिक जीवो ये जानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सिद्धांनी 🛽	*
	S	पेठे (सू० ३०.) जाणवा. [प्र०] हे भगवन्! संज्ञिजीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! तेओ सेन्द्रियनी	2
	A Contraction	पेठे (सू० ३५.) जाणवा. असंज्ञिजीवो बेइन्द्रियनी पेठे (सू० २८.) जाणवा. नोसंज्ञि-नोअसंज्ञि जीवो सिद्धोनी पेठे (सू०	ちょう
	H	३०.) जाणवा. ॥ ३१८ ॥	<i>4</i>
1	31 3		

For Private and Personal Use Only

याख्या- प्रज्ञक्षिः ॥६२४॥	र परिस्टिद्धा र परिसाथारस्टलद्धा 8 दोणलद्धा प लामलद्धा द मागलद्धा ७ उवमागलद्धा ८ विरियलद्धा ९ इंदियलद्धी १० । णाणलद्धी णं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ?, गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा-आभिणियो- हियणाणलद्धी जाव केवलणाणलद्धी ॥ अन्नाणलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?, गोयमा ! तिविहा पण्ण ता, तंजहा-मइअन्नाणलद्धी सुयअन्नाणलद्धी विभगनाणलद्धी ॥ दंसणलद्धी णं भंते ! कतिविहा पन्नत्ता ?, गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तंजहा-सम्मद्दंसणलद्धी मिच्छादंसणलद्धी सम्मामिच्छादंसणलद्धी ॥ चरित्तलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?, गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा-सामाइयचरित्तलद्धी छेदोवट्टावणिय॰लद्धी परिहारविसुद्ध०लद्धी सुहुमसंपराग॰लद्धी अहक्खायचरित्तलद्धी॥चरित्ताचरित्तलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एगागारा पण्णत्ता, एवं जाव उवभोगलद्धी एगागारा पन्नत्ता ॥ वीरियलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एगागारा पण्णत्ता, एवं जाव उवभोगलद्धी एगागारा पन्नत्ता ॥ वीरियलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एगागारा पण्णत्ता, एवं जाव उवभोगलद्धी एगागारा पन्नत्ता ॥ वीरियलद्धी जं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? हाथ, २ दर्शनर्था , रे चारित्रलिध, कही छे ? [उ॰] हे गौराम ! लध्धि दग्न प्रकारे कही छे, ते आ प्रमाणे-१ ज्ञान- हाथ, २ दर्शनर्शा , ३ चारित्रलिध, ४ चारित्राचारित्रलब्धि, ५ दानलध्धि, ६ लाभलध्धि, ७ भोगलघ्धि, ८ उपभोगलब्धि पांच	८ शतके उद्देश्वः २ ॥६२४॥
	🕻 ९ वीर्यलब्धि, अने १० इन्द्रियलब्धि, [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानलब्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्ञानलब्धि पांच है प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे-आभिनिबोधिकज्ञानलब्ध, यावत् केवलज्ञानलब्धि. [प्र०] हे भगवन् ! अज्ञानलब्धि केटला प्रका	

प्रकारनी कही छे. [प्र॰] हे भगवन् ! वीर्यलब्ध केटला प्रकारनी कही छे ? [उ॰] हे गौतम ! वीर्यलब्ध प्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे-बालवीर्थलब्धि पंडितवीर्थलब्ध अने बालपंडितवीर्थलब्ध. इंदियलद्धो णं भंते ! कतिबिहा पण्णत्ता?,गोयमा! पंचबिहा पण्णत्ता,तंजहा-सोइंदियलद्धी जाव फासिंदि यलद्धी॥ नाणलद्धिया णं भंते! जीवा किं नाणी अन्नाणी?, गोयमा! नाणी, नो अन्नाणी, अध्येगतिया दुन्नाणी,एवं पच नाणाइं भयणाए। तस्स अलद्धिया णं भंते! जीवा किं नाणी अन्नाणी?,गोयमा! नो नाणी, आन्नाणी, अत्थेगतिया दुन्नाणी,एवं दुअन्नाणी,तिन्नि अन्नाणाणि भयणाए। आभिणिबोह्त्यिणाणलद्धिया णं भंते! जीवा किं नाणी अन्नाणी?, गोयमा! नाणी, नो अन्नाणी, अत्थेगतिया दुन्नाणी, चत्तारि नाणाइं भयणाए। तस्स अलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि, जे नाणी ते नियमा प्रगनाणी केन्नलनाणी, जे अन्नाणी ते अत्थेगहया		आ प्रमाणे-सम्यग्दर्शनलब्धि, मिथ्यादर्शनलब्धि अने सम्यग्मिथ्यादर्शनलब्धि. [प्र०] हे भगवन् ! चारित्रलब्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! चारित्रलब्धि पांच प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे- ? सामायिकचारित्रलब्धि, २ छेदोपस्थानीयचा- रित्रलब्धि, ३ परिहारविशुद्धिकचारित्रलब्धि, ४ सक्ष्मसंपरायचारित्रलब्धि अने ५ यथाख्यातचारित्रलब्धि, २ छेदोपस्थानीयचा- रित्रलब्धि, ३ परिहारविशुद्धिकचारित्रलब्धि, ४ सक्ष्मसंपरायचारित्रलब्धि अने ५ यथाख्यातचारित्रलब्धि, २ छेदोपस्थानीयचा- रित्रलब्धि, ३ परिहारविशुद्धिकचारित्रलब्धि, ४ सक्ष्मसंपरायचारित्रलब्धि अने ५ यथाख्यातचारित्रलब्धि, [प्र०] हे भगवन् ! चारित्राचारित्रलब्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! एक प्रकारनी कही छे, ए प्रधाणे [दानलब्ध,] यावत् उपभो- गलब्धि पण एक प्रकारनी कही छे. [प्र०] हे भगवन् ! वीर्यलब्ध केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! वीर्यलब्धि त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे-बालवीर्थलब्धि पंडितवीर्थलब्धि अने बालपंडितवीर्यलब्धि. इंदियलद्धी णं भंते ! कतिबिहा पण्णत्ता?,गोयमा! पंचविहा पण्णत्ता,तंजहा-सोइंदियलद्धी जाव फासिंदि यलद्धी॥ नाणलद्धिया णं भंते! जीवा किं नाणी अन्नाणी?, गोयमा! नाणी, नो अन्नाणी, आन्ध्रेगतिया दुन्नाजी, एवं पच नाणाइं भयणाए। तस्स अलद्धिया णं भंते! जीवा किं नाणी अन्नाणी?,गोयमा! नो नाणी, अन्नाणी, आन्नाणी, गोयमा! दुअन्नाणी,तिन्नि अन्नाणाणि भयणाए। आभिणिवोह्रियणाणलद्धिया णं भंते! जीवा किं नाणी अन्नागि?, गोयमा! हे	श्वतके देशः २ ६२५॥
--	--	---	--------------------------

याख्या- प्रज्ञक्षिः ॥६२६॥	STERNER PROFER FRANK SCAR SCAR SCAR SCAR SCAR	तु अन्नाणी, तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए, एवं सुयनाणलद्वीयाचि, तस्स अलद्वीयांचि जहा आभिणिवोहियनाणस्स अलद्वीया । ओहिनाणलद्वीया णं पुच्छा, गोयमा ! नाणी, नो अन्नाणी, अत्येगइया तिझाणी, अत्येगतिया चउनाणी, जे तिन्नाणी ते आभिणिवोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी, जे चउनाणी ते आभिणिवोहियनाणी सुय॰ ओहि॰ मणपज्जवनाणी । [प्र॰] हे भगवन ! इंद्रियल.ब्य केटला प्रकारनी कही छे? [उ॰] हे गौतम ! इंद्रियलब्धि पांच प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे-श्रोत्रेन्द्रियलब्धि यावत् स्पर्शेन्द्रियलब्धि. [प्र॰] हे भगवन् ! ज्ञानलब्धिवाळा जीवो ग्रुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ॰] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी छे पण अज्ञानी नथी. केटला एक वेज्ञानवाळा छे; ए प्रमाणे तेओने पांच ज्ञान अत्राप होय छे. [प्र॰] हे भगवन् ! ज्ञानलब्धिरहित जीवो ग्रुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ॰] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी नयी पण अज्ञानी छे. केटलाएक बेअ- ज्ञाना छे, अने तेओने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. [प्र॰] हे भगवन् ! आभिनिवोधिकज्ञानलब्धिवाळा जीवो ग्रुं ज्ञानी छे. केटलाएक बेअ- ज्ञानी छे ? [उ॰] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी होय छे, पण अज्ञानी नथी. केटलाएक वेज्ञानलाळा छे, तेओने चार ज्ञान भजनाए होय छे. (एटले केटलाएक त्रण ज्ञानवाळा अने केटलाएक चार ज्ञानवाळा होय छे.) [प्र॰] हे भगवन् ! आभिनिवोधिकज्ञान- लब्धिरहित जीवो ज्ञानी ? [उ॰] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. जेओ ज्ञानी छे तेओ अवक्य एक केनलज्ञानी छे; जेयो अज्ञानी हो ये के तेलावा छे अज्ञा ज्ञान पण छे. जेयो ज्ञानी छे तेओ अवक्य एक केनलज्ञानी छे, ए श्रुतज्ञानलब्धिवाळा पणजाणवा. श्रुतज्ञानलब्धिरहित जीवो आभिनिवोधिकलब्धिरहित जीवोनी पेठे जाणवा.	Sec. 15 + 5 + 6 + 6 + 6 + 6 + 6 + 6 + 6 + 6 +	८ शतके उद्देशः २ ॥६२६॥
---------------------------------	---	--	---	------------------------------

अवधिज्ञानवाळा छे. जेओ चारज्ञानवाळा छे तेओ आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञानवाळा छे. तस्स अलद्धीया णं भंते ! जीवा किं नाणी॰, गोयमा ! नाणीबि अन्नाणीबि, एवं ओहिनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । मणपज्जवनाणलद्धिया णं पुच्छा,गोयमा ! णाणी, णो अन्नाणी, अत्थेगतिया तिन्नाणी अत्थेगतिया चउनाणी, जे तिन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयणाणी मणपज्जवणाणी, जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी मणपज्जवणाणी, जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयगाणी सणपज्जवणाणी, जे चउनाणी जोहिनाणी मणपज्जवनाणी, तस्स अलद्धिया णं पुच्छा, गोयमा ! णाणीवि अन्नाणीवि, मणपज्जवणाणवज्जाइं चत्तारि णाणाइं, तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । केवलनाणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! नाणी, नो अन्नाणी, नियमा एगणाणी केवलनाणी, तस्स अलद्धियाणं पुच्छा, गोयमा ! नाणीबि अन्नाणी ?, गोयमा ! केवलनाणवज्जाइं चत्तारि णाणाइं, तिन्नि अन्नाणाई अन्नाणाई भयणाए ॥ तस्म जलद्धियाणं पुच्छा, गोयमा ! नाणीवि, मण्	शतके देशः २ २७॥
अन्नाणी,तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए,तस्स अलद्धियाणं पुच्छा,गोयमा! नाणी,नो अन्नाणी,पंचनाणाइं भयणाए जहा अन्नाणस्स लद्धिया अलद्धिया य भणिया एवं मइअन्नाणस्स सुयअन्नाणस्स य लद्धिया अलद्धिया य भाणियव्वा, विभंगनाणलद्धियाणं तिन्नि अन्नाणाइं नियमा,तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं भयणाएन्दो अन्नाणाइं नियमा १॥	

घ्याख्या≁ प्रज्ञप्तिः

ાદરગા

•) अव भू

*

¥

¥

X

¥

えばい

For Private and Personal	Use Only
--------------------------	----------

श्विवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए छे. [प्र०] हे भगवन्! केवलज्ञानलब्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे?[उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी नथी. तेओ अवश्य एक केवलज्ञानवाळा छे. [प्र०] केवलज्ञानलब्धिरहित जीवो ज्ञानी छे के अज्ञानी छे के अज्ञानी छे है गौतम ! तेओ ज्ञानी नथी. तेओ अवश्य एक केवलज्ञानवाळा छे. [प्र०] केवलज्ञान व्यिरहित जीवो ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. तेओने केवळज्ञान शिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. [प्र०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. तेओने केवळज्ञान शिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. [प्र०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी नथी, तेओ अवश्य एक केवलज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी नथी, तेजो ज्ञानलब्धियाळा जीवो ग्रुं ज्ञानलब्धिरहित जीवो ग्रुं ज्ञानी नथी, पण अज्ञानी छे. तेओने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! अज्ञानलब्धि ज्ञानलब्ध ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी नथी, तेजान पांच ज्ञान पांच ज्ञानलब्धिरहित जीवो ग्रुं ज्ञानलब्धवाळा अने अज्ञानलब्ध होय छे. [प्र०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी लथी, तजान पांच ज्ञान भजनाए होय छे. डेम अज्ञानलब्धवाळा अने अज्ञानलल्ध होय छे. [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी छे पण अज्ञानी नथी; तजान पांच ज्ञान भजनाए होय छे. डेम अज्ञानलब्धिरहित जीवो कहेवा. (एटले अज्ञानलब्ध्वाळानी प्रे ते छे दे प्रे दे (र्द्य ७७) मत्यज्ञान अने श्रुतअज्ञानलब्धियाळा जीवो जाणवा, अने अज्ञानलब्धिरहित जीवोनीनी पेठे (र्द्य ७८) मत्यज्ञान ज्ञानलब्ध जीवो जाणवा, अने अज्ञानलब्ध जीवोनीनी पेठे (र्द्य ७८) मत्यज्ञान ज्ञानलब्ध जीवो जाणवा, अने अज्ञानलब्ध ज्ञानोनीनी पेठे (र्द्य ०८) मत्यज्ञान ज्ञो अज्ञानलब्ध जीवो जाणवा, अने अज्ञानलब्ध जीवोनीनीनी पेठे (र्द्य ०८) मत्यज्ञान अने श्रुतअज्ञानलब्धियाळा जीवो जाणवा, अने अज्ञानलब्ध ज्ञानलब्ध जीवो जाने के ज्या जानी जे ज्ञानलब्ध ज्ञान	थाख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६२८॥	ौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. तेओने केवळज्ञान शिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान हे भगवन् ! अज्ञानलब्धिवाव्या जीवो ग्रुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी नथी, त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! अज्ञानलब्धिरहित जीवो ग्रुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? ज्ञानी छे पण अज्ञानी नथी; तआन पांच ज्ञान भजनाए होय छे. छेम अज्ञानलब्धिवाळा अने अज्ञानल- म मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञानलब्धिवाळा अने ते लब्धिथी रहित जीवो कहेवा. (एटले अज्ञानलब्धिवाळानी के
--	---------------------------------	--

गिदरा। हिंगित अक्षोणोइ मयणोए, तरस अलोधया ज मता र जावा कि नाणा अक्षोणो ?, गायमा ? तरस अलोधया नतिव । सम्मद्दंसणलद्धियाणं पंच नाणाइं भयणाए, तस्स अलद्धियाणं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए, मिच्छादंसण लद्धिया णं भंते ! पुच्छा, तिन्नि अञ्चाणाइं भयणाए, तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं तिन्नि य अन्नाणाइं भयणाए, सम्मामिच्छादंसणलद्धिया य अलद्धिया य जहा मिच्छादंसणलद्धी अलद्धी तहेव भाणियव्वं २॥ चरित्तलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! पंच नाणाइं भयणाए, तस्म अलद्धियाणं मणपज्जवनाणवज्जाइं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! पंच नाणाइं भयणाए, तस्म अलद्धियाणं मणपज्जवनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं तिन्नि य अन्नाणाइं भयणाए, सामाइयचरित्तलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? गोयमा ! नाणी, केवलवज्जाइं चत्तारि नाणाइं भयणाए, तस्म अलद्धियाणं पंच नाणाइं तिन्नि य अन्नाणाइं भ- यणाए, एवं जहा सामाइयचरित्तलद्धिया अलद्धिया य भणिया एवं जाव अहत्तख यचरित्तलद्धिया अलद्धिया य भाणियव्वा, नवरं अहत्तखायचरित्तलद्धिया पंच नाणाइं भ० ३ । [प्र॰] हे भगवन् ! दर्शन्लव्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे ते अज्ञानी छे ? [उ॰] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी र पण छे. (जेओ ज्ञानी छे) तेओने पांच ज्ञान, अने (जेओ अज्ञानी छे तेओने) त्रण अज्ञार भजनाए होय छे. [प्र॰] हे भगवन् !	प्रज्ञासिः ॥३२९॥ १३२९॥	लदिया णं भंते ! पुच्छा, तिन्नि अज्ञाणाई भयणाए, तस्स अलदियाणं पंच नाणाई तिन्नि य अन्नाणाई भयणाए, सम्मामिच्छादंसणलद्धिया य अलद्धिया य जहा मिच्छादंसणलद्धी अलद्धी तहेव भाणियव्वं २॥ चरित्तलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, गोयमा ! पंच नाणाई भयणाए, तस्म अलद्धियाणं मणपज्जवनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाई तिन्नि य अन्नाणाई भयणाए, सामाइयचरित्तलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? गोयमा ! नाणी, केवलवज्जाई चत्तारि नाणाई भयणाए, तस्म अलद्धियाणं पंच नाणाई तिन्नि य अन्नाणां श्र यणाए, एवं जहा मामाइयचरित्तलद्धिया अलद्धिया य भणिया एवं जाव अहत्तम्व यचरित्तलद्धिया य भाणियव्वा, नवरं अहक्खायचरित्तलद्धिया पंच नाणाइ भ० २। [प्र॰] हे भगवन् ! दर्शनलच्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी	२ इदेशः २ ३देशः २ ॥६२९॥ ४७४४४४४४४४४४४४४४४४
--	------------------------------	---	--

च्याख्या- प्रज्ञक्षिः ॥६३०॥	2054	दर्शनलब्धिरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! दर्शनलब्धिरहित जीवो होता नथी. सम्यग्दर्शनलब्धिराला जीवोने भजनाए पांच ज्ञान होय छे, अने सम्यग्दर्शनलब्धिग्हित जीवोने भजनाए त्रण अज्ञान होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! मिथ्या दर्शनलब्धिवाळा जीवो ज्ञानी होय के अज्ञा ी ? [उ०] तेआने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. मिथ दर्शनलब्धरहित (सम्यग्दष्टि अने मिश्रदृष्टि) जीवोने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. सम्यगमिथ्यादर्शनलब्धरहित जीवो कह्या ते प्रमाणे जाणवा. ईनलब्धिवाळानी पेठे जाणवा. सम्यग्मिथ्यादर्शनलब्धिग्रहित जीवो जेम मिथ्यादर्शनलब्धरहित जीवो कह्या ते प्रमाणे जाणवा. [प्र०] हे भगवन् ! चारित्रलब्धित्वाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञा 1 छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने पांच ज्ञान भजनाए होय छे. चारित्रलब्धिरहित जीवोने मनःपर्यवज्ञान शिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिकचारित्र- लब्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी होय छे के अज्ञानी होय छ ? [उ०] हे गौतम ! तेओने पांच ज्ञान भजनाए होय छे. चारित्रलब्धिरहित जीवोने मनःपर्यवज्ञान शिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! सामायिकचारित्र- लब्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी होय छे के अज्ञानी होय छ ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी केह्य त्रोने केवलज्ञान शिवाय चार ज्ञान भजनाए होय छे. सामायिकचारित्रज्ञान्लब्धिरहित जीवोने पांच ज्ञान अन्न त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. ए प्रमाणे जेवी रीते सामायिकचारित्रलब्धिवाळा अने सामायिकचारित्रलब्धरहित जीवोने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. ए प्रमाणे जेवी रीते सामायिकचिरिलब्धिवाळा अने सामायिकचारित्रलब्धरहित जीवो कह्या तेम यावत् यधाख्यातचारित्रलब्धिवाळा अने यधाख्यात- चारितलब्धिरहित जीवो कहेवा. परन्तु यधाल्यातचारित्रलब्धिवाळाने पांच ज्ञान भजनाए जाणवा. चरित्ताचरित्तलद्धिया एां भंते!जीवा किं नाणी अन्नाणी?, गोयमा! नाणी,नो अन्नाणी,अत्यभेडया दुण्णाणी	x	
	オンシューショナ	चारत्रलाब्धराइत जावा कहवा. परन्तु यथाख्यातचारित्रलाब्धताळान पांच ज्ञान भजनाए जाणवा. चरित्ताचरित्तलद्धिया णं भंते!जीवा किं नाणी अन्नाणी?, गोयमा! नाणी,नो अन्नाणी,अत्थेगइया दुण्णाणी अत्थेगतिया तिन्नाणी, जे दुन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य, जे तिन्नाणी ते आभि० सुयना० ओहिना०, तस्स अल० पंच नाणाइं तिन्नि अन्नाणाई भयणाए४॥ दाणलद्धियणं पंच नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं	7	

व्याख्या- ज्याख्या- प्रक्राप्ति: प्रक्राप्ति: प्रक्राप्ति: प्रक्रमिय भाणियव्वा, बाल्धीरियलद्धीयाणं तिबि नाणाई तिम्नि अन्नाणाई भयणाए, तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाई भयणाए, पंडियवीरियलद्धीयाणं पंच नाणाई भयणाए, तस्स अलद्धियाणं मणपज्जवनाणवज्जाई णाणाई अन्नाणाणि तिन्नि य भयणाए,बालपंडियवीरियलद्धियाणं भंते ! जीवा॰ तिन्नि नाणाई भयणाए, तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाई तिन्नि अन्नाणाई भयणाए ९ ॥ [प॰] हे भगवन् ! चारित्राचारित (देशचारित्र) लच्चित्राळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ॰] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी छे पण अज्ञानी नथी; तेमां केटलाक बेज्ञानवाळा अने केटलाक त्रणज्ञानवाळा छे. जेओ बेज्ञानवाळा छे तेओ आमिनिवोधिक ज्ञान कि प्रज अज्ञाननाला छे. जेओ त्रण ज्ञानवाळा छे तेओ आभिनिवोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी अने अवधिज्ञानी छे. चारित्राचारित्र (देशचा- रिश) लच्चिपहित जीवोने भजनाए पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे. दानल्जियालाने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान मजनाए होय छे. ए प्रमाणे यावत् वीर्थलच्चित्राळा अने वीर्थलच्चिरहित जीवो कहेवा. बालवीर्थलच्चिवाला जीवोने त्रण ज्ञान अज्ञ ज्ञ अज्ञान भजनाए होय छे. बालवीर्थलच्चिरहित जीवोने भजनाए पांच् ज्ञान होय छे. पंडितवीर्थलच्चिरहित जीवोने मनःपर्यवज्ञान श्वित्य चार झान अने त्रण अज्ञान मजनाए होय छे. बालपंडितबीर्थलच्चिवा- जाने भजनाए त्रण ज्ञान होय छे, अने बालपंडितवीर्थलच्चिरहित जीवोने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान मजनाए होय छे.	८ शतके उद्देशः २ ॥६३१॥
--	------------------------------

प्रबार्थिंग है तस्स अलद्धियाणं पुच्छा, गोयमा ! नाणी, नो अन्नाणी, नियमा एगनाणी केवलनाणी, सोइंदियलद्धियाणं जहा है द शतक प्रबंधिः 🕺 इंदियलद्धिया, तस्स अलद्धियाणं पुच्छा, गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि, जे नाणी ते अत्थेगतिया दुन्नाणी 🕻 उद्देशः २	तस्स अलद्वियाणं पुच्छा, गोयम इंदियलद्विया, तस्स अलद्विया अत्थेगतिया एगन्नाणी, जे दुन्नाप नियमा दुअन्नाणी, तंजहा-मइअ जहेव सोइंदियस्स, जिब्भिंदिय पुच्छा, गोयमा ! नाणीवि अद दुअन्नाणी, तंजहा-मइअन्नाणी अलद्विया य ॥ (सूत्रं ३१९) ॥ [प्र॰] हे भगवन् ! इन्द्रियलब्धि जण अनन दोय छे [प्र॰] इन्द्रियलब्धि	र पुच्छा, गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि, जे नाणी ते अत्थेगतिया दुन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी जे एगनाणी ते केवलनाणी, जे अन्नाणी ते ाणी य सुयअन्नाणी य, चक्तिंखदिय घार्णिदियाणं लद्धियाणं अलद्धियाण य लद्धियाणं चत्तारि णाणाइं तिन्नि य अनाणाणि भयणाए, तस्सअलद्धियाणं ाणीवि, जे नाणी ते नियमा एगनाणी केवलनाणी, जे अन्नाणी ते नियमा य सुयअन्नाणी य, फासिंदियलद्धियाणंअलद्धीयाणं जहा इंदियलद्धिया य ाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ने भजनाए चार ज्ञान अने घरदित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी छे, पण अज्ञानी	
--	--	--	--

च्याख्या-	N. K.	केवलज्ञानी छे, जेओ अज्ञानी छे तेओ अवध्य बेअज्ञानवाळा छे. जेमके मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी. नेत्रेन्द्रिय अने घाणेन्द्रियल- न्धिवाळाने श्रोत्रेन्द्रियलब्धिवाळानी पेठे (स्र० ८७.) चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान जाणवा; नेत्रेन्द्रिय अने घाणेन्द्रियलब्धिरहित	८ शतके
त्रज्ञ प्तिः	Š	जीवोने श्रोत्रेन्द्रियलब्धिरहित जीवोनी पेठे बे ज्ञान, बे अज्ञान अने एक केवलज्ञान होय छे. जिद्देन्द्रियलब्धिवाळाने चार ज्ञान अने 🗴	उद्देश: २
ા દ્રરા	Ę	त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. [प्र॰] जिड्वेन्द्रियलब्धिरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी? [उ॰] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे, 🏌	1143311
	X	अने अज्ञानी पण छे. जेओ ज्ञानी छे तेओ अवध्य एक केवलज्ञानी छे, जेओ अज्ञानी छे तेओ अवध्य बे अज्ञानवाळा छे; ते आ 🥻	
	X	प्रमाणे–मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी. स्पर्धेन्द्रियलब्धिवाळाने इन्द्रियलब्धिवाळानी पेठे (सू० ८६. भजनाए चार ज्ञान अने त्रण 😽	
	Ç	अज्ञान जाणवा. स्पर्धेन्द्रियलब्धिरहित जीवोने इन्द्रियलब्धिरहित जीवोनी पेठे (स्र० ८७.) एक केवलज्ञान होय छे. ॥ ३१९ ॥ 🥇	
	K K	सागारोवउत्ता णं भंते! जीवा किं नाणी अन्नाणी ?, पंच नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए ॥ आभिणि- 🦨	
	3	बोहियनाणसागारोवउत्ता णं भंते!०चत्तारि णाणाइं भयणाए । एवं सुयनाणसागारोवउत्तावि । ओहिनाणसा 🕉	
	<u>S</u>	गारोषउत्ता जहा ओहिनाणलद्विया, मणपज्जवनाणसागारोवउना जहाँ मणपज्जवनाणलद्विया, केवलनाणसागा-	
	$\mathbf{\mathcal{L}}$	रोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धिया, मइअन्नाणसागरोवउत्ताण तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए, एवं सुयअन्नाणसागारो- 🦓	2
	S	वउत्तावि. विभंगनाणसागारोवउत्ताणं तिन्नि अन्नाणाइं नियमा ॥ अणागारोवउत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी 🖒	
	Ţ	अन्नाणी ?, पंच नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए, एवं चक्खुदंसणअचक्खुदंसणअणागारोवउत्तावि, नवरं 🕵	
	$\frac{1}{2}$	चत्तारि णाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए, ओहिदंसणअणागारोवउत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि, 🥇	
	X		

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६३४॥	नाणा, ज चउणाणा त आगमाणवाहियणनाणा जाव मणपद्भवनाणा, ज अझाणा तानयमा तमझाणा, तजहा- मइअझाणी सुयअझाणी विभंगनाणी, केवलदंसणअणागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्भिया ॥ [प्र॰] हे भगवन् ! साकारउपयोगवाळा जीवो शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ॰] हे गौतम ! तेओने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए (विकल्पे) होय छे. [प्र॰] हे भगवन् ! आभिनिवोधिकसाकारोपयोगवाळा जीवो शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ॰] हे गौतम ! तेओने भजनाए चार ज्ञान होय छे. ए प्रमाणे श्रुतज्ञानसाकारउपयोगवाळा जीवो शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ॰] हे गौतम ! तेओने भजनाए चार ज्ञान होय छे. ए प्रमाणे श्रुतज्ञानसाकारउपयोगवाळा जीवो पण जाणवा. अवधिज्ञा- नसाकारउपयोगवाळा जीवोने अवधिज्ञानलब्धिवाळानी पेठे (स्र॰ ७१.) (त्रण के चार ज्ञान) जाणवा. मनःपर्यवज्ञानसाकारउप योगवाळा जीवोने मनःपर्यवज्ञानलब्धिवाळानी पेठे (स्र॰ ७३) मति, श्रुत अने मनःपर्यव ए त्रण ज्ञान, के अवधिसहित चार ज्ञान जाणवा. केवल्ड्यानसाकारउपयोगवाळा जीवो केवलज्ञानलब्धिवाळानी पेठे (स्र॰ ७५.) एक केवलज्ञान सहित जाणवा. मतिअज्ञा- नसाकारोपयोगवाळा जीवोने भजनाए त्रण अज्ञान होय छे. ए प्रमाणे श्रुतअज्ञानसाकारोपयोगवाळा जीवो शुं ज्ञानी हो त्राजा नसाकारोपयोगवाळा जीवोने अवध्य त्रण अज्ञान होय छे. ए प्रमाणे श्रुतअज्ञानसाकारोपयोगवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी हे हे गौतम ! तेओने पांच ज्ञान होय छे. [प्र॰] हे भगवन् ! अनाकारोपयोगवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ॰] हे गौतम ! तेओने पांच ज्ञान अत्रे त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. ए प्रमाणे चक्षुदर्शन अने अचक्षुदर्शनअनाकारोपयोगवाळा जीवो पण जाणवा. परन्तु तेओने चार ज्ञान अत्रान अज्ञान भजनाए होय छे. [प्र॰] अवधिदर्शनअनाकारोपयोगवाळा जीवो शुं	
	2 इनी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! तेओ झानी पण छे अने अज्ञानी पण छे, जेओ ज्ञानी छे तेओमां केटलाक त्रण	2

प्रक्राप्तिः प्रमाणे-मतिअज्ञानी, अने विभंगज्ञानी. केवलदर्शनअनाकारोपयोगवाळा जीवो केवलज्ञानलब्धिवाळा पेठे (सू॰ ७५.)	श्वतके (शः २ .३५॥
---	-------------------------

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६३६॥ ४४	जीवोनी पेठे (स॰ ३५.) जाणवा. ए प्रमाणे स्नीवेदी,पुरुषवेदी अने नपुंसकवेदी जीवो जाणवा,तथा वेदरहित जीवो अकषायी जीवोनी पेठे (स॰९८.) जाणवा. [प॰] हे भगवन् !आहारक जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ॰] तेओ सकषायी जीवोनी पेठे (स॰९७) जाणवा. परन्तु विशेष ए छे के तेओने केवलज्ञान (अधिक) होय छे. [प॰] हे भगवन् ! अनाहारक जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ॰] हे गौतम! तेओने मनःपर्यवज्ञान सिवायना चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान मजनाए होय छे. ॥ ३२० ॥	5
******	छे? [उ०] हे गौतम! तेओने मनःपर्यवज्ञान सिवायना चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. ॥ ३२० ॥ आभिणिबोहियनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पन्नत्ते ?, गोयमा ! से समासओ चउब्विहे पन्नत्ते, तंज-	

ો દ્ રહા	**** F. & * F. & * F. & & F. & & & & & & & & & & & & & & &	विसए पण्णत्ते ?, गोगमा ! से समासओ चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा-दब्वओ खेत्तओ कालओ भावओ, दब्वओ ण केवलनाणी सब्वदब्वाइं जाणइ पासइ, एवं जाव भावओ ॥ मइअन्नाणस्स पां भंते ! केवतिए विसए पन्नत्ते?, गोगमा ! से स ासओ चउब्विहे पन्नत्ते, तंजहा-दब्वओ खेन्तओ कालओ भावओ, दब्वओ पां मइअन्नाणी मइ अन्नाणपरिगयाइं दब्वाइं जाणइ, जाव भावओ मइअन्नाणी मइअन्नाणपरिगए भावे जाणइ पासइ । [प्र॰] हे भगवन् ! आभिनिवोधिक ज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे ? [उ॰] हे गौतम ! आभिनिवोधिक ज्ञाननो विषय संन्ने- पथी चार प्रकारनो कह्यो छ, ते आ प्रमाणे-द्रब्पथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी. द्रब्पथी आभिनिवोधिक ज्ञाननो विषय संन्ने- (सामान्यरूपे) सर्व द्रब्योने जाणे अने जुए, क्षेत्रथी आभिनिवोधिकज्ञानी आदेशवडे (सामान्यरूपे) सर्व द्रब्योने जाणे अने जुए, क्षेत्रथी आभिनिवोधिकज्ञानी आदेशवडे सर्व क्षेत्रने जाणे अने जुए; ए प्रमाणे कालथी अने भावथी पण जाणवुं. [प्र॰] हे भगवन् ! श्रुतज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे ? [उ॰] हे गौतम ! ते संक्षेपथी चार प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे-द्रब्यथी, कालथी अने भावथी. द्रव्यथी जाभिनिवोधिकज्ञानी स्वद्र्य्योने जाणे	ちちょうかんなんなからしょう	८ ज्ञतके उद्देशः २ ॥६ ३७॥
	K HI WALLE AND	अने भावथी पण जाणवुं. [प्र॰] हे भगवन् ! श्रुतज्ञाननो विषय केटलो कहो छे ? [उ॰] हे गौतम ! ते संक्षेपथी चार प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे-द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी. द्रव्यथी उपयुक्त (उपयोग सहित) श्रुतज्ञानी सर्व द्रव्योने जाणे अने जुए, छे. ए प्रमाणे क्षेत्रथी अने कालथी पण जाणवुं, भावथी उपयुक्त श्रुतज्ञानी सर्व भावोने जाणे छे अने जुए छे. [प्र॰] हे भगवन् ! अवधिज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे ? [उ॰] हे गौतम ! संक्षेपथी चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे-द्रव्यथी,	54- 2- FX- F	

ःयाख्या- प्रज्ञतिः ॥६३८॥	क्षेत्रथी, काल्ग्थी अने भावधी; द्रव्यथी अवधिज्ञानी रूपि द्रव्योने जाणे छे अने देखे छे-इत्यादि जेम नंदीयुत्रमां कह्युं छे तेम यावत् भाव सुर्वी जाणवुं. [प्र०] हे भगवन् ! मनःपर्यवज्ञाननो विषय केटलो कहां छे ? [उ०] हे गौतम ! संक्षेपथी चार प्रकारनो कहां छे, ते आ प्रमाणे-द्रव्यथी, क्षेत्रथी काल्थी अने भावथी. द्रव्यथी ऋजुमतिमनःपर्यवज्ञानी (मनपणे परिणत) अनंतप्रदेशिक अनन्त रक्षंधोते जाण अने देखे-इत्यादि जेम नंदीयुत्रमां कहुं छे तेम अहीं जाणवुं, यावत् भावथी आणे छे. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्ञा- रनो विषय केटलो कहां छ ? [उ०] हे गौतम ! ते संक्षेपथी चार प्रकारनो कहां छे, ते आ प्रमाणे-द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी. द्रव्यथी केवलज्ञानी सर्व द्रव्याने जागे छे अने जुए छे. ए प्रमाणे यावत् भावथी आणे छे. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्ञा- न्ना विषय केटलो कहां छ ? [उ०] हे गौतम ! ते संक्षेपथी चार प्रकारनो कहां छे, ते आ प्रमाणे-द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी. द्रव्यथी केवलज्ञानी सर्व द्रव्योने जागे छे अने जुए छे. ए प्रमाणे यावत् भावथी (केवलज्ञानी सर्व भावोने जाणे छे अने जुए छे.) [प्र०] हे भगवन् ! मतिअज्ञाननो विषय केटलो कहां छे? [उ०] हे गौतम ! ते चार प्रकारनो कहा छे, ते आ प्रमाणे- द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भतथी. द्रव्यथी मतिअज्ञानी मतिअज्ञानना विषयने प्राप्त द्रव्योने जाणे छे अने जुए छे. सुयअन्नाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते?.गोयमा ! से समासओ चउन्बिहे पण्णते, तंजहा-दव्वओ ४, दव्वओ णं सुयअन्नाणी सुयअन्नाणपरिगयाइं दव्वाइं आघवेति पन्नवेति पन्नवेति पर्क्वेइ, एवं खेत्तओ काल्लओ, भा- बओ णं सुयअन्नाणी सुयअन्नाणपरिगए भावे आघवेति तं चेव । विभंगणाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते?,गोयमा! से समासओ चउन्विहे पण्णत्ते,तंज्रहा-दव्वओ ४,दव्वओ णं चिभंगनाणी विभंगनाणपरिगयाइं दब्वाइं जाणइ पासइ.एवं जाव भावओ णं विभंगनाणी विभंगनाणपरिगए भावे जाणह पास इ ॥(सूत्र ३२२१)।	+ ちょうやう + ちょうやう + ちょう + ちょう	८ शतके डद्देशः २ ॥६३८॥
--------------------------------	---	-----------------------------	------------------------------

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६३९॥	छे; ए प्रमाणे क्षेत्रथी अने कालथी जाणवुं. भावथी अुतअज्ञानी अुतअज्ञाना विषयभूत भावोने कहे छे, जणावे छे अने प्ररूपे छे. [प्र॰] हे भगवन् ! विभंगज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते संक्षेपथी चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे- द्रव्यथी, क्षेत्रथी अने भावथी; द्रव्यथी विभंगज्ञानी विभंगज्ञानना विषयभूत द्रव्योने जाणे छे अने जुए छे, ए प्रमाणे यावत् भावथी विभंगज्ञानी विभंगज्ञानना विषयभूत भावोने जाणे छे अने जुए छे. ॥ ३२१ ॥ णाणी णं भंते ! णागीति कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा ! नाणी दुविहे पन्नते, तंजहा-साइए वा अपज्जवसिए साइए वा सपज्जवसिए, तत्थ णं जे से साइए सपज्जवसिए से जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं उक्तोसेणं छावटिं सागरोवमाइं सानिरेगाइं आभिणिबोहियणाणी णं भंते ! आभिणिबोहिय॰ एवं नाणी अभिणिबो हियनाणी जाव केवलनाणी अन्नागी मइअन्नागी सुयअन्नाणी विभंगनाणी, एएसिं दमण्हवि संचिट्टणा जहा कायटिईए ॥ अंतरं सच्वं जहा जीवाभिगमे ॥ अप्पायहुगाणि तिन्नि जहा बहुवत्तव्याए ॥ केवतिया णं भंते !	र्भु उद्दे	शतके देशः २ २९॥
-----------------------------------	--	------------	------------------------------

[प॰] हे भगवन् ! ज्ञानी ज्ञानीपणे कालथी क्यांसुधी रहे ? [उ०] हे गौतम ! ज्ञानी वे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे- म्राहीतः अहातिः अहातिः अहातिः अधि सपर्यवसित अमे सादिअपयवसित. तेमां ने ज्ञानी सादिपर्यवसित छ ते जघन्यधी अन्तर्धुहूत सुधी अने उन्छ छथी काइक अधिक छासठ सागरोपम सुधी ज्ञ नीपणे रहे छ. [प०] हे भगवन् ! आभिनिबोधि कज्ञानी, आभिनिबोधि कज्ञानी जो कालथी कठला काल सुधी रहे ? [उ०] ए प्रमाणे ज्ञानी आभिनिबोधिक ज्ञानी, यावत केवलज्ञानी, अज्ञानी, मतिअज्ञानी. श्रुवज्ञानी अने विभंगज्ञानी - ए दशनो ज्ञानीपणे स्थितिकाल प्रज्ञापनासत्रना अढारमां कायस्थितिपदमां कह्या प्रमाणे जाणवो; अने जीवाभिगमसत्रमां कह्या प्रमाणे ए दशनुं परस्पर अन्तर जाणवुं तेमज प्रज्ञापनासत्रनां बहुवक्तव्यता पदमां कह्या प्रमाणे ज्ञाजवो; अने जीवाभिगमसत्रमां कह्या प्रमाणे ए दशनुं परस्पर अन्तर जाणवुं तेमज प्रज्ञापनासत्रनां बहुवक्तव्यता पदमां कह्या प्रमाणे ज्ञाणवो; अने जीवाभिगमसत्रमां कह्या प्रमाणे ए दशनुं परस्पर अन्तर जाणवुं तेमज प्रज्ञापनासत्रनां बहुवक्तव्यता पदमां कह्या प्रमाणे ज्ञाजवो; अने जीवाभिगमसत्रमां कह्या प्रमाणे ए दशनुं परस्पर अन्तर जाणवुं तेमज प्रज्ञापनासत्रनां बहुवक्तव्यता पदमां कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! आभिनिबोधिकज्ञानना अनन्त पर्यायो कह्या छे. [प०] हे भगवन् ! अत्रज्ञानना केटला पर्यायो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! प्राभिनिबोधिकज्ञानना अनन्त पर्यायो कह्या छे. [प०] हे भगवन् ! अत्रज्ञानना केटला पर्यायो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! प्राभिनिबोधिकज्ञानना अनन्त पर्यायो कह्या छे. [प०] हे भगवन् ! अत्रज्ञानना केटला पर्यायो कह्या छे श्रुतज्ञज्ञानना पण पर्यायो जाणवा. [प०] हे भगवन् ! विभं- गज्ञानना केटला पर्यायो कह्या छे ? [उ०] हे गौ ता ! वभगज्ञानना अनन्त पर्यायो कह्या छे. एएसि णं भंते !आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं सुयनाणा ओहिनाणपज्जवनाण•केवलनाणपज्जवा अणंतगुणा सुयनाण- कवर २ जाव बिसेसाहिया वा ?,गोयमा ! मव्यत्थवा भणंतगुणा क्रेवलनाणपज्जवा अणंतगुणा । एएसि णं भंते ! महज- ज्ञाणपज्जवाणं सुयअन्नाज-खिभंगनाजयद्वाण य कयरे २ जाव बिसेसाहिया वा ?,गोयमा ! सव्यथेवा विभंग-	८ शतके उद्देशः २ ६४०
---	----------------------------

प्रज्ञप्तिः	नाणपज्जवा सुयअज्ञाणपज्जवा अणंतगुणा मइअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा ॥ एएसि णं भते ! आभिणिबोहिय- णाणपज्जवाणं जाव केवलनाणप॰ मंइअन्नाणप॰ सुयअन्नाणप॰ विभंगनाणप॰ कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ?, गोयमा ! सब्वत्थोबा मणपज्जवनाणपज्जवा विभंगनाणपज्जवा अणंतगुणा ओहिणाणपज्जवा अणंतगुणा सुय- अन्नाणपज्जवा अणंतगुणा सुयनाणपज्जवा विसेसाहिया मंइअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा आभिणिबोहियनाणप-	र्भ उद्देश: २ प्र
x-ker-ker	ज्जवा विसेसाहिया केवलणाणपज्जवा अणंतगुणा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति ॥ (सूत्रं ३२२) ॥ अट्टमस्स सयस्स बितिओ उद्देसो ॥ ८-२ ॥ [प्र०] हे भगवन् । ए (पूर्वे कहेला) आमिनिबोधिकज्ञान, थ्रुतज्ञान, थ्रवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान अने केवलज्ञानना पर्यांपोमां कोना पर्यायो कोनाथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! मनःपर्यवज्ञानना पर्यायो सौथी थोडा छे, तेथी अवधिज्ञानना पर्यायो अनंतगुण छे, तेथी श्रुतज्ञानना पर्यायो अनन्त छे तेथी अनंतगुण आभिनिबोधिकज्ञानना पर्यायो छै, अने तेथी अवधिज्ञानना पर्यायो अनंतगुण छे, तेथी श्रुतज्ञानना पर्यायो अनन्त छे तेथी अनंतगुण आभिनिबोधिकज्ञानना पर्यायो छे, अने तेथी अनंतगुण केवलज्ञानना पर्यायो छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान अने विभंगज्ञानना पर्यायोमां कोना पर्यायो कोना पर्यायोथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वथी थोडा विभंगज्ञानना पर्यायो छे, तेथी अनंतगुण श्रुतअज्ञानना पर्यायो छे, अने तेथी अनंतगुण मतिअज्ञानना पर्यायो छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए आभिनिबोधिकज्ञानना यावत् केवलज्जानना तथा मतिअज्ञान, श्रुत- अज्ञान, अने विभंगज्ञानना पर्यायो छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए आभिनिबोधिकज्ञानना यावत् केवलज्जानना तथा मतिअज्ञान, श्रुत- अज्ञान, अने विभंगज्ञानना पर्यायो कोना पर्यायो कोना पर्यायोथी यावत् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! सौर्थाथोडा मनः- पर्यायज्ञानना पर्यायो छे, तेथी अनंतगुण विभंगज्ञानना पर्यायो छे, तेथी अनंतग्रण अवधिज्ञानना पर्यायो छे. तेथी अनंतग्रणश्रुत-	

ध्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६४२॥	XXXXXXXX	अज्ञानना पर्यायो छे, तेना करतां श्रुतज्ञानना पर्यायो विशेषाधिक छे, तेथी मतिअज्ञानना पर्यायो अनंतगुण छे, तेथी मतिज्ञानना पर्यायो विशेषाधिक छे अने तेना करतां केवलज्ञानना पर्यायो अनंतगुण छे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे. एम कही भगवान् गौतम ! यावत् विहरे छे. ॥३२२॥ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीस्त्रना आठमा शतकमां बीजा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.	A RUCH	८ शतके उद्देशः ३ ॥६४२॥
	*	उद्देशक ३.	х ¥	
	Š		Ž	
	Š	कइविहा णं भंते ! रुक्खा पन्नत्ता १, गोयमा ! तिविहा रुक्खा पण्णत्ता, तंजहा-संखेज्जजीविया असंखे- ज्जजीविया अणंतजीविया । से किं तं संखेजजीविया १, संखे० अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा-ताळे तमाळे तक्कलि	(
	Ł	जजाविया अणतजाविया । स कि त संखजजाविया , संखण्जजाविया । संजिल्लाहा पणता, तजहा-ताल तनाल तकाल तेतलि जहा पन्नवणाए जाव नालिएरी, जे यावन्ने तहप्पगारा, सेत्तं संखेजजीविया । से किंतं असंखेजजीविया?,	, C	
	₽ ¥	असंखेजजीविया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-एगडिया य बहुबीयगा य, से किं तं एगडिया १, २ अणेगविहा	$\hat{\mathbf{Q}}$	
	Ś	पण्णत्ता, तंजहा-निंबंबजंबु॰ एवं जहा पन्नवणापए जाव फला बहुबीयगा, सेत्तं बहुबीयगा, सेत्तं असंखेज्जजी	3	
	E.	विया। से किं तं अणंतजीविया ?, अणंतजीविया अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा-आऌुए मूलए सिंगबेरे, एवं	(X)	
	X	जहा सत्तमसए जाव सीउण्हे सिउंढी मुसुंढी, जे यावन्ने त०, सेत्तं अणंतजीविया ॥ (सूत्रं ३२३) ॥	Ż	,
	R	[प्र०] हे भगवन् ! दृक्षो केटला प्रकारना कढ्या छे? [उ०] हे गौतम ! दृक्षो त्रण प्रकारना कढ्या छे; ते आ प्रमाणे−संख्यात-	¥	

|--|

 माणे चा दिव्छिंद्य माणे वा अगणिकाएणं वा समोडहमाणे तेसिं जीवपएसाणं किंचि आबाहं वा विवाहं वा उप्पा- यइ छविच्छेदं वा करेइ ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं संकमइ ॥ (सूत्रं ३२४) ॥ [प्र०] हे भगवन ! काचवो, काचवानी श्रेणि, गोधा (यो) गोधानी श्रेणी, गाय गायनी श्रेणि, मंतुष्य, मंजुध्वनी श्रेणि, [प्र०] हे भगवन ! काचवो, काचवानी श्रेणि, गोधा (यो) गोधानी श्रेणी, गाय गायनी श्रेणि, मंतुष्य, मंजुध्वनी श्रेणि, महिष (पाडो) महिषनी श्रेणि ए बधाना बे, त्रण के संल्याता खंड कर्या होय तो तोओनी बचेनो माग द्यु जीवप्रदेशथी स्पृष्ट- स्पर्श्वायेलो होय ? [उ०] हे गौतम ! हा, स्पृष्ट होय. [प्र०] हे भगवन ! कोह पुरुष (ते काचवादिना खंडोना) अन्तराल-बचेना भागने हाथथी, पगथी, आंगळीथी, सळीथी, काष्ठधी अने नाना लाकडाथी सर्थ करतो, विशेष स्पर्श करतो, थोई विशेष आकर्षण करतो, अथवा कोइपण तीक्ष्ण श्रसना समृहथी छेरतो, अधिक छेदतो, अग्नि बडे बाळतो, ते जीवप्रदेशने थोडी के अधिक पीहा उत्पन्न करे, या तेना कोइ अवयवोनो छेद करे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ यथार्थ नथी, केमके जीव प्रदेशने यस्त असर करतुं नथी. ॥ ३२४ ॥ कति णं भंते ! पुढवी श्री पण्णत्ताओ ?, गोयमा ! अट पुढवीओ पन्नत्ताओ, तंजहा-रयणप्पभा जाव अहे सत्तामा पुढवी ईसिपच्भारा । इमा णं भंते ! रयणप्पभापुटवी किं चरिमा अचरिमा ?, चरिमपंद निरवसेसं भाणियच्चं जाव वेमाणिया णं मंते ! फासचरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ?, गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि । सेचं भंते ! २ भगवन ! प्रथ्वीओ केटली कही छे ? [उ०] हे गौतम ! आठ प्रियीओ कही छे, ते आ प्रमाणे-रत्नप्रभा, यावत् 	शः ३
---	------

र् अधःसप्तमप्रथिवी अने ईषत्प्राग्भारा (सिद्धिला:) [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्रप्रभा प्रथिवी श्चं चरम-प्रान्तवर्ती छे के अचरम- ब्याख्या-] मध्यवर्ती छे ? इत्यादि. [उ०] अहीं (प्रज्ञापनाः सन्नतुं) ' चरम ' पद सधळं कहेवुं. यावत्त [प्र०] हे भगवन् ! वैमानिको स्पर्ध	गतके
प्रक्रप्तिः 🖁 चरमवडे शुं चरम छे के अचरम छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ चरम पण छे अने अचरम पण छे. हे मगवन् ! ते एमक छे, हे 🖌 उदे	হা: ४
	કલા
🖌 भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीतः श्रीमद् भगवतीस्वत्रना आठमा शतकमां त्रीजा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयोः 🧩	
उद्देशक ४.	
🕵 रायगिहे जाव एवं वयासी-कति णं भंते ! किरियाओ पत्रत्ताओ ?, गोयमा ! पंच किरियाओं पन्नत्ताओं, 🥵	
🖌 तंजहा-काइया अहिगरणिया, एवं किरियापदं निरवसेसं भाणियव्वं जाव मायावत्तियाओं किरियाओं विसे- 🤾	
🔆 साहियाओ, सेवं भंते ! सेवं भंतेत्ति भगवं गोयमे॰ ॥ (सूत्रं ३२६) ॥ ८-४ ॥	
🕵 [प्र०] राजग्रह नगरमां यावत् (गौतम) ए प्रमाणे बोल्या के हे भगवन् ! केटली कियाओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! 🕵	
🔁 पांच कियाओ कही छे, ते आ प्रमाणे-कायिकी, अधिकरणिकी-ए प्रमाणे अहीं (प्रझापना खत्रनुं बाधीसम्रं) संघर्टुं कियापद यावत् 🕇	
🕥 ' मायाप्रत्ययिक कियाओ विशेषाधिक छे ' त्यांसुधी कहेर्चु, हे अगवन िते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे (एम कही भगवाप् 🐒	
के गौतम यावद् विहरे छे.) ॥ ३२६ ॥	
र्भ गौतम यावद् विहरे छे.) ॥ ३२६ ॥ म् भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीखत्रना आठमा शतकमां चोथा उद्देशानी मूलार्थ संपूर्ण थयो.	

ľ		51
	उद्देशक ५.	
र्च्याख्या-	रायगिहे जाव एवं वयासी-आजीविया णं भंते ! थेरे भगवंते एवं बयासी-समणोवासगस्स णं भंते ? सा-	८ शतक
प्रज्ञप्तिः	माइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स केइ भंडे अवहरेज्जा, से णं भंते ! तं भंडं अणुगवेसमाणे किं सयं भंड 🌾	उद्देशः ५
ા૬૪૬ા	🖞 अणुगवेसइ परायगं भंडं अणुगवेसइ १, गोयमा ! सयं भंडं अणुगवेसति, नो परायगं भंडं अणुगवेसइ, तस्स णं 🕅	६४६
	र्थे भेते ! तेहिं सीलव्वयगुणवेरमणपचक्साणपोसहोववासेहिं से भंडे अभंडे भवति ?, हंता भवति ॥ से केणं खाइ	$\hat{\boldsymbol{\Sigma}}$
	र्ण अहेणं भेते ! एवं वुच्चइ सयं भंडं अणुगवेसइ, नो परायगं भंडं अणुगवेसइ ? गोयमा ! तस्स णं एवं भवति- 🖇	
	णो में हिरन्ने नो में सुवन्ने नो में कंसे नो में दूसे नो में विउलधणकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरय-	
	णमादीए संतसारसावदेज़, ममत्तभावे पुण से अपरिण्णाए भवति, से तेणहेणं गोयमा ! एवं बुचइ-सयं भंडं	$\sum_{i=1}^{n}$
	अणुगवेसइ, नो परायगं भंडं अणुगवेसइ॥ समणोवासग्गस्स णं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सण अच्छमा	
	णस्स केति जायं चरेज़ा, से णं भंते! किं जायं चरइ अजायं चरइ ?, गोयमा ! जायं चरइ, नो अज.यं चरइ, तस्स	
		$\mathbf{\hat{z}}$
	मान में अटेमां भंते ! एवं वज्ञान-जायं चरह. तो अजायं चरह ? गोयमा ! तस्म णं एवं भवड-णो में माता णो	5
	में पिता णों में भाषा णों में भगिणी णों में भज्जा णों में पुत्ता णों में धूया नों में सुण्हा, पेज़बंधणे पुण से	
	अबोच्छिन्ने भवइ, से तेणहेणं गोयमा ! जाव नो अजायं चरइ ॥ (सूत्रं ३२७) ॥	

≂হাাख्या- अन्नक्षिः ₩३४७॥	م المحلم وحلم وحلم المحلم المحلم المحلم المحلم المحلم المحلم وحلم وحلم وحلم المحلم المحلم المحلم المحلم المحلم	छे के पारका भांडने शोघे ? [उ०] हे गौतम ! ते आवक पोताना भांडने शोधे छे, पण पारका भांडने शोधतो नथी. [म०] हे भगवन ! ते शीलवत, गुणवत, विरमवत, प्रत्याख्यान अने पौषधोपवासवडे ते आवकनुं (अपहत) भांड ते अभांड थाय ? [उ०] हे गौतम ! हा, अभांड थाय. [प्र०] हे भगवन ! (जो अभांड थाय तो) एम शा हेतुथी कहो छो के (ते अभणोपासक) पोताना भांडने शोधे छे, पण पारका भांडने शोधतो नथी ? [उ०] हे गौतम ! (सामायिक करनार) ते आवकना मनमां एवो परिणाम होय छे के-'भारे हिरण्य नथी, मारे खुवर्ण नथी, मारे कांसुं नथी, मारे वस्त नथी, अने भारे विपुल, धन, कनक, रत, मणि, मोती, शंख, परवाछा, रक्त रत्नो-इत्यादि विद्यमान सारभूत द्रव्य नथी, परन्तु तेणे ममत्व भावनुं प्रत्याख्यान कर्युं नथी, ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहेवाय छे के ते पोताना भांडने नवेषे छे, पण पारका भांडने गवेषतो नथी. [प्र०] हे भगवन ! जैणे सामायिक कर्यु छे पता अमलना जणभगमां रहेला अमणोपामकनी कोने को प्र प्रच सेवे तो शं ते तेनी सी सेवे छे के असीने-अन्यनी सीने सेवे ?	ギシュ・シャンキンキンチンチンチンチ	८ शतके उद्देशः ५ ॥६४७॥	
	S PORTO	्या, अनेपना उपात्रपता (रहल तेनी सीने सेवे छे पण अन्यनी सीने सेवतो नथी. [प्र०] हे मगवन ! ते शीलवत, गुणवत, विरमण- [उ०] हे गौतम ! ते पुरुष तेनी सीने सेवे छे पण अन्यनी सीने सेवतो नथी. [प्र०] हे मगवन ! ते शीलवत, गुणवत, विरमण- वत, प्रत्याख्यान अने पौषधोपवासवडे (ते श्रावकनी) स्त्री अस्त्री (अन्यस्त्री) थाय ? [उ०] हा, थाय. [प्र०] हे मगवन ! तो एम ज्ञा हेतुथी कहो छो के तेनी स्त्रीने सेवे छे पण अस्त्री (अन्यखी) ने सेवतो नथी ? [उ०] हे गौतम ! (शीलवतादि वडे)		×	

	र्ते आवकना मनमां एवं होय छे के= मारे माता नथी, पिता नथी, भाइ नथी, बहेन नथी, स्त्री नथी, पुत्री नथी, पुत्री नथी, अने	5
ध्याख्या-	🏌 स्तुपा (पुत्रवधूं) नथी, वरन्तु नेने प्रेमबन्धन हुट्युं नथी, ते हेतुथी हे गौतम! ते पुरुष तेनी स्तीने सेवे छे, पण अन्य सीने	८ शतक
प्रज्ञप्तिः	र्द्र सेवतो नथी. ॥ ३२७ ॥	र्डिशः ५
ા૬૪૮૫	🧚 समणोचासगस्स णं भंते ! पुच्वामेव धूलए पाणाइवाए अपचक्खाए भवइ, से णं भंते ! पच्छा पंचाइक्स 💡	HE8611
	माणे किं करेति ?, गोयमा ! तीयं पडिकमइ पडुष्पन्नं संवरेइ अणागयं पचक्ताति॥ तीयं पडिकममाणे किं तिविहं	51
	🗴 तिविहेणं पडिकमति १ तिविहं दुविहेणं पडिकमति २ तिविहं एगविहेणं पडिकमति ३ दुविहं तिविहेणं पडि-	K
	🖌 कमलि ४ दुबिहं दुविहेणं पडिकमति ५ दुविहं एगविहेणं पडिकमति ६ एगविहं तिविहेणं पडिकमति ७ एक-	¥I
	👔 विहं दुविहेणं पडिकमति ८ एकविहं एकविहेणं पडिकमति ९, गोयमा ! तिविहं तिविहेणं पडिकमति तिचिहं	5
	🖌 दुविहेण वा पडिकमति तं चेव जाव एकविहं वा एकविहेपां फडिकमति, तिविहं वा तिविहेणां पडिकममाणे न	T -
	र करेति न कारवेति करेंत णाणुजाणइ मणसा वयसा सायसा १, तिविहं दुविहेणं पडि० न क॰ न सा॰ करेंतं	\mathcal{D}
	्री नाणुजाणइ मणसा वयसा २, अहवा न करेइ न का॰ करेतें नाणुजा॰ मणसा कायसा ३, अह न करेइ ३ वबसा	51
	र कायसा ४, तिविहं एगविहेणं पंडि॰ न करेति ३ मणसा ५, अहवा न करेइ ३ वयसा ६, अहवा न करेइ३	5
-	ि कायसा ७, सुविंह ति॰ प॰ म करेइ न का॰ मणसा वयसा कायसा ८, अहवा न करेइ करेंतं नाणुजाणइ मण॰	2
	भावता ७, युविहातण पण्मापाइ नापाण गणता वयसा कायसा ८, अहवा न परइ परत माधुआणइ मणण (
	से वय० काय॰ ९, अहवा न कारवेइ करतें नाणुजा॰ मणसा बयसा कायसा १०, डु॰ दु॰ प॰ न क॰ न का॰ म॰	Ť I

ध्याख्या- प्रह्नप्तिः ॥६४९॥	व॰ ११, अहवा न क॰ न का॰ म॰ कायसा १२, अहवा न क॰ न का॰ वयसा कायसा १३, अहवा न करेह करतें नाणुजाणह मणसा वयसा १४, अहवा न करे॰ करेतं नाणुजाणह मणसा कायसा १५, अहवा न करेति करेतं नाणुजाणति वयसा कायसा १६, अहवा न कारवेति करेंतं नाणुजाणति मणसा वयसा १७, अहवा न का- रवेइ करेंतं नाणुजाणह मणसा कायसा १८, अहवा न कारवेति करेंतं नाणुजाणह वयसा कायसा १९, अहवा न का- रवेइ करेंतं नाणुजाणह मणसा कायसा १८, अहवा न कारवेति करेंतं नाणुजाणह वयसा कायसा १९, अहवा न का- रवेइ करेंतं नाणुजाणह मणसा कायसा १८, अहवा न कारवेति करेंतं नाणुजाणह वयसा कायसा १९, अहवा न करेति न कारवेति कायसा २२ अहवा न करेति करेंतं नागुजाणह मणसा २३, अहवा म करेइ करेंतं नाणुजाणह वयसा २४, अहवा न करेइ करेंतं नाणुजाणए कायसा २०, अहवा न कारवेह करेंतं नाणुजाणह मणसा २६, अहवा न कारवेत कायसा २२ अहवा न करेति करेंतं नागुजाणह मणसा २३, अहवा म करेइ करेंतं नाणुजाणह वयसा २४, अहवा न करेइ करेंतं नाणुजाणए कायसा २०, अहवा न कारवेइ करेंतं नाणुजाणह मणसा २६, अहवा न कारवेह करेंतं नाणुजाणह वयसा २७ अहवा न कारवेइ करेंतं नाणुजाणह कायसा २८, एगविह तिबि- हेणं पडि॰ न करेति मणसा वयसा कायसा २७, अहवा न कारवेइ मण॰ वय॰ कायसा २०, अहवा करेंते नाणुजा॰ मणसा ३१३१, एकविह तुबिहेणं पडिक्रममाणे न करेति मणसा वयसा ३२, अहवा न करेति मणमा कार्यसा ३३, अहवा न करेइ वयसा कायसा २४, अहवा न कारवेति मणसा वयसा ३२, अहवा न कारवेति मणसा कायसा ३६, अहवा न कारवेइ वयसा कायसा ३७, अहवा करेंते नाणुजा॰ मणसा वयसा ३८, अहवा करेंतं नाणुजा॰ मणसा कायसा ३८, अहवा करेंतं नाणुजाणह वयसा कारयसा ३०, एक्ववह ज करेति मणसा कायसा ३६, अहवा न कारवेइ वयसा कायसा ३७, अहवा करेंते नाणुजा॰ मणसा वयसा ३८, अहवा करेंतं नाणुजा॰ मणसा कायसा ३२, अहवा करेंते नाणुजाणह वयसा कार्यसा ३०, एक्ववहं ज कारवेति	८ शतके उद्देशः ५ ॥६४९॥
	ममाणे न करेति मणसा ४१, अहवा न करेति वयसा ४२, अहवा न करेति कायसा ४२, अहवा न कारवेति	

ष्याख्यां- प्रज्ञप्तिः ॥६५०॥	मणसा ४४, अहवा न कारवेति वयसा ४५, अहवा न कारवेइ कायसा ४६, अहवा करेंतं नाणुजाणइ मणसा४७ अहवा करेंतं नाणुजा॰ वयसा ४८ अहवा करेंतं नाणुजाणइ कायसा ४९। [प्र॰] हे भगवन् ! जे अमणोपासकने पूर्वे स्थूल प्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान होतुं नथी, ते पछीथी तेनुं प्रत्याख्यान करतो छुं करे ? [उ॰] हे गौतम ! अतीत काले करेल प्राणातिपातने प्रतिकमे-निन्दे, प्रत्युत्पन्न (वर्तमान) प्राणातिपातनो संवर-रोध करे, अने अनागत (भविष्य) प्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान करे. [प्र॰] हे भगवन् ! अतीत कालना प्राणातिपातने प्रतिक्रमतो ते श्रम- णोपासक शुं १ त्रिविघे त्रिविघे प्रतिक्रमे, २ त्रिविघ द्विविघे ३ त्रिविघ एकविघे, ४ द्विविघ त्रिविघे, ५ द्विविघ द्विविघे, ६ द्विविघ एकविघे, ७ एकविघ त्रिविघे, ८ एकविघ द्विविघे, के ९ एकविघ एकविघे प्रतिक्रमे ? [उ॰] हे गौतम ! १ त्रिविघ त्रिविघे प्रति- करते, २ त्रिविघ द्विविघे त्रतिक्रमे-इत्यादि पूर्वे कबा प्रमाणे यावत् ९ एकविघ एकविघे प्रतिक्रमे. त्रिविघ त्रिविघे प्रतिक्रमतो मन, बचन अने कायाथी करतो नथी, करावतो नथी अने करताने अनुमोदन आपतो नथी; २ द्विविघ त्रिविघे प्रतिक्रमतो मन अने वच- नथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमोदन आपतो नथी; ३ अथवा मन अने कायथी करतो नथी, करावतो नथी, जने करनारने अनुमति आपतो नथी; ४ अथवा वचन अने कायथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ५ त्रिविघ एकविघे प्रतिक्रमतो मनथी करतो नथी, करावतो नथी, अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ६ अथवा वचनथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ७ अथवा कायथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनु-	८ शतके उद्देशः ५ ॥६५०॥
	करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ७ अथवा कायथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनु- मति आपतो नथी; ८ दिविध त्रिविध प्रतिक्रमतो मन, वचन अने कायथी करतो नथी अने करावतो नथी; ९ अथवा मन, वचन	

८ शतके उद्देशः ५

1144811

ध्याख्या-प्रज्ञप्तिः ||६५१||

Ċ.

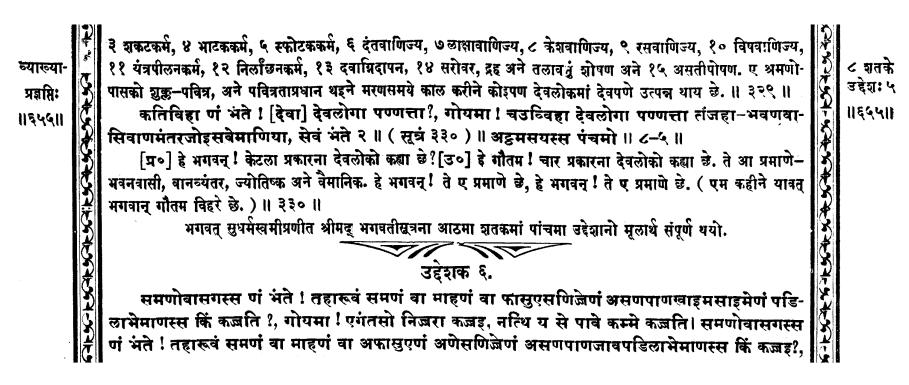
A.S.

For Private and Personal Use Only

प्रज्ञांतेः 了	मैन अने यचनथी करावती नथी, ३६ अपवा मन अने कायथी करावतो नथी, ३७ अथवा बचन अने कायथी करावतो नथी, ३८ अथवा मन अने वचनथी करनारने अनुमति आपतो नथी, ३९ अथवा मन अने कायथी करनारने अनुमति आपतो नथी, ४० अथवा बचन अने कायथी करनारने अनुमति आपतो नथी; ४१ एकविघ एकविघे प्रतिक्रमतो मनथी करतो नथी, ४२ अथवा वचनथी करतो नथी, ४३ अथवा कायथी करतो नथी; ४४ अथवा मनथी करावतो नथी. ४५ अथवा वचनथी करराते नथी, ४२ अथवा वचनथी करतो नथी, ४३ अथवा कायथी करतो नथी; ४४ अथवा मनथी करावतो नथी. ४५ अथवा वचनथी करराते नथी, ४२ अथवा वचनथी करतो नथी, ४३ अथवा कायथी करतो नथी; ४४ अथवा मनथी करावतो नथी. ४५ अथवा वचनथी कररातते नथी, ४६ अथवा कायथी करावतो नथी, ४७ अथवा मनथी करनारने अनुमति आपतो नथी, ४८ अथवा वचनथी करनारने अनुमति अपतो नथी, ४९ अथवा कायथी करनारने अनुमति आपतो नथी. ५९ अपवा काद्यी करनारने अनुमति आपतो नथी. ५९ अपवा काद्या करनारने जनुमति आणियव्वा । ५९ चचक्ता कार्य का कार्य करना नथी करनार पचक्ता कार्य कार्य करनार कार्य करना कार्य करनार कार्य करता नथी, ५९ ज्यान्य भूलमुसाबाए अपचक्ता भाणियव्वा जाव अहवा करते नाणुजाणाइ कायसा ॥ समणोवासगस्य करे गुवनामेव भूलमुसावाए अपचक्ता करते नाणुजाणह कायसा ॥ एप चल्र प्रि कार्य कुलस्य महेल, सूलगस्य परिजन इत्व जाव अहवा करेते नाणुजाणह कायसा ॥ एप चल्र एरसगा समणोवासगा भवति, नो खल्ड एरिसगा आजीवियोवासगा भवति ॥ (सूत्रं ३२८)॥ (प्र•) प्रत्य वर्य न न्ये स्वर करे ? इत्यादि	T X	८ त्रतके उद्देशः ५ ॥६५२॥	
Æ	[प्र॰] प्रत्युत्पन्न (वर्तमान) प्राणातिपातनो संवर (रोघ) करतो (अमणोपासक) द्युं त्रिविघ त्रिविघे संवर करे ? इत्यादि.	2		

घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६५३॥	[उ०] जेम प्रतिक्रमता ओगणपचास भांगा कह्या, तेम संवर करतां पण अगेगणपचास भांगा कहेवा. [प्र०] अनागत प्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान करतो (श्रमणोपासक) छुं त्रिविध त्रिविधे प्रत्याख्यान करे ? इत्यादि. [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे ओगणपचास भांगा यावत् 'अथवा कायवडे करनारने अनुमति आपतो नथी' त्यांसुघी कहेवा. [प्र०] हे भगवन् ! जे श्रमणोपासके पहेलां स्थूल मुपाना- वादनुं प्रत्याख्यान कर्यु नथी, पछीथी हे भगवन् ! ते स्थूलमुपावादनुं प्रत्याख्यान करतो छुं करे? [उ०] जेम प्राणातिपातना एकसो सुडताळीश्व भांगा कह्या, तेम मुपावादना पण एकसो सुडतालीश भांगा कहेवा, ए प्रमाणे (स्थूल) अदत्तादानना, स्थूल् मैथुनना अने स्थूल परिग्रहना पण भांगाओ यावत् 'अथवा कायथी करनारने अनुमति आपतो नथी' त्यांसुघी जाणवा. आ आवा प्रकारना अने स्थूल परिग्रहना पण भांगाओ यावत् 'अथवा कायथी करनारने अनुमति आपतो नथी' त्यांसुघी जाणवा. आ आवा प्रकारना अमणोपासको होय छे, पण आवा प्रकारना आजीविकना (गोशालना) उपासको होता नथी. ॥ ३२८ ॥ आजीबियसमयस्स णं अयमट्टे पण्णत्ते अक्ष्वीणपडिभोइणो सच्वे सत्ता से हता छेत्ता भेत्ता लुंपित्ता बिल्ठं- पित्ता उद्दवइत्ता आहारमाहारेति, तत्थ खलु इमे दुवालस आजीवियोवासगा भवंति, तंजहा-ताले ? तालपलंबे २ उव्विहे ३ संविहे ४ अवविहे ५ उदए ६ नामुदए ७ णमुदए ८ अणुवालए ९ संखवालए १० अयंबुछे ११ कायरए १२, इबेते दुवालस आजीवियोवासगा अरिहंतदेवतागा अम्मापिउसुस्सूसगा पंचफलपडिक्तंता, तंजहा-उंबरेहिं वडहिं बोरेहिं सतरेहिं पिलखूहिं, पलंडुल्हसणकंदमूलविवज्जगा अणिछछिएहिं अणक्षभिन्नेहिं गोणेहिं तसपाण-	े जदगः ५ ॥६५३॥ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
		×-F×

ध्याख्या-		णेत्तए, तंजहा-इंगालकम्मे वणकम्मे साडीकम्मे भाडीकम्मे फोडीकम्मे दंतवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे केसवाणिज्जे रस- वाणिज्जे विसवाणिज्जे जंतपीलणकम्मे निऌंछणकम्मे दवग्गिदावणया सरहदतलाय^रिसोसणया असतीपोसणया,	×	८ ईतके
प्रज्ञतिः	, ₽	इचेते समणोवासगा सुका सुकाभिजातीया भविया भवित्ता कालमासे कालं किंचा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उ-	Ŷ	उद्देश्वः ५
ાદ્દપશા	*	ववत्तारो भवंति ॥ (सूत्रं ३२९) ॥	×	ાક્ષશા
	ž	आजीविक (गोशालक) ना सिद्धांतनो आ अर्थ छे− 'दरेक जीवो अक्षीणपरिभोगी−सचित्ताहारी छे, तेथी तेओ (लाकडी वगे-	X	
	X	रेथी) हणीने (तरवार वगेरेथी) छेदीने, (श्लादिथी) भेदीने, (पांख वगेरेना कापवावडे) लोप करीने (चामडी उतारवाथी) विलोपीने	X	
	ŧ	अने विनाश करीने खाय छे. (अर्थात् बीजा जीवो हननादिर्मा तत्पर छे) पण आजीवकना मतमां आ बार आजीविकोपासको कढ्या	Ħ	
	X	छे, ते आ प्रमाणे–१ ताल, २ तालप्रलंब, ३ उद्विध, ४ संविध. ५ अवविध, ६ उदय, ७ नामोदय, ८ नर्मोदय, ९ अनुपालक,	ž)	
	3	१० इंखपालक, ११ अयंबुल अने १२ कातर−ए बार आजीविकना डपासको छे, तेओनो देव अईत् (गोशालक) छे, मातापितानी	2	
	¥	सेवा करनारा तेओ आ पांच प्रकारना फलने खाता नथी; ते आ प्रमाणे-१ उंबराना फल, २ वडना फल, ३ बोर, ४ सनरनां फल	A L	
	X	अने ५ पींपळाना फल, तेओ डुंगळी, लसण अने कंदमूलना विवर्जक (त्यागी) छे. तेओ अनिर्छाछित (खसी नहि करायला), नहि	2	
	S	नाथेला (नाक विंधेला) एवा वळदोवडे त्रसप्राणीनी हिंसा विवर्जित व्यापारवडे आजीविका करे छे. ज्यारे ए गो ञालकना आवको	1	
	ŧ	पण ए प्रकारे धर्मने इच्छे छे, तो पछी जे आ अमणोपासको छे तेओने माटे शुं कहेवुं ? जेओने आ पंदर कर्मादानो ख़यं करवाने,	Ť	
	2	बीजा पासे कराववाने अने अन्य करनारने अनुमति आपवाने कल्पतां नथी, ते कर्मादानो आ प्रमाणे छे-? अंगारकर्म, २ वनकर्म,	¥.	



म्याख्या- प्रह्मप्तिः प्रह्मप्तिः महाप्तिः महाप्तिः महाप्तिः महाप्तिः महाप्तवे माध्यद्विम् आद्यअविरयपडिहयपच्चक्रखायपावकम्मं फासुएण वा अफासुएण वा एसणिज्रेण वा अणेसणिज्रेण वा असण- पाण जाव किं कज्जह?, गोयमा ! एगंतसो से पावे कम्मे कज्जह, नत्थि से काह निज्जरा कज्जह ॥ (सूत्रं ३३१) ॥ [प्र॰] हे भगवन् ! तेवा प्रकारना (उत्तम) श्रमण या ब्राह्मणने प्राप्तुक अचित्त अने एषणीय (निर्दोष) अञ्चन, पान, खादिम तया खादिम आदारवडे प्रतिलाभता-सत्कार करता-श्रमणोपासकने छुं (फल्ल) थाय ? [उ॰] हे गौतम ! एकांत निर्जरा थाय, पण तेने पाप कर्म न थाय. [प्र॰] हे भगवन् ! तेवा प्रकारना श्रमण या ब्राह्मणने अप्रासुक (सचित्त) अने अनेषणीय (सदोष) अञ्च- नादिवडे प्रतिलाभता श्रमणोपासकने छुं (फल्ल) थाय ? [उ॰] हे गौतम ! घणी निर्जरा थाय, अने अत्यन्त अल्प पापकर्म थाय. [प्र॰] हे भगवन् ! तेवा प्रकारना विरतिरहित, अप्रतिहत अने अप्रत्याख्यान पापकर्मवान्या असंयतने प्रायुक अथवा अप्रासुक, एष- णीय अथवा अनेषणीय अज्ञनादिवडे प्रतिलाभता श्रमणोपासकने छुं फल्ल थाय ? [उ॰] हे गौतम ! एकांत पापकर्म थाय, पण कांह निर्जरा न थाय. ॥ ३३१ ॥ निग्गंथं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्वं केई दोहिं पिंडहिं उवनिमंतेज्ञा-एगं आउसो ! अप्रपणा मुंजाहि, एगं थेराणं दल्याहि, से य तं पिण्ड पडिग्गहेज्जा, थेरा य से अणुगवेसियव्वा सिया, जत्थेव अणुगेवसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेवाणुप्पदायब्वे सिया, नो चेव णं अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तं नो अप्रपणा मुंजेज्जा, नो अन्नेसिं दावए, एगंते अणावाए अचित्ते बहुकासुए थंडिछे पडिछेहेत्ता पमज्जित्ता परिट्रावेयव्वे सि-	प् स म अ स अ स अ स अ स अ स अ स अ स अ स व स्वाः स् ॥ स्पस् ॥ स्पस् ॥ स्पस् ॥ स्पस् ॥ स्पस् ॥ स्पस् अ स्वा स्वा स्वा अ स्वा अ स्वा अ स्वा अ स्वा अ स्वा अ स्वा अ स्वा स्वा स्वा अ स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा
---	--

या। निग्गंधं च णं गाहावइकुल पिंडवायपडिपाए अणुप्पविई केति तिहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्ञा-एगं आउसो ! अप्पणा मुंजाहि, दो थेराणं दलयाहि, से य ते पडिग्गहेज्ञा, थेरा य से अणुगवेसेयव्वा सेसं तं चेव जाव परि- प्रक्राप्तिः इावेयव्वे सिया, एवं जाब दसहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्ञा, नवरं एगं आउसो ! अप्पणा मुंजाहि, नव थेराणं दलयाहि होवेयव्वे सिया, एवं जाब दसहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्ञा, नवरं एगं आउसो ! अप्पणा मुंजाहि, नव थेराणं दलयाहि सेसं तं चेव जाव परिट्रावेयव्वे सिया। निग्गंधं च णं गाहावइ जाव केइ दोहिं पडिग्गहेहिं उवनिमंतेज्जा-एगं आउसो ! अप्पणा पडिमुंजाहि, एगं थेराणं दलयाहि, से य तं पडिग्गहेज्ञा, तहेव जाव तं नो अप्पणा पडिमुंजेज्ञा, नो अन्नोसिं दावए, सेसं तं चेव जाव परिट्ठवेयव्वे सिया, एवं जाव दसहिं पडिग्गहेहिं, एवं जहा पडिग्रहवत्तव्वया भणिया एवं गोच्छगरयहरणचोलपटगकंवलल्डीसंधारगवत्तव्वया य भाणियव्वा जाव दसहिं पडिग्रहवत्तव्वया भणिया एवं गोच्छगरयहरणचोलपटगकंवल्लडीसंधारगवत्तव्वया य भाणियव्वा जाव दसहिं पंडिग्रहवत्तव्वया भणिया एवं गोच्छगरयहरणचोलपटगकंवल्लडीसंधारगवत्तव्वया य भाणियव्वा जाव दसहिं मंत्रण करे के-हे आयुष्मन् ! एक पिंड तमे खाजो, अने बीजो पिंड स्थविरोने आपजो. पछी ते निग्रंथ ते (बक्रे) पिंडने प्रहण करे अने ते स्थविरोनी शोध करे; तपास करतां ज्यां स्थविरोने छुए त्यांज ते पिंड तेने आपे, जो कदाच शोधतां स्थविरोने न छुए तो ते पिंड पोते लाय नहीं अने बीजाने आपे नहीं, पण एकान्त, अनापात-ज्यां कोइ आवे नहि एवी आचित्त जने बहु प्रायुक् करे छते (भूमि) ने जोइने, प्रमार्जीति त्यां परठवे. [प्र•] गृहस्थना घरे आहार ग्रहाण करवाना इरादार्थी प्रदेश करेला निग्रन्थने कोइ गृहस्थ त्रण पिंड प्रहण करवाने उपनिमंत्रण करे के-हे आयुष्मन् ! एक पिंड तमे खानो अने बीजा वे पिंड त्योत्तने आपजो.	Ę
---	---

ध्याख्या-	पछी ते निर्ग्रंथ ते पिंडोने ग्रहण करे, अने खविरोनी तपास करे. बाकीनुं पूर्वस्वत्रनी पेठे जाणवुं, यावत् परठवे, ए प्रमाणे यावत् दश पिंडोने ग्रहण करवाने उपनिमंत्रण करे, परन्तु एम कहे के हे आयुष्मन् ! एक पिंड तमे खाजो अने बाकीना नव पिंड खवि-	ू ८ २ शतके
प्रज्ञप्तिः 👌	्रिंग पिडाण प्रहेण फरवान उपानमंत्रण कर, परन्तु एम कह के हे आयुरमन्। एक पिड तम खाजा अने बाकाना नवे पिड स्थाव- रोने आपजो, बाकी बधुं पूर्वनी पेठे जाणबुं, यावत परठवे. [प्र०] निग्रंथ यावत ग्रहपतिना कुलमां प्रवेश करे अने कोइ गृहस्थ बे	
।।६५८॥	ी पत्रिवर्ड तेने उपनिमंत्रण करे के-हे आयुष्मन एक पात्रनो तमे उपभोग करजो अने बीजं पात्र स्थविरोने आपजो. ते बन्ने पात्रोने 🗗	115961
3	🛛 ग्रहण करे, बाकीनुं ते प्रमाणे जाणवुं, यावस् पोते ते पात्रनो उपयोग न करे अने बीजाने आपे नहीं,बाकीनुं पूर्वनी पेठे जाणवुं,यावत्	<u>D</u>
2	ते पात्रने परठवे. ए प्रमाणे यावत् दस पात्र सुधीकहेवुं, जे प्रमाणे पात्रनी वक्तव्यता कही छे तेम गुच्छा, रजोहरण, चोलपट्ट, कंबल,	5
t s	दंड अने संसारकनी वक्तव्यता कहेवी, यावत दश संसारकवडे उपनिमंत्रण करे, यावत तेने परठवे. ॥ ३३२ ॥ निग्गंथेण य गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविट्ठेणं अन्नयरे अकिचट्ठाणे पडिसेविए, तस्स णं एवं भवति-	Ŕ
Ċ	इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि पडिक्षमामि निंदामि गरिहामि विउद्दामि विसोहेमि अकरणयाए	
	अब्मुट्ठेमि आहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जामि, तओ पच्छा थेराणं अंतियं आलोएस्सामि जाव तवो-	2
×	कम्म पडिवजिस्सामि, से य संपहिओ असंपत्ते थेरा य पुव्वामेव अमुहा सिया से णं भंते ! किं आराहए वि-	2
X	राहए ?, गोयमा ! आराहए, नो विराहए १, से य संपहिए असंपत्ते अप्पणा व पुब्वामेव अमुहा सिया, से	
Ģ	राहए ?, गोयमा ! आराहए, नो विराहए १, से य संपट्टिए असंपत्ते अप्पणा व पुब्वामेव अमुहा सिया, से णं भंते ! किं आराहए विराहए ?, गोयमा! आराहए, नो विराहए २, से य संपट्टिए असंपत्ते अप्पणाय पुव्वा- मेव थेरा य कालं करेज़ा से णं भंते ! किं आराहए विराहए?, गोयमा ! आराहए, नो विराहए ३, से य संपट्टिए	
Ċ.	य मब थरा य काल करज्या स पा मत माक आराहए बराहए?, गायमा में आराहए, ना बराहए २, स य सपाइए	4

६५९		असंपत्ते अप्पणा य पुट्वामेव कालं करेजा से णं भंते ! किं आराइए विराहए?, गोयमा ! आराइए, नो विराहए ४, [भ॰] कोई निर्भन्थे गृहपतिना घरे आहार ग्रहण करवाना इरादाथी प्रवेश करता कोइ अकुत्य खाननुं प्रतिसेवन कयु होय, पछी ते निर्भन्थना मनमां एम थाय के-"प्रथम हुं अहींज आ अकार्य खाननुं आलोचन. प्रतिक्रमण, निन्दा अने गर्हा करुं, (तेना अनुबन्धने) छेदुं, विशुद्ध करुं, पुनः न करवां माटे तैयार थाउं, अने यथायोग्य प्रायश्वित्तरूप तप कर्मनो खीकार करुं. त्यारपछी खविरोनी पासे जहने आलोचना करीश, यावत् तपकर्मनो खीकार करीश." (एम विचारी) ते निर्ग्रन्थ खविरोनी पासे जवा नीकल्ले अने त्यां पहोंच्या पहेलां ते खविरो (वातादि दोषना प्रकोपथी) मूक थइ जाय-बोली न शके अर्थात् प्रायश्वित्त न आपी शके तो हे भगवन् ! शुं ते निर्भन्थ आराधक छे के विराधक छे ? [उ॰] हे गौतम ! ते निर्भन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. (१) [प॰] हवे ते निर्भ्रन्थ स्थविरोनी पासे जाय अने त्यां पहोंच्या पहेला ते (निर्भ्रन्थ) मूक थइ जाय तो हे भगवन् ! शुं ते निर्भ्रन्थ आराधक छ के विराधक छे ? [उ॰] हे गौतम ! ते निर्भ्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. (२) [प॰] ते निर्भ्रन्थ खविरोनी पासे जवा नीकळे अने ते पहोंच्या पहेलां ते स्थविरो काळ करे तो हे भगवन् ! ते निर्भ्रन्थ आराधक छे के विराधक छे ? [उ॰] हे गौतम ! ते निर्भ्रन्थ आराधक छे के विराधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. (३) [प॰] हवे स्थविरोनी पासे जवा निकळेलो ते निर्भ्रन्थ स्थविरोनी पासे पहोंच्या नोकळे अने ते पहोंच्या पहेलां ते स्थविरो काळ करे तो हे भगवन् ! ते निर्भ्रन्थ आराधक छे के विराधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. (३) [प०] हवे स्थविरोनी पासे जवा निकळेलो ते निर्म्रन्थ स्थविरोनी पासे पहोंच्या	TOLEGAN - POR	उ रेश: ६ उद्देश: ६
	ちょう ひょう	ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. (३) [प्र०] इवे स्थविरोनी पासे जवा निकळेलो ते निर्ग्रन्थ स्थविरोनी पासे पहोंच्या पहेला पोते काळ करी जाय तो हे भगवन्! छुं ते आराधक छे के विराथक छे? [उ०] हे गौतम ! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. (४)	2-52-56	
	Å Y	से य संपहिए संपत्ते थेरा य अमुहा सिया, से णं भंते! किं आराहए बिराहः?,गोयमा ! आराहए, नो बि-	L.	

घ्याख्या- प्रज्ञतिः ।।६६०॥	राहए, सेय संपहिए संपत्ते अप्पणा य, एवं संपत्तेणवि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा जहेव असंपत्तेणं । निग्गंधेण य बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिंवा निक्खंतेणं अन्नयरे अकिचट्टाणे पडिसेविए,तस्स णं एवं भवति-इहेव ताव अहं एवं एत्थवि एते चेव अट आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए । निग्गंधेण य गामाणुगामं दूइजमाणेणं अन्नयरे अकिचट्टाणे पडिसेविए तस्स णं एवं भवति इहेव ताव अहं एत्थवि ते चेव अट आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए ॥ निग्गंधीए य गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्टाए अन्नयरे अकिचटाणे पडिसेविए तीसे णं एवं भवइ, इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि जाव तवोकम्मं पडिवज्ञामि तओ पच्छा पवत्ति- गीए अंतियं आलोएस्सामि जाव पडिवज्जिस्सामि, सा य संपट्टिया असंपत्ता पवत्तिणी य अम्रुहा सिया, सा णं भंते ! किं आराहिया विराहिया ?, गोयमा ! आराहिया, नो विराहिया, सा य संपट्टिया जहा निग्गंथस्स तिन्नि गमा भणिया एवं निग्गंधीएवि तिन्नि आलावगा भाणियव्वा जाव आराहिया, नो विराहिया ॥ [प्र०] ते निर्धन्थ स्थविरोनी पासे जवा नीकळे अने पहोंचता वार ते स्थविरो मूक थइ जाय, तो हे भगवन् ! शुं ते निर्धन्थ आराषक छे के विराषक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते निर्धन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. हवे ते निर्धन्य स्थविरोनी पासे जाय अने त्यां पहोंचता वार ते (निर्धन्थ) मूक थइ जाय तो शुं ते निर्धन्थ आराधक छे के विराधक छे ? इत्यादि संप्राप्त (पहोंचेल)) निर्धन्थना चार आलापक असंग्रप्त (नहि पहोंचेला) निर्धन्थनी पेठे कहेवा. कोई निर्धन्थे बहार निहारभूमि के विहारभूमि तरफ जतां कोइ एक अक्रुत्यस्थानचुं प्रतिसेवन कर्धु होय, पछी तेने एम थाय के 'हुं प्रथम अर्ही तेनुं आलोचनादि करं'-इत्यादि पूर्वनी	भि-भूभ भूम-भूम-भूम-भूम-भूम-भूम-भूम-भूम-भूम-भूम-	ą
	के जता कोई एक अकृत्यस्थाननु प्रातसवन कयु हाय, पछा तन एम थाय के 'हु प्रथम अही तनु आलोचनादि करु'-इत्यादि पूवनी	*	

प्रबंधिः में यावत 'ते निर्ग्रन्थ विराधक नथी.' प्रि०] कोई साध्वीए आहार ग्रहण करवाना इरादाथी गृहपतिना घरे प्रवेश करता कोइएक अक्र-	्शतके इशः ६ ६६१॥
---	------------------------

For Private and Personal Use Only

प्रइतिः 🕺 कोइ एक पुरुष एक मोटा ऊनना, गजना लोमना, शणना रेसाना, कपासना रेसाना, तृणना अग्रभागना बे, त्रण के संख्यात छेद-	८ शतके उद्देशः ६ ॥६६२॥
---	------------------------------

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६६३॥	टाकणुं बळे छे, के ज्योति-दीपशिखा बळे छे ! [उ०] हे गौतम ! दीवो बळतो नथी, यावत् दीवानुं ढांकणुं बळतुं नथी, पण ज्योति बळे छे. [प्र०] हे भगवन् ! बळता घरमां शुं बळे छे ? दुं घर बळे छे, भींतो बळे छे, त्राटी बळे छे, धारण (मोभनी नींचेना स्तंभो) बळे छे, मेभ बळे छे, वांसो बळे छे, मछो (भींतोना आधार यांभला) बळे छे. छींदरीओ बळे छे, छापरुं बळे छे, छादन-टाभ वगेरेतुं ढांकण बळे छे के ज्योति-अग्नि बळे छे ? [उ०] हे गौतम ! घर बळतुं नथी, भींतो बळती नथी, यावत् डाभ वगेरेतुं छादन बल्दुं नथी, पण ज्योति बळे छे. ॥ ३३४ ॥ जीवे णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ?, गोयमा ! सियतिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंच- किरिए सिय अकिरिए ॥ नेरइए णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया (ए) ?, गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए । असुरकुमारे णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया (ए) ?, गोयमा ! सिय तिकिरिए जाव वेमाणिए, नवरं मणुस्से जहा जीवे । जीवे णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ?, गोयमा ! सिय तिकिरिए जाव सिय अकिरिए । [प्र०] हे भगवन् ! एक जीव (परकीय) एक औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! कदाच त्रण कियावाळो, कदाच चार कियावाळो. कदाच पांच कियावाळो, अने कदाच अक्रिय (किया रहित) होय. [प्र०] हे भगवन् ! एक नारक (परकीय) एक औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! कदाच चार कियावाळो अने कदाच पांच कियावाळो होय. [प्र०] हे भगवन् ! एक असुरकुमार (परकीय) एक औदारिक शरीरने आश्रयी चार कियावाळो अने कदाच पांच कियावाळो होय. [प्र०] हे भगवन् ! एक असुरकुमार (परकीय) एक औदारिक शरीरने आश्रयी		८ शतके उद्देशः ६ ॥६६३॥
-----------------------------------	---	--	------------------------------

	८ चतक उद्देशः ६ ॥६६४॥
--	-----------------------------

ાર્ક્લ્લા	अ कराच त्रण कियावाळा पण हाय, चार कियावाळा पण हाय, पाच कियावाळा रण हाय अने कियाराहत पण हाय. [प्रण] ह नगर अ वन् ! नैरयिको (परकीय) औदारिक शरीरोने आश्रयी केटली कियावाळा होय ? [उ०] हे गौतम ! त्रण कियावाळा पण होय, चार	र भतके उद्याः ६ उद्याः ६ ॥६६५॥
	🌮 कियावाळा हाय ? [उ०] इ गातम ! कदाच त्रण कियावाळा अन कदाच चार कियावाळा होय. ए प्रमाण यावत् वमानिक सुधो	Ê

भ्याख्या- प्रह्लासः प्रह्लासः प्रह्लानि कार्युं, पण मनुध्यने जीवनी पेठे जाणवो. ए प्रमाणे जेम औदारिक शरीरना चार दंडक कह्या, तेम वैकिय शरीरना पण चार दंडक कहेवा, परन्तु तेमां पांचमी किया न कहेवी. बाकीनुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे जेम बैकिय शरीर संबन्धे कहुं, तेम आहरक, तैजस अने कार्मण शरीर संबंधे पण कहेंदुं. एक एकना चार दंडक कहेवा, यावत् [प्र0] हे भगवन् ! वैमानिको कार्मण शरीरोने आश्रयी केटली कियावाळा होय ? [उ0] हे गौतम ! त्रण क्रियावाळा पण होय अने चार क्रियावाळा पण होय. हे भग- शरीरोने आश्रयी केटली कियावाळा होय ? [उ0] हे गौतम ! त्रण क्रियावाळा पण होय अने चार क्रियावाळा पण होय. हे भग- वन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. (एम कही यावत् भगवान् गौतम विहरे छे.) ॥ ३२५ ॥ भगवत् सुधर्मसामीत्रणीत श्रीमद् भगवतीसत्रना आठमा शतकमां छट्ठा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो. जिएां कालेणं २ रायगिहे नगरे वन्नओ, गुणसिलए चेइए वन्नओ, जाव पुढविसिलावद्दओ, तस्स णं गुणसि- तरेणं कालेणं २ रायगिहे नगरे वन्नओ, गुणसिलए चेइए वन्नओ, जाव पुढविसिलावद्दओ, तस्स णं गुणसि- तरस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अन्नउत्थिया परिवसंति, तेणं कालेणं २ समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव समोसढे जाव परिसा पडिगया, तेणं कालेणं २ समणस्य भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवतो जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना जहा बितियसए जाव जीवियासामरणभयविप्पमुक्का समणस्म भगवओ महावीरस्स अदृरसामंते उड्हंजाण् अहोसिरा झाणकोद्वोवगया संजमेणं तबसा अप्पाणं भावेमाणा जाव विहरति, तण् णं ते अन्नउत्थिया जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति २ त्ता ते थेरे भगवंते एवं वयासी जुन्भे णं अज्ञो ! ति-	॥६६६॥
---	-------

विहं तिबिहेणं अस्संजयअविरयअप्पडिहय जहा सत्तमसए बितिए उद्देमए जाव एगंतबाले यावि भवह, तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं बवासी-केण कारणेणं अज्ञो ! अम्हे तिबिहं तिबिहेणं अस्संजयअविरय जाव एगंतबाला यावि भवामो ?, तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी-तुब्भे णं अज्जो ! अदिन्नं गेण्हह अदिन्नं भुंजह अदिन्नं सातिज्ञह, तए णं ते तुब्भे अदिन्नं गेण्हमाणा अद्रिन्नं भुंजमाणा अदिन्नं सातिज्ज- गेण्हह अदिन्नं भुंजह अदिन्नं सातिज्ञह, तए णं ते तुब्भे अदिन्नं गेण्हमाणा अद्रिन्नं भुंजमाणा अदिन्नं सातिज्ज- नाणा तिविहं तिविहेणं अस्संजयअविरय जाव एगंतवाला यावि भवह, ते काले अने ते समये राजगृह नामे नगर हतुं. वर्णन. गुणसिलक चैत्य हतुं. वर्णन. यावत् पृथिवीग्निलाफ्ट ह हतो. ते गुण- सिलक चैत्यनी आसपास थोडे दूर घणा अन्यतीथिको रहे छे. ते काले ते समये श्रमण भगवान् महावीर. तीर्थनी आदिना करनारा यावत् समोसर्या, यावत् परिषद् विसर्जित थइ. ते काले-ते समये श्रमण भगवंत महावीरना घणा शिष्यो, स्थविर भगवंतो जाति- संपन्न, इलसंपन्न-इत्यादि जेम बीजा वतकमां वर्णव्या छे तेवा, यावत् जीवितनी आज्ञा अने मग्णना भयथी रहित हता. अने श्रमण भगवंत महावीरनी आसपास उंचा ढींचण करी नीचे मसक नमावी, ध्यानरूप कोष्ठने प्राप्त आवेरा, नेओ संयम अने तपवडे आत्माने भावित करता यावत् विहरे छे.त्यारपछी ते अन्यतीधिको ज्यां स्थविर भगवंतो छे त्यां आते छे, अने त्यां आतीने नेओए	२ शतक उद्देशः ७ २ इद्दाः ७ १।६६७॥	
अमण भगवंत महावीरनी आसपास उंचा ढींचण करी नीचे मसक नमावी, ध्यानरूप कोष्टने प्राप्त थयेला, तेओ संयम अने तपवडे आत्माने भावित करता यावत् विहरे छे. त्यारपछी ते अन्यतीथिंको ज्यां स्थविर भगवंतो छे त्यां आवे छे, अने त्यां आवीने तेओए ते स्थविर भगवंतोने एम कढ्ढुं के-'हे आया ! तमे त्रिविधे त्रिविधे असंयत, अविरत अने अप्रतिहत पापकर्भवाळा छो' इत्यादि जेम सातमा शतकना बीजा उद्देशकमां कढ्ढा प्रमाणे यावत् एकांत बाल-अज्ञ छो. त्यारवाद ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीथिंकोने एम कढ्ढुं के, हे आयों ! अमे क्या कारणथी त्रिविधे त्रिविधे असंयत, अविरत यावत् एकांत बाल छीए. त्यारवाद ते अन्यतीथिंकोने एम	X	

स्याख्या- प्रज्ञांतेः प्रज्ञांतेः ॥६६८॥ स्विर भगवंतोने एम कह्युं के, हे आयों ! तमे अदत्त (कोइए नहीं आपेल) पदार्थनुं ग्रहण करता, अदत्त ने जमता अने अदत्तनी अनु अदत्तनो स्वाद लो छो अर्थात् (ग्रहणादिकनी) अनुपति आपो छो, तेथी अदत्तनुं ग्रहण करता, अदत्तने जमता अने अदत्तनी अनु मति आपता तमे त्रिवित्रे त्रिवित्रे असंयत. अने अविरत यावत् एकांत बाल पण छो. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-केण कारणेणं अज्ञो ! अम्हे अदिन्नं गेण्हामो अदिन्न मुंजामो अदिन्नं सातिज्ञामो ?, जए णं अम्हे अदिन्नं गेण्हमाणा जाव अदिन्नं मातिज्ञमाणा तिविहं तिविहेणं अ संजय जाव एगंतवाला यावि भवामो ?, तए णं अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी-तुम्हा णंअज्ञो दिज्जमाणे अदिन्ने पडिग्गहेक्वमाणे अपडिग्गहिए निस्सरिज्जमाणे अणिसहे, तुन्भे णं अज्ञो ! दिज्जमाणं पडिग्ग हगं असंपत्तं एत्थ णं अंतरा केइ अवहरिज्ञा, गाहावइस्स णं तं भंते !, नो खलु तं तुन्भं, तए णं तुज्झे अदिन गेण्हह जाव अदिन्न सातिज्ञह. तए णं तुज्झे अदिन्नं गेण्हमाणा जाव एगंतवाला यावि भवह, तए णं ते थेर भगवतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-नो खलु अज्ञो! अम्हे अदिन्नं गिण्हामो अदिन्नं सुंजमाणा दिन्नं सातिज्ञमाणा तिविहं तिषिहेणं संजयविरयपडिहय जहा मत्तमसए जाव एगंतपंडिया यावि भवामो, तप णं ते अन्नउत्थियाते थेरे भगवंते एषं वयासी-केण कारणेणं अज्ञो ! तुम्हे दिन्नं गेण्हह जाव दिन्नं सातिज्जह, जप णं तुज्झे दिन्नं गेण्हमाणा जाव एगंतपंडिया यावि भवह ?,	४ शतके उद्देशः ७ १६६२॥ १६६८॥
---	---------------------------------------

प्रक्षतिः ॥इदि?॥ अपातुं होय ते आपेछं नथी, ग्रहण करातुं होय ते ग्रहण करायुं छं नथी, (पात्रमां) नंखातुं होय ते नंखायेछं नथी. हे आयों ! तमने आपवामां आवतो पदार्थ ज्यांसुधी पात्रमां पद्धो नथी, तेवामां वचमांथीज ते पदार्थने कोइ अपहरण करे तो ते गृहपतिना पदार्थनुं अपहरण थयुं एम कहेवाय, पण तमारा पदार्थनुं अपहरण थयुं एम न कहेवाय, तेथी तमे अदचनुं ग्रहण करो छो, यावत अदचनी अपहरण थयुं एम कहेवाय, पण तमारा पदार्थनुं अपहरण थयुं एम न कहेवाय, तेथी तमे अदचनुं ग्रहण करो छो, यावत अदचनी अनुमति आपो छो, माटे अदचनुं ग्रहण करता तमे यावत् एकांत अज्ञ छो. त्यारपछी ते स्थविर भगवतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कढुं के हे आयों ! अमे अदचनुं ग्रहण करता नथी, अदचनुं भोजन करता नथी अने अदचनी अनुमति आपीण छीए, माटे दचनुं ग्रहण करता, दचनुं भोजन करता अने दत्तनी अनुमति आपता अमे त्रिविध त्रिविये संयत, विरत अने पापकर्मनो नाश करवावाळा सप्तम शत्कमां कह्या प्रमाणे यावत् एकांत पंडित छीए. त्यारवाद ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवतीने एम कह्युं के, हे आयों ! तमे र तरा, दत्तनुं भोजन करता अने दत्तनी अनुमति आपता अमे त्रिविध त्रिविये संयत, विरत अने पापकर्मनो नाश करवावाळा सप्तम शतकमां कह्या प्रमाणे यावत् एकांत पंडित छीए. त्यारवाद ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवतीने एम कह्युं के, हे आयों ! तमे तए र्ण ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्तियए एवं वयासी-अम्हे णं अज्ञो ! दिज्ञमाणे दिन्ने पडिग्रहेज्ञमाणे पहिग्गहिए निसिरिज्जमाणे निसहे, जेणं अन्हे णं अज्ञो ! दिज्जमाणं पडिग्गहगं असंपत्तं एत्थ णं अंतरा	रार्थनं रचनी एम गर्थो ! ब्रहण सप्तम ! तमे ! तमे ! नमे ! नमे
---	--

ध्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६७०॥	दत्तनुं ग्रहण करता, यावत् दत्तनी अनुमति आपता अमे त्रिविध त्रिविधे संयत, यावत् एकांत पंडित पण छीए. हे आयों ! तमे पोतेज त्रिविध त्रिविधे असंयत यावत् एकांत बाल छो. त्यारबाद ते अन्यतीर्थिकोए ते व्यविर भगवंतोने एम कह्युं के, हे आयों ! क्या कारणथी अमे त्रिविध त्रिविधे यावत् एकांत बाल छीए ?त्यारबाद ते व्यविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! तमे अदत्तनुं ग्रहण करो छो, अदत्तनुं भोजन करो छो अने अदत्तनी अनुमति आपो छो माटे अदत्तनुं ग्रहण करता	्रु उद्दः	য়तके য়: ७ ৩০॥
	हे आर्यों ! तमे अदत्तनुं ग्रहण करो छो, अदत्तनुं भोजन करो छो अने अदत्तनी अनुमति आपो छो माटे अदत्तनुं ग्रहण करता तमे यावत् एकांत बाल छो.	*	

परितावेह किलामेह उद्दवेह, तए णं तुज्झे पुढविं पेचेमाणा जाव उवद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं असंजयअविरय जाव एगंतवाला यावि भवह, त्यारपछी ते अन्यतीर्थिकोए ते श्वविर भगवंतीने एम कधुं के, हे आर्यो ! अमे क्या कारणथी अदत्तनुं ग्रहण करीए छीए, यावत एकांत बाल छीए?त्यारबाद ते श्वविर भगवंतीए ते अन्यतीर्थिकोने एम कधुं के, हे आर्यो ! तमारा मतमां अपातुं ते अपायेछं नथी-इत्यादि पूर्वनी पैठे कहेवुं. यावत ते वस्तु ग्रहपतिनी छे, पण तमारी नथी, माटे तमे अदत्तनुं ग्रहण करी छो, याषत पूर्व प्रमाण तमे एकांत बाल छो. त्यारपछी ते अन्यतीार्थकोए ते श्वविर भगवंतीने एम कधुं के, हे आर्यो ! तमे प्रदिध करो छो, याषत पूर्व प्रमाणे तमे एकांत बाल छो. त्यारपछी ते अन्यतीार्थकोए ते श्वविर भगवंतोने एम कधुं के, हे आर्यो ! तमे त्रिविध त्रिविध असंयत यावत एकांत बाल छो. त्यारपछी ते अन्यतीार्थकोए ते श्वविर भगवंतोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! अमे क्या कारणथी त्रिविध-त्रिविधे यावत् एकांत बाल छो. त्यारपछी ते अन्यतीार्थकोए ते श्वविर भगवंतोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! तमे जात करता प्रधिवीनां जीवने	ष्यारूया- प्रज्ञप्तिः ॥६७१॥	जाव एगंतबाला याचि भवह, त्यारपछी ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतीने एम कधुं के, हे आयों ! अमे क्या कारणथी अदत्तर्नु ग्रहण करीए छीए, यावत एकांत बाल छीए?त्यारबाद ते स्थविर भगवंतीए ते अन्यतीर्थिकोने एम कधुं के, हे आयों ! तमारा मतमां अपातुं ते अपायेछुं नथी-इत्यादि पूर्वनी पैठे कहेवुं. यावत ते वस्तु ग्रहपतिनी छे,पण तमारी नथी, माटे तमे अदत्तनुं ग्रहण करो छो, यागत पूर्व प्रमाणे तमे एकांत बाल छो. त्यारपछी ते अन्यतीार्थकीए ते स्थविर भगवंतोने एम कधुं के, हे आयों ! तम त्रिविध त्रिविधे असंयत यावत एकांत बाल छो. त्यारवाद ते स्थविर भगवंतीए ते अन्यतीर्थिकोने एम कधुं के, हे आयों ! तमे त्रिविध त्रिविधे असंयत यावत दे एकांत बाल छो. त्यारबाद ते स्थविर भगवंतीए ते अन्यतीर्थिकोने एम कधुं के, हे आयों ! अमे क्या कारणथो त्रिविध-त्रिविधे यावत्	८ शतके उद्देशः ७ ॥६७१॥
---	-----------------------------------	---	------------------------------

अपरंत अन यावत एकात बाल पण छा. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउन्धिए एवं वयासी-नो खलु अज्ञो ! अम्हे रीयं रीयमाणा पुढर्षि पेंचेमो अभिहणामो जाव उवद्दवेमो, अम्हे णं अज्ञो ! रीयं रीयमाणा कायं वा जोयं वा रीयं वा पडुच देसं देसेणं वयामो पएसं पएसेणं वयामो, ते णं अम्हे देसं देसेणं वयमाणा पएसं पएसेणं वयमाणा नो पुढर्वि पेंचेमो अभिहणामो जाव उवद्दवेमो, तए णं अम्हे पुढर्वि अपेचेमाणा अणभिहणेमाणा जाव अणुवद्दवे- माणा तिविहं तिविहेणं संजय जाव एगंतपंडिया यावि भवामो, तुज्झे णं अज्ञो ! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं अस्संजय जाव बाला यावि भवह, तए णं ते अन्नउत्थिया थेरे भगवंतो एवं वयासी-केण कारणेणं अज्ञो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव एगंतवाला यावि भवामो ?, तए णं ते थेरा भगवंतो अन्नउत्थिप एवं वयासी-तुब्मे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पुढर्वि पे॰ जाव उद्दवेह, तए णं तुज्झे पुढर्वि पेचेमाणा जाव उवद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंवाला यावि भवह, त्यारबाद ते स्वविर भगवंतीए ते अन्यतीार्थकोने एम कह्यु के, हे आर्यो ! गति करता अमे प्रथिवीना जीवने दबावता नथी, इणता नथी, यात्रत् तेओने मारता नथी, हे आर्यो ! मति करता आमे कायना(ज्ञरीत) कार्यगे (येगन) (ग्लाविती सेवान)	ध्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६७२॥	पेचेमो अभिहणामो जाव उवद्दवेमो, अम्हे णं अज्ञो ! रीयं रीयमाणा कायं वा जोयं वा रीयं वा पडुच देसं देसेणं वयामो पएसं पएसेणं वयामो, ते णं अम्हे देसं देसेणं वयमाणा पएसं पएसेणं वयमाणा नो पुढविं पेचेमो अभिहणामो जाव उवद्दवेमो, तए णं अम्हे पुढविं अपेचेमाणा अणभिहणेमाणा जाव अणुवद्दवे- माणा तिविहं तिविहेणं संजय जाव एगंतपंडिया यावि भवामो, तुज्झे णं अज्जो ! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं अस्संजय जाव बाला यावि भवह, तए णं ते अन्नउत्थिया थेरे भगवंते एवं वयासी-केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव एगंतवाला यावि भवामो ?, तए णं ते थेरा भगवंतो अन्नउत्थिप एवं वयासी-तुब्मे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पुढविं पे॰ जाव उद्दवेह, तए णं तुज्झे पुढविं पेचेमाणा जाव उवदवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंवाला यावि भवह, त्यारबाद ते स्वविर भगवंतीए ते अन्यतीार्थकोने एम कह्यं के, हे आर्यो ! गति करता अमे पृथिवीना जीवने दबावता नथी,	
---	-----------------------------------	---	--

घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६७३॥	आश्रयी अने सरयने (जीवरक्षणरूप संयमने) आश्रयी एक स्वळेथी बीजे स्वळे जइए छीए, एक प्रदेशथी बीजे प्रदेशे जइए छीए, तो एक स्वळेयी बीजे स्वळे जता अने एक प्रदेशथी बीजे प्रदेशे जता अमे प्रथिवीना जीवने दबावता नथी, तेओने हणता नथी, यावत तेओने मारता नथी; तेथी पृथिवीना जीवोने नहि दबावता, नहीं हणता, यावत नहीं मारता अमे त्रिविध त्रिविधे संयत, यावत एकांत पंडित छीए, हे आयों ! तमे पोतेज त्रिविध त्रिविधे असंयत यावत एकांत बाल पण छो. त्यारपछी ते अन्यतीथिकोए ते स्थवि। भगवंतोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! क्या कारणथी अमे त्रिविध त्रिविधे यावत एकांत बाल पण छो. त्यारपछी ते अन्यतीथिकोए ते भगवंतोए ते अन्यतीथिकोने एम कर्युं के, हे आर्यो ! क्या कारणथी अमे त्रिविध त्रिविधे यावत एकांत बाल पण छो. यावत् मारो छो, माटे पृथिवीना जीवने दबावता, यावत् मारता तमे त्रिविध त्रिविधे (असंयत) यावत् एकांत बाल छो.	**	८ भतके उद्देशः ७ ॥६७३॥
	तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी-तुज्झे णं अजो ! गममाणे अगते वीतिकमिज्जमाणे अ- वीतिक्कंते रायगिहं नगरं संपाविउकामे असंपत्ते, तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी-नो खल्छ अजो ! अम्हं गममाणे अगए वीइक्कमिज्जमाणे अवीतिकंते रायगिहं नगरं जाव असंपत्ते, अम्हाणं अजो ! गम- माणे गए वीतिक्कमिज्जमाणे वितिकंते रायगिहं नगरं संपाविउकामें संपत्ते, तुज्झे णं अप्पणा चेव गममाणे अगए जीविक्किमजमाणे अनीकिकंते रायगिहं नगरं जाव असंपत्ते तए णंते थेरा भगवंतो अन्नउत्थिए एवं पडिहणेन्ति.	ちんしん	

ध्याख्या- प्रज्ञसिः ॥६७४॥	सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति (सूत्रं ३३७) । अट्टमसयस्स सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ८-७ ॥ प्रिवो हे भगवन ! गतिपातो केटला प्रकारे कहा छे? जिवो हे गौतम ! गतिपातो पांच प्रकारना कहा छे. ते आ प्रमाणे-१	हैं। उरे	्ञतके देशः ७ ६७४॥
---------------------------------	---	----------	-------------------------

1	5	उद्देशक ८.	€ F	
ब्याख्या-	3	रायगिहे नगरे जाव एवं वयासी-गुरू ण भंते ! पडुच कति पडिणीया पण्णत्ता?, गोयमा ! तओ पडिणीया	5	८्ञतके
प्रज्ञप्तिः	X	पण्णत्ता ?, तंजहा-आयरियपडिणीए उवज्झायपडिणीए थेरपडिणीए ॥ गई णं भंते ! पडुच कति पडिणीया	S	उद्देश: ८
ાા૬હ્પા	E.	पण्णत्ता १, गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तंजहा-इहलोगपडिणीए परलोगपडिणीए दुहओलोगपडिणीए॥	Č	૬૭५
) F	समूहण्ण भंते! पडुच कति पडिणीया पण्णत्ता?, गोयमा! तओ पडिणीया पण्णत्ता,तंजहा-कुरुपडिणीए गणप-	e A	
	z	डिणीए संघपडिणीए॥ अणुकंपं पडुच पुच्छा,गोयमा! तओ पडिणीया पण्णत्ता. तंजहा-तवस्सिपडिणीए गिलाण-	z	
	Ś	पडिणीए सेहपडिणीए ॥ सुयण्णं भंते ! पडुच पुच्छा, गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता. तंजहा-सुत्तपडिणीए	Ĉ,	
	\mathbf{x}	अत्थपडिणीए तदुभयपडिणीए । भावं णं भते ! पडुच पुच्छा, गोयमा ! तओ पडिणीया पन्नत्ता, तंजहा-	*	
, T	5	नाणपडिणीए दंसणपडिणीए चरित्तपडिणीए ॥ (सूत्रं ३३८) ॥	X	
	s S	राजगृढ नगरमां (गौतमे) यावत् ए प्रमाणे कह्युं के हे भगवन् ! गुरुओने आश्रयी केटला प्रत्यनीको (द्वेपी) कह्या छे ? [उ०]	Č,	
	*	हे गौतम! त्रण प्रत्यनीको कह्या छे, ते आ ममाणे-आचार्यप्रत्यनीक, उपाध्यायप्रत्यनीक अने स्थविरप्रत्यनीक. [प्र०] हे भगवन् !	×.	
	5	गतिने आश्रयी केटला प्रत्यनीको कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रत्यनीको कह्या छे, ते आ प्रमाणे-उहलीकप्रत्यनीक परलोक-	Ž	
	R	प्रत्यनीक अने उभयलोकप्रत्यनीक. [प्र०] हे भगवन् ! समूहने आश्रयी केटला प्रत्यनीको कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रत्य-	<u>S</u>	
	ф.X	नीको कढ्या छे, ते आ प्रमाणे–कुलप्रत्यनीक, मणप्रत्यनीक अने संघप्रत्यनीक. [प्र०] हे सगवन् ! अनुकंपाने आश्रयी प्रश्न; अर्थात्	Ě	

प्रजीत के प्रतित्यनीक अने राक्षप्रत्यनीक. [प्र०] इ मगवन् ग्रिया प्रत्र. [७०] इ गातमा त्रण प्रत्यनीको कह्या की प प्रइप्तिः 🖉 सूत्रप्रत्यनीक, अर्थप्रत्यनीक अने तदुभयप्रत्यनीक. [प्र०] हे भगवन् ! भावने आश्रयी प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रत्यनीको कह्या 🖉 उद्देश	ग्रतके शः ८ ७६॥
---	-----------------------

ख्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥ द७७॥	पे जे प्रकारे आगम होय ते प्रकारे तेणे आगमथी व्यवहार चलाववो, तेमां जो आगम न होय तो जे प्रकारे तेनी पासे श्रुत होय ते श्रुतवडे व्यवहार चलाववो, अथवा जो तेमां श्रुत न होय तो जे प्रकारे तेनी पासे आज्ञा होय ते प्रकारे तेमे आज्ञावडे व्यवहार चलाववो. जो तेमां आज्ञा न होय तो जे प्रकारे तेनी पासे घारणा होय ते प्रकारे धारणावडे तेणे व्यवहार चलाववो. जो तेमां धारणा न होय तो जे प्रकारे तेनी पासे जीत होय ते प्रकारे तेणे जीतवडे व्यवहार चलाववो. ए प्रमाणे ए पांच व्यवहारोवडे व्य- वहार चलाववो, ते आ प्रमाणे-आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा अने जीतवडे व्यवहार चलाववो. ए प्रमाणे ए पांच व्यवहारोवडे व्य- वहार चलाववो, ते आ प्रमाणे-आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा अने जीतवडे जेज प्रकारे तेनी पासे आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा अने वहार चलाववो, ते आ प्रमाणे-आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा अने जीतवडे जेजे प्रकारे तेनी पासे आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा अने वहार होय ते ते प्रकारे तेणे व्यवहार चलाववो. [प०] हे मगवन ! आगमना बलवाळा श्रमण निप्रंथी छुं कहे छे ! अर्थात् पंचविध व्यवहारखुं फल छुं कहे छे ! [उ०] ए प्रकारे आ पांच प्रकारना व्यवहारने ज्यारे ज्या जा जा राय (उचित होय) त्यारे त्यारे त्यां त्या अनिश्रोपश्रित-रागहेषना त्यापार्थक सारीरीते व्यवहारतो श्रमण निप्रंथ आज्ञानो आराधक थाय छे. ॥ ३३९ ॥ कहबिहे णं भंते ! कंम्मं किं नेरइओ वंधह तिरिक्खजोणिओ बंधह तिरिक्खजोणिणी बंधह मणुस्सी बं मणुस्सी बं० देवो बं० देवी बं० ?, गोयमा ! दुबिहे बंधे पन्नत्ते, तंजहा-ईरियावहियाबंधे य संपराहयबंधे प । ईरियावहियण्णं भंते ! कम्मं किं नेरइओ वंधह तिरिक्खजोणिओ बंधह तिरिक्खजोणिणी बंधह मणुस्सी बं० मणुस्सी बं० देवो बं० देवी बं० ?, गोयमा ! नो नेरइओ बंधह नो तिरिक्खजोणिओ बंधह नो तिरिक्खजोणिणी बंधह नो देवो बंघह नो देवी बंघह, पुञ्चपस्ती या बंधह २ मणुस्सा या मणुस्सीओ या बंधति 8 अहवा माणए पडुच मणुस्सी या बंधह १ अनुस्सी या वंधह १ मणुस्सी या मणुस्सीओ या बंधन्ति १ आहवा मणुस्सो य मणुस्सी य बंधह ५ अहवा मणुस्सी य मणुस्सीओ या बंधन्ति ६ अहवा मणुस्सा या मणुर्सी या स्रि	८ वतेके उद्देशः ८ ॥६७ ७॥
	🤌 मणुस्सो य मणुस्सी य बंधइ ५ अहवा मणुस्सो य मणुस्सीओ य बंधन्ति ६ अहवा मणुस्सा य मणुस्सी य	

ध्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६७८॥		वंधंति ७ अहवा मणुरसा य मणुस्सीओ य बं० ८॥ तं भंते! किं इत्थी बंधइ पुरिसो बंधइ नपुंसगो बंधति इत्थीओ बंधन्ति पुरिसा बं० नपुंसगा बंधन्ति नोइत्थीनोपुरिसोनोनपुंसओ बंधइ ?, गोयमा ! नो इत्थी बंधइ नो पुरिसो बं० जाव नो नपुंसगा बंधन्ति, पुल्वपडिवन्नए पडुच अवगयवेदा बंधति, पडिवज्जमाणए य पडुच अवगयवेदो वा बंधति अवगयवेदा वा बंधति [प्र०] हे भगवन् ! वन्ध केटला प्रकारनो कशो छे ? [उ०] हे गौतम ! बन्ध वे प्रकारनो कशो छे, ते आ प्रमाणे-ऐर्यापर्थ- कवन्ध अने सांपरायिकवन्ध. [प्र०] हे भगवन् ! ऐर्यापथिक कर्म छुं १ नारक बांधे, २ तिर्यंच बांधे, ३ तिर्यंच सी बांधे, ४ मतुष्य बांधे, ५ मनुष्यस्ती बांधे, ६ देव बांधे के ७ देवी बांधे?[उ०] हे गौतम ! १ नारक बांधतो नथी, २ तिर्यंच सा बांधते नथी, ३ तिर्यंचस्ती बांधती नथी, ४ देव बांधतो नयी अने ५ देवी बांधती नथी; पण पूर्वप्रतिपत्रने आश्रयी मतुष्यो अने मतुष्य स्त्रीओ बांधे छे. प्रतियद्यमानने आश्रयी १ मनुष्य बांधे छे. २ अथवा मतुष्यस्त्री बांधे छे. ३ अथवा मतुष्य स्त्रीओ बांधे छे; ५ अथवा मतुष्य अने मतुष्यस्त्री बांधे छे. ६ अथवा मतुष्य अने मतुष्यस्त्रीओ बांधे छे. ७ अथवा मतुष्य स्त्रीओ बांधे छे. ८ अथवा मतुष्य वे मतुष्यस्त्री बांधे छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते ऐर्यापथिक कर्मने छं १ स्त्री वांधे, २ पुरुष मतुष्यस्त्री बांधे छे. ८ अथवा मतुष्य अने मतुष्यस्त्री बांधे छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते ऐर्यापथिक कर्मने छं १ स्त्रि वांधे, २ पुरुष मतुष्यस्त्री बांधे छे. ८ अथवा मतुष्य अने मतुष्यस्त्री बांधे छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते ऐर्यापथिक कर्मने छं १ स्त्री वांधे, २ पुरुष बांधे, ३ नपुंसक वांधे, ४ स्त्रीओ बांधे, ५ पुरुषो बांधे, ६ तपुंसको बांधे, ७ नोस्नी, नोपुष्ठ, के नोनपुंसक बांधे ! [उ०] हे गौतम ! स्त्री न बांधे, यावत् नपुंसको न बांधे; अथवा पूर्वप्रतिपन्नने आश्रयी वेदरहित जीवो बांधे, अथवा प्रतिपद्यमानने आश्रयी वेदरहित जीव अथवा वेदरहित जीवो बांधे.	are a compared and the compared the	८ भतके उद्देशः ८ ॥६७८॥	
	Sorter.	स्त्री न बांध, याबत् नपुसको न बांध; अथवा पूर्वप्रतिपन्नने आश्रयी वेदरहित जीवो बाध, अथवा प्रतिपद्यमानने आश्रयी वेदरहित जीव अथवा वेदरहित जीवो बांधे.	To to		

घ्याख्या- प्रज्ञांक्षिः प्रति ने भंते ! अवगयवेदो वा बंधह अवगयवेदा वा पंघंति ते भंते ! किं हत्थीपच्छाकडो बंधह पुरिसपच्छाकडो बं० २ नपुंसकपच्छाकडो बं० १ इत्याप्रच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बंधति ४ उदाह हत्थीपच्छा- कडो य णपुंसगपच्छाकडो व बंधह ४ उदाह हत्थिपच्छाकडो य पपुंसगपच्छाकडो य बंधति ४ उदाह हत्थीपच्छा- कडो य णपुंसगपच्छाकडो य बंधह ४ उदाह पुरिसपच्छाकडो य णपुंसगपच्छाकडो य बंधह ४ उदाह हत्थिप- च्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य णपुंसगपच्छाकडो य भाणियव्वं ८, एवं एते छ्व्दीसं भंगा २६ जाव उदाह हत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य णपुंसगपच्छाकडो य भाणियव्वं ८, एवं एते छ्व्दीसं भंगा २६ जाव उदाह हत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य णपुंसगपच्छाकडो य भाणियव्वं ८, एवं एते छ्व्दीसं भंगा २६ जाव उदाह हत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बंधह १ पुरिसपच्छाकडो व भाणियव्वं ८, एवं एते छ्व्दीसं भंगा २६ जाव उदाह इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बंधह १ पुरिसपच्छाकडो व भाणियव्वं ८, एवं एते छ्व्दीसं भंगा २६ जाव उदाह इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बंधह १ पुरिसपच्छाकडावि बं० १ पुरिसपच्छाकडाबि बंघह १ पुरिसपच्छाकडावि बं० ६ २ नपुंसगपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बंधह ७ एवं एए चेव छ्व्वीसं भगा भाणियव्वा, जाव अहवा हत्थि- पच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधह ७ एवं एए चेव छ्व्वीसं भगा भाणियव्वा, जाव अहवा हत्थि- पच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधह ७ एवं एए चेव छ्व्वीसं भगा भाणियव्वा, जाव अहवा हत्थि- पच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधह १ प्र्यापथिक कर्मने बांधे तो छं १ स्त्रीपक्षाकृत (जेने पूर्वे स्त्रीव होय एवो) जीव बांधे, २ पुरुषपथात्कृत जीवो बांधे, ५ पुरुषपथात्कृत जीवो बांधे, ३ वपुंसकपथात्कृत जीने नपुंसकपथात्कृत बांधे १४ अथवा पुरुषपथात्कृत जीन नपुंसकपथात्कृत वांधे १८ अथवा सीपथात्कृत जने नपुंसकपथात्कृत य बांधे १४ अथवा पुरुषपथात्कृत अने नपुंसकपथात्कृत वांधे १८ अथवा सीपथात्कृत, जने नपुंसकपथात्कृत	८ शतके उद्देशः ८ ॥६७९॥
---	------------------------------

म्याख्या- प्रहाप्तिः ॥६८०॥	ए प्रमाणे ए छन्वीस भंगो जाणवा, यावत अथवा स्नीपश्चात्कृतो, पुरुषपश्चात्कृतो अने नपुंसकपश्चात्कृतो बांधे? [उ०] हे गोतम ! ? स्नीपश्चात्कृत पण बांधे. २ पुरुषपश्चात्कृत पण बांधे अने ३ नपुंसकपश्चात्कृत पण बांधे ३ स्नीपश्चात्कृतो बांधे, ५ पुरुषपश्चात्कृतो वांधे अने ६ नपुंसकपश्चात्कृतो पण बांधे, अथवा ७ स्नीपश्चात्कृतो जने पुरुषपश्चात्कृतो बांधे, ए प्रमाणे ए छन्वीस मांगा कहेवा. यावत् अथवा स्नोपश्चात्कृतो, पुरुषपश्चात्कृतो अने नपुंसकपश्चात्कृतो बांधे. तं भंते! किं बंधी बंधह बंधिस्सह १ बंधी बंधह न बंधिस्सह २ बंधी न बंधह बंधिस्सह २ बंधी न बंधह न बंधिस्सइ ४ न बंधी बंधह बंधित्सह १ बंधी बंधह न बंधिस्सह २ बंधी न बंधह बंधिस्सह ७ न बंधी न बंधह न बंधिस्सह ८ ?, गोयमा ! भवागरिस पडुच अत्थेगतिए वंधी बंधह वंधिस्सह, आहणागरिस पडुच अत्थेगतिए बंधी वंधह बंधिस्सह एवं जाव अत्थेगतिए न बंधी न बंधह वंधिस्सह, गहणागरिस पडुच अत्थेगतिए बंधी वंधह बंधिस्सह एवं जाव अत्थेगतिए न बंधी न बंधह न बंधिस्सह, गहणागरिसं पडुच अत्थेगतिए बंधी वंधह बंधिस्सह एवं जाव अत्थेगतिए न बंधी न बंधह न बंधिस्सह, गहणागरिसं पडुच अत्थेगतिए बंधी वंधह बंधिस्सह एवं जाव अत्थेगतिए न बंधी न बंधह न बंधिस्सह, गहणागरिसं पडुच अत्थेगतिए न बंधी न बंधह वंधिस्सह अत्थेगतिए न बंधी न बंधह न बंधिस्सह, गो चेव णं न बंधी बंधह न बंधित्सह, अत्थेगतिए न बंधी न बंधह वंधिस्सह अत्थेगतिए न बंधी न बंधह न बंधिस्सह, गो चेव णं न वंधी वंधह न बंधित्सह, साइयं अपज्जवसियं बंधह अणाहयं सपज्जवसियं बंधह आणाहयं अपज्जवसियं बंधह ?, गोयमा ! साहयं सपज्जव- सियं बंधह, नो साहयं अपज्जवसियं बंधह नो अणाहयं सपज्जवसियं बंधह मात्वेणं सहव बंधह ?, गोयमा ! नो देसेणं भूते ! किं देसेणं देसं बंधह देसेणं सब्वं बंधह सब्वेणं देसं बंधह सब्वेणं सब्वं बंधह ?, गोयमा ! नो देसेणं देसं	Stranger and the second	८् शर्तकै उद्देशः ८ ॥६८०॥
Sec.	बंधइ णो देसेणं सब्वं बंधइ नो सब्वेणं देसं बंधइ, सब्वेणं सब्वं बंधइ ॥ (सूत्रं ३४०) ॥	*	

ब्याख्या-	ते प्रमाणेज जाणवुं, यावत कोइ एके बांध्युं नथी, बांधतो नथी अने बांधरो नहीं. ग्रहणाकर्षने आश्रयी कोइ एके बांध्युं छे, बांधे छे अने बांधरो. ए प्रमाणे यावत कोइ एके बांध्युं नथी, बांधे छे अने वांधरो; पण ' बांध्युं नथी, बांधे छे अने बांधरो नहीं ' ए भांगो नथी. कोइ एके बांध्युं नथी, बांधतो नथी अने बांधरो; कोइ एके बांध्युं नथी, बांधतो नथी अने बांधरो नहीं. [म०] हे भगवन् ! ते (ऐर्यापथिक कर्म) हुं १ सादि सपर्यवसित बांधे, २ सादि अपर्यवसित बांधे, ३ अनादि सपर्यवसित बांधे के ४ अनादि अपर्यवसित बांधे ? [उ०] हे गौतम ! सादि सपर्यवसित बांधे पण सादि अपर्यवसित बांधे, ३ अनादि सपर्यवसित बांधे के ४ अनादि अपर्यवसित न बांधे . [म०] हे भगवन् ! ते (ऐर्यापथिक) कर्मने हां देराथी देशने बांधे, देराथी सर्वने बांधे, सर्वथी देशने बांधे, के सर्वथी सर्वने बांधे ? [उ०] हे गौतम ! सादि एर्यापथिक) कर्मने हां देराथी देशने बांधे, देराथी सर्वने बांधे, सर्वथी देशने बांधे, के सर्वथी सर्वने बांधे ? [उ०] हे गौतम ! देराथी देशने बांधतो नथी, देराथी सर्वने बांधतो नथी, सर्वथी देशने बांधते नथी, पण सर्वथी सर्वने बांधे ? [उ०] हे गौतम ! देराथी देशने बांधतो नथी, देराथी सर्वने बांधतो नथी, सर्वथी देशने बांधतो नथी, पण	11408	C
	बंधइ तिरिक्खजोणिओवि बंधइ तिरिक्खजोणिणीवि बंधइ मणुस्सोवि बंधइ मणुस्सीवि बंधइ देवोवि वंधइ	X	

घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६८२॥	श्रेषावि पर तुरिताव पर जाव गुरुतताव पर जरुवर पंजाव पर ति प्रति ति स्वाप पर करें के के कि के	८ श तके उद्देशः ८ ॥६८२॥
	ि बंधइ एवं जहेव ईरियावहियाबंधगस्स जाव सव्वेणं सव्वं बंधइ (सूत्रं ३४१)॥ [प्र०] हे भगवन् ! सांपरायिक कर्म ग्रुं नारक बांधे, तिर्यंच बांधे, यावद् देवी बांधे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिक पण बांधे, तिर्यंच पण बांधे, तियचस्त्री पण बांधे, मनुष्य पण बांधे, मनुष्यस्त्री पण बांधे, देव पण बांधे अने देवी पण बांधे. [प्र०] हे भग- वन् ! ग्रुं सांपरायिक कर्मने स्त्री बांधे, पुरुष बांधे, तेमज यावत् नोस्त्री, नोपुरुष अने नोनपुंसक बांधे? [उ०] हे गौतम ! स्त्री पण बांधे, पुरुष पण बांधे, यावद् नपुंसक पण बांधे; अथवा एओ अने वेदरहित स्त्री वगेरे एक जीव पणबांधे, अथवा एओ अने वेदरहित	

www.kobatirth.org

अनेक जीवो पण बांधे. [प्र०] हे भगवन् ! (संपरायिक कर्मने) जो वेदरहितजीव अने वेदरहितजीवो बांधे तो शुं स्वीपथात्कृत वांधे के पुरुषपथात्कृत वांधे? इत्यादि. [उ०] ए प्रमाणे जेम ऐर्यापथिकना बंधकने कष्ठुं (स. १२.) तेम अहीं सर्व जाणवुं, अथव स्वीपथात्कृत जीवो, पुरुषपथात्कृत जीवो अने नपुंसकपथात्कृत जीवो बांधे छे. [प्र०] हे भगवन् ! शुं कोइए सांपरायिक कर्मने वांध्युं, बांधे छे अने बांधग्ने ? बांध्युं, बांध छे, अने बांधग्ने नहीं, ३ बांध्युं, बांधतो नथी अने बांधग्ने नहीं; १ बांध्युं, बांधते नथी अने बांधग्ने नहीं? [उ०] हे गौतम ! १ केटला एके बांध्युं छे, बांधे छे अने बांधग्ने? केटला एके बांध्युं, बांधते नथी अने बांधग्ने नहीं? [उ०] हे गौतम ! १ केटला एके बांध्युं छे, बांधे छे अने बांधग्ने? केटला एके बांध्युं, बांधते नथी अने बांधग्ने नहीं? [उ०] हे गौतम ! १ केटला एके बांध्युं छे नबांध छे अने बांधग्ने? केटला एके बांध्युं, बांधते अने बांधग्ने नहीं? इ केटला एके बांध्युं, बांधता नथी अने बांधग्ने? १ केटला एके बांध्युं, बांधता नथी अने बांधग्ने नहीं. [प्र० हे भगवन्! ते (सांपरायिक कर्मने) शुं सादि सपर्यवसित बांधे छे? =हत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! १ सादि सपर्यवसित बां छे; २ अनादि सपर्यवसित बांध छे; ३ अनादि अपर्यवसित बांध छे? पण सादि अपर्यवसित बांधतो नथी. [प्र०] हे भगवन् (सांपरायिक कर्मने) शुं देग्रथी (जीवना देग्रथी) देग्रने (कर्मना देग्रने) बांध छे? इत्यादि. [उ०] जेम एर्यापथिक बधक संबन कह्युं (स. १५.) तेम जाणवुं, यावत 'सर्वर्था सर्वने बांधे छे. ' ॥ २४१ ॥ कह णं भंते ! कम्मपपडीओ पन्नत्ताओ ?, गोपमा ! अट्ठ कम्मपपडीओ पन्नत्ताओ, तंजहाणाणावरणिज जाव अंतराइयं ॥ कह णं भंते ! परीसहा पण्णत्ता ?, गोपमा ! वावीसं परिसहा कतिस्र कम्मणगडीसु समोयरंति सहे पिवासापरीसहे जाव दंसणपरीसहे । एए णं भंते ! वावीसं परिसहा कतिस्र कन्तिस् कम्मपगडीसु समोयरंति गोयमा ! चउस्रु कम्मपयडीसु समोयरंति, तंजहावाणावरणिज्जे वेयणिज्रे मोहणिज्जे अंतराइए । नाणावर	and the second second second	८ शतके उद्देशः ८ ॥६८३॥
--	------------------------------	------------------------------

ध्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६८४॥	णिज्ञे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ?, गोयमा ! दो परीसहा समोयरंति, तंजहा पन्नापरीसहे (अन्ना)नाणपरीसहे य, वेयणिज्ञे णं भंते! कम्मे कति परीसहा समोयरंति?,गोयमा! एक्कारस परीसहा समोयरंति, तंजहापंचेव आणुपुब्वी चरिया सेज्जा वहे य रोगे य । तणफास जछमेव य एक्कारस वेदणिज्ञंमि ॥ ५८॥ देस- णमोहणिज्जे णं भते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ?, गोयमा ! एगे दंसणपरीसहे समोयरह,	Č,	८ ्शतके उद्देशः ८ ॥६८४॥
	[प०] हे भगवन् ! कर्मप्रकृतिओ केटला प्रकारे कही छे ? [उ०] हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे, ते आ प्रमाणे— ज्ञानावरणीय, यावद् अंतराय. [प०] हे भगवन् ! केटला परीषहो कह्या छे? [उ०] हे गौतम ! बावीश परीषहो कह्या छे, ते आ प्रमाणे-क्षुधापरीषह, पिपासापरीषह, यावद् दर्शनपरीषइ. [प्र०] हे भगवन् ! बावीश परीषहोनो केटली कर्मप्रकृतिओमां समवतार थाय ? [उ०] हे गौतम ! ते बाविश परीषहोनो चार कर्मप्रकृतिमां समवतार थाय छे, ते आ प्रमणे-ज्ञानावरणीय, बेदनीय, मोह- नीय, अने अंतराय. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकर्ममां केटला परीषहोनो समवतार थाय ? [उ०] हे गौतम ! बे परीषहोनो	x & c & c & c & c	

प्राण है कति परीसहा समोघरति?, गोयमा एगे अलाभपरीसहे समीघरइ ॥ सत्तविहवधगस्स ण भते ! कात परासहा की उद्दे प्रबंधिः ही पणणत्ता ? गोयमा ! बाबीस परीसहा पण्णत्ता, वीस प्रण वेदेइ, जंसमयं सीयपरीसहं वेदेति णो तं समयं 🖓	शतके इशः ८ ६८५॥
--	-----------------------

 ण्याख्या- प्रज्ञप्तिः प्रज्ञप्तिः प्रज्ञप्तिः परीपद्दे। 	ोषह, दंशमश्चकपरीषह, यावद् अलाभपरीपह. ए प्रमाणे अष्टविधबंधकने पण सप्तविध बन्धकनी जेम जाणवुं. (तेने बावीश होय छे, अने ते एक साथे वीश परीषहोने वेदे छे.) [प्र०] हे भगवन् ! छ प्रकारना कर्मना बन्धक सरागछ्बस्थाने केटला कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! चौद परीपहो कह्या छे, पण ते एक साथे बार परीपहोने अनुभवे छे; कारण के जे श्वीतपरीषहने वेदे छे, ते समये उष्णपरीषहने वेदतो नथी, अने जे समये उष्णपरीपहने वेदे छे ते समये शीतपरीषहने वेदतो तथा जे समये चर्यापरिषहने वेदे छे ते समये शय्यापरीषहने वेदतो नथी, अने जे समये श्रय्यापरीषहने वेदे छे ते समये शीतपरीषहने वेदतो तथा जे समये चर्यापरिषहने वेदे छे ते समये शय्यापरीषहने वेदतो नथी, अने जे समये शय्यापरीषहने वेदे छे ते समये शिवहने वेदतो नथी. एकविहबंधगस्सणं भंते ! बीयरागछउमत्थस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?, गोयमा ! एवं चेव जहेव छव्विह- स्स णं । एगविहबंधगस्स णं भंते ! सजोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?, गोयमा ! एवं चेव जहेव छव्विह- स्स णं । एगविहबंधगस्स णं भंते ! सजोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?, गोयमा ! एवं चेव जहेव छव्विह-	८ शतके उद्देशः ८ ॥६८६॥
्रैं परीस ≉ू कति	हा पण्णत्ता, नव पुण वेदेइ, सेसं जहा छव्विहवंधगस्स । अबंधगस्स णं भंते ! अजोगिभवत्थकेवलिस्स परीसहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एकारस परीसहा पण्णत्ता, नव पुण वेदेइ, जं समयं सीयपरीसहं वेदेति	

	नो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ जं समयं उसिणपरीसहं वेदेति नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं सेज्ञापरीसहं वेदेति जं समयं सेज्ञापरीसहं वेदेइ नो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ ॥ (सूत्रं ३४२) ॥ [प०] हे भगवन् ! एक प्रकारना कर्मना बांधनार धीतराग छबस्थने केटला परीषद्दो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम छ प्रकारना कर्मना बांधनारने परिषद्दो कह्या छे तेम एकविधकर्मबन्धकने पण जाणवा. [प०] हे भगवन् ! एकविधबंधक सयोगी भवस्थ केवलज्ञानीने केटला परीषद्दो कह्या छे? [उ०] हे गौतम ! अग्यार परीषद्दो कह्या छे, तेमां साथे नव परीषद्दोने वेदे छे. बाकीतुं बधुं छ प्रकारना कर्मन बांधनारने परिषद्दो कह्या छे? [उ०] हे गौतम ! अग्यार परीषद्दो कह्या छे, तेमां साथे नव परीषद्दोने वेदे छे. बाकीतुं बधुं छ प्रकारना कर्मबन्धकनी पेठे जाणवुं. [प०] हे भगवन ! कर्मबन्धरहित अयोगी भवस्थ केवलज्ञानीने केटला परीषद्दोने कह्या छे? [उ०] हे गौतम ! अगीयार परीषद्दो कह्या छे; तेमां साथे नव परीषद्दोने वेदे छे; कारण के जे समये शीतपरीषद्दने वेदे छे ते समये उष्णपरीषहने बेदता नथी, अने जे समये उष्णपरीषद्दने वेदे छे ते समये शीतपरीषद्दने वेदता नथी. तथा जे समये चर्यापरीषद्दने बेदे छे ते समये व्यय्यापरीषद्दने वेदता नथी, अने जे समये श्रय्यापरीषद्दने वेदे छे ते समये चर्यापरीपद्दने वेदत्ता नथी. ॥ २४२ ॥ जबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूछे य दीसंति , जंबुद्दीवे णं दीवे स्तरिया उग्गमणमुहुत्तांसि दूरे य तं चेव जाव अत्थमणमुहुत्तांसि दूरे य मूछे य दीसंति ?, हंना गोयमा ! जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे स्तरिया उग्गमणमुहुत्तांसि मज्झंतियमुहुत्तांसि य अत्थमणमुहुत्तांसि य सव्वत्थ समा उचत्तेणं ?, हंना गोयमा ! जबुद्दीवे णं दीवे स्तरिया उग्गमणमुहुत्तांसि	2 114 2 911 2
--	--	----------------------------

ध्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६८८॥	good a so a so a so a so	पास दखाय छ−इत्यादि, यावद् आथमवानां समय दूर छता पास दखाय छ. [प्र∘] ह भगवन्∔जबूद्रापमा व स्याउगवानां समय,	the state of the s	८ गतके उद्देशः ८ ॥६८८॥
	the set of the set	मध्याइसमेथे अने आथमवाना समये सर्व स्थळे उंचाइमां सरखा छे? [उ०] हा, गौतम ! जंबूद्वीपमां रहेला वे स्वर्थो उगवाना समये यावत् सर्वस्थळे उंचाइमां सरखा छे. [प्र०] हे भगवन् ! जो जंबूद्वीपमां वे स्वर्थो उगवाना समये, मध्याह्रसमये अने आथमवाना समये यावद् उंचाइमां सरखा छे तो हे भगवन् ! एम ज्ञा हेतुथी कहो छो के जंबूद्वीपमां वे स्वर्थो उगवाना समये दूर छतां पासे	KARS HE AND	

प्रकृतिः कि मवाना समये दूर छतां पासे देखाय छे, माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कहेवाय छे के जंबूद्वीपमां बे सूर्यो उगवाना समये दूर छतां 2	् शतके देशः ८ ६८९॥
---	--------------------------

प्रब्नप्तिः [प्र॰] हे भगवन् ! जंब्हीपमां स्रयों केटछं क्षेत्र उंचे तपावे छे, केटछं क्षेत्र नीचे तपावे छे अने केटछं क्षेत्र तिर्यग् तपावे छे? ॥६९१॥ (उ॰] हे गौतम ! सो योजन क्षेत्र उंचे तपावे छे. अढारसो योजन क्षेत्र नीचे तपावे छे. अने सढताळीझ हजार बसे त्रेसठ योजन तथा एक योजनना साठीया एकवीस भाग जेटछं क्षेत्र तिर्पग् (तिरछुं) तपावे छे. [प्र॰] हे भगवन् ! मनुष्योत्तर पर्वतनी अंदर जे चंद्रो, स्वर्यो, ब्रह्मण, नक्षत्र अने तारारूप देवो छे, हे भगवन् ! ते छुं ऊर्ध्वलोकमां उत्पन्न थयेला छे? [उ॰] जे प्रमाणे जीवाभि- गमसूत्रमां कह्यु छे तेम यावद् (तेओनो उपपातविरहकाल-उपजवातुं अन्तर जधन्य एक समय अने) यावद् उत्क्रुष्ट छ मास छे? त्यांसुधी षधुं जाणवुं. [प्र॰] हे भगवन् ! मनुष्योत्तर पर्वतनी बहार जे चंद्रादि देवो छे तेओ छं ऊर्ध्वलीकमां उत्पन्न थयेला छे? [उ॰] जेम जीवाभिग्मसूत्रमां कह्युं छे तेम जाणवुं, यावत्-[प्र॰] 'हे भगवन् ! इन्द्रस्थान केटला काल सुधी उपपात वडे विरहित कह्युं छे? [उ॰] हे गौतम ! जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी छ मास, (अर्थात् एक इन्द्रना मरण पछी जघन्यथी एक समये अने उत्कृष्टथी छ मासे तेने स्थाने बीजो इन्द्र उत्पन्न थाय छे तेथी तेटलो काल्ल इन्द्रस्थान उपपात विरहित होय छे',) हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन् ते एमज छे. (एम कही भगवन् गौतम यावद् विहरे छे). ॥ २४३ ॥ भगवत् स्वर्धासीप्रणीत श्रीमद् भगवती ^स त्रना आठमा जतकमां आठमा उद्देशानो म्लार्थ संपूर्ण थयो.	।। ६९१ ॥

घ्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६९२॥	वीससाबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?, गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-साइयवीससाबंधे अणाइयवीससावंधे	5440 11592 11592 11592 1540 1540 1540 1540 1540 1540 1540 1540	९
	दसपएसिया सखज्जपएसिया असखेजपएसिया,अणतपएसियाणं भते! खंधाणं वेमायनिद्धयाए वेमायऌक्खयाए वेमायनिद्धऌक्खयाए बंधणपचए णं बंधे समुप्पज्जइ जहन्नेणं एकं समयं उक्कोसेणं असंखेजं कालं, सेत्तं बंधणप-		

व्याख्या-

प्रज्ञप्तिः ॥६९३॥

Constant of the state of the state of the	चइए । से किं तं भायणपचइए ?, भा० २ जन्नं जुझसुराजुन्नगुरुजुन्नतंदुलाणं भायणपचइएणं बंधे समुप्पज्जइ ज- हन्नेणं अंतोमुहत्तं उक्कोसेणं संखेजं कालं, सेत्तं भायणपचइए । से किं तं परिणामपचइए ?, परिणामपचइए जन्नं अब्भाणं अब्भरुवखाणं जहा ततिधसए जाव अमोहाणं परिणामपचइए णं बंधे समुप्पज्जइ जहन्नेणं एकं समयं उक्कोसेणं छम्मासा, सेत्तं परिणामपचइए, सेत्तं साइयवीससावंधे, सेत्त वीससावंधे (सूत्रं ३४५) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! विस्तसावन्ध केटला प्रकारनो कढा छे ! [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारनो कढा छे, ते आप्रमाणे-सादिविस्त- सावन्ध अने अनादि विस्तसावन्ध केटला प्रकारनो कढा छे ! [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारनो कढा छे, ते आप्रमाणे-सादिविस्त- सावन्ध अने अनादि विस्तसावन्ध. [प्र०] हे भगवन् ! अनादि विस्नसावन्ध केटला प्रकारनो कढा छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रका- रत्नो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे-धर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्नसावन्ध केटला प्रकारनो कढा छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रका- रत्नो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे-धर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्नसावन्ध, अधर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्नसावन्ध के सर्ववन्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! देशवन्ध छे, पण सर्ववन्ध नथी. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्तसावन्ध जाणवो. एवी रीते आकाशास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्तसावन्ध जाणवो. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्तसावन्ध कालथी क्यां सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! सर्व काल सुधी होय छे. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय जे आकाशास्तिका यनो अन्योन्य आनादि विस्तसावन्ध जाणवो. [प्र०] हे भगवन् ! सादिविस्तसावन्ध केटला प्रकारनो कन्धो छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारनो कन्द्यो हे ते आ प्रमाणे–१ वंधनप्रत्ययिक, २ भाजनप्रत्यिक अने ३ परिणामप्रत्यविक, संख्यातप्रदेशिक, असंख्यातप्र- र्वधनप्रत्ययिक(सादि बन्ध केवा प्रकारे छे ? [उ०] द्विप्रदेशिक, त्रिप्रदेशिक, यावद् दग्रप्रदेशिक, संख्यातप्रदेशिक, असंख्यातप्रदेशिक, असंख्यातप्र- र्वधनप्रत्ययिक(सादि बन्ध केवा प्रकारे छे ? [उ०] द्विप्रदेशिक, त्रिप्रदेशिक, यावद् दग्रप्रदेशिक, संख्यातप्रदेशिक, असंख्यातप्र	CHERARD AND AND AND AND AND AND AND AND AND AN	८ चतवे उद्देशः ९ ॥६९३।	९
---	--	--	------------------------------	---

देशिक अने अनंतभदेशिक परमाणु पुद्गलरकंधोनो विषम सिग्धता (चिकाश) वडे, विषम रूक्षतावडे अने विषम सिग्ध-रूक्षता बडे बन्धप्रत्ययिक बन्ध थाय छे. ते जयन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी असंख्य काल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे बंधनप्रत्ययिक बन्ध कद्यो. [प०] हे भगवन ! भाजनप्रत्ययिक बन्ध केवा प्रकारे होय ? [उ०] जूनी मदिरानो, जूना गोल्नो अने जुना चोसानो भाजन प्रत्ययिक बन्ध थाय छे. ते जधन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी असंख्य काल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे भाजनप्रत्य विक बन्ध कद्यो. [प०] हे भगवन ! भाजनप्रत्ययिक बन्ध केवा प्रकारे होय ? [उ०] जूनी मदिरानो, जूना गोल्नो अने जुना चोसानो भाजन प्रत्ययिक बन्ध थाय छे. ते जधन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट संख्यात काल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे भाजनप्रत्य- यिक बन्ध कद्यो. [प०] हे भगवन ! परिणामप्रत्ययिक बन्ध केवा प्रकारे छे ? [उ०] वादव्याओनो, अभ्रवृक्षोनो जेम तृतीय यतकमां कद्युं हे तेम यावद् अमोघोनो परिणामप्रत्ययिकवन्ध, उत्रत्न थाय छे. ते जधन्यथी एक समय अने उत्कृष्टथी छ मास सुधी रहेछ, ए प्रमाणे परिणामप्रत्ययिकवन्ध, सादिविस्तसावन्ध अनेविस्तसावन्ध कद्यो. ॥ ३४५ ॥ से किं तं पयोगबंधे?, पर्योगबंधे तिबिहे पण्णत्ते, तंजहा–आलाहए वा अपज्जवसिए साइए वा अपज्जवसिए साइए वा मराज्जवसिए, तत्थ णं जे से अणाइए अपज्जवसिए से णं अट्ठणई जीवमज्झपएसाणं ॥ तत्थ विं जं तत्यहं २ अणाइए अपज्जवसिए, संसाणं साइए, तत्थ णं जे से सादीए अपज्जवसिए से णं सिद्धाणां, तत्थ णं जे से साइए सपज्जवसिए से णं चउग्निहे पन्नत्ते, तंजहा–आलाहावणबंधे अछियावणबंधे सरीरबंधे सरीरप्ययोगबंधे ॥ से किं तं आलावणबंधे !, आलावणबंधे जण्णां तणभाराण वा कट्ठभाराण वा पत्तभाराण वा पलालभाराण वा वेछभाराण वा बेत्तल्यावागवरराउज्जवछिकुस्तदन्भमादिएहिं आलावणबंधे समुप्पज्जइ जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उ- कोसेणं संखेज्जं कालं, सेत्त आलावणबंधे। से किं तं अछियावणबंधे?, अछियावणबंधे चडव्विहे पन्नते, तंजहा-	९
--	---

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥६९५॥	रे लेसणाबंधे उचयबंधे समुचयबंधे साहणणाबंधे, से किं तं लेसणाबंधे?, लेसणाबंधेजन्नं कुड्डाणं कोहिमाणं खंभाणं पासायाणं कट्ठाणं चम्माणं घडाणं पडाणं कडाणं छुहाचिक्खिल्ठसिल्ठेसलक्खमहुसित्थमाइएहिं लेसणएहिं बंधे ममुप्पज्जइ जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं, सेत्तं लेसणाबंधे, [प्र०] हे भगवन् ! प्रयोगवन्ध केवा प्रकारे छे? [उ०] प्रयोगबन्ध त्रण प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे- १ अनादि अप र्यवसित' २ सादि अपर्यवसित अने ३ सादि सपर्यवसित प्रयोगबन्ध तेमां जे अनादि अपर्यवसितबन्ध छे ते जीवना आठ मध्यप्रदे- रोनो होय छे, ते आठ प्रदेशोमां पण त्रण त्रण प्रदेशोनो जे बन्ध ते अनादि अपर्यवसित बन्ध छे. बाकीना सर्वप्रदेशोनो सादि सपर्यवसित (सान्त) बन्ध छे. तेमां सादि अपर्यवसितबन्ध सिद्धना जीव प्रदेशोनो छे. सादिक सपर्यवसित बन्ध चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे- १ आलापनबन्ध, २ आलीनबन्ध, ३ शरीरबन्ध अने ४ शरीरप्रयोगबन्ध. [प्र०] आलापन बन्ध केवा प्रकारनो छे? [उ०] आलापन बन्ध घासना भाराओनो, पांदडाना भाराओनो, पलालना भाराओनो अने बेलाना भाराओनो नेतरनी बेल,	्री उ	् शतके देशः ९ ।६९५॥
	🕻 छाल, वाधरी, दोरडा, वेल, क्रुग्न, अने डाभ आदिथी आलापनबन्ध थाय छे. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी संख्यात काल	0 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4 5 4	

८ शतके उद्देशः ९

ાાદ૬દા

A S A

Ser .

व्याख्या-
प्रज्ञप्तिः

।।६९६॥

Ś

X

Ş

7

3

*

हूर्त, अने उत्क्रष्टथी संख्यातकाल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे श्लेषणाबन्ध कह्यो.
से किं तं उच्चयबंधे ?, उच्चयबंधे जन्नं तणरासीण वा कट्ठरासीण वा पत्तरासीण वा तुसरासीण वा भुसरा
सीण वा गोमयरासीण वा अवगररासीण वा उचत्तेणं बंधे समुप्पज्जइ जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंसंखेज्जं
कालं, सेत्तं ^{डें} चयबंधे, से किं तं समुचयबंधे?, समुचयबंधे जन्नं अगडतडागनदीदहवावीपुक्खरिणीदीहियाणं
गुंजलियाणं सराणं सरपंतिआणं सरसरपंतियाणं बिलपंतियाणं देवकुलसभापव्वथूभखाइयाणं फरिहाणं पागा-
रद्दालगचरियदारगोपुरतोरणाणं पासायघरसरणलेणआवणाणं सिंघाडगतियचउकचच्चरचउम्मुहमहापहमादीणं
छुहाचिक्खिछसिलेससमुचएणं बंधे समुचए णं बंधे समुप्पज्ञइ जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं, सेत्तं
समुचयवंघे, से किं तं साहणणावंघे ९, साहणणावंघे दुविहे पन्नत्ते, तंजहा-देससाहणणावंघे य सव्वसाहणणा-
बंधे य, से किं तं देससाहणणाबंधे ?, देससाहणणाबंधे जन्नं सगडरहजाणजुग्गगिछिथिछिसीयसंदमाणियालो-
हीलोहकडाहकडुच्छुआसणसयणखंभभंडमत्तोवगरणमाईणं देससाहणणाबंधे समुप्मज्जइ जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं संखेजं कालं, सेत्तं देससाहणणावंधे,
[प्र०] उच्चयबन्ध केवा प्रकारनो कह्यो छे?[उ०]तृणराशिनो, काष्ठराशिनो, पत्रराशिनो, तुपराशिनो, असानी राशिनो, छाणना
ढगलानो अने कचराना ढगलानो उच्चपणे जे बन्ध थाय छे ते उच्चयबन्ध छे. ते जघन्यथी अन्तर्ग्रहूर्त, अने उत्क्रप्टथी संख्येयकाल
सुधी रहे छे. ए प्रमाणे उचयबन्ध कह्यो. [प्र०] समुचयबन्ध केवा प्रकारनो कह्यो छे? [उ०] क़ुवा, तळाव, नदी, द्रह, वापी,

च्या ख्या- प्रच्नप्तिः ॥६९७॥	पुष्करिणी, दीधिंका, गुंजालिका, सरोवरो, सरोवरनी श्रेणि, मोटा सरोवरनी पंक्ति, बिलनी श्रेणि, देवकुल, सभा, पग्, स्त्प, खाइओ. परिघो, किछाओ, कांगराओ. चरिको, द्वार, गोपुर, तोरण, प्रासाद, घर, घरण, लेण (गृहविशेष) हाटो, शृंगाटकाकारमार्ग, त्रिकमार्ग, चतुष्कमार्ग, चत्वरमार्ग, चतुर्भुखमार्ग, अने राजमार्गादिनो चुनाद्वारा, कचराद्वारा अने स्ठपना (वज्ञलेपना) समुचयवडे ते बंध थाय छे ते समुचयबन्ध. ते जघन्यथी अन्तर्भुहूर्त, अने उत्कृष्टथी संख्येयकाल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे समुचयवरध कहो. [भ०] संहननबन्ध केवा प्रकारनो कह्या छे? [उ०] संहननबन्ध वे प्रकारनो कह्यो छे; ते आ प्रमाणे-देशसंहननबन्ध अने सर्वसंह- ननवन्ध. [घ०] हे भगवन् ! देशसंहनन बन्ध केवा प्रकारनो छे? [उ०] हे गौतम ! गाडा. रथ, यान (नाना गाडा) ग्रुग्यवाहन गिछि (हाथीनी अंवाडी), थिछि (पलाण), शिबिका, अने स्यन्दमानी (पुरुषप्रमाण वाहनविशेष), तेमज लोढी. लोढाना कडाया, कडछा. आसन, शयन, स्तंभो, भांड (माटीनां वासण) पात्र अने नाना प्रकारना उपकरण-इत्यादि पदार्थोंनो जे संबन्ध थाय छे ते देश संहननबन्ध छे. ते जघन्यथी अन्तर्भुहूर्त, अने उत्कृष्टर्था संख्येय काल मुधी रहे छे. ए प्रमाणे देशसंहनन बन्ध कयो. से किं तं सच्चसाहणणाबंधे ?, सञ्चसाहणणाबंधे से णं ग्वीरोदगमाईणं, सेत्तं सञ्चसाहणणाबंधे, सेत्तं साहणणाबंधे, सेत्तं अछिट्रयावण्यंधे ॥से किं तं सरीरबंधे?, मरीरबंधे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-पुटवप्पओगपचइए य पडुप्पन्नपओगापचइए य, से किंतं पुञ्चप्पयोगपचइए?,पुटवप्पओगपचइए जन्नं नेरइयाइयाणं संमारवत्थाणां मञ्चली- वाणं तत्थ २ तेसु २ कारणेसु ममोहणमाणाणं जीवप्पदेसाणं बंधे समुप्पज्जह, सेत्तं पुट्वप्पयोगपचइए, से किं तं	२ भतके उद्देशः ९ ॥६९७॥
	्री वाण तत्थ २ तेसु २ कारणेसु ममोहणमाणाणं जीवप्पदेसाण बंध समुप्पज्जइ, सत्त पुव्वप्पयोगपचइण, सं कि त र्भू पडुप्पन्नप्पयोगपचइए?, २ जन्नं केवलनाणिस्स अणगारस्स केवलिसमुग्घाएणं समोहयस्स ताओ समुग्घायाओ	Contraction of the second

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ।।६९८॥	पडिनियत्तेमाणस्स अंतरा मंथे वद्यमाणस्स तेयाकम्माणं बंधे समुप्पज्जइ, किं कारणं ?, ताहे से पएसा एगत्ती- गया भवंतित्ति, सत्तं पडुप्पन्नप्पयोगपचइए, सत्तं सरीरबंध ३॥ से किं तं सरीरप्पयोगबंधे ?, सरीरप्पयोगबंधे पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा-ओरालियसरीरप्पओगबंधे वेउव्वियसरीरप्पओगबंधे आहारगसरीरप्पओगबंधे तेयास- रीरप्पयोगबंधे कम्मासरीरप्पयोगवंधे । ओरालियसरीरप्पयोगवंधे णं अंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?, गोयमा ! पंच- विहे पन्नत्ते, तंजहा-एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे बेंदियओ० जाव पंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे . [प्र०] सर्वसहनन बन्ध केवा प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! द्ध अने पाणी इत्यादिनो सर्वसंहनन बन्ध कह्या छे. ए प्रमाणे सर्वसंहनन बन्ध केवा प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! द्ध अने पाणी इत्यादिनो सर्वसंहनन बन्ध कह्या छे. ए प्रमाणे सर्वसंहनन बन्ध केवा प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! द्ध अने पाणी इत्यादिनो सर्वसंहनन बन्ध कह्या छे. ए प्रमाणे सर्वसंहनन बन्ध कह्यो. ए रीते आलीनवंध पण कद्यो. [प्र०] शरीरवन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे, [उ०] शरीरबन्ध वे प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे-१ पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक अने २ प्रस्पुत्पत्रयोगप्रत्ययिक. [प्र०] हे भगवन ! प्रययोगप्रत्ययिक श्र प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे-१ पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक अने २ प्रसुर्पत्रयोगप्रत्ययिक. [प्र०] हे भगवन ! प्रययोगप्रत्ययिक श्र प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे-१ पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक अने २ प्रसुर्पत्रयोगप्रत्ययिक. [प्र०] हे भगवन ! प्रययोगप्रत्ययिक श्र रहेशोनो जे बन्ध थाय छे ते पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक वन्ध छे. ए प्रमाणे पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध कह्या. [प्र०] प्रत्यत्पत्रयोगप्रत्ययिक बन्ध केवा प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] के तिलिसमुद्धातव हे समुद्धात करता अने ते सम्रद्धातथी पाछा फरता, वच्चे मंथानमां वर्तता क्रेवलज्जानी अनगारना तैजस अने कार्मण शरीरनो जे बन्ध थाय ते प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध कहोया छे. तैजस अने कार्मण इत्य पण थाय छे.) ए प्रमाणे प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध कह्यो, ए प्रमाणे शरीरवन्ध कह्योने अनुसरीने तैजम अने कार्मणनो पण	उद्देशः ९ ॥६९८॥

८ शतके उद्देशः ९

ાદ૬૬૫

प्रज्ञप्तिः	कह्यो छे ? [उ०] शरीरप्रयोगवन्ध पांच प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—? औदारिकशरीरप्रयोगवन्ध, २ वैक्रियशरीरप्रयोगवन्ध, ३ आहारकशरीप्रयोगवन्ध, ४ तैजसशरीरप्रयोगवन्ध अने ५ कार्मणशरीरप्रयोगवन्ध. [प्र०] हे भगवन् ! औदारिकशरीरप्रयोगवन्ध, केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! औदारिकशरीरप्रयोगवन्ध पांच प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे-एकेन्द्रियऔदारि- कशरीरप्रयोगवन्ध, द्वीन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगवन्ध, यावत् पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगवन्ध. एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगवंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?, गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा-पुढवि- काइयएगिंदिय० एवं एएणं अभिलावेणं भेदो जहा ओगाहणसंठाणे ओरालियसरीरस्स तहा भाणियव्वो जाव पज्जत्तगव्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगवंधे य अपज्जत्तगगव्भवक्कंतियमणूस० जाव बंधे य ॥ ओरालियसरीरप्पयोगवंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?, गोयमा ! वीरियसजोगसहव्वयाए पमादपचया कम्मं च जोगं च भवं च आउयं च पडुच ओरालियसरीरप्पयोगनामकम्मस्स उदएणं ओरालियसरीरप्पयोग- बंधे ॥ एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?, एवं चेव, पुढविद्दाइयणगिंदियओ- रालियसरीरप्पयोगवंधे एवं चेव, एवं जाव वणस्सइकाइया, एवं बेइंदिया एवं तेहंदिया एवं चउरिंदियतिरि- क्लजोणिय०, पंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगर्चधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?, गो० वीरियसजोग- सहव्वयाए पमाय जाव आउयं पडुच पंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं , तो० वीरियसजोग- संहव्यियोगलियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कर्क्स कम्मस्स उदएणं ?, गो० वीरियसजोग- संहव्ययोगलियमरीरप्पयोगवंधे एवं चेव, मणम्मपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं , तिरिक्खपं-	
	🖌 चिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे एवं चेव, मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स	۲ ۲

For Private and Personal Use Only

प्रजनिः (प्र॰) हे भगवन ! एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारनो कह्यो	श्वतके रुवः ९ ७००॥
--	--------------------------

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥७०१॥	ओरालियसरीरप्पयोगवंधे णं भंते! किं देसबंधे सब्बबंधे ?, गोयमा! देसबंधेवि सब्बबंधेवि, एगिंदियओ रालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते! किं देसबंधे सब्बबंधे ?, एवं चेव, एवं पुढविकाइया, एवं जाव मणुरसपंचिंदिय- ओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते! किं देसबंधे सब्बबंधे ?, गोयमा! देसबंधेति सब्बबंधवि ॥ ओरालियसरीर- प्पयोगबंधे णं भंते! कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा! सब्वबंध एकं समय, देसबंधे जहन्नेणं एकं समय उन्नो- पेणं तिन्नि पलिओवमाई समयज्ाह, एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते! कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा! सब्बबंधे एकं समयं देसबंधे जहन्नेणं एकं समयं उन्नोसेणं बाबीसं वाससहरसाई समज्जाई, पुढविका- इयएगिंदियपुच्छा, गोयमा ! सब्बबंधे जहन्नेणं एकं समयं उन्नोसेणं बाबीसं वाससहरसाई समज्जाई, पुढविका- इयएगिंदियपुच्छा, गोयमा ! सब्बबंधे एकं समयं देसबंधे जहन्नेणं खुडुागभवग्गहणं तिसमयज्जां उन्नोसेणं वावीसं वाससहरसाई समञ्ज्याई, एवं सब्वेसि सब्वबंधो एकं समयं देसबंधो जेसि नत्थि वेडव्वियसरीर तेसिं जहन्नेणं खुडुागं भवग्गहणं तिसमयज्जणं उन्नोसेणं जा जरस ठिती सा समज्जा कायव्या, जोर्सि प्राय बेउव्वियसरीर तेसि देसबंधो जहन्नेणं एकं समयं उन्नोसेणं जा जरस ठिती सा समज्ज्या कायव्या, जार्सि पुज स्ताणं देसबंधे जहन्नेणं एकं समयं उन्नोसेणं तिन्नि पलिओवमाई समयुणाई ॥ [प्रठ] हे भगवन! औदारिकशरीरप्रयोगवन्थ्वो श्रु देशबन्ध छे के सर्ववन्ध छे? [उ०] हे गौतम! देशबन्ध भानन् [प्र०] हे भगवन! मगुष्पपेन्दियऔदारिकशरीरपयोगवन्ध्वो श्रु देशबन्ध छे के सर्ववन्ध छे? [उ०] हे गौतम! देशवन्ध	the second	८ शतके उद्देशः ९ ॥७०१॥
-----------------------------------	---	------------	-------------------------------------

সমারণ	समय, अने देशवन्ध जघन्यथी एक समय, अने एन्छुए एक समय न्यून त्रण पत्थापम सुधी होय छे. [प्र०] दे गांवन (प्रेस प् समय, अने देशवन्ध जघन्यथी एक समय, अने एन्छुए एक समय न्यून त्रण पत्थापम सुधी होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रि- यऔदारिकशरीरमयोगवन्ध काळ्यी क्यांसुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! सर्ववन्ध एक समय, अने देशवन्ध जघन्यथी एक समय, अने उन्छुष्ट एक समय न्यून बावीश्वहजार वर्ष सुधी होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! पूर्धिवीकाधिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरमयोगवन्ध संबंधे प्रक्ष. [उ०] हे गौतम ! सर्ववन्ध एक समय, अने देशवन्ध जघन्यर्थी त्रण समय न्यून क्षुह्रक भव पर्यन्त, अने उन्छुष्ट एक समय न्यून बावीसहजार वर्ष सुधी होय छे. ए ममाणे सर्वजावाना सर्ववन्ध एक समय छे, अने देशवन्ध जोने वैक्रिय- शर्र समय न्यून बावीसहजार वर्ष सुधी होय छे. ए ममाणे सर्वजावाना सर्ववन्ध एक समय छे, अने देशवन्ध जोने वैक्रिय- शरीर नथी तेओने जघन्यथी त्रण समय न्यून क्षुह्रक भव पर्यन्त होय छे, अने उन्छुष्टथी जेटलो जेनी आयुष्यस्थिति छे, तेथी एक समय न्यून करवो. जेओने वैक्रिय शरीर छे तेओने देशवन्ध जघन्यथी एक समय, अने उन्छुष्टथी जेटलुं जोरुं आयुष्य छे तेटलामांथी एक समय न्यून जाणवो, ए ममाणे यावद् मनुष्योनो देशवन्ध जघन्यथी एक समय, अने उन्छुष्टथी एक समय न्यून त्रण पत्थोपम सुधी जाणवो. ओरालियसरीरबंधतरे णं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा ! सव्यबंधतरं जहन्नेणं खुड्ढागं भवग्ग- इणं तिसमयऊणं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाई पुच्चकोडिसमयाहियाई. देसबंधतरं जहन्नेणं एक समयं उक्को सेणं तेत्तीसं सागरोवमाई तिसमयाहियाई. एगिंदियओगालियपच्छा, गोयमा ! सव्यबंधतरं जहन्नेणं एक समयं उक्को	く 77末 3年初: 9 1150211
	र्दे सेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं तिसमयाहियाइं, एगिंदियओराल्यिपुच्छा, गोयमा! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं खुड्डागं अवग्गहणं तिसमयऊणं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं समयाहियाइं, देसबंधंतरं जहन्नेणं एकं समयं उक्कोसेणं	A A A A A A A A A A A A A A A A A A A

व्या रूया- प्रज्ञप्तिः ॥७०३॥	A the the the set of the set of the set of the set	अंतोमुहुत्तं, पुढविकाइयएगिंदियपुच्छा गो० ! सव्ववंधंतरं जहेव एगिंदियस्स तहेव भाणियव्वं, देसवंधंतरं जह- क्रेणं एकं समयं उक्कोसेणं तिन्नि समया जहा पुढविकाइयाणं, एवं जाव चउरिंदियाणं वाउक्काइयवज्जाणं, नवरं सव्ववंधतरं उक्कोसेणं जा जस्स ठिती सा समयाहिया कायव्वा, वाउक्काइयाणं सव्ववंधतरं जहन्नेणं खुड्ढागभ- वग्गहणं तिसमयऊणं उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं समयाहियाइं, देसवंधंतरं जहन्नेणं एकं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं, पंचिंदियतिरिक्खजोणियओराल्यिपुच्छा, सव्ववंधंतरं जहन्नेणं खुड्ढागभवग्गहणं तिसमयऊणं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं, पंचिंदियतिरिक्खजोणियओराल्यिपुच्छा, सव्ववंधंतरं जहन्नेणं खुड्ढागभवग्गहणं तिसमयऊणं उक्कोन् सेणं पुच्वकोडी समयाहिया, देसवंधंतरं जहा एगिंदियाणं तहा पंचिंदियतिरिक्खजो०, एवं मणुस्साणवि निर- बसेसं भाणियव्वं जाव उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं॥ जीवस्म णं भंते ! एगिंदियत्ते णोएगिंदियत्ते पुणरवि एगिंदियत्ते एगिंदियओरालिबसरीरप्पओगबंधंतरं कालओ केवचिरं होइ?,गोयमा! सव्ववंधंतरं जहन्नेणं दो खुड्ढागभवग्गहणाइं तिसमयऊणाइं उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साईं संखेज्जवासमब्भहियाइं, देसबंधंतरं जहन्नेणं खुड्ढागं भवग्ग हणं समयाहियं उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साईं संखेज्जवासमब्भहियाइं, [प्र०] हे भगवन् ! औदारिक शरीरना वन्धन्नं आत्रथो क्यांधुधी होय? [उ०] हे गौतम ! सर्ववन्धनु अन्तर जवन्यवी त्रण समय न्यून क्षुछक भवग्रहण पयन्त छे, अने उन्कृष्टथी समयाधिक पूर्वकोटी अने तेत्रोज्ञ सागरोपम छे. अने देशवन्धनु अन्तर जवन्यवी एक समय, अने उत्कृष्टिवी त्रण समय अधिक तेत्रीज्ञ सागरोपम छे. [प्र०] एकेन्द्रियऔरासिकारीरसंबंधे पक्ष. [उ०] हे गौतम ! तेओना सर्वन्थन्तु अन्तर जघन्यथी त्रण समय न्यून क्षुछक भव पर्यन, अने उन्कृष्टव्यी समयाधिक वावीज्वहत्ता वर्य सुधी	x & a & a & a & a & a & a & a	८ चतके उद्देशः ९ ॥७०३॥	
---	--	---	-------------------------------	------------------------------	--

ध्याख्या-

प्रज्ञप्तिः

1190811

होय छे. देशवन्धनुं अन्तर जघन्यथी एक समय, अने उत्क्रष्टथी अंतर्धुहूर्त सुघीतुं छे. [प्र०] प्रथिवीकायिक एकेन्द्रियना औदारि- कश्वरीरसंधंघे प्रश्न. [०उ] हे गौतम! ते भोना सर्ववन्धनु अन्तर जेम एकेन्द्रियाने कहुं तेम कहेतुं; अने देशवन्धनुं अन्तर जघन्यथी एक समय, अने उत्क्रष्टथी त्रण समय सुधीनुं होय छे. जेम प्रथिवीकायिकने कहुं तेम वायुकायिक सिवाय यावंत् चडरिन्द्रिय ग्रुधीना जीवोने जाणतुं, पण उत्क्रष्टथी सर्ववन्धनुं अन्तर जेटली जेनी आयुष्यस्थिति हाय तेटली एक समय अधिक करवी. (अर्थात् सर्वव- मध्युं अन्तर समयाधिक आयुष्यनी स्थिति प्रमाणे जाणतुं.) वायुकायिकनो सर्ववन्धनुं अन्तर जघन्यथी त्रण समय न्यून श्रुष्ठक भव, अने उत्क्रष्टथी समयाधिक आयुष्यनी स्थिति प्रमाणे जाणतुं. वायुकायिकनो सर्ववन्धनुं अन्तर जघन्यथी एक समय, अने उत्क्रष्टथी अंतर्धुहूर्त पर्यन्त जाणतुं. [प्र0] पंचेन्द्रियतिर्यचना औदास्किश्वरीरवन्धना अन्तर संवंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतय! तेथोना सर्ववन्धनुं अन्तर जघन्ययी त्रण समय न्यून श्रुष्ठक भवपर्यन्त, अने उत्कृष्टथी समयाधिक पूर्वकोटि होय छे. देशवन्धनुं अन्तर जेम एकेन्द्रियोने कहुं जघन्ययी त्रण समय न्यून श्रुष्ठक भवपर्यन्त, अने उत्कृष्टथी समयाधिक पूर्वकोटि होय छे. देशवन्धनुं अन्तर जेम एकेन्द्रियोने कहुं जवन्तर की एकेन्द्रियपतिर्यचाने जाणतुं. ए ममाणे मनुभ्योने पण समग्र जाणतुं, यावत् उत्क्रष्टथी अंतर्ग्रहूर्त छे. [प्र0] हे भग- तो एकेन्द्रियऔदास्किश्वरीरमयोगवन्धनुं अन्तर काल्धी केटलुं होय? [उ०] हे गौतम! जघन्यथी सर्ववन्धनुं अन्तर त्रण समय न्यून वे श्रुष्ठक भव, अने उत्क्रष्टथी संख्यात वर्ष अधिक बेहजार सागरोपम छे. जीवस्स णं अंते! पुढविकाइयत्ते नोपुढविकाइयत्ते पुणरबि पुढविकाइयत्ते पुढविकाइयत्त्रीपुर्वादियओरास्तियस्रित-	: ९
--	-----

For Private and Personal Use Only

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥७०५॥	रप्पयोयंयंतरं कालओ केव चिरं होइ ?, गोयमा ! सब्दवंधंतरं जहन्नेणं दो खुड्ढाइं भवरगहणाइं तिसमय ऊणाइं उद्दो सेगं अणंतं कालं आणंता उस्सप्पिणीओ सप्पिणीओ कालओ खेत्तओ अणंता लोगा असंखेज्जा पोग्गलपरियदा, ते णं पोग्गल्यरियदा आवल्खियाए असंखेजडभागो, देसबंधंतरं जहन्नेणं खुड्ढारंग भवरगहणं समयाहियं उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव आवल्खियाए असंखेजडभागो, जहा पुढविकाइयाणं एवं वणस्सइकाइयवज्ञाणं जाव मणुरसाणं, वणस्मइकाइचाणं दोन्नि खुड्ढाइं. एवं चेव उक्कोसेणं असंखिज्जं कालं असंखिज्जाओ उस्सप्पिणिओ सप्पिणीओ कालओ खेत्तजो असंखेज्जा लोगा, एवं देसबंधतरंपि उक्कोसेणं पुढवीकालो ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं ओरालि- यसरीरस्स देसबंधगाणं सन्ववंधगा अवधगाणा य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ?, गोयमा ! सब्दत्थोबा जीवा ओरालियसरीरस्स सब्ववंधगा अधधगा विसेसाहिया देसबंधगा असंखेज्जगुणा (युद्ध ३४७)॥ [प्र0] हे भगवन ! कोइ जीव पृथित्रीकायरणामां ढोय, त्यांथी पृथित्रीकाय सितायना तीजा जीत्रोमां उत्पन्न याय अने पुनः ते पृथित्रीकायमां आवे तो पृथित्रीकायिक एकेन्द्रियऔदारिकशरीरभयोगवन्धतुं अन्तर केटळुं होय ? [उ०] हे गौतम ! सईवन्धतु अन्तर जघन्यर्था ए रीते त्रण समय न्यून वे क्षुळक भव पयन्त छे, अने उत्कृष्टयी कालती अपेक्षा प्रतन्तकाल अत्रत्त उत्सर्थिणी अने अत्रार्थणी छे, क्षेत्रयी अनन्तलोक-असंख्य पुहल्यरावर्त छे, अने उत्कृष्टयी कालती आवेक्षाना असंख्यातमा भागना (समथ) तुल्य छे. तथा देशवन्धत्वं अन्तर जघन्यथी समयाधिक क्षुछक भव, अत्रे उत्कृष्टयी आनत्रकाल, यात्र यात्र कान्य प्रवद् तात्व देशवन्धत्र अन्तर जघन्ययी समयाधिक क्षुछक भव, अत्रे उत्कृष्टवी आनत्रकाल, यात्र यात्र विद्योत् ज्ञान कार्यत्र हेत्र तथा देशवन्यत्र छे. जेम पृथितीकायिकोने क्रि हो त्र वत्रात्वाय कि सिनाय वात्रीना यात्र यात्र यात्व	८ बतके उद्देशः ९ ॥७०५॥
	तुल्य छ. तथा देशवन्धनु अन्तर जघन्यथी समयाधिक शुङ्क भत्रे, अते उत्कृष्टथी अनन्तकाल, यावत् आवल्किताना अपंख्यातमा भगगना समय तुल्य असंख्य पुद्गलपरावर्त छे. जेम पृथिवीकायिकोने वत्नु तेम वनस्पतिकायिक सिवाय (बाकीना) यावद्र्मनुष्य ह	

म्याख्या-म्राख्या-प्रज्ञप्तिः प्रज्ञप्तिः मण्गणे (समयाधिक क्षुलुक भव) जाणवुं. अने उत्कुष्टथी प्रथिवीकायना स्थितिकाल (असंख्य लोक छे; देशवन्धनुं अन्तर जघन्यथी ए ममाणे (समयाधिक क्षुलुक भव) जाणवुं. अने उत्कुष्टथी प्रथिवीकायना स्थितिकाल (असंख्य उत्सर्पिणी अवसर्पिणी) सुधी जाणवुं प्रज्ञप्तिः ॥७०६॥ दे भगवन् ! ए औदारिक श्ररीरना देशवन्धक, सर्ववन्धक अने अवन्धक जीवोमां कया जीवो कोनाथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम सौथी थोडा जीवो औदारिक श्ररीरना सर्ववन्धक छे, तेथी अवन्धक जीवो बिशेषाधिक छे, अने तेथी देशव-ज्यक जीवो असंख्यातग्रुण छे. ॥ ३४७ ॥

न्यक जावा असख्यातगुण छ. ॥ ३४७ ॥ वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते! कतिविहे पन्नत्ते ?, गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा-एगिंदियवेउव्विय-सरीरप्पयोगबंधे य पंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे य । जइ एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे किं वाउका-इयएगिंदियसरीरप्पयोगबंधे य अवाउकाइयएगिंदिय॰ एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे वेउव्वि-यसरीरभेदो तहा भाणियव्वो जाव पज्जत्तसव्वट्टसिद्ध अगुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपचिंदियवेउव्विय-सरीरप्पयोगबंधे य अप्पज्जत्तसव्वट्टसिद्ध अगुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपचिंदियवेउव्विय-सरीरप्पयोगबंधे य अप्पज्जत्तसव्वट्टसिद्ध अगुत्तराववाइय जाव पयोगबंधे य । वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते! कस्स कम्मस्स उदएणं ?, गोयमा ! वीरियसजोगसद्व्वयाए जाव आउयं वा लर्द्धि वा पडुच वेउव्वियसरीरप्प बोगनामाए कम्मस्स उदएणं वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे । वाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोग॰ पुच्छा, बोयमा ! वीरियसजोगसद्व्वयाए चेव जाव लर्द्धि च पडुच वाउकाइयएगिंदियवेउव्विय जाव बंधो । रयणप्प-

८ शतके उद्देशः ९

। ।।७०६॥ ।

ي ک	भापुढविनेरइयपंचिदियघेउव्वियसरीरप्पयोगधंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?, गौयमा ! वीरियसयोगसद- ज्वयाए जाव आउयं वा पडुच रयणप्पभापुढवि० जाव बंधे, एवं जाव अहेसत्तमाए । [प्र०] हे भनवन् ! वैक्रियशरीरनो प्रयोगवन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! वे प्रकारनो कह्यो छे, ते भा ममाणे-एकेन्द्रिय वैक्रियशरीरप्रयोगवन्ध अने पंचेन्द्रिय वैक्रियशरीरपयोगवन्ध. [प्र०] जो एकेन्द्रिय वैक्रियशरीरमयोगवन्ध छे तो शुं वाबुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रियशरीरप्रयोगवन्ध छे के वायुकायिक मिन्न एकेन्द्रिय शरीरप्रयोगवन्ध छे ? [उ०] ए प्रमाणे ए अमिलापथी जेम 'भवनाइनासंस्थान'पदमां वैक्रिय शरीरनो भेद कह्यो छे, तेम कहेवो; यावत् पर्याप्तन्य छे ? [उ०] ए प्रमाणे ए अमिलापथी जेम 'भवनाइनासंस्थान'पदमां वैक्रिय शरीरनो भेद कह्यो छे, तेम कहेवो; यावत् पर्याप्तर्न्य वैक्रियशरीरप्रयोगवन्ध [प्र०] हे भगवन् ! वैक्रियशरीरप्रयोगवन्ध अने अपर्याप्त सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरौपपातिक-यावद् वैक्रियशरीरपयोगवन्ध. [प्र०] हे भगवन् ! वैक्रियशरीरप्रयोगवन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! सवीर्यता, सयोगता अने सद्द्रव्यताशी यावद् आयुष् अने लब्विने आश्वयी वैक्रियशरीरप्रयोग नामकर्भना उदयथी वैक्रियशरीरप्रयोगवन्ध थाय छे. [प्र०] वायुकायिकएकेन्द्रिय धेक्रियशरीरप्रयोगवन्ध कथा दर्भ. [उ०] हे गौतम ! सवीयता, सयोगता अने सद्द्रव्यताशी यावद् आयुष् अने लब्विने आश्वयी वैक्रियशरीरप्रयोग नामकर्भना उदयथी वैक्रियशरीरप्रयोगवन्ध थाय छे. [प्र०] वोयुकायिकएकेन्द्रिय- धैक्रियशरीरप्रयोगवन्ध्य क्रिय. [उ०] हे गौतम ! सवीयता, सयोगता अने सद्द्रव्यताथी साधुकाधिकएकेन्द्र्यिक्रयशरीरप्रयोग नामकर्प्रना उदयथी यावद् वैक्रियशरीरिप्रयोगवन्ध्य थाय छे. [प्र०] हे भगवन ! रत्नमभाष्ट- भित्तीरिक्यवेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोग नामकर्प्रना उदयथी याव छे ?[उ०] हे गौतम ! सवीर्थता, सयोगता अने सद्द्रव्यताथी यावद् आयुष्यने आश्रयी रत्नमभाष्ट्रियिक्यंचेन्द्रियश्वरीर्ययीयानामकर्प्रना उदयथी यावद् वैक्रियशरीरप्रयोगवनन्य थाय छे. ए प्रमाणे सावद् नोचित्रयवीक्रियशरीरप्रयोगवन्य कथा कर्प्रनन्द्रियश्वरीर्ययीयानामकर्प्रना उदयथी यावद् वैक्रियशरीरप्रयोगवनन्य थाय छे. ए प्रमाणे सावद् नाचि आश्वयी रत्नमभान्त्र विद्यान्य प्रिय्र वेन्द्रियश्वरीर्ययोगनानमर्यत्र वावद्र विक्रयशरीरप्रयोगवन्य थाय छे. ए	5
Č	प्रमाणे यावत् नीचे सातमी नरद पृथ्वी सुधी जाणवुं.	*

प्रह्नप्तिः 🖌 योगपद्धनारा, एव योगमतरा, एव जाहासया, एव साहम्मकप्पावगया वमाणिया एव जाव अच्चुयगवज्ज- 侯 उ त्रह्नप्तिया वेमाणिया, एवं चेव अणत्तरोववाइयकप्पातीया वेमाणिया एवं चेव । वेवन्तिवयस्त्रीयाययोगवंघे 🧩	८ शतके उद्देशः ९ ॥७० ८॥
--	--------------------------------------

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥७०९॥	[उ०] हे गौतम ! ते देशवन्य पण छे अने सर्ववन्ध पण छे. ए प्रमाणे वायुकायिकएकेन्द्रियवैक्रियश्चरीरभयोगवन्ध तथा रत्नभभाष्टाय- वीनैरयिकवैक्रियशरीरभयोगवन्ध जाणवो. ए ममाणे यावद् अनुत्तरौपपातिक देवा छुधी जाणवुं. [प्र०] हे भगवन ! वैक्रियशरीरभयो- गवन्थ काल्ल्यी क्यां सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! सर्ववन्ध जयन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी वे समय छुधी होय. तथा देशव- न्ध जयन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी एक समय न्यून तेत्रीश सागरोपम छुधी होय. [प्र०] वायुकायिकएकेन्द्रियवैक्रियशरीरभयो- न्ध जयन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टश्री एक समय न्यून तेत्रीश सागरोपम छुधी होय. [प्र०] वायुकायिकएकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयो- न्ध जयन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टश्री एक समय न्यून तेत्रीश सागरोपम छुधी होय. [प्र०] वायुकायिकएकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयो- गवन्धसंबन्धे प्रक्ष. [उ०] हे गौतम ! सर्ववन्ध एक समय, अने देशवन्ध जयन्यथी एक समय अने उत्कृष्टथी अन्तर्धहर्त छुधी होय छे. रयणप्रभापुद्धविनेरइय पुच्छा, गोयमा! सञ्चवंधे एक समय, वचर देसबंधे जहन्नेणं दसवाससहस्साइं तिममयऊणाइं उकोसिणं सागरोवमं समऊणं, एवं जाव अहेसत्तमा, नवरं देसबंधे जहन्नेणं दसवाससहस्साइं तिममयऊणाइं उकोसिणं सागरोवमं समऊणं, एवं जाव अहेसत्तमा, नवरं उत्सर्थ जरस जा जहन्तिया ठिनी सा ति समऊणा कायव्वा जस्स जा उक्कोसा सा समयूणा॥ पंचिदियतिरित्यजोणियाण मणुरमाण य जहा वाउक्काइयाणं । असुरकु- मारनागकुमार० जाव अणुत्तरोववाइयाणं जहा नेरइयाणं, नवरं जस्स जा ठिई सा भाणियव्वा जाव अणुत्तरोबवा- इयाणं सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहन्नेणं एकती सं सागरोवमाई तिसमऊणाई, उक्कोसेणं तेत्ती सं सागरोवमाई समऊणाई ॥ वेउव्वियसरीरप्पयोगवंधतरे णं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ?. गोयमा ! सव्वबंधतरं जहन्नेणं एकं समयं उक्कोसेणं अणंत कालं अणंताओ जाव आवलियाप असंखिज्जइभागो, एवं देसबंधतरंपि ॥ [प्र०] रत्नप्रानैरपिकवैक्रियश्चगिरप्रयोगवन्धत्वरे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्ववन्ध एक समय, अने देशवन्ध जयन्य	८ भतके उद्देशः ९ ४ ।।७०९॥ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
	🗚 त्रण समय उणा द्शइनार वर्ष सुधी होय, तथा उत्कृष्टथी एक समय न्यून एक सागरोपम सुधी होय. ए प्रमाणे यावत् नीचे सातमी	*

र्व्याख्या प्रज्ञक्षिः ॥७१०॥	अनुत्तरौपपातिक देवोने नारकनी पेठे जाणवा; परन्तु जेनी जे स्थिति (आयुष्य) होय ते कहेवी, यावद् अनुत्तरौपपातिकोनो सर्ववन्ध	८ शतक उद्देशः ९ ॥७१०॥
	प्पभापुढवि० पुच्छा, गोयमा ! सव्वबंधतरं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहत्तमब्भहियाई उक्कोसेणं वण-	

व्याख्या- क्र जहा रचणप्पमापुढावनरइयाण नवर सव्यववरार अस्त आ ावता अहाक्रया सा जताउद्र त्या से उद्देव	ग्रतके ग्रः ९ ११॥
--	-------------------------

गत्नवि 🎝	ए प्रमाणे यावत् नीचे सातमी नरक्षुथ्वी पर्यन्त जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के जघन्यथी सर्ववन्धवुं अन्तर जे नारकनी जेटली जघन्य स्थिति होय तेटली स्थिति अन्तर्भुहूर्त अधिक जाणवी. बाकीतुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक अने मनुष्योने सर्ववन्धनुं अन्तर वायुकायिकनी पेठे जाणवुं. जेम रत्नप्रभाना 'नैरविकोने कधुं तेम अमुरकुमार, नागकुमार, यावत् सहसार देवोने पण जाणवुं, परन्तु विशेष ए छे के तेनां सर्ववन्धनुं अन्तर जेनी जे जघन्य स्थिति होय तेने अन्तर्भुहूर्त अधिक करवी बाकी सर्व पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. जीवस्स णं भंते ! आणयदेवत्ते नोआणय० पुच्छा, गोयमा ! सञ्वबंधंतरं जहन्नेणं अद्वारस सागरोवमाइं वासपुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो, देसबंधंतरं जहन्नेणं वासपुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो, एवं जाव अच्चुए, नवरं जस्स जा जहलिया ठिती सा सञ्वबंधतरं जह० वासपुहुत्तमब्भहिया कायच्वा, सेसं तं चेव। गेवेज्जकप्पातीयपुच्छा, गोयमा ! सञ्वबंधतरं जहन्नेणं बासपुहुत्तमब्भहिया कायच्वा, सेसं तं चेव। गेवेज्जकप्पातीयपुच्छा, गोयमा ! सञ्वबंधतरं जहन्नेणं वासपुहुत्तमब्भहिया कायच्वा, सेसं तं चेव। गेवेज्जकप्पातीयपुच्छा, गोयमा ! सञ्वबंधतरं जहन्नेणं बाह्र वासपुहुत्तमब्भहिया कायच्वा, सेसं तं चेव। गेवेज्जकप्पातीयपुच्छा, गोयमा ! सञ्वबंधतरं जहन्नेणं बाह्र वासपुहुत्तमब्भहिया कायच्वा, सेसं तं चेव। गेवेज्जकप्पातीयपुच्छा, गोयमा ! सञ्वबंधतरं जहन्नेणं बाह्र द जक्कोसेणं वणस्सइकालो ॥ जीवस्स णं कायच्वा, सेसं तं चेव। गेवेज्जकप्पातीयपुच्छा, गोयमा ! स्वात्वंधतरं जहन्नेणं बाह्र द जक्कोसेणं वाणस्यइकालो ॥ जीवस्स णं कायच्वा, सेसं तं चेव। गेवेज्जकप्पातीयपुच्छा, गोयमा ! सञ्वबंधतरं जहन्नेणं वासपुष्ठत्ते आहेते प्रायक्ष मार्ये कालं वाणस्त हकालो । जीवस्स णं भंते ! अणुत्तरोववातियपुच्छा, गोयमा ! सञ्ववंधतरं जहन्नेणं एक्कतिसं सागरोवमाई वासपुहुत्त्तमब्सहिया सर्ण संखेज्जाई सागरोवमाई, देसबंधतरं जहन्नेणं वासपुहुत्तं उक्कोसेणं संखेजाई सागरोवमाई ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं वेउव्वियसरीरस्र देसबंधनाणं स्त स्वधंधनाणं अवंधनाण य कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया वा ?,	🏘 उद्दशः ९
	ि जीवाणं वेडोव्वयसरीरस्स दसंबंधगाण सव्वबधगाण अबधगाणं य क्यर राहता जाव विसंसाहयां वा छ हो गोयमा ! सव्वधोवा जीवा वेडब्वियसरीरस्स सव्वबंधगा देसंबंधगा असंखेजज्जुणा अबंधगा अणंतगुणा ॥	

ब्याख्या-

प्रज्ञप्तिः ॥७१३॥

[म0] हे भगवन ! आनतदेवलोकमां देवपणे उत्पद्ध थयेलो कोइ जीव त्यांथी (च्यवी) आनत देवलोक सीवायना जीवोमां उत्पन्न थाय अने पाछो फरीने त्यां आनत देवलोकमां उत्पन्त थाय ते आनतदेव वैक्रियन्नरीप्रयोगवन्धना अन्तर संवन्त्रे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्ववन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथवत्त्व अधिक अढार सागरोपम, अने उत्कुष्ट अनंतकाल-वनस्पतिकालपर्यन्त होग. तथा देशवन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथवत्त्व अधिक अढार सागरोपम, अने उत्कुष्ट अनंतकाल-वनस्पतिकालपर्यन्त होग. तथा देशवन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथवत्त्व अधिक अढार सागरोपम, अने उत्कुष्ट अनंतकाल-वनस्पतिकालपर्यन्त होग. तथा देशवन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथवत्त्व, अने उत्कृष्ट अनंतकाल-वनस्पतिकाल होय. ए ममाणे यावद् अच्युत देवलोकपर्यन्त जाणवुं परन्तु सर्ववन्धनुं अन्तर जघन्यथी जेनी जे स्थिति होय ते वर्षपृथकत्व अधिक करवी. बाकी बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. [म०] प्रैवेयक कल्पातीत वैक्रियन्नरीरप्रयोगवन्धना अन्तर संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्ववन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथकत्व अधिक बावीन्न सागरोपम, अने उत्कृष्टथी अनंतकाल-वनस्पतिकाल सुधी होय. तथा देशवन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथकत्व अभिक बावीन्न सागरोपम, अने उत्कृष्टथी अनंतकाल-वनस्पतिकाल सुधी होय. तथा देशवन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथक्त्व अने उत्कृष्टथी वनस्पतिकाल जाणवो. [प0] हे भगवन ! अनुत्तरौपपातिकदेव संवंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्ववन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथक्त्व, अने उत्कृष्टथी वनस्पतिकाल जाणवो. [प0] हे भगवन ! अनुत्तरौपपातिकदेव संवंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्ववन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथक्त्व, अने उत्कृष्ट धर्धा संख्यात सागरोपम होय छे.[प0] हे भगवन ! पु वैक्रियन्नरीरना देशवंधक, सर्ववंधक अने अवंधक जीवोमां कया जीवो कया जीवोधी यावद् विज्ञेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! वैक्रियन्नरीरना सर्तवंधक जीवो सौर्या योडा छे, तथा देशवंधको असंख्यातगुणा छे, अने तेथी अवंधको अनंतगुणा छे. आहारगमासीरपपयोगाबष्धे णं भंते ! कतिबिहे पण्णत्ते ?, गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते । जइ एगागारे पण्णत्ते	1: 9
हे, अने तथा अवधका अनतगुणा छ. आहारगसरीरप्पयोगबधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?, गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते । जइ एगागारे पण्णत्ते किं मणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे किं अमणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे ?, गोयमा ! मणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे,	

For Private and Personal Use Only

नो अमणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे, एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे जाव इड्ढीपत्त,पमत्तसंजय- सम्मदिटिपज्जत्तसंखेज्जवामाउयकम्मभूमिगगब्भवक्षंतियमणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे णो अणि ्ढीपत्तपम्त्त जाव आहारगसरीरप्पयोगबंधे । आहारगसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?, गोयमा ! बीरियसयोगसद्दव्याए जाव लद्धिं च पडुच आहारगसरीरप्पयोगणामाए कम्मस्स उदएणं आहारगसरीरप्पयो- वारियसयोगसद्दव्याए जाव लद्धिं च पडुच आहारगसरीरप्पयोगणामाए कम्मस्स उदएणं आहारगसरीरप्पयो- गबंधे । आहारसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे सद्वबंधे ?, गोयमा ! देसबंधवि सद्वबंधेवि । आहार- गसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा ! सद्वबंधे एकं समयं देसबंधे जहन्नेणं अंनोमुहुत्तं उद्योतेणवि अंतोमुहुत्तं । आहारगसरीरप्पयोगबंधतरे णं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा ! सद्वबंधतरं क्रिकोसेणवि अंतोमुहुत्तं । आहारगसरीरप्पयोगबंधतरे णं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा ! सद्वबंधतरं क्रिकोर्सणवि अंतोमुहुत्तं उक्तोसेण अणंतं कालं अणंताओ ओसप्पिणिउस्सप्पिणीओ कालओ खेत्तओ अणंता लोया	१ उद्दशः ९ १ ॥७१४॥ २
ति जहन्नेण अतोमुहुत्त उक्तोसेण अणंत कालं अणंताओ ओसप्पिणिउस्सप्पिणीओ कालओ खेत्तओ अणंता लोया अवड्ढं पोग्गलपरियटं देसूणं, एवं देसबंधतरंपि । एएसि णं भंते ! जीवाणं आहारगसरीरस्स देसबंधगाणं सब्वबंधगाण अवंधगाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ?, गोयमा ! सब्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सब्वबंधगा देसबंधगा संखेज्जगुणा अबंधगा अणंतगुणा ३ ।। (सू० ३४८) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! आहारकशरीरनो प्रयोगवंध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! एक प्रकारनो कह्यो छे. [प्र०] जो (आहारकशरीरप्रयोगवंध) एक प्रकारनो कह्यो छे तो शुं ते मनुष्योने आहारकशरीरप्रयोगवंध छे के मनुष्थ शिवाय वीजा जीवोने आहारकशरीरप्रयोगवंध छे ? [उ०] हे गौतम ! एक प्रकारनो कह्यो छे तो शुं ते मनुष्योने आहारकशरीरप्रयोगवंध छे के प्रनुष्य शिवाय वीजा	and a sea and an an an an

व्याख्या-प्रज्ञप्तिः

ાહરતા

जोवोने आदारकशरीरमयोगवन्ध होतो नथी. ए प्रधाणे ए अभिलापथी 'अवगाइनासंस्थान' पदमां कह्या प्रमाणे यावद् ऋ हिशास प्रमत्तसंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्यात वर्षना आयुष्यवाळा कर्मभूमिमां उत्पन्त थएला गर्भज मनुष्यने आहारकशरीरप्रयोगवन्ध होय छे, पण ऋदिने अभाप्त ममत्तसंयतने यावद् आहारकशरीरप्रयोगवंध होतो नथी. [प्र0] हे भगवन्! आहारकशरीरप्रयोगवन्ध कया कर्मना उदयथी होय छे? [उ0] हे गौतम ! सवीर्थता, सयोगता अने सद्द्रव्यताथी यावद् लव्धिने आश्रयी आहारकशरीरप्रयोगवन्य कया कर्मना उदयथी आहारकशरीरप्रयोगवन्ध होय छे. [प्र0] हे भगवन्! आहारकशरीरप्रयोगवन्ध के सर्ववन्य छे ? [उ0] हे गौतम ! देशवन्ध होय छे. [प्र0] हे भगवन् ! आहारकशरीरप्रयोगवन्ध के सर्ववन्य छे ? [उ0] हे गौतम ! देशवन्ध पण छे अने सर्ववन्ध पण छे. [प्र0] हे भगवन् ! आहारकशरीरप्रयोगवन्ध काल्यी क्यांसुघी होय ? [उ0] हे गौतम ! तेनो सर्ववंध एक समय, अने देशवंध जयन्यथी अंतर्धुहूर्त अने उत्कृष्टथी पण अंतर्मुहूर्त सुची होय छे. [प्र0] हे भगवन् ! आहारकशरीरना प्रयोगवंधनुं अंतर काल्यी केटलुं होय छे? [उ0] हे गौतम ! तेना सर्ववंध्व अंतर जयन्ययी अंतर्महुर्त, अने उत्कृष्टयी काल्यनी अपेक्षाए अनंतकाल-अनंत उत्सर्षिणी अने अवसर्षिणी होय छे. क्षेत्रयी अनंतलोक-कांडक न्यून अर्धपुर्वल्ल परावर्त छे. ए प्रमाणे देशवंधनुं अंतर पण जाणवुं. [प0] हे भगवन् ! आहारकशरीरना देशवंधक अने अवंधक जीवोमां कया जीवो कया जीवोथी यावद् विशेषाधिक छे ! [उ0] हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो आहारकशरीरना सर्ववंधक छे, तेथी देश- वंधक संख्याक्षगुणा छे, अने तेथी अवंधक जीवो अनंतगुणा छे. ॥ ३४८ ॥ तेयाससीरप्रप्रयोगवंधे णं भंते ! कतियिहे पणणत्ते ?, गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, नंजहा-एगिंचियलेयासरीरप्प- योगवंधे बेहंदिय० तेहंदियज् जाच पंचिंदियतेयासररिस्पप्योग्बंधे ! श्रनिर्गितद्यतेयाससरिरप्पयोगमन्ये णं भंते ! कहविहे

 पण्णत्ते?, एवं एएणं अभिलावेणं भेदो जहा ओगाहणसंठाणे जाव पज्जत्तसब्वद्टसिद्धअणुत्तरीववाइयकप्पातीय- वेमाणियदेवपंचिंदियतेयासरीरप्पयोगवंधे य अपज्जत्तसब्वद्टसिद्धअणुत्तरोववाइयजावबंधे य । तेयासरीरप्पयोग- वंधे णं भंते! कस्स कम्मस्स उदएणं ?, गोयमा!वीरियसजोगसदब्वयाए जाव आउयं च पडुच तेयासरीरप्पयोग- वंधे णं भंते! कस्स कम्मस्स उदएणं ?, गोयमा!वीरियसजोगसदब्वयाए जाव आउयं च पडुच तेयासरीरप्पयोग- वंधे णं भंते! कस्स कम्मस्स उदएणं तेयासरीरप्पयोगवंधे। तेयासरीरप्पयोगवंधे णं भंते! किं देसवंधे सब्ववंधे ?, गोयमा! गत्तामाए कम्मस्स उदएणं तेयासरीरप्पयोगवंधे। तेयासरीरप्पयोगवंधे णं भंते! किं देसवंधे सब्ववंधे ?, गोयमा! देसवंधे, नो सब्बवंधे । तेयासरीरप्पयोगवंधे णं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा- अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए॥ तेयासरीरप्पयोगवंधतरे णं भंते! कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा ! अणाइयस्स अपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं, अणाइयस्स सपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं ॥ एएसि णं भंते ! जीवाणं तेयासरीरस्स देसबंधगाणं अवंधगाण य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ?, गोयमा ! सब्वत्थोवा जीवा तेयासरीरस्स अबंधगा, देसबंधगा अणंतगुणा ४ (सूत्रं ३४९) ॥ [प०] हे भगवन! तैनसग्ररीरपयोगवंध केटला प्रकारोकचा छे?[उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रपाणे- १ एकेन्द्रिय तैनसग्ररीरपयोगवन्ध, २ द्वीन्द्रिय तैनसग्ररीरप्रयोगवन्ध, ३ त्रीन्द्रिय तैनसग्ररिमयोगवन्य, यावत् ५ पंचेन्द्रिय तैन- सन्नरीरप्रयोगवनन्ध. [प०] हे भगवन ! एकेन्द्र्यतैनसग्ररीरप्रयोगवन्ध, ३ त्रीन्द्रिय तैनसग्ररीप्रयोगवन्य, यावत् ५ पंचेन्द्र्य तैन- सन्नरीरप्रयोगवन्ध. [प०] हे भगवन ! एकेन्द्र्यतैनसग्ररीरप्रयोगवन्ध, देत्रणं प्रकारे कह्यो छे ?[उ०] ए अभिलावधी ए प्रपाणे जेम ' अवगाहनासंस्थान ' मां भेद कह्यो छे तेम अर्था पण कहेवो, यावद् पर्यात सर्वार्थसिद्ध अनुवरौरपर्यात्रवन्ध छे. [प०] हे भगवन! तैनसग्ररी देवपंचेन्द्रिय तैनसग्ररीरपयोगवन्ध अने अपर्यालसर्वार्थसिद्ध अनुचरौरप्रयोगवन्ध छे. [प०] हे भगवन! तैनसग्रिय लेपचेन्द्र्य तैनसग्ररीरपयोगवन्ध अने अपर्यात्सर्वार्यस्त विद्व त्वत्तरीरप्रयोगवनन्य छे. [प०] हे भगवन! तैनसग्ररीरप्रयोगवन्ध अने अपर्यात्यत्वर्यत्वरीरप्रयोगवन्ध छे.[प०] हे भगवन! तैनसग्र 	९
--	---

🎢 [प०] हे भगवन् ! मोइनीयकार्मणज्ञरीरपयोगवन्ध संबन्धे पक्ष. [उ०] हे गौतम ! तीत्रक्रोध करवाथी, तीत्र मान करवाथी, 🧗	
💭 तीव्र माया (कपट) करवायी, तीव्र छोभ करवाथी, तीव्र दर्शनमोइनीयथी, तीव्र चारित्रमोइनीयथी तथा मोइनीयकार्मणश्ररीरमयो-	
च्याख्या- 🦿 गनामकर्मना उद्यथी मोइनीयकार्मणश्ररीरप्रयोगवन्ध थाय छे. [प्र०] हे भगवन् ! नारकायुषकार्मणश्ररीरप्रयोगवन्ध संवन्धे प्रश्न. [उ०] 🖏	८ शतके
प्रवृप्तिः 🥂 हे गौतम! महा आरम्भथी, महापरिग्रहथी, मांसाहार करवाथी,पंचेन्द्रिय जीवोनो वध करवाथी तथा नारकायुपकार्मण श्रीरप्रयोगनामकर्मना 🕻	उदेशः ९
॥७१ आ 🕻 उदयथी नारकायुषकार्मणज्ञरीरपयोगवन्ध थाय छे. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यवयोनिकायुषकार्मणज्ञरीरपयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी	୲୲୰ୡ୕୬୲୲
🕺 याय छे ? [उ०] हे गौतम ! मायिकपणाधी, कपटीपणाधी, खोडुं बोल्जवाधी, खोटां तोलां अने खोटां मापधी तथा तिर्यचयोनिकायुष- 🔊	
🐉 कार्मणञ्चरीरपयोगनामकर्मना उदयथी तिर्येचयोनिकायुषकार्मणञ्चरीरप्रयोगबन्ध थाय छे. [प्र०] हे भगवन ! मनुष्यायुषकार्मणञ्चरीरप्र- 🖏	
🕻 योगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! प्रकृतिनी भद्रताथी, मकृतिना विनीतपणाथी, दयाळपणाथी, अमत्सरि-	
🖒 पणाथी तथा मनुष्यायुषकार्मणज्ञरीरमयोगनामकर्मना उदयथी मनुष्यायुषकार्मणज्ञरीरमयोगवन्ध थाय छे. [प्र०] देवायुषकार्मणज्ञरी- 🎇	
🗶 रमयोगबन्ध संबन्धे मश्न. [उ०] हे गौतम ! सरागसंयमयी, संयमासंयम-(देशविरति)थी, अज्ञानतपकर्मथी, अकामनिर्जरायी तथा 💢	
🖌 वायुष्कार्मणज्ञरीरमयोगनामकर्मना डदयथी देवायुष्कार्मण् ज्ञरीरप्रयोगवन्ध थाय छे. [प्र०] शुभनामकार्मणज्ञरीरमयोगवन्ध संबन्धे	
🖇 प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कायनी सरळताथी, भावनी सरळताथी, भाषानी सरळताथी अने योगना अविसंवादनपणाथी-एकताथी तथा	
🕵 शुभनामकार्मणञ्चरीरपयोगनाम कर्मना उदयथी यावत प्रयोगवन्घ थाय छे.	
🐔 असुमनामकम्मासरीरपुच्छा, गोयमा ! कायअणुज्जुययाए भावअणुज्जुययाए भासणुज्जुयाए विसंवायणाजोगेणं 🥳	

व्याख्या	है स्स उदएणं	नामाए कम्मस्स उदएणं जावप्पओगबंधे। सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्म-	
प्रज्ञप्तिः		णेजजनम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं सायावेयणिज्जकम्मा जाव बंधे । अस्सायावेयणिज्ज 💢 ^{उद्देश}	
1158011	🧚 पुच्छा, गोय	यमा ! परदुक्खणयाए परसोयणयाए जहा सत्तमसए दसमोदेसए जाव परियावणयाए अस्सायवेय- 🧩 🕪	(C
	४ णिज्जकम्मा	ा जावपयोगबंधे ।	
	🚺 [प्र॰] i	हे भगवन ! कार्मणज्ञरीरमयोगवन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! आठ प्रकारनो कह्यो छे, ते आ 🕵	
	🖌 प्रमाणेज्ञान	नावरणीयकार्मणञ्चरीरप्रयोगबन्ध, यावद् अन्तरायकार्मणञ्चरीरप्रयोगबन्ध. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकार्मणञ्चरोरप्र- 🥀	
		या कर्मना उदययी याय छे?[उ०] हे गौतम ! ज्ञाननी प्रत्यनीकताथी, ज्ञाननो अपळाप करवाथी, ज्ञाननो अन्तराय-विन्न	
		ननो मद्वेष करवाथी, ज्ञाननी अत्यन्त आग्रातना करवाथी, ज्ञानना विसंवादन योगथी अने ज्ञानावरणीयकार्मणग्रारीरप्रयो- 🕵	
	🖌 गनामकर्मना	उदयथी झानावरणीयकार्मणञ्चरीर पयोगबन्ध थाय छे. [प्र०] हे भगवन् ! दर्ञ्चनावरणीयकार्मणञ्चरीरप्रयोगबन्ध कया 🧨	
	🕺 कर्मना उदयर्थ	थी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! दर्शननी मत्यनीकताथी-इत्यादि जेम ज्ञानावरणीयना कारणो कह्या छे तेम दर्शनावर-	
	र्भना उदयर्थ जीय माटे जा रीरप्रयोगनाम किया कर्मनाउ	नाणवां; परन्तु (ज्ञानावरणीयस्थाने) 'दर्श्वनावरणीय' कहेवुं, यावद् दर्शन विसंवादनयोगथी, तथा दर्शनावरणीयकार्मणज्ञ-	
	🖌 रीरप्रयोगनाम		
	ी कया कर्मनाड	मकर्मना उदयथी दर्श्वनावरणीयकार्मणश्वरीरपयोगवन्ध थाय छे. [प्र०] हे भगवन ! सातावेदनीयकार्मणश्वरीरप्रयोगवन्ध उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! माणीओ उपर अनुकम्पा करवाथी, भूतो उपर अनुकंपा करवाथी-इत्यादि जेम	
	61		

प्रज्ञप्तिः	सप्तम शतकना दुःषमा डरेशकमां कह्युं छे तेम कहेवुं, यावद् तेओने परिताप नहि उत्पन्न करवाथी, अने सातावेदनीयकार्मणशरीर- प्रयोगनामकर्मना उदयथी सातावेदनीयकार्मणशरीरप्रयोगवन्ध थाय छे. [प्र०] हे भगवन् ! आसातावेदनीयकार्मणशरीरप्रयोगवन्ध संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम बीजाने दुःख देवाथी, बीजाने ग्नोक उत्पन्न करवाथी-इत्यादि जेम सप्तम शतकना दुःषमा उदेशकमां कह्युं छे तेम यावद् बीजाने परिताप उपजाववाथी अने असातावेदनीयकार्मणश्ररीरमयोगनामकर्मना उदयथी असातावेदनीयकार्मणश्र- रीरप्रयोगवन्ध थाय छे. मोहणिज्जकम्मासरीरप्पयोग पुच्छा, गोयमा ! तिव्वकोहयाए तिव्वमाणयाए तिव्वमायाए तिव्वल्लोभाए तिव्वदंसणमोहणिज्जयाए तिव्वचरित्तमोहणिज्जयाए मोहणिज्जकम्मासरीरजावपयोगवंधे नेरइयाउयकम्मास- रीरप्ययोगवंधे णं भंते ! पुच्छा,गोयमा ! महारंभपाए महापरिग्गहयाए कुणिमाहारेणं पंचिंदियवहेणं नेरइयाउयक- म्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं नेरइयाउयकम्मासरीरजाव पयोगवंधे तिरिक्खजोणीयाउयकम्मासरीर- पत्रओगपुच्छा, गोयामा ! महारंभपाए अल्याउयकम्मासरीरजाव पयोगवंधे तिरिक्खजोणीयाउयकम्मासरीर- पत्रओगपुच्छा, गोयामा!माहस्त्रियाए नियडिछिधाए अलियवयणणं कूडतुलकूडमाणेणं तिरिक्खजोणियकम्मासरीर- पत्रओगपुच्छा, गोयामा! माहस्तियाए नियडिछिधाए अलियवयणणं कूडतुलकूडमाणेणं तिरिक्खजोणियकम्मासरी- जावप्पयोगावंधे मणुस्सआउयकम्मासरीरपुच्छा, गोयमा ! पगइभइयाए, पगइविणीययाए, साणुकोसणयाए,अम चछरियाए मणुस्साउयकम्मा जावपयोगवंधे देवाउयकम्मासरीरपुच्छा, गोयमा ! सरागसंजमेणं संजनवाकोमंग्रं कामास्त्रराए देवाउयकम्मासरीर जावपयोगवंधे सुभनामकम्मासरीरपुच्छा, गोयमा ! का-	%
	भू बालतवाकम्मण अक्तामानज्वराउ द्याउवयाग्मासरार जाववर्षियव ति छुवारियाया सराराउ हुन्। यउज्जुययाए भावुज्जुययाए भासुज्जुययाए अविसंवादणजोगेणं सुभनामकम्मासरीरजावप्पयोगबंधे।	

For Private and Personal Use Only

च्याख्या प्रज्ञप्तिः ॥७२०॥	 [प०] हे भगवन्! तैजसज्ञरीरप्रयोगवन्धनुं अन्तर काल्ठथी क्यां सुधी होय? [उ०] हे गौतम! अनादि अपर्यवसित अने अनादि सपर्यवसित ए बन्ने प्रकारना तैजसज्ञरीरमयोगवन्धनुं अन्तर नथी. [प्र०] हे भगवन्! ए तैजसज्ञरीरना देजवन्धक अने अबन्धक जीवोमां कया जीवो कया जीवोथी यावद् विशेषाधिक छे? [उ०] हे गौतम! तैजसज्ञरीरना अवन्धक जीवो सौथो थोडा छे, तेथी देजवन्धक जीवो अनन्तगुण छे. ॥ ३४९ ॥ कम्मासरीरपयोगबंघे णं भंते ! कतिबिहे पण्णत्ते ?, गोयमा ! अट्टविहे पण्णत्ते, तंजहा-नाणावरणिज्जकम्मान सरीरपयोगबंघे जा भंते ! कतिबिहे पण्णत्ते ?, गोयमा ! अट्टविहे पण्णत्ते, तंजहा-नाणावरणिज्जकम्मान सरीरपयोगबंघे जा भंते ! कतिबिहे पण्णत्ते ?, गोयमा ! अट्टविहे पण्णत्ते, तंजहा-नाणावरणिज्जकम्मान सरीरपयोगबंघे जा भंते ! कतिबिहे पण्णत्ते ?, गोयमा ! अट्टविहे पण्णत्ते, तंजहा-नाणावरणिज्जकम्मान सरीरप्पयोगबंघे जा भंते ! कतिबिहे पण्णत्ते ?, गोयमा ! अट्टविहे पण्णत्ते, तंजहा-नाणावरणिज्जकम्मान सरीरप्पयोगबंघे जा भंते ! करिया कम्मासरीरप्पयोगबंघे । णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंघे जं भंते ! करस 	र्भ ८ शतके उद्देशः ९ १ ॥७२०॥
	🔏 याए, एवं जहा णाणावरणिज्ञं नवरं दंसणनाम घेत्तव्वं जाव दंसणविसंवादणाजोगेणं दरिसणावरणिज्ञकम्मास-	e e e e e e e e e e e e e e e e e e e

≈याख्या- प्रहाप्तिः ॥७२१॥	म्मासरीरपुच्छा, गोयमा! जातिमदेणं कुलमदेणं बलमदेणं जाव इस्सरियमदेणं णीयागोधकम्मासरीरजावपयोग- बंघे। अंतराइयकम्मासरीरपुच्छा,गोयमा! दाणंतराएणं लाभंतराएणं भोगंतराएणं उव मोगंतराएणं बीरियंतराएणं अंतराइयकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं अंताइयकम्मासरीरप्पयोगबंधे ॥ [प्र0] अशुभनामकार्मणन्नरीरप्रयोगनन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कायनी वक्रताथी, भावनी वक्रताथी, भाषानी बक्रताथी, अने योगना विसंवादनपणायी-भिन्नताथी अशुभनामकार्मणन्नरीरमयोगनामकर्मना उदयथी यावत् मयोगवन्ध थाय छे. [प्र0] उच गोत्रकार्मणन्नरीरमयोगवन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कायनी वक्रताथी, भावनी वक्रताथी, भाषानी बक्रताथी, अने योगना विसंवादनपणायी-भिन्नताथी अशुभनामकार्मणन्नरीरमयोगनामकर्मना उदयथी यावत् मयोगवन्ध थाय छे. [प्र0] उच गोत्रकार्मणन्नरीरमयोगवन्ध संबन्धे प्रश्न [उ०] हे गौतम ! जातिमद न करवाथी, कुल्पद न करवाथी बलमद न करवाथी, रूपमद न करवाथी, तपमद न करवाथी, श्रुत्मद न करवाथी, लामिद न करवाथी अने ऐत्वर्यमद न करवाथी, तथा उच्चगोत्रकार्मणन्नरीर- प्रयोगनाकर्मना उदयथी उच्चगोत्रकार्मणन्नरीरप्रयोगबन्ध थाय छे. [प्र0] नीचगोत्रकार्मणन्नरीरप्रयोगनन्ध संवन्त्रे प्रश्न. [उ०] हे गौ- तम ! जातिमद करवाथी, कुल्पद करवाथी, बल्पद करवाथी, यावद् ऐत्वर्थपद करवाथी तथा नीचगोत्रकार्मणन्नरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी नीचगोत्रकार्मणन्नरीरप्रयोगबन्ध थाय छे. [प्र0] अंतरायकार्मणन्नरीरप्रयोगवन्ध संवन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौ- तम ! जातिमद करवाथी, छान्मरायकरवाथी, बल्पद करवाथी, यावद् ऐत्वर्थपद करवाथी तथा नीचगोत्रकार्मणन्नरीरप्रयोगनामकर्मना अन्तराय करवाथी, लाभनो अम्तरायकरवाधी, भोगनोअन्तराय करवाथी, उपभोगनो अन्तराय करवाथी अने वीर्यनो अन्तराय कर-	to the set to the set to the set	८ चतके उद्देञ्चः ९ ॥७२१॥
5 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	उद्यथा भाषगात्रकामणगरारायपाग्यस्य याप छ. [मण्] जतरायकामणगरारारायपाग्यस्य समय मता. [३७] इ गातम र दागमा अन्तराय करवाथी, ळाभनो अम्तरायकरवाथी, भोगनोअम्तराय करवाथी, उपभोगमो अम्तराय करवाथी अमे वीर्थनो अन्तराय कर- वाथी तथा अम्तरायकार्मणज्ञरीरपयोगनामकर्मना उदयथी अन्तरायकार्मणग्नरीरप्रयोगषम्ध याय छे.		•

म्याख्या प्रज्ञप्तिः ॥७२२॥	णाणावरणिज्ञकम्मासरीरप्पयोगवंधे णं भंते! किं देसबंधे सव्ववंधे ?, गोयमा! देसबंघे, णो सव्ववंधे, एवं जाव अंतराइयकम्मा०। णाणावरणिज्ञकम्मासरीरप्पयोगवंधे णं भंते! कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा ! णाणा० दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-अणाइए सपज्जवसिए अणाइए अपज्जवसिए वा, एवं जहा तेयगस्स संचिट्ठणा तहेव, एवं जाव अंतराइयकम्मस्स।णाणावरणिज्ञकम्मासरीरप्पयोगवंधंतरे णं भंते! कालओ केवचिरं होइ ?, गोयमा ! अणाइयस्स एवं जहा तेयगसरीरस्स अंतर तहेव, एवं जाव अंतराइयस्स । एएसि णं भंते ! जीवाणं नाणावर- णिज्रस्स कम्मस्स देसबंधगाणं अबंधगाण य कयरे २ जाव अंतराइयस्स । एएसि णं भंते ! जीवाणं नाणावर- णिज्रस्स कम्मस्स देसबंधगाणं अबंधगाण य कयरे २ जाव अप्पाबहुगं जहा तेयगस्स, एवं आउयवज्ञं जाव अंतराइयस्स । आउयस्स पुच्छा, गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आउयस्स कम्मस्स देसबंधगा, अबंधगा संखेज्जगुणा ५ (सूत्रं ३५०॥) [म०] हे भगवन ! ज्ञानावरणीयकार्मणग्नरीरप्रयोगवन्ध शुं देशवन्ध छे के सर्ववन्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! देशवन्ध छे, पण सर्ववन्ध नथी. ए प्रमाणे यावद् अन्तरायकार्मणग्नरीरप्रयोगवन्ध शुं देशवन्ध छे के सर्ववन्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! देशवन्ध छे, पण सर्ववन्ध नथी. ए प्रमाणे यावद् अन्तरायकार्मणग्वरीरप्रयोगवन्ध सुधी जाणवुं [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकार्मणग्नरीरप्रयोगवन्ध काल्यी क्यां सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! ज्ञानावरणीयकार्मणग्नरीरप्रयोगवन्ध वे प्रकारनो कहा छे; ते आ प्रमाणे-अनादि सप- र्थवसित (सान्त) अने अनादि अपर्यवसित (अनन्त). ए प्रमाणे यावत् जेम तैजस न्नरीरानो स्थितिकाल कहो छे तेम अहीं पण कहे- वो, ए प्रमाणे यावद् अन्तराय कर्मनो स्थितिकाल जाणवो. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानवरणीयकार्धणन्नरीरपयोगवन्ध व्रन्तर का	29 4 20 4 20 4 20 4 20 4 20 4 20 4 20 4	८ शतके उद्देशः ९ ॥७२२॥
6 4 3 C 4	वो, ए प्रमाणे यावद् अन्तराय कर्मनो स्थितिकाल जाणवो. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकार्भण शरीरमयोगवन्धनुं अन्तर का- छथी क्यां सुधी होय १ [उ०] हे गौतम ! अनादि अनंत अने अनादि सांत छे. जे ममाणे तैजसशरीरमयोगवन्धनुं अन्तर कहं	* 30 21 -	

स्याख्या- प्रवाख्या- प्रवास: प्रवि कर्मना देशवन्यक अने अवन्यक जीवोमां कया जीवो कया जीवोधी यावद विशेषाधिक छे? (उ०) जेम तैजस शरीरत आत्पन- प्रवि कर्मना देशवन्यक अने अवन्यक जीवोमां कया जीवो कया जीवोधी यावद विशेषाधिक छे? (उ०) जेम तैजस शरीरत आत्पन- प्रवि कर्मना देशवन्यक अने अवन्यक जीवोमां कया जीवो कया जीवोधी यावद विशेषाधिक छे? (उ०) जेम तैजस शरीरत अन्यप्र इत्व कर्षु (स. ७३.) तेम अहीं पण जाणवुं. ए प्रवाणे आयुषकर्म शिवाय यावत अन्तराय कर्म सुत्री जाणवुं. [म०] आयुषकर्म संव- रूपे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! आयुषकर्मना देशवन्यक जीवो सौयी योडा छे, अने तेनाथी अवंधक जीवो संख्यातगण छे. ॥ ३६० ॥ जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरस्स सव्वबंधे से णं भंते ! वेउव्वियसरीरस किं बंघए अबंघए ! गोयमा ! नो बंघए, आवंघए, आहारगसरीरस्स सिं बंघए अवंघए?, गोयमा ! नो बंघए, अवंघए, तेयासरीरस्स किं बंघए अवंघए ?, गोयमा ! बंघए, जो अवंघए, जह वंघए किं देसबंघए सव्ववंघए?, गोयमा ! देसबंघए, तो सद्ववद्वंघए? कम्मासरीरस्स किं वंघए अवंघए?, जहेव तेयगस्स जाव देसबंघए, नो सव्ववंघए॥ जस्स णं भंते ! ओरालिय- सरीरस्स देसबंघे से णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स किं बंघए अवंघए?, गोयमा ! नो बंघए, आवंघए, एव जहेव बंघए से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं वंघए अवंघए?, गोयमा! नो बंघए, आहारगसरीरस्स प्रव क्रेव, तथगस्स कम्मगस्स य जहेव ओरालिएणं समं भाणियव्वं जाव त्रम्मगस्स णं । जस्स णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स किं वंघए संघण्ड से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं वंघए अवंघए?, गोयमा! नो बंघए, आहारगसरीरस्स एवं चेव, तथगस्स कम्मगस्स य जहेव ओरालिएणं समं भाणियव्वं जाव देसबंघए नो सव्ववंघए ! [म०] हे:मगवन ! जे जीवने औरालियतरीरने सर्ववन्य छे ते जीन श्र वैक्रियशरीरचे वन्यक छे के अयन्यक छे हे अवन्यक छे ? कम ! वे जम्यक नयी; पण अवन्यक छे. [म०] औदारिकशरीरनो सर्ववन्यक श्रं आद्धारक्रशरीरनो वन्यक छे के अवन्यक छे हे ?	ę
---	---

प्रज्ञप्तिः ॥७२४॥	****	[उ०] हे गौतम ! वन्यक नथी पण अवन्यक छे. [प्र०] तैजसग्नरीरनो बन्धक छे के अवन्धक छे? [उ०] हे गौतम? ते तैजसग्न रीरनो बन्धक छे पण अवन्धक नथी. [प्र०] हे भगवन् जो ते (तैजस श्वरीरनो) बन्धक छे तो शुं देशबन्धक छे के सर्ववन्धक छे? [उ०] हे गौतम ! ते देशबन्धक छे, पण सर्वबन्धक नथी. [प्र०] कार्मणग्नरीरनो बंधक छे के अबंधक छे? [उ०] हे गौतम ! तैजस श्वरीरनी पेठे यवत् कार्मणश्वरीरनो देशबन्धक छे पण सर्वबन्धक नथी. [प्र०] कार्मणग्नरीरनो बंधक छे के अबंधक छे? [उ०] हे गौतम ! तैजस श्वरीरनी पेठे यवत् कार्मणश्वरीरनो देशबन्धक छे पण सर्वबन्धक नथी. [प्र०] हे भगवन् ! जेने औदारिकशरीरनो देशबन्ध छे ते जीव शुं वैक्रियशरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे? [उ०] हे गौतम ! बन्धक नथी, पण अवन्धक छे. ए प्रमाणे जेम सर्वचन्धना प्रसंगे कशुं तेम अहीं देशबन्धना प्रसंगे पण यावत् कार्मण श्वरीर सुधो कहेवुं. [प्र०] हे भगवन् जे जीवने वैक्रियशरीरनो सर्वचन्ध छे ते जीव शुं जौदारिकशरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे? [उ०] हे गौतम ! बन्धक नथी, पण अवन्धक छे. ए प्रमाणे जेम सर्वचन्ध छे ते जीव शुं जौदारिकशरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे? [उ०] हे गौतम ! बन्धक नथी एण अबन्धक छे. ए प्रमाणे जाहारक- माटे पण जाणवुं तैजस अने कार्मण श्वरीरने जेम औदारिक शरीरनी साथे कह्युं तिम वैक्रियशरीरनी साथे पण कहेवुं, यावत् देशबन्ध माटे पण जाणवुं तैजस अने कार्मण श्वरीरने जेम औदारिक शरीरनी साथे कह्युं तेम वैक्रियशरीरनी साथे पण कहेवुं, यावत् देशबन्ध माटे पण जाणवुं तैजस अने कार्मण श्वरीरने जेम औदारिक शरीरनी साथे कह्युं तेम वैक्रियशरीरनी साथे पण कहेवुं, यावत् देशब- न्धक छे पण सर्वबन्धक नथी. जस्स णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स देसबंधे से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स कि बंधए अबंधए ?, गोयमा ! नो बंधए अबंधए, एवं जहा सञ्चबंधेणे भणियं तहेव देसबंधेणवि भणियं तहेव भाणियव्वं जाव कम्मगरस। जस्स ण भंते! आहारगसरीररस्स स्ववर्ष घे से णं भंते! ओरालियसरीरस्स कि बंधए ?, गोयमा! नो बंधए, अबंधए,	at the set of the	८ शतके	
	Store of the	बंधए अबंधए, एवं जहां सञ्वबंधेणं भणियं तहेव देसबंधेणवि भणियं तहेव भाणियव्वं जाव कम्मगस्स। जस्स णं भंते! आहारगसरीरस्स सव्वबंधे से णं भंते! ओरालियसरीरस्स किं बंधए अबंधए ?, गोयमा! नो बंधए, अबंधए, एवं वेडव्वियस्सवि, तेयाकम्माणं जहेव ओरालिएणं समं भणियं तहेव भाणियव्वं। जस्स णं भंते! आहारगस-	x 96 4 36		
		रीरस्स देसबंघे से णं भंते ! ओरालियसरीर॰ एवं जहां आहारगसरीरस्स सब्वबंघेणं भणियं तहा देसबंघेणवि	3		

	ू माणियव्यं जाव कम्मगरस । जस्स णं भंते ! तेयासरीरस्स देमबंधे से णं भंते ! ओरालियमरीरस्स किं बंधए	P
ध्यांख्या-	अबंघए ?, गोयमा ! बंघए वा अबंघइ वा, जह बंघए किं देसबंघए संटवबंघए ?, गोयमा ! देसबंघए वा सटव-	🖉 ८ न्नतके
प्रज्ञप्तिः	र्भ बंधए वा, वेउव्वियसरीस्स किं बंधए अबंधए ? एवं चेव, एवं आहारगसरीरस्सवि, कम्मगसरीरस्स किं बंधए	र्द्ध उद्देशः ९
ાહર ધા		ર્દ્ધ ાહરપા
	🕉 जस्स णं भंते ! कम्मगसरीरस्स देसबंधे से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स जहा तेयगस्स वत्तव्वया भणिया तहा	2
	🕺 कम्मगस्सवि भाणिगव्वा जाव तेयामरीरस्म जाव देसवंधए नो सब्वबंधए ॥ (सूत्रं ३५१) ॥	5
	(भ) हे भगवन् ! जे जीवने वैकिपशरीग्नो देशवन्ध छे ते जीव शुं औदारिक शरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! बन्धक नथी, पण अबन्धक छे. ए प्रमाणे जेम (वैकिपशरीरना) सर्वबंधना प्रसंगे कहुं तेम अहीं देशबन्धना प्रसंग पावत् कार्मणशरीर सुधी कहेतुं [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने आहारकशरीरनों सर्वबन्ध होय ते जीव शुं औदारिकशरीरनों बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! बन्धक नथी. पण अबन्धक छे. ए प्रमाणे वैकिपशरीरने पण जाणवुं अने जैम तैजस अने कार्भण शरीरने औदारिक शरीर साथे कहुं तेम (आहारक शरीर साथे पण) कहेतुं. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने आहारक शरीरनों देशबन्ध छे ते जीव शुं औदारिक शरीर साथे कहुं तेम (आहारक शरीर साथे पण) कहेतुं. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने आहारक शरीरनो कहुं छे तेम देशबन्धनी साथे पण पावत् कार्मणशरीर सुवी कहेतुं . [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने तैजसशरीरनों देशबन्ध छे ते कार्य औदारिक शरीरनों बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम आहारक शरीरनों देशबन्ध छे ते	¢ I
	🦂 हे गौतम विन्धक नथी, पण अबन्धक छे. ए प्रमाणे जेम (वैक्रियशरीरना) सर्वबंधना प्रसंगे कहुं तेम अहीं देशबन्धना प्रसंगे पण	R
	🕺 यावत् कार्मणश्चरीर सुधी कहेवुं [प्र॰] हे भगवन् ! जे जीवने आहारकशरीरनो सर्वबन्ध होय ते जीव शुं औदारिकशरीरनो बन्धक	S.
	🖇 छे के अबन्धक छे? [उ०] हे गौतम ! बन्धक नथी. पण अबन्धक छे. ए प्रमाणे बैक्रियशरीरने पण जाणवुं. अने जेम तैजस अने	
	😤 कार्मण शरीरने औदारिक शरीर साथे कढ़ुं तेम (आहारक शरीर साथे पण) कहेतुं. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने आहारक शरीरनो	×
	🔰 देशबन्ध छे ते जीव हुं औदारिक शरीरनो बन्यक छे के अबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम आहारक शरीरना सर्वबन्ध साथे	ХI
	🖇 कर्षु छे तेम देशवन्धनी साथे पण यावत् कार्मणशरीर सुधी कहेतुं . [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने तैजसशरीरनो देशबन्ध छे ते	S
	र्दू जीव शुं औदारिक शरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! बन्धक पण छे. अने अबन्धक पण छे. [प०] जो ते	¢.

र्भ एएसि णं भंते ! सब्वजीवाणं ओरालियवेउव्वियआहारगतेयाकम्मासरीरगाणं देसबंधगाणं सब्वबंधगाणं अबंधगाण य कयरे २ जाव विसेसाहिगा वा ?, गोयमा ! सब्बत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सब्वबंधगा १ तस्स चेव देसबंधगा संखेज्जगुणा २ वेउव्वियसरीरस्स सब्वबंधगा असंखेज्जगुणा ३ तस्स चेव देसबंधगा असं- खेज्जगुणा ४ तेयाकम्मगाणं दुण्हवि तुल्ला अबंधगा अणंतगुणा ५ ओरालियसरीरस्स सब्वबंधगा अणंतगुणा ६ तस्स चेव अबंधगा विसेसाहिया ७ तस्स चेव देसबंधगा असंखेज्जगुणा ८ तेयाकम्मगाणं देसबंधगा विसेसा- हिया ९ वेउव्वियसरीरस्स अबंधगा विसेसाहिया १० आहारगसरीरस्स अबंधगा विसेसाहिया ११। सेवं भंते ! २ ॥ सूत्रं (३५२) अट्टमसयस्स नवमो उद्देसओ संमन्तो ॥-८-९-॥	€याख्या प्रज्ञिः ॥७२६॥	एएसि णं भंते ! सब्वजीवाणं ओरालियवेउब्वियआहारगतेयाकम्मासरीरगाणं देसबंधगाणं सब्वबंधग अबंधगाण य कपरे २ जाव विसेसाहिया वा ?, गोयमा ! सब्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सब्वबंधगा तस्स चेव देसबंधगा संखेज्रगुणा २ वेउब्वियसरीरस्स सब्वबंधगा असंखेज्रगुणा ३ तस्स चेव देसबंधगा अ लेज्जगुणा ४ तैयाकम्मगाणं दुण्हवि तुल्ला अबंधगा अणंतगुणा ५ ओरालियसरीरस्स सब्वबंधगा अणंतगुणा र तस्स चेव अबंधगा विसेसाहिया ७ तस्स चेव देसबंधगा असंखेज्जगुणा ८ तैयाकम्मगाणं देसबंधगा विसे	र २२ ८ शतवे 1. ७२ उद्देशः क	९
--	------------------------------	--	-----------------------------------	---

€याख्या-

प्रक्षप्तिः

ાહરણા

A A A A A A A A A A A A A A A A A A A	[प्र0] हे भगवन ! औरारिक, तैकिय आहारक, तैजम अने कर्मणशरीरना देशबंन्धक, सर्वबन्धक अने अवन्धक एवा सर्वजीवोमां कया जीवो कया जीवोथी यावद विशेषाधिक छे [उ०] हे गौतम ! १ सौथी थोडा जीवो आहारक ग्ररारना सर्वबन्धक छे, २ तेथी तेना देशबन्धक संख्यातगुणा छे, ३ तैथी तैकियशरीरना सर्वबन्धक असंख्यातगुणा छे, ४ तेथी तेना देशबन्धक जीवो असंख्यात एणा छे, ५०सेथी तैजन अने कार्मण शरीरना अवन्यक जीवो अतंतगुण अने परस्पर तुख्य छे. ६ तेथी औदारिक शरीरना सर्ववन्धक जीतो अर्गत गुण छे, ७ तेथी तेना अवन्यक जीवो विशेषाधिक छे, ८ तेथी तेना देशबन्धक जीवो आसंख्यात जीतो अर्गत गुण छे, ७ तेथी तेना अवन्यक जीवो विशेषाधिक छे, ८ तेथी तेना देशबन्धक जीवो असंख्यात जीतो अर्गत गुण छे, ७ तेथी तेना अवन्यक जीवो विशेषाधिक छे, ८ तेथी तेना देशबन्धक जीवो असंख्येयगुणा छे, ९ तेथी तैजस अने कॉर्मण शरीरना देशबन्धक जीवो विशेषाधिक छे, १० तेथी तैकिय शरीरना अवन्धक जीवो विशेषाधिक छे, ११ तेथी तैजस अने कॉर्मण शरीराना देशबन्धक जीवो विशेषाधिक छे, १० तेथी तैकिय शरीरना अवन्धक जीवो विशेषाधिक छे, ११ तेथी तैजस अने कॉर्मण शरीरना देशबन्धक जीवो विशेषाधिक छे. १० तेथी तैकिय शरीरना अवन्धक जीवो विशेषाधिक छे, ११ तेथी आहा- रक शरीरना अबन्धक जीवो विशेषाधिक छे. हे भगवन् ! ते एम ज छे, हे भगवन् ! ते एम ज छे (एम कही भगवान् गौतम ! यावद् विहरे छे.) ॥ ३५२ ॥ भगवन् सुधर्मस्वामी प्रणीत श्रीमद्द भगवतीद्वना ८ शतकमां नवमा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.	よいちまいのようちょうちょうちょういろうちょうでん	८ शतवे उद्देशः १ ॥७२७।	o,
---------------------------------------	---	---------------------------	------------------------------	----

≋याख्या प्रज्ञप्तिः ॥७२८॥	उद्देशक १०. रायगिहे नगरे जाव एवं वयासी-अन्नउत्थिया णं मंते ! एवमाइक्खंति जाव एवं परूवेंति-एवं खलु सीलं सेयं १ खुयं सेयं २ खुयं सेयं ३ सीलं सेयं ४, से कहमेयं मंते ! एवं ?, गोयमा ! जन्नं ते अन्नउत्थिया एवमाइ- क्खंति जाव जे ते एवमाहंसु निच्छा ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेंमि, एवं खलु मए चत्तारि पुरिसजाया पण्णता तंजहा-सीलसंपन्ने णामं एगे णो सुयसंपन्ने १ सुयसंपन्ने नामं एगे नो सील- संपन्ने २ एगे सीलसंपन्नेबि सुयसंपन्नेबि ३ एगे णो सीलसंपन्ने नो सुयसंपन्ने १ सुयसंपन्ने नामं एगे नो सील- संपन्ने २ एगे सीलसंपन्नेबि सुयसंपन्नेबि ३ एगे णो सीलसंपन्ने नो सुयसंपन्ने ४, तत्य णं जे से पढमे पुरिसजाए से णं पुरिसे सीलवं अखुयवं, उवरए अविन्नायधम्मे, एस णं गोयमा ! मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते, तत्थ णं जे से दोचे पुरिसजाए से णं पुरिसं असीलवं सुयवं, अणुवरए विन्नायधम्मे, एस णं गोयमा ! मए पुरिसे देसवि- राहए पण्णत्ते, तत्थ णं जे से तचे पुरिसजाए से णं पुरिसे सीलवं सुयवं, उवरए विन्नायधम्मे. एस णं गोयमा ! मए पुरिसे सब्वाराहए पन्नत्ते, तत्थ णं जे से चउत्थे पुरिसजाए से णं पुरिसे असीलवं अखुतवं, अणुवरए अवि- णगायधम्मे, एस णं गोयमा ! मए पुरिसे सन्वविराहए पन्नत्ते ॥ (सूत्रं ३५३) ॥ [म॰] राजगृह नगरमां यावत् (गौतम) ए प्रमाणे बोल्या के हे प्रगवन् ! अन्यतीर्थिको ए प्रमाणे कहे छे, यावद् ए प्रमाणे प्रस्ते छे-'ए रीते खरेखर १ झील ज श्रेय छे, २ श्रुत ज श्रेय छे, ३ (ज्ञीलनिरपेक्ष ज) श्रुत श्रेय छे, अथवा (श्रुतनिरपेक्ष ज) ज्ञील श्रे, ती हे मगवन् ! ए प्रमाणे केम होय जने ? [४०] हे गौतम् ! ते अन्यतीर्थिको जे ए प्रमाणे कहे छे, यावत तंत्रीए	「き」」	श्वतके शः१० २८॥
	हील श्रेय छ, तो हे भगवन ! ए प्रमाणे केम होय शके ? [डं गौतप्र ! ते अन्यतीर्थिको जे ए भमाणे कहे छे, यावत तेओए	$\mathbf{\hat{k}}$	

€याख्या- प्रज्ञप्तिः	्रे जिए प्रमाणे कर्षुं छे ते तेओए मिथ्या कर्गुं छे. हे गौतम ¹ हुं वळी आ प्रमाणे कर्टुं छुं, यावत् प्ररूपुं छुं, ए प्रमाणे में चार प्रका- रना पुरुषो कह्या छे. ते आ प्रमाणे-१ एक झीलसंपन्न छे पण श्रुतसंपन्न नथी, २ एक श्रुतसंपन्न छे पण झीलसंपन्न नथी, ३ एक श्रीलसंपन्न छे अने श्रुतसंपन्न पण छे, ४ एक झीलसंपन्न नथी तेम श्रुतसंपन्न पण नथी. तेमां जे प्रथम प्रकारनो पुरुष छे ते झील-	र्भ ४ ४ उद्देशः१०
ાહર લા	🗶 तान ने गण अन्तरन तथी ने जगरांत (गापादिकथी निवत्त) छे. पण धर्मने जाणतो नथी हे गौतम ! ते रुठवते में देशाराधक कही	1102911

	😤 उकोसिया णाणाराहणा तस्स उकोसिया चरित्ताराहणा जस्तुकोसिया चरित्ताराहणा तस्तुकोसिया णाणाराह-	
ज्या रूया	🖌 णा, जहा उक्कोसिया णाणाराहणा च दंसणाराहणा च भणिया तहा उक्कोसिया नाणाराहणा य चरित्ताराहणा	८ शतके
प्रज्ञप्तिः	🔇 य भाणियव्वा।	उद्देशः१०
listoll	🎽 🛛 [प्र॰] हे भगवन् ! आराधना केटला प्रकारनी कही छे ? [उ॰] हे गौतम ! त्रण प्रकारनी आराधना कही छे; ते आ प्रमाणे– 🕻	ાહરના
	ूर्टे [प्र॰] हे भगवन् ! आराधना केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारनी आराधना कही छे; ते आ प्रमाणे– १ ज्ञानाराधना, २ दर्शनाराधना अने ३ चारित्राराधना. [प्र॰] इ भगवन् ! ज्ञानाराधना केटला प्रकारनी कही छे ? [उ॰] हे	
	🎇 गौतम ! त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे-उत्कृष्ट, मध्यम अने जघन्य. [प्र०] हे भगवन् ! दर्शनाराधना केटला प्रकारनी कही	
	🗚 छे १ [उ॰] ए प्रमाणे त्रण प्रकारनी कही छे. ए रीत चारित्राराधना पण त्रण प्रकारनी जाणवी. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने 🖈	2
	🕺 उत्कृष्ट ज्ञानाराधना होय तेने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय ? जे जीवने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय ते जीवने उत्कृष्ट ज्ञानाराधना होय ?	
	🕱 [उ०] हे गौतम ! जे जीवने उत्कृष्ट ज्ञानाराधना होय तेने उत्कृष्ट अने मध्यम दर्शनाराधना होय, वळी जेने उत्कृष्ट दर्शनाराधना 🥻	
	👙 होय, तेने उत्कृष्ट, जघन्य अने मध्यम ज्ञानाराधना होय. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने ज्ञाननी उत्कृष्ट आराधना होय तेने चा	
	रित्रनी उत्कृष्ट आराधना होय ? जे जीवने चारित्रनी उत्कृष्ट आराधना होय तेने ज्ञाननी उत्कृष्ट आरधना होय ? [उ०] जेम उत्कृष्ट	$\mathbf{\hat{b}}$
	🖇 ज्ञानाराधना अने दर्शनाराधनानो संबन्ध कह्यो तेम उत्कृष्ट ज्ञानाराधना अने उत्कृष्ट चारित्राराधनानो संबन्ध कहेवो.	
	के जस्स णं भंते ! उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्मुक्कोसिया चरित्ताराहणा जस्मुक्कोसिया चत्ताराहणा (तस्मुक्कोसिया दंसणाराहणा ?, गोयमा ! जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसा वा	
	🗘 तस्मुकोसिया दंसणाराहणा ?, गोयमा ! जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसा वा	
	ह तत्छक्यात्तवा वत्त्रणताहणा अन्यावणा अत्त उक्यात्ववा वस्त्रणाराहणा तत्त वार्ताराहणा उकाता वा	

इयाख्या- प्रज्ञ सिः ॥७३१॥ ००२१॥	भते ! दसणाराहण आरहिता एव चव, एव माज्झामय चारताराहणांप । जहांन्नयन्न भते ! नाणाराहणं आरा- हेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झंति जाव अतं करेंति?, गोयमा ! अत्थेगतिए तचेणं भवग्गहणेणं सिज् ^{झ इ} जाव	Je the the the	८ भतके उद्देशः१० ॥७३१॥
	उत्कुष्ट दर्शनाराधना होय ? [उ०] हे गौतम ! जेने उत्कुष्ट दर्शनाराधना होय तेने उत्कुष्ट. जघन्य अने मध्यम चारित्राराधना होय. तथा जेने उत्कुष्ट चारित्राराधना होय. तेने अवश्य उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय. [प्र०] हे भगवन् ! जीव उत्कृष्ट ज्ञानराधनाने आराधी केटला भव कर्या पछी सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो अन्त करे ? [उ०] हे गौतम ! केटलाक जीव तेज भवभां सिद्ध थाय,	19634-96-34-9	

च्याख्या प्रज्ञप्तिः १७७३२॥	पावत सर्व दुःखोनो नाश करे; केंटलाक जीवो वे भवमां सिद्ध थाय, यावत सर्वे दुःखीनों नाश करे; अने केंटलाक जीवो कल्पोपपन्न देवलोकोमां कल्पातीत देवलोकोमां उत्पन्न थाय. [प्र०] हे भगवन् ! जीव उत्क्रष्ट दर्शनाराधनाने आराधी केंटला भव कर्या पछी सिद्ध थाय ? [उ०] हे गौतम ! पूर्वनी पेठे जाणवुं. [प्र०] हे भगवन् ! उत्क्रष्ट चारित्राराधनाने आराधी केंटला भव कर्या पछी जीवो सिद्ध थाय ? [उ०] पूर्वनी पेठे जाणवुं, परन्तु केंटलाएक जीवो कल्पातन देवोमां उत्पन्न थाय. [प्र०] हे भगवन ! ज्ञाननी मध्यम धाय ? [उ०] पूर्वनी पेठे जाणवुं, परन्तु केंटलाएक जीवो कल्पातन देवोमां उत्पन्न थाय. [प्र०] हे भगवन ! ज्ञाननी मध्यम आरा- धनाने आराधी केंटला भव ग्रहण कर्या पछी जीव सिद्ध धाय, यावत सर्व दुःखोनो अन्त करे ?[उ०] हे गौतम ! केंटलाक जीवो के भव ग्रहण कर्या पछी सिद्ध थाय, यावत् सर्वदुःखोनो नाश करे, पण त्रीजा भवने अतिक्रमे नहीं. [प्र०] हे भगवन् ! जीव म ध्यम दर्शनाराधनाने आराधी केंटला भव ग्रहण कर्या पछी सिद्ध धाय ? [उ०] हे गौतम ! पूर्वनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे चारित्रनी	
	मध्यम आराधनाने माटे जाणवुं. ॥ ३५४ ॥ कतिबिहे णं भंते ! पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते ?, गोयमा ! पंचविहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, तंजहा-वन्नपरि- णामे १ गंधप० २ रसप० ३ फासप० ४ संठाणप० ५। वन्नपरिणामे णं कइविहे पण्णत्ते?, गोयमा ! पंचविहे प- ण्णत्ते, तंजहा-कालवन्नपरिणामे जाव सुक्तिल्लवन्नपरिणामे, एवं एएणं अभिलावेणं गंधपरिणामे दुविहे रसपणामे पंचविहे फासपरिणामे अट्ठविहे, संठाणप० भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?, गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा-परिमं- इलसंठाणपरिणामे जाव आययसंठाणपरिणामे ॥ (सूत्रं ३५५) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! जघन्य ज्ञानाराधनाने आराधी जीव केउला भव प्रहण कर्या पछी सिद्ध थाय, यावत् सर्वदुःखोनो अन्त	

प्रधाप्तः कि छ र [30] इ गातम ! पाच प्रकारना कह्या छ; ते आ प्रमाण, व्यवपारणाम, गन्धपारणाम, रसपारणाम, स्पर्शपारणाम 1103311 ते संस्थानपरिणाम, प्रि0] हे भगवन ! वर्णपरिणाम केटला प्रकारनी कह्यो छे ? [30] हे गौतम ! पांच प्रकारनी कह्यो छे. ते आ	शतके काः१० ७३३॥
---	-----------------------

म्याख्या प्रज्ञप्तिः ॥७३४॥	दरुवं १ पुच्छा, गोयमा! सिय दव्वं १ सिय दव्वदेसे २ अट्टवि भंगा भाणियट्या जाव सिय दव्वाइं च दव्वदेसा य ८। जहा चत्तारि भणिया एवं पंच छ सत्त जाव असंखेज्जा। अणंता भंते! पोग्गलस्थिकायपएसा किं दव्वं० ?, एवं चेव जाव सिय दव्वाइं च दब्वदेसा य ॥ (सूत्रं ३५६) ॥ [म०] हे भगवन् ! पुद्रलासिकायनो एक प्रदेश (परमाणु) ? शुं द्रव्य छे, २ द्रव्यदेश छे, ३ द्रव्यो छे, ४ द्रव्यदेशो छे, ५ अथवा द्रव्य अने द्रव्यदेश छे, ६ अथवा द्रव्य अने द्रव्यदेशो छे, ७ अथवा द्रव्यो अने द्रव्यदेश छे, २ द्रव्यदेश छे, ८ के द्रव्यो अने द्रव्यदेशो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते कथंचिद् द्रव्य छे, कथंचिद् द्रव्यदेश छे, ५ पा द्रव्यो नयी, द्रव्यदेशो नयी, द्रव्यदेश नयी, यावद् द्रव्यो अने द्रव्यदेशो नथी. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्रलासिकायना वे प्रदेशो शुं द्रव्य छे के द्रव्यदेशो छे ? इत्यादि पूर्वोक्त प्रक्ष. [उ०] हे गौतम ! कथंचित् द्रव्य छे, कथंचिद् द्रव्यदेश छे, २ कथंचित् द्रव्यदेशो नथी, द्रव्यदेशो नथी, द्रव्यदेशो नथी, प्रवद्यदेश नथी, यावद् द्रव्यो अने द्रव्यदेशो नथी. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्रलासिकायना वे प्रदेशो शुं द्रव्य छे के द्रव्यदेशो छे ? इत्यादि पूर्वोक्त प्रक्ष त्रव्य अने द्रव्यदेशे छे, पण द्रव्य अ त्रव्यदेशो नथी, बाकीना विकल्पोनो प्रतिषेध करवो. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्रलासिकायना त्रण प्रदेशो छे द्रव्य छे, प्रण्व द्व्यदेशो नथी, बाकीना विकल्पोनो प्रतिषेध करवो. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्रलासिकायना त्रण प्रदेशो छे द्रव्य छे, द्रव्यदेश छे ?-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! १ कथंचित् द्रव्य छे, २ कथंचित् द्रव्यदेश छे, ए प्रमाणे सात भांगाओ कहेवा, यावत कथंचित् द्रव्यो अने द्रव्यदेश छे, पण द्रव्यो अने द्रव्यदेशो नथी. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्रलासिका यना चार प्रदेशो छे द्रव्यो अने द्रव्यदेशो छे, जेम चार प्रदेशे कशा तेम पांच, छ, सात यावद् असंख्येय प्रदेशे याट भांगा कहेवा यावत् द्रव्यो अने द्रव्यदेशो छे, जेम चार प्रदेशे कशा तेम पांच, छ, सात यावद् असंख्येय प्रदेशे पा कहेवा.	र भतके उद्देशः १० अप्रे अतके अप्रे अतके ॥७३४॥
	भांगा कहेवा यावत द्रव्यो अने द्रव्यदेशो छे, जेम चार प्रदेशो कढा तेम पांच, छ, सात यावद् असंख्येय प्रदेशो पण कहेवा. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्रलास्तिकायना अनन्त प्रदेशो शुं द्रव्य छे ? इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्व प्रमाणेज जाणवुं, यावत कथंचित् द्रव्यो	K. K. K.

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥७३५॥	and a set of the set of the set of the set of the set	अने द्रव्यदेशो छे. ॥ ३५६ ॥ केवतिया णं भंते ! लोयागासपएसा पञ्चत्ता ?, गोयमा ! असंखेजा लोयागासपएसा पञ्चत्ता ॥ एगमेगस्स णं भंते ! जीवस्स केवइया जीवपएसा पण्णत्ता ?, गोयमा ! जावतिया लोगागासपएसा एगमेगस्स णं जीवस्स एवतिया जीवपएसा पण्णत्ता ॥ (सूत्रं ३५७) ॥ [प्र0] हे भगवन् ! लोकाशशना प्रदेशे केटला कढाा छे ? [उ0] हे गौतम ! असंख्य प्रदेशे कढाा छे. [प्र0] हे भगवन् ! एक एक जीवना केटला जीवप्रदेशे कढाा छे ? [उ0] हे गौतम ! असंख्य प्रदेशे कढाा छे. [प्र0] हे भगवन् ! एक एक जीवना केटला जीवप्रदेशे कढाा छे ? [उ0] हे गौतम ! असंख्य प्रदेशे कढाा छे. [प्र0] हे भगवन् ! एक एक जीवना केटला जीवप्रदेशे कढाा छे ? [उ0] हे गौतम ! जेटला लोकाशशना प्रदेशे कढाा छे तेटला एक एक जीवना प्रदेशे वढा छे. ॥ ३५७ ॥ कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?, गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तंजहा-नाणावर- णिज्जं जाव अंतराइयं, नेरइयाणं भंते ! कह कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?, गोयमा ! अट्ठ, एवं सव्वजीवाणं अट्ठ कम्मपगडीओ ठावेयव्वाओ जाव वेमाणियाणं । नाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतिया अविभागपछि- च्छेदा पण्णत्ता ?, गोयमा ! अणंता अविभागपरिच्छेदा पण्णत्ता, नेग्इयाणं भंते ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेया पण्णत्ता ?, गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता, एवं जहा णाणावरणिज्यस्त अविभा- जाव वेमाणियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता, एवं जहा णाणावरणिज्ञस्स अविभा- गपलिच्छेदा भणिया तहा अट्ठण्हवि कम्मपगडीणं भाणियव्वा जाव वेमाणियाणं, अंनराइयस्स । एगमेगस्स	LAS & S & S & S & S & S & S & S & S & S &	८ शतके उद्देशः१० ॥७३५॥	
-----------------------------------	---	--	---	------------------------------	--

ब्या ख्या	र णं भंते ! जीवस्स एगमेगे जीवपएसे णाणावरणिज्ञस्स कम्मस्स केवइएहिं अविभागपलिछेदेहिं आवेढिए परिवेढिए सिया १, गोयमा ! सिय आवेढियपरिवेढिए सिय नो आवेढियपरिवेढिए, जइ आवेढियपरिवेढिए	र ८ गतके
प्रज्ञातिः	िनियमा अंगतेहिं,	🖇 उद्देशः१०
ા૭રૂવા	👔 🔰 [म॰] हे भगवन् ! कर्मप्रकृतिओ केटली कही छे ? [उ॰] हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे. ते आ प्रमाणे—ज्ञानाव-	1193611
	रणीय, यावद् अन्तराय. [प्र०] इ भगवन् ! नैरयिकोने केंटली कर्मप्रकृतिओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही	8
	छे. ए अमाण सर्वजीक्षेने यावद् वैमानिकोन आठ कर्मप्रकृतिओ कहेवी. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकर्मना केटला अविभाग	ŧ¥.
	2 परिच्छेदो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! अनंत अविभागपरिच्छेदो कह्या छे. [प्र॰] हे भगवन् ! नैरयिकोने ज्ञानावरणीयकर्मना	2
	र्भ अविभागपरिच्छेदो कटला कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! अनन्त अविभागपरिच्छेदो कह्या छे. ए प्रमाणे सर्वजीवोने–जाणवुं; यावद्	
	िण गांधनार गरण्डरा फटल केला छे : [७०] इ गोतम ! अनन्त अविभागपरिच्छेदो कह्या छे. जेम ज्ञानावाणीय कर्मना अविभगपरिछेदो [प्र0] वैमानिको संबन्वे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! अनन्त अविभागपरिच्छेदो कह्या छे. जेम ज्ञानावाणीय कर्मना अविभगपरिछेदो	*
		Ď.
	कह्या तेम आठे कमंप्रकृतिना अविभागपरिछेदो अन्तरायकर्भ पर्यन्त यावद् वैमानिकोने कहेवा. [प्र॰] हे भगवन् ! एक एक जीवनो	<u>ዋ</u> ደ
	🕺 एक एक जीवपदेश ज्ञानावरणीय कर्मना केटला। अविभागपरिच्छेदो (अंशोथी) आवेष्टित–परिवेष्टित छे १ [उ०] हे गौतम ! कदा-	\mathbb{R}^{2}
	* चित् आवेधित-परिवेष्टित होय, अने कदाचित् आवेष्टित-परिवेष्टित न होय. जो आवेष्टित-परिवेष्टित होय तो ते अवस्य अनंत	2
	र्भ एक एक जीवमदेश ज्ञानावरणीय कर्मना केटला अविभागपरिच्छेदो (अंशोथी) आवेष्टित-परिवेष्टित छे ? [उ०] हे गौतम ! कदा- चित् आवेधित-परिवेष्टित होय, अने कदाचित् आवेष्टित-परिवेष्टित न होय. जो आवेष्टित-परिवेष्टित होय तो ते अवस्थ अनंत अविभागपरिच्छेदो वडे आवेष्टित-परिवेष्टित होय. अपिमामसम्ब फ्रां अंते ! नेरहमस्य एसमोगे जीवप्रयमे जाणावरणिजस्य कम्मस्य केवटपर्हि अविभागप-	X
	एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स एगमेगे जीवपएसे णाणावरणिज्ञस्स कम्मस्स केवइएहिं अविभागप-	₩ ₩

ण्याख्या- प्रइप्तिः ॥७३७॥	हिच्छेदेहिं आवेढिए परिवेढिते ?, गोयमा! नियमा अणंतेहिं, जहा नेरइयस्स एवं जाव वेमाणियस्स, नवरं मणू- सस्स जहा जीवस्स। एगमेगस्स णं भंते! जीवस्स एगमेगे जीवपएसे दरिसणावरणिज्ञस्स कम्मस्स केवतिएहिं एवं जहेव नाणावरणिज्ञस्स तहेव दंडगो भाणियव्वो जाव वेमाणियस्स, एवं जाव अंतराइयस्स भाणियव्वं, नवरं वेयणिज्ञस्स आउयस्स णामस्स गोयस्स एएसिं चउण्हवि कम्माणं मणूसस्स जहा नेरइयस्स तहा भाणि- यव्वं, सेसं तं चेव ॥ (सूत्रं ३५८)॥ जिव्] हे भगवन् ! एक एक नैरयिक जीवनो एक एक जीवप्रदेश ज्ञानावरणीय कर्मना केटला अविभागपरिच्छेदो वढे आवे-	ि ८ भतके उद्देशः१∙ ८ ॥७३ ण।
	र् षित-परिवेष्टित होय ? [उ०] हे गौतम ! अवश्य ते अनन्त अविभागपरिच्छेदो वडे आवेष्टित-परिवेष्टित होय. जेम नैरयिको माटे कह्युं तेम यावद् वैमानिकोने कहेबुं, परन्तु मनुष्यने जीवनी पेठे कहेवुं. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक जीवनो एक एक जीव दर्शनावरणीय कर्मना केटला अविभागपरिच्छेदो वडे आवेष्टित परिवेष्टित होय ? [उ०] जेम ज्ञानावरणीय कर्मना संबन्धे दंडक कह्यो तेम अहीं पण यावद् वैमानिकने कहेवो, यावत् अन्तरायकर्मपर्यन्त कहेवुं. पण वेदनीय, आयुष् , नाम अने गोत्र-ए चार कर्मो माटे जेम नैरयिकोने कहुं तेम मनुष्योने कहेवुं, बाकी बधुं पूर्व प्रमाणेज जाणवुं. ॥ ३५८ ॥ जस्स णं भंते ! नाणावरणिज्ञं तस्स दरिसणावरणिज्ञं जस्स दंसणावरणिज्ञं तस्स नाणावरणिज्ञं १, गोयमा !	A Co A Co A Co A Co A Co
	त्र जस्स णं नाणावरणिजं तस्स दंसणावरणिजं नियमा अत्थि, जस्स णं दरिसणावरणिजं तस्सवि नाणावरणिजं ति नियमा अत्थि। जस्स णं भंते!णाणावरणिजं तस्स वेयणिजं जस्स वेयणिजं तस्स णाणावरणिजं ?, गोयमा !	36-4-3K

च्याख्या प्रज्ञप्तिः ॥७३८॥	जस्स नाणावरणिजं तस्स वेयणिजं नियमा अत्थि, जस्स पुण वेयणिजं तस्स णाणावरणिज्जं सिय अत्थि सिय नत्थि। जस्स णं भंते ! नाणावरणिजं तस्स मोहणिजं जस्स मोहणिजं तस्स नाणावरणिजं ?, गोपमा ! जस्स नाणावरणिजं तस्स मोहणिजं सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण मोहणिजं तस्स नाणावरणिजं ?, गोपमा ! अत्थि। जस्स णं भंते ! णाणावरणिजं तस्स आउयं एवं जहा वेयणिज्जेण समं भणियं तहा आउएणवि समं भाणियव्वं, एवं नामेणवि, एवं गोण्णवि समं, अंतराइएण समं जहा दरिसणावरणिज्जेण समं तहेव नियमा पर भाणियव्वाणि ? ॥ [प्र०] हे भगवन ! जे जीवने ज्ञानावरणीय कर्म छे तेने शुं दर्शनावरणीय कर्म छे, जेने दर्शनावरणीय कर्म छे तेने शुं ज्ञाना- रपरं भाणियव्वाणि ? ॥ [प्र०] हे भगवन ! जे जीवने ज्ञानावरणीय कर्म छे तेने शुं दर्शनावरणीय कर्म छे, जेने दर्शनावरणीय कर्म छे तेने शुं ज्ञाना- वरणीय कर्म छे ? [उ०] हे गौतम ! जेने ज्ञानावरणीय छे तेने अवश्य दर्शनावरणीय होय छे, जेने दर्शनावरणीय छे तेने शुं ज्ञानावर- णीय होय छे ? [उ०] हे गौतम ! जेने ज्ञानावरणीय कर्म छे तेने अवश्य वेदनीय होय छे, जेने वेदनीय छे तेने ज्ञानावर- गीय होय छे ? [उ०] हे गौतम ! जेने ज्ञानावरणीय कर्म छे तेने अवश्य वेदनीय होय छे, जेने वेद्नीय छे तेने ज्ञानावरणीय कर्म कदाच होय अने कदाच न होय. [प्र०] हे भगवन ! जेने ज्ञानावरणीय कर्म कदाच होय अने कदाच न होय. पण जेने मोहनीय छे तेने अवश्य ज्ञानावरणीय कर्म होय छे. [प्र०] हे भगवन ! जेने जानावरणीय कर्म छे तेने श्रं आयुष कर्म छे ?-इत्यदि [उ०] जेम	5 उद्देशः १० ★ ॥७३८॥ * * * * * * * * * *
	वरणीय छे ? [उ०] हे गौतम ! जेने ज्ञानावरणीय छे तेने मोहनीय कर्म कदाच होय अने कदाच न होय. पण जेने मोहनीय छे तेने अवञ्य ज्ञानावरणीय कर्म होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! जेने ज्ञानावरणीय कर्म छे तेने छुं आयुष् कर्म छे ?-इत्यदि [उ०] जेम वेदनीय कर्म साथे कह्युं तेम आयुष्नी साथे पण कहेवुं. ए प्रमाणे नाम अने गोत्र कर्मनी साथे पण जाणवुं. जेम दर्शनावरणीय साथे	X: TO SA

For Private and Personal Use Only

म्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥७३९॥	समं भाणियव्वं जाव अंतराइएणं २। जस्स णं भंते ! वेयणिज्ञं तस्स मोहणिज्ञं जस्स मोहणिज्ञं तस्स वेयणिज्ञं ?, गोयमा ! जस्स वेयणिज्ञं तस्स मोहणिजं सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण मोहणिज्ञं तस्स वेय- णिज्ञं नियमा अत्थि । जस्स णं भंते ! वेयणिज्ञं तस्स आउयं ?, एवं एधाणि परोष्परं नियमा, जहा आउएण समं एवं नामेणवि गोएणवि समं भाणियव्वं । जस्स णं भंते ! वेयणिज्ञं तस्स अंतराइयं ? पुच्छा, गोयमा ! जस्स वेयणिज्ञं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण अंतराइयं तस्स वेयणिज्ञं नियमा अत्थि ३ । [प्र०] हे भगवन् ! जेने दर्शनावरणीयकर्भ छे तेने शुं वेदनीय छे, जेने वेदनीय छे तेने दर्शनावरणीय छे ? [उ०] जेम ज्ञाना- वरणीय कर्म उपग्ना सात कर्मो साथे कह्युं छे तेम दर्शनावरणीय कर्म पण उपरना छ कर्मो साथे कहेवुं, अने ए प्रमाणे यावद् अंत- र या कर्म साथे कहेवुं. [प्र०] हे भगवन् ! जेने वेदनीय छे तेने शुं मोहनीय छे तेने वेदनीय छे ? [उ०] हे गौतम ! जेने वेदनीय छे, तेने मोहनीय कदाच होय अने कदाच न होय. पण जेने मोहनीय छे तेने अवश्य वेदनीय छे. [प्र०] हे भगवन् ! जेने वेदनीय छे तेने शुं आयुष् कर्म होय ? [उ०] ए प्रमाणे ए बन्न परसर अवश्य होय. जेम अयुष्नी साथे कह्यु तेम	८ भतके उद्देशः १ • ॥७३ ९॥
	र्दे नाम अने गोत्रनी साथे पण कहेवुं. [प्र०] हे भगवन् ! जेने वेदनीय कर्म छे तेने छं अन्तरय होय-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम !	

1	Ş		S.	
	¥	जेने वेदनीय छे तेने अन्तराय कर्म कदाच होय अने कदाच न होय. पण जेने अन्तराय कम छे तेने अवक्य वेदनीय कर्म होय.	H	•
ब्याख्या	X	जस्स णं भंते ! मोइणिज़ं तस्स आउयं जस्स आउयं तस्स मोहणिज़ं १, गोयमा ! जस्स मोहणिज़ं तस्स	S.	८ शतके
प्रब्नसिः	X	जस्स णं भंते ! मोहणिज़ं तस्स आउयं जस्स आउयं तस्स मोहणिज़ं १, गोयमा ! जस्स मोहणिज़ं तस्स आउयं नियमा अत्थि, जस्स पुण आउयं तस्स पुण मोहणिज़ं सिय अत्थि सिय नत्थि, एवं नामं गोयं अंतराइपं च	Ĉ	उद्देश:१०
1108011	R	भाणियव्वं ४, जस्स णं भंते ! आउयं तस्स नामं० ? पुच्छा, गोयमा ! दोवि परोप्परं नियमं, एवं गोत्तेणवि समं		11080 11
	X	भाणियव्वं, जस्स णं भंते ! आउयं तस्स अंतराइयं० १, पुच्छा, गोयमा ! जस्स आउयं तस्स अंतराइयं सिय	8-4-9	
	S	अन्थि सिय नत्थि, जस्स पुण अंतराइयं तस्स आउयं नियमा ५। जस्स णं भंते ! नामं तस्स गोयं जस्स णं	(Contraction of the contraction	
	R	गोयं तस्स णं नामं १ पुच्छा, गोयमा ! जस्स णं णामं तस्स णं नियमा गोयं जस्स णं गोयं तस्स नियमा नामं,	¥	
	S	गोयमा ! दोवि एए परोप्परं नियमा, जस्स णं भंते ! णामं तस्म अंतराइयं० ? पुच्छा, गोयमा ! जस्स नामं तस्स	8 4 3	
	KARARARAR	अंतराइयं सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण अंतराइयं तस्स नामं नियमा अत्थि ६। जस्स णं अंते ! गोयं	Ś	
	R	तस्स अंतराइयं० ? पुच्छा, गोयमा ! जस्स णं गोयं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण अत-	¥	
	S	राइयं तस्स गोयं नियमा अत्थि ७ ॥ (सूत्रं ३५९) ॥	Ď	
	(Carl	[प्र०] हे भगवन् ! जेने मोहनीय छे तेने छुं आयुष होय, जेने आयुष् छे तेने छुं मोहनोय होय ? [उ०] हे गौतम ! जेने	S	
		मोहनीय छे तेने अवश्य आयुष् होय, जेने आयुष्य छे तेने मोहनीय कर्म कदाच होय अने कदाच न होय. ए प्रमाणे नाम, गोत्र	ж ж	
	z	अने अन्तरायकर्म कहेवुं. [प्र०] हे भगवन् ! जेने आयुष् कर्म छे तेने नाम कर्म होय ?-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते बच्चे	S	
1	1		Ý	

प्रज्ञसिः ॥७४१॥	[30] हे गौतम ! जैने नामकम छे तन अतराय कदाच हाय अन कदाच न हाय, पण जन अतराय कम छ तन अवर्थ्य नामकम होय. [प्र0] हे भगवन् ! जैने गोत्रकर्म छे तेने शुं अंतराय कर्म होय ? इत्यादि प्रश्न. [30] हे गौतम ! जेने गोत्रकर्म छे तेने अन्तराय कर्म कदाच होय अने कदाच न होय, पण जेने अन्तराय कर्म छे तेने अवश्य गोत्रकर्म होय. !! ३५९ !! जीवे णं भंते ! किं पोग्गली पोग्गले ?, गोयमा ! जीवे पोग्गलीवि पोग्गलेवि, से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ जीवे पं भंते ! किं पोग्गली पोग्गले ?, गोयमा ! जीवे पोग्गलीवि पोग्गलेवि, से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ जीवे पोग्गलीवि पोग्गलेवि?, गोयमा ! से जहानामए छत्तेणं छत्ती दंडेण दंडी घडेणं घडी पडेणं पडी करेणं करी एवामेव गोयमा ! जीवेवि सोइंदियचर्किखदियघाणिदियजिर्टिभदियफासिंदियाइं पडुच पोग्गली, जीवं पडुच पोग्गले, से तेणट्टेणं गोगमा ! एवं वुच्चइ जीवे पोग्गलीवि पोग्गलेवि ! नेरइए णं भंते ! किं पोग्गली० ?, एवं चेव. एवं जाव वेमाणिए, नदरं जस्स जड इंदियाइं तस्स तइवि भाणियव्याइं । सिद्धे णं भंते ! किं पोग्गली	२ उदेशः १० २ उदेशः १० १ ॥७४१॥ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
	ू चेव, एवं जाव वेमाणिए, नदरं जस्स जइ इंदियाइं तस्स तइवि भाणियव्वाइं। सिद्धे णं भंते ! किं पोग्गली पोग्यले?, गोयमा ! नो पोग्गली पोग्गले, से केणटेणं भंते ! एवं बुचइ जाव पोग्गले ?, गोयमा ! जीवं पडुच, से	

www.kobatirth.org	

	र तेणहेणं गोयमा! एवं बुच्चइ सिद्धे नो पोग्गली, पोग्गले । सेवं भंते ! सेवं भंतेत्ति ॥ (सूत्रं ३९०) ॥ ८-१० ॥	5
ब्या ख्या	त्र अहमसए दसमोः समत्तं अहमं सयं ॥ ८ ॥	े ८ त्रतके
प्रज्ञप्तिः	[प्र॰] हे भगवन् ! ग्रुं जीव पुद्गली छे के पुद्गल छे ? [उ॰] हे गौतम ! जीव पुद्गली पण छे अने पुद्गल पण छे. [प्र॰] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के 'जीव पुद्गली पण छे अने पुद्गल पण छे ? [उ॰] हे गौतम ! जेम कोइ एक पुरुष	र्भ हे उद्देशः १०
ા૭૪રા	🗚 हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के 'जीत्र पुद्गली पण छे अने पुद्गल पण छे'? [उ०] हे गौतम ! जेम कोइ एक पुरुष	1198211
	🖒 छत्रवडे छत्री, दंडवडे दंडी. घटवडे घटी, पटवडे पटी अने करवडे करी कहेवाय छे तेम जीव पण ओत्रेंद्रिय. चक्षुरिंद्रिय, घाणे-	
	🖌 न्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय अने स्पर्शनेन्द्रियने आश्रयी पुद्गली कहेवाय छे, अने जीवने आश्रयी पुद्गल कहेवाय छे. माटे हे गौतम!ते हेतुथी	5
	🐐 एम कहेबाय छे के 'जीव पुद्गली पण छे अने पुद्गल पण छे.' [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिक पुद्गली छे के पुद्गल छे ? [उ०]	\$ 2
	हे गौतम ! ते पूर्वनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने पण कहेवुं; परन्तु तेमां जे जीवोने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटली	P
	क हेवी. [प्र॰] हे भगवन् ! छं सिद्धो पुद्गली छे के पुद्गल छे ? [उ॰] हे गौतम ! पुद्गली नथी, पण पुद्गल छे. [प्र॰] हे	5
	अभाषन् ! ए प्रमाणे जा हेतुथी कही छो के सिद्धो यावत् पुर्गल छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवने आश्रयी (पुर्गल) कहुं छुं ने हेतुथी	8
	🖞 एम कहेवाय छे के सिद्धो पुद्गली नथी, पण पुद्गल छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. ॥ ३६० ॥	P
	र्द्र अगवत् सुधर्म खामीप्रणीत श्रीमद् भगवती सुत्रना ८ मा ज्ञतकमां १० मा उद्देशानो मूलार्थ संधुर्ण थयो.	
	कहेवी. [प्र॰] हे भगवन ! छं सिद्धो पुद्गली छे के पुद्गल छे ? [उ॰] हे गौतम ! पुद्गली नथी, पण पुद्गल छे. [प्र॰] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के सिद्धो यावत पुद्गल छे ? [उ॰] हे गौतम ! जीवने आश्रयी (पुद्गल) कहुं छुं ते हेतुथी एम कहेवाय छे के सिद्धो पुद्गली नथी, पण पुद्गल छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छ. ॥ ३६० ॥ भगवत् सुधर्म स्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवती सुत्रना ८ मा शतकमां १० मा उद्देशानो मूलार्थ संपुर्ण थयो.	Ť
1		บ ไ

\$7175771.	९ शतक उद्देशक १	
∙यारूया- प्रज्ञप्तिः	र्भ जंबुद्दीवे १ जोइस २ अंतरदीवा ३० असोच ३१ गंगेय ३२। कुंडग्गामे ३३ पुरिसे ३४ नवमंमि सए चउ-	🖌 ९ मतके ही उद्देशः १
૫૭૪૨૫	हैं। त्तीसा ॥ १ ॥	
	(उद्देशक संग्रह-) १ जंबूद्वीप, २ ज्योतिष्क, ३-३० अठचावीश अन्तरार्द्वीपो, ३१ असोचा, ३२ गांगेय, ३३ कुंडग्राम अने	ি ।।७४३॥ ঈ
	र्भ ३४ पुरुष ए-ए संबन्धे नवमा शतकमां चोत्रीश उद्देशको छे. (१ जंबूढीप संबन्धे प्रथम उद्देशक छे, २ ज्योतिषिक देव संबन्धे ट्री बीजो उद्देशक छे, ३-३० अठचावीश अन्तर्द्वीपोना त्रीजाथी आरंभी त्रीश उद्देशको छे, ३१ असोचा-'सांभळया शिवाय-धर्मने	S.
	४ पुरुष ए–ए संबन्धे नवमा शतकमां चोत्रीश उद्देशको छे. (१ जंबूद्वीप संबन्धे प्रथम उद्देशक छे, २ ज्योतिषिक देव संबन्धे ४ बीजो उद्देशक छे, ३−३० अठयावीश अन्तर्द्वीपोना त्रीजाथी आरंभी त्रीश उद्देशको छे, ३१ असोचा–'सांभळया शिवाय–धर्मने ४ पामे'–इत्यादि विषे एकत्रीशमो उद्देशक छे, गांगेय अनगारनाप्रश्न विषे बत्रीशमो उद्देशक छे, बाह्यणकुंडग्राम संबन्धे तेत्रीशमो उद्दे-	*
	र्भ) शक छे, अने पुरुषने हणनार संबन्धे चोत्रीशमो उद्देशक छे.)	S.
	🕻 तेणं काछेणं तेणं समएणं मिहिलानामं नगरी होत्था, वन्नओ, माणभद्दे चेइए वन्नओ, सामी समोसढे, परिसा	A .
	🖌 निग्गया जाव भगवं गोयमे पज्जुवासमाणे एवं वयासी-कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे ? किंसंठिए णं भंते ! जंबु-	P
	र्ध दीवे दीवे ? एवं जंबुद्दीवपन्नत्ती भाणियव्वा आव एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे २ चाइस सलिला सयस-	
	र्दे हस्सा छप्पन्नं च सहस्सा भवंतीतिमक्खाया। सेवं भंते! सेवं भंतेत्ति । (सूत्रं ३६१)॥ नवमसयस्स पढमो रेडिसो ॥ ९-१ ॥	S.

ब्याख्या प्रज्ञप्तिः ॥७४४॥	के छप्पन हजार नदीओ छे' तेम कह्युं छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे (एम कही भगवान् गौतम यावत् के विहरे छे.) ॥ ३६१ ॥ भगवत् सुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीसत्रना ९ मा शतकमां प्रथम उद्देशानो मूलार्थ संपुर्ण थयो.	उद्देशः२
	उद्देशक २ रायगिहे जाव एवं वयासी-जम्बुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइया चंदा पभासिंसु वा पभासेंति वा पभासि स्संति वा ?, एवं जहा जीवाभिगमे जाव-'एगं च सयसहरसं तेत्तीसं खलु भवे सहरसाइं। नव य सया पन्नासा	
	तारागणकोडिकोडीणं ॥६१॥ ' सोभं सोभिंसु सोभिंति मोभिस्संति ॥ (सूत्रं ३६२) ॥ [प्र॰] राज़ग्रह नगरमां यावत (गौतम खामीए) ए प्रमाणे प्रश्न कयों के-हे भगवन ! जंबूद्वीप नामना द्वीपमां केटला चंद्रोए प्रकाश कयों, वेटला प्रकाश करे छे अने केटला प्रकाश करशे ? [उ०] ए प्रमाणे जेम जीवाभिषम सत्रमां कर्षुं छे तेम जाणवुं, यावत ' एक लाख, तेत्रीश हजार, नवसो ने पचास कोडाकोडी ताराना समूहे शोभा करी, शोभा करे छे अने शोभा करशे ' त्यां सुधी जाणवुं. ॥ ३६२ ॥	

ण्यारूया- प्रक्रप्तिः ॥७४५॥	त्न लवणे णं भंते! समुद्दे केवतिया चंदा पभासिंसु वा पभासिंति वा पभासिस्संति वा ३ एवं जहा जीवाभिगमे जाव ताराओ ॥ धायइसंडे कालोदे पुक्खरवरे अब्भितरपुक्खरद्धे मणुस्सखेत्ते, एएसु सब्वेसु जहा जीवाभिगमे जाव-'एगससीपरिवारो तारागणकोडाकोडीणं।' पुक्खरद्धे णं भंते! समुद्दे केवइया चंदा पभासिंसु वा?, एवं सब्वेसु दीवसमुद्देसु जोतिसियाणं भाणियव्वंजाव सयंभूरमणे जाव सोभं सोभिसु वा सोभंति वा सोभिस्संति	8 3	९ चतके उदेशः२ ॥७४५॥
	वा। सेवं भंते ! सेवं भंतेत्ति(सूत्रं ३६३) नवमसए बीओ उद्देसो समत्तो ॥ ९-२ ॥ [प्र॰] हे भगवन् ! लवण सम्रुद्रमां केटला चंद्रोए प्रकाश करों, केटला प्रकाश करे छे अने केटला प्रकाश करशे ! [उ०] ए प्रमाणे जेम जीवाभिगम सत्रमां कह्युं छे तेम तारानी हकीकत सधी सर्व जाणवुं. धातकिखंड, कालोदधि, पुष्करवर द्वीप, अभ्यंतर पुष्करार्ध अने मनुष्यक्षेत्रमां-ए सर्व स्थळे जीवाभिगम सत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् 'एक चंद्रनो परिवार कोटाकोटि तारागणो होय छे " त्यां सधी सर्व जाणवुं [प्र०] हे भगवन् ! पुष्करोद सम्रुद्रमां केटला चंद्रोए प्रकाश कर्यो ?—इत्थादि [उ०] ए तीते [जीवाभिगम सत्रमां कह्या प्रमाणे] सर्व द्वीप अने सम्रुद्रोमां ज्योतिष्कोनी हकीकत यावत् ' स्वयंभूरमणसमद्रमां छे. यावत्	34.45 46 46 46 46 46 46 46 46 46 46 46 46 46	
	र्भ शोभ्या, शोमे छे अने शोभशे ' त्यां सुधी कहेवी. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे, [एम कही यावद् भगवान् है गौतम विहरे छे.] ॥ ३६३ ॥ भगवत् सुधर्मखामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीस्त्रना ९ मा शतकमां बीजा उद्देशानो मूलार्थ संपुर्ण थयो.	, A. 96-96-96-96-96-96-	

50012-00A	उद्देशक ३	3676	0
ब्याख्या	र्ग रायगिहे जाव एवं वयासी-कहि णं भंते! दाहिणिछाणं एगोरुयमणुस्साणं एगोरुयदीवे णामं दीवे पन्नत्ते ?,		९ शतके
प्रज्ञप्तिः	🕻 गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुछहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरिमं-		उद्देशः३
1198£11	्र गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुछहिमवंतस्स बासहरपव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरिमं- ताओ लवणसमुद्दं उत्तरपुरच्छिमे णं तिन्नि जोयणसयाईं ओगाहित्ता एत्थ णं दाहिणिछाणं एगोरुयमणुस्साणं	¥	1198611
	🕺 एगोरुयदीवे नामं दीवे मण्णत्ते, तं गोयमा! तिन्नि जोयणसयाईं आयामविक्खंभेणं णवएक्कोणवन्ने जोयणसए	S	
		A	
	भाषावससूण परिक्खवण पन्नत, स ण एगाए पउमवरवइयाए एगण य वणसडण सब्वआ समता सपाराक्ख- ते, दोण्हवि पमाणं वन्नओ य, एवं एएणं कमेणं जहा जीवाभिगमे जाव सुद्धदंतदीवे जाव देवलोगपरिग्गहिया णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो !। एवं अट्ठावीसंपि अंतरदीवा सएणं २ आयामविक्खंभेणं भाणियव्वा, नवरं दीवे २ उद्देसओ, एवं सब्वेवि अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति (सूत्रं ३६४) नवमस्स तईयाइआ तीसंताउद्देसा संमत्ता ॥ ३० ॥	\mathbf{A}	
	🖞 मणुया पण्णत्ता समणाउसो!। एवं अट्टावीसंपि अंतरदीवा सएणं २ आयामविक्खंभेणं भाणियव्वा, नवरं दीवे	D.	
	🖌 २ उद्देसओ, एवं सव्वेवि अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति (सूत्रं ३६४) नवमस्स	Ś	
	🗡 तईग्राइआ तीसंताउद्देसा संमत्ता ॥ ३० ॥	¥	
	🐒 [प्र॰] राजग्रह नगरमां [भगवान् गौतमे] यावत् ए प्रमाणे पूछयुं—हे भगवन् ! दक्षिण दिशाना एकोरुक मनुष्योनो एको-	9678 9678	
	🛠 रुक नामे द्वीप क्यां कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! जंबूद्वीप नामना द्वीपमां आवेला मंदरपर्वत (मेरुपर्वत) नी दक्षिणे चुऌ (क्षुद्र)	G.	
	ू िप्यु राजपुरु नगरना [नगवान् गातन] यावत् ए प्रमाण पूछयु—ह नगवन् ! दाक्षण दिशानां एकारुक मनुष्यानां एका र हक नामे द्वीप क्यां कद्यो छे? [उ०] हे गौतम! जंबूद्वीप नामना द्वीपमां आवेला मंदरपर्वत (मेरुपर्वत) नी दक्षिणे चुछ (क्षुद्र) हिमवंत नामे वर्षधर पर्वतना पूर्वना छेडाथी ईशान कोणमां त्रणसो योजन लवणसमुद्रमां गया पछी ए स्थळे दक्षिण दिशाना एको र हक मनुष्योनो एकोरुक नामे द्वीप कद्यो छे. हे गौतम! ते द्वीपनी लवाइ अने पहोळाय त्रणसो योजन छे, अने तेनो परिक्षेप (परि	- 967: F-96-9	
	कि मनुष्योनो एकोरुक नामे द्वीप कह्यो छे. हे गौतम ! ते द्वीपनी लंवाइ अने पहोळाय त्रणसो योजन छे, अने तेनो परिक्षेप (परि	8	
	🗶 रुग पंछत्यामा इकारक गाम कार कथा छ. ह गावम र कारमा लवाइ अने पहाळाथ त्रणसा याजने छ, अने तेनी परिक्षप (परि	¥	

ध्याख्या- प्रइप्तिः १७४७।।	भगवत् सुर्धमस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीखत्रना ९ मा शतकमां त्रीजा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.	२ वतके उद्देशः ४ १ ॥७४७॥
	उद्देशक ४ रायगिहे जाव एवं वयासी-असोचा णं भंते ! केवलिस्स वा केवलिसावगस्स वा केवलिसावियाए वा केव- लिउवासगस्स वा केवलिउवासियाएवा तप्पविखयस्स वा तप्पक्खियसावगस्स वा तप्पक्खियसावियाए वा नप्पक्खियउवासगस्स वा तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ?, गोयमा ! असोचा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए अत्थेगतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुचइ-असोचा णं जाव नो लभेज्जा सवणयाए ?,	5 + 3 + 3 + 3 + 3 + 3 + 3 + 3 + 3 + 3 +

ष्म्याख्या प्रज्ञप्तिः ॥७४८॥	नेणद्वेणं गोयमा ! एवं चुचइ-तं चेव जाव नो रूभेज सवणयाए ॥ [प्र०] राजगृह नगरमा यात् [भगवान् गौतमे] आ प्रमाणे पूछयुं—हे भगवन् ! केवलि पासेथी, केवलिना आवक पासेथी, केवलिनी आविका पासेथी, केवलिना उपासक पासेथी, केवलिनी उपासिका पासेथी, केवलिना पाक्षिक (खयंबुद्ध) पासेथी, केवलिना पाश्चिक आवक पासेथी, केवलिना पाश्चिकनी आविका पासेथी, केवलिनी पक्षना उपासक पासेथी अने केवलिना पाश्चिकनी उपासिका पाश्चिक आवक पासेथी, केवलिना पाश्चिकनी आविका पासेथी, केवलिना पक्षना उपासक पासेथी अने केवलिना पाश्चिकनी उपासिका पाश्चिक आवक पासेथी, केवलिना पाश्चिकनी आविका पासेथी, केवलिना पक्षना उपासक पासेथी अने केवलिना पाश्चिकनी उपासिका पाश्चिक आवक पासेथी, केवलिना पाश्चिकनी आविका पासेथी, केवलिना पक्षना उपासक पासेथी अने केवलिना पाश्चिकनी उपासिका पाश्चिकनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना पण कोइ जीनने केवलिए कहेला धर्मअवरणनो लाभ थाय अने कोइ जीवने लाभ तेवा पाश्चिकनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना पण कोइ जीनने केवलिए कहेला धर्मअवरणनो लाभ याय अने कोइ जीवने लाभ न थाय. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे वा हेतुथी कहो छो सांभळ्या विना यावत् [धर्म] अवणनो लाभ न थाय ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवे ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपद्यम करेलो छे ते जीवने केवलि पासेथी यावत् तेना पाश्चिकनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विवा पण केवलिए कहेला धर्मअवणनो लाभ थाय, अने जे जीवे ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपद्यम कर्यो नथी जे जीवने केवलि पा ये यी यावत् तेना पाश्चिकनी उपासिका पासेथी सांमळ्या विना केवलिए कहेल धर्मने सांमळ्यानो लाभ न थाय. हे गौतम ! ते	EC & C & C & C & C & C &	110 8<11
	पार्चिथी यावत् तेना पाक्षिकनी उपासिका पासेथी सामळया विना कवालए कहल धमन सामळवाना लाम न थाय. इ गातम र त हेतुथी एम कखुं छे के, तेने यावत् 'श्रवणनो लाभ न थाय.'	L'SCAL O	

व्याख्या-	[प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेथों के यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी [धर्म] सांभळ्याविना कोइ जीव छुद्ध बोधि-	2000 200 200 200 200 200 200 200 200 20	९ ञ्च तके
प्रज्ञप्तिः	सम्यग्दर्शनने अनुभवे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना पण कोइ जीव छुद्ध सम्यग्दर्शनने अनुभवे. अने		उद्देञ्चः ४
॥७४९॥	कोइ जीव छुद्ध सम्यग्दर्शनने न अनुभवें. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के, यावत् [छुद्ध सम्यग्दर्शनने] न		॥७४ ९॥

ष्याख्या प्रद्वप्तिः ॥७५०॥	अणगारियं पव्वइज्जा अत्थेगतिए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं नो पव्वएज्जा, से केणहेणं जाव नो पव्वएज्जा ?, गोयमा ! जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवति से णं असोचाकेवलिस्स वा जाव केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, जस्म णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवति से णं असोचाकेवलिस्स वा जाव मुंडे भवित्ता जाव णो पव्वएज्जा, सं तेणहेणं गोयमा ! जाव नो	र २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
	र्दे असोचा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा ?. गोयमा ! असोचा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा, अत्थेगतिए केवलं	\$ 11040 1 \$ \$
	ू असामा ण कवालस्स वा जाव उवासियाएँ वा अत्यगातएँ कवले चमचरवास आवसज्जा, अत्यगातएँ कवले हे बंभचेरवासं नो आवसेज्जा, से केणहेणं भंते! एवं वुच्चइ् जाव नो आवसेज्जा १, गोयमा! जस्स णं चरित्ताव-	2 4 4
	४ रणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे अवह से णं असोचाकेवलिस्स वा जाव केवलं वंभचेरवासं आवसेज्जा, ८ जस्स णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवह से णं असोचाकेवलिस्स वा जाव नो आव-	8
	ि सेज्जा, से तेणट्टेणं जाव नो आवसेज्जा । ४ [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेथी के यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना पण कोइ जीव मुंड∽दीक्षित	*
÷	🕻 थइने अगारवास-ग्रहवास-त्यजी ग्रद्ध अनगारिकपणाने-प्रत्रज्याने स्वीकारे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेथी यावत तेना पक्षनी	× D
×	अत्र उपासिकापासेथी सांभळ्या विना कोइ जीव मुंड थइने गृहवास त्यजी छद्ध अनगारिकपणाने स्वीकारे, अने कोइ जीव मुंड थइ ग्रुहवास त्यजी अनगारिकपणाने न स्वीकारे. [प्र०] हे भगवन् ! एम ज्ञा हेतुथी कहो छो के, 'यावत् न स्वीकारे' ? [उ०] हे	

ड्याख्या- प्रक्वप्तिः ॥७५१॥	गौतम ! जे जीवे धर्मांतरायिक-चारित्र धर्ममां अन्तरायभूत-चारित्रावरणीय कमोंनो क्षयोपग्रम कयों छे ते जीव केवली पासेथी यावत् सांमळया विना पण ग्रंड थइने अगारवास त्यजी ग्रुद्ध अनगारिकपणाने स्वीकारे, अने जे जीवे धर्मांतरायिक कर्मोंनो क्षयो- पग्रम कर्यो नथी ते जीव केवली पासेथी यावत् सांमळ्या विना यावत् ग्रंड थइने यावद् न स्वीकारे. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कर्यु छे के 'यावत् न स्वीकारे.' [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेथी. यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी सांमळ्या विना कोड जीव ग्रुद्ध ब्रह्मचर्थवासने घारण करे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेथी. यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी सांमळ्या विना कोड जीव ग्रुद्ध ब्रह्मचर्थवासने घारण करे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेथी. यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी सांमळ्या विना पण कोइ जीव ग्रुद्ध ब्रह्मचर्थवासने घारण करे, अने कोइ जीव श्रुद्ध ब्रह्मचर्थवासने घारण न करे. [प्र०] हे भगवन् ! एम जा हेतुथी कहो छो के 'यावत् ब्रह्मचर्थवासने घारण करे, अने कोइ जीव श्रुद्ध ब्रह्मचर्थवासने घारण न करे. [प्र०] हे भगवन् ! एम जा हेतुथी कहो छो के 'यावत् ब्रह्मचर्थवासने घारण करे ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवे चारित्रावरणीय कर्मोनो क्षयोपग्रम करों छे ते जीव केवली पासेथी यावत् सांमळ्या विना पण ग्रुद्ध ब्रह्मचर्यवासने घारण करे, अने जे जीवे चारित्रावरणीय कर्मोनो क्षयोपग्रम नथी कर्यो ते जीव केवली पासेथी यावत् सांमळ्या विना ग्रुद्ध ब्रह्मचर्यवासने घारण क करे. आटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कर्डु छे के 'यावत् ब्रह्मचर्थवासने घारण न करे.' असोचा णं भंते ! केवलिरस वा जाव केवलेणं संजमेजा अत्थेगतिए केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा, से केण- टेणं जाव नो सं जमेज्जा?,गोयमा! जस्स णं जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कढे भवइ से णं असोचाणं केवलिरस वा जाव केवल्ठेणं संजमेज्गे रंजमेज्जा जरस्स णं जयणावरणिज्जाणं कम्माणं क्रओवसमी करे नह भाव को क्रे भवह		, शतके देशः ४ १७५ १॥
-----------------------------------	---	--	----------------------------

ण्याख्या प्रज्ञप्तिः ॥७५२॥	💭 करे. [प्र०] हे भगवन ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहें। छे। के, यावत संयमयतना न करे [उ०] हे गौतम ! जे जीवे यतनावरणीय	र २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २
----------------------------------	--	--

ण्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥७५३॥	र्में गौतम ! जे जीवे अध्यवसानावरणीय (मावचारित्रावरणीय) कर्मोनो क्षयोपश्चम कर्यो छे ते जीव केवली पासेथी यावत् सांमळ्या विना पण शुद्ध संवरवेड संवर-आस्रवनो रोध-करी शके, अने जे जीवे अध्यवसानावरणीय कर्मोनो क्षयोपश्चम नथी कर्यो ते जीव केवली पासेथी सांमळ्या विना संवर न करी शके; माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कह्युं छे केयावत् 'संवर न करे'. [प्र०] हे भगवन् ! केवली प्रासेथी यावत् सांमळ्या विना कोइ जीव शुद्ध आमिनिबोधिक ज्ञान उत्पन्न करे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेथी के यावत तेनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना पण कोइ जीव श्रद्ध आमिनिबोधिक ज्ञान उत्पन्न करे ? [अठ] हे गौतम ! केवली	उदेशः ४ ॥७५३॥ २२ २२ २२
e e e	र्भू ग्रुद्ध आभिनिबोधिक ज्ञान न उपजावी शके. [प्र०] हे भगवन् रे एम शा हेतुथी कहो छो के−'याबत् न उपजावी शके' ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवे आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम कर्यो छे ते जीव केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना पण शुद्ध आभिनिबोधिकज्ञान उपजावी शके, अने जे जीवे आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम कर्यो नथी ते जीव केवली	26 m 26

	Ş	पासेथी यावत सांभळ्या विना ग्रुद्ध आभिनिबोधिकज्ञान न उपजावी अके. माटे हे गौतम् ! ते हेतुथी एम कह्युं छे के∽'यावत् न जनजनी स्टो ?	Y.	
म्याख्या	A Co	गतना नापए राग्यना विगा छन्न जात्राणमापिग्यांग ग उपलावा सक. माट र गातम् र त रेप्तुवा दम केलु व पर पापए ग उपजावी शके.'	7 8 8	
प्रज्ञ सिः	\mathbf{P}	असोचा णं भंते! केवलि॰जाव केवलं सुयनाणं उप्पाडेज्ञा एवं जहा आभिणिबोहियनाणस्स वत्तव्वया भणिया	हुँ ९ व	तके
1194811	S	तहा सुयनाणस्सवि भाणियव्वा, नवरं सुयनाणावरणिज्ञाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे । एवं चेव केवऌं	🖌 उद्देश	1:8
	S	ओहिनाणं भाणियव्वं, नवरं ओहिणाणावरणिज्ञाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे, एवं केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा, नवरं मणपज्जवणाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे, असोचा णं भंते! केवलिस्स वा	8 1104	181
	¥	उप्पाडेज्जा, नवरं मणपज्जवणाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे, असोचा णं भंते! केवलिस्स वा	(Contraction of the second se	
	R	जाव तप्पक्लियउवासियाए वा केवलनाणं उप्पाढेज्जा, एवं चेव नवरं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए भा-	\mathbf{A}	
	X	णियव्वे, सेसं तं चेव, से तेणहेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ जाव केवलनाणं नो उप्पाडेजा।	S.	
	LAR & LAR & LAR & LAR	[प्र॰] हे भगवन् । केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना कोइ जीव छुद्ध श्रुतज्ञान उत्पन्न करी ञके १ [उ॰] ए प्रमाणे जेम	A A	
	$\mathbf{\hat{z}}$	आभिनिबोधिकज्ञाननी हकीकत कही, तेम अुतज्ञाननी पण जाणवी; परन्तु अहीं अुतज्ञानावरणीय कर्मोनो क्षयेापर्यम कहेवा. ए प्रमाणे	\mathbf{k}	
	X	शुद्ध अवधिज्ञाननी पण हकीकत कहेवी, पण त्यां अवधिज्ञानावरणीया कर्मोनो क्षयोपश्रम कहेवोः ए रीते शुद्ध मनःपर्यवज्ञान पण	S	
	X	उत्पन्न करे, परन्तु मनःपर्यवज्ञानावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम कहेवो. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेथी के यावत् तेना पक्षनी	8	
	R	उपासिका पासेथी (सांभळ्या विना कोइ जीव) केवलज्ञानने उत्पन्न करी शके ? [उ०] पूर्वनी पेठे जाणवुं, परन्तु अहीं 'केवलज्ञा-	2 F	
	S	नाव रणीय कमोंनो क्षय' कहेवो बाकी बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कह्युं छे के 'यावत् केवलज्ञानने पण	S.	
		4	

≠याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥७५५॥	String of the states and states and states	उत्पन्न करी शके.' असोचा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्षियउवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेजा सवणयाए केवलं वोहिं बुज्झेजा केवलं मुंढे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वएजा केवलं वंभचेरवासं आवसेजा केवलेणं संजमेणं संजमेजा केवलेणं संवरेणं संवरेजा केवलं आभिणिवोहियनाणं उप्पाढेजा जाव केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाढेजा केवलनाणं उप्पाढेजा?, गोयमा ! असोचाणं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्थेगतिए केवलि- पन्नत्तं धम्मं लभेजा सवणयाए अत्थेगतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेजा सवणयाए अत्थेगतिए केवलं वोहिं बुज्झेजा अत्थेगतिए केवलं बोहिं णो बुज्झेजा अत्थेगतिए केवलं मुंढे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वएजा अत्थेगतिए जाव नो पव्वएजा अत्थेगतिए केवलं वंभचेरवामं आवसेजा अत्थेगतिए केवलं वंभचेरवासं नो आ- वसेजा अत्थेगतिए केवलं बोहिं णो बुज्झेजा अत्थेगतिए केवलं मुंढे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वएजा अत्थेगतिए जाव नो पव्वएजा अत्थेगतिए केवलं वंभचेरवामं आवसेजा अत्थेगतिए केवलं वंभचेरवासं नो आ- वसेजा अत्थेगतिए केवलं चंक्रमेणं संजमेजा अत्थेगतिए केवलं गंक्तमेणं नो संजमेजा एवं संवरेणवि, अत्थे- गतिए केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाढेजा अत्थेगतिए जाव नो उप्पाढेजा, एवं जाव मणपज्जवनाणं, अ- त्थंगतिए केवलनाणं उप्पाढेजा अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाढेजा। से केणट्रेणं मंत्र ! एवं वुच्च असोचाणं तं चेव जाव अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाढेजा ?, गोयमा ! जस्म णं नाणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे नो कढे भवइ १ जस्स णं दरिसणावरणिजाणं कम्माणं खओवसमे नो कढे भवइ २ जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणां खओवसमे नो कडे भवइ ३ एवं चरित्तावरणिजाणं ४ जयणावरणिजाणं ५ अज्झवसाणावरणिजाणं	S	९ शतके उद्देन्नःध ॥७५५॥	
----------------------------------	--	---	---	-------------------------------	--

ष्याख्या प्रइसिः प्रहसिः	६ आभिणिबोयनाणावरणिज्ञाणं ७ जाव मणपज्जवनाणावरणिज्ञाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ १० जस्स णं केवलनाणावरणिजाणं जाव खए नो कडे भवइ ११ से णं असोचाकेवलिस्स वा जाव केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा जाव केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा, जस्स णं नाणावरणिज्जा वा कम्माणं खओवसमे कडे भवति जम्म णं दुन्सिणावरणिज्ञाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवड जस्म णं धम्मंतरण-	र्भ उद्देशः४
1194911 4949 4949 4949 4949 4949 4949 4	कम्माणं खओवसमे कडे भवति जस्स णं दरिसणावरणिज्ञाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ जस्स णं धम्मंतर ^ण - इयाणं एवं जाव जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माण खए कडे भवइ से णं असोचाकेवलिस्स वा जाव केव- लिपन्नंत्त धम्मं लभेज्जा सवणयाए केवलं बोहिं बुज्झेज्जा जाव केवलणाणां उप्पाडेज्जा ॥ (सूत्रं ३६५) ॥ [प०] हे भगवन् ! केवली पासेथी के यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना पण ग्रुं कोइ जीव केवल्ज्ञानीए कहेला धर्मने श्रवण करे-जाणे, शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव करे, ग्रुंढ शहने अगारवास त्यजी शुद्ध अनगारिकपणाने स्वीकारे, शुद्ध वह्यचर्यवासने धारण करे, शुद्ध संयमवडे संयमयतना-करे, शुद्ध संवरवडे संवर-आम्रवनो रोध-करे, शुद्ध आभिनिबोधिकज्ञान उपच करे, यावत् शुद्ध मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न करे अने शुद्ध सेवरवडे संवर-आम्रवनो रोध-करे, शुद्ध आभिनिबोधिकज्ञान उपच करे, यावत् शुद्ध मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न करे अने शुद्ध सेवल्वडे संवर-आम्रवनो रोध-करे, शुद्ध आभिनिबोधिकज्ञान उपच करे, यावत् शुद्ध मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न करे अने शुद्ध सेवरवडे संवर-आम्रवनो रोध-करे, शुद्ध आभिनिबोधिकज्ञान उपच करे, यावत् शुद्ध मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न करे अने शुद्ध सेवेलज्ञान उत्पन्न करे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेथी यावत् तेनी उपच करे, यावत् शुद्ध सन्पर्यवज्ञान उत्पन्न करे अने शुद्ध सेवेलज्ञान उत्पन्न करे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेथी यावत् तेनी उपच करे, यावत् शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव करे अने कोइ जीव शुद्ध सम्यक्त्वनो आणे अने कोइ जीव केवलिए कहेला धर्मने न जाणे, कोइ जीव शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव करे अने कोइ जीव शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव न करे; कोइ जीव ग्रुद्ध व्यझे आगारवास त्यजी शुद्ध अनगारपणु स्वीकारे अने केाइ जीव न स्वीकारे; कोइ जीव शुद्ध त्रक्षचर्यवासने धारण करे अने कोइ जीव शुद्ध व्यमर धरण न करे; कोइ जीव शुद्ध संयम वडे संयमयतता करे अने कोइ जीव शुद्ध त्रियमवर्ड संयमवर्ड संयम न करे; ए प्रमाणे संवरने विषे पण	5 1104 31

ब्याख्या- प्रज्ञप्तिः माख्यजा प्रज्ञितिः संस्थ		
	भेषा केवलज्ञानने उत्पन्न करे. ॥ ३६५ ॥ केवलज्ञानने उत्पन्न करे. ॥ ३६५ ॥ तस्त णं भंते! छट्टंछट्टेणं अनिक्तिसत्तोणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय सुराभिमुहस्स आयाव- णभूमीए आयावेमाणस्स पगतिभद्दयाए पगइउवसंतयाए पगतिपयणुकोहमाणमायालोभयाए मिउमद्दवसंपन्नया-	Contraction of the second

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥७५८॥	*	णसहस्साईं जाणइ पासए, से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं जीवेवि जाणइ अजीवेवि जाणइ पासंडत्थे सारंभे सपरिग्गहे संकिलिस्समाणेवि जाणइ विसुझ्झमाणेवि जाणह, से णं पुव्वामेव सम्मत्तं पडिवज्जइ, संमत्तं पडिवज्जित्ता समणधम्मं रोएति समणधम्मं रोएत्ता चरित्तं पडिवज्जइ चरित्तं पडिवज्ला लिंगं पडिवज्जइ, त- स्स णं तेहिं मिच्छत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ सम्मद्दंसणपज्जवेहिं परिवड्डमाणेहिं २ से विब्भंगे अन्नाणे सम्मत्तपरिग्गहिए खिप्पामेव ओही परावत्तइ (सूत्रं ३६६)॥ ते जीवने निरंतर छट्ठ छट्ठना तप करवापूर्वक द्वर्थनी सामे उंचा हाथ राखी राखीने आतापना भूमिमां आतापना छेता, प्रक्र तिना भद्रपणाथी, प्रकृतिना उपत्रांतपणाथी, खभावथी कोध, मान, माया अने लोभ घणा ओछा थयेला होवथी, अत्यंत मार्दव- नम्रताने प्राप्त थयेला होवाथी, आलीनपणाथी, भद्रपणार्थी अने विनीतपणाथी अन्य कोइ दिवसे छुभ अध्यवसायवडे, छुभ परिणा- मवडे, विशुद्ध लेक्त्याओवडे तदावरणीय (विभंगज्ञानावरणीय) कर्मोना क्षयोपञ्चमथी, ईहा, अपोह, मार्गणा अने गवेषणा करता विभंग नामे अज्ञान उत्पन्न थाय छे. ते उत्पन्न थएल विभंगज्ञान वडे जघन्यथी अंग्रल्नो आसंख्यातमो भाग अने उत्कष्ठ असंख्येय	CARA ARA ARA CARA	९ भतके उद्देश्न ः४ ॥७५८॥
	A CON	नपड, पिछक्र लग्याआवड तदावरणाय (ावमगज्ञानावरणाय) कमाना क्षयापश्चमथा, इहा, अपाह, मागणा अन गवषणा करता विमंग नामे अज्ञान उत्पन्न थाय छे. ते उत्पन्न थएल विभंगज्ञान वडे जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्क्रुष्ट असंख्येय हजार योजनोने जाणे छे अने जुए छे; उत्पन्न थएला विभंगज्ञान वडे ते जीवोने पण जाणे छे अने अजीवोने पण जाणे छे; पाखंडी	SA: FSG	

व्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥ ७५९॥	FOR	वेषने स्वीकारे छे; पछी ते विभंगज्ञानीना मिथ्यात्वपर्यायो क्षीण थता थता अने सम्यग्दर्शन पर्यायो वधता वधता ते विभंग अज्ञान सम्यक्त्व युक्त थाय छे, अने ज्ञीघ्र अवधिरूपे परावर्तन पामे छे. ॥ ३६६ ॥ से णं भंतें ! कतिलेस्सासु होज्ञा ?, गोयमा तिसु विसुद्धलेस्सासु होज्जा, तंजहा-तेउलेस्साए पम्हलेस्माए सुक्कलेस्साए । से णं भंते ! कतिसु णाणेसु होज्जा ?, गोयमा ! तिसु आभिणिबोहियनाणसुयनाणओहिनाणेसु होज्जा । से णं भंते ! कतिसु णाणेसु होज्जा ?, गोयमा ! तिसु आभिणिबोहियनाणसुयनाणओहिनाणेसु होज्जा । से णं भंते ! कतिसु णाणेसु होज्जा ?, गोयमा ! तिसु आभिणिबोहियनाणसुयनाणओहिनाणेसु होज्जा । से णं भंते ! के सजोगी होज्जा अजोगी होज्जा ?, गोयमा ! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा, जइ सजोगी होजा कि मणजोगी होजा बइजोगी होज्जा कायजोगी होज्जा ?, गोयमा ! मणजोगी वा होजा वइजोगी वा होजा कायजोगी वा होज्जा । से णं भंते ! कि सागारोवउत्ते होज्जा अणागारोवउत्ते होज्जा ?, गोय- मा ! सागरोवउत्ते वा होज्जा आणागारोवउत्ते वा होज्जा ! से णं भंते ! कयरंमि संघयणे होज्जा ?, गोयमा ! वहरोसभनारायसंघयणे होज्जा । से णं भंते ! कपरंभि संठाणे होज्जा ?, गोयमा ! छण्हं संठाणाणं अन्नयरे संठाणे होज्जा । से पां भंते ! कयरंभि उच्चत्ते होज्जा ?, गोयमा ! जहन्नेणं सत्तरयण उक्कोसेणं पंचधणुसतिए होज्जा । से पां भंते ! कयरंभि आउए होजा ?, गोयमा ! जहन्नेणं सातिरेगट्टवासाउए उक्कोसेणं पुच्वकोडिआउए	FOR THE SEARCH AND	९ হারকੇ उद्दे शः ॥७५ ९॥
	₽	होज्जा । से णं भंते ! किं सवेदए होज्जा अबेदए होज्जा ?, गोयमा ! सवेदए होज्जा नो अवेदए होज्जा,	e)	

ज्याख्या- प्रइप्तिः	जइ सवेदए होज्जा किं इत्थीवेयए होज्जा पुरिसवेदए होज्जा नपुंसगवेदए होज्जा पुरिसनपुंसगवेदए होज्जा ?, गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा पुरिसवेदए वा होज्जा नो नपुंसगवेदए होज्जा ?, पुरिसनपुंसगवेदए वा होज्जा । [प्र॰] हे भगवन् ! ते अवधिज्ञानी जीव केटली छेक्याओमां होय ? [उ॰] हे गौतम ! त्रण विश्चद्ध लेक्याओमां होय. ते आ	
1103011		उदेशः४
	प्रमाणे—तेजोल्ठेक्या, पद्मलेक्या अने शुक्कल्रेक्या. [प्र०] हे भगवन्! ते (अवधिज्ञानी) जीव केटला ज्ञानोमां होय ? [उ०] हे गौतम ! 👌 आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान–ए त्रण ज्ञानोमां होय. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अवधिज्ञानी) सयोगी (मनोयोगादि-	11950
Å	आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान-ए त्रण ज्ञानोमां होय. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अवधिज्ञानी) सयोगी (मनोयोगादि- सहित) होय के अयोगी होय ? [उ०] हे गौतम ! ते सयोगी होय पण अयोगी न होय. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते सयोगी होय,	
	સાદત/ દાય & અયાગા દાય ડ [ઉ૦] ૬ ગાતમ ડ તે સંયાગા દાય પળ અયાગા ન દાય. [મળ] દ મગવન્ડ ગા તે સંયાગા દાય, [બ	
	र्पण होय. [प्र॰] हे भगवन् ! छं ते साकार-ज्ञानउपयोगवाळो होय के अनाकार-दर्शनउपयोगवाळो होय ? [उ॰] हे गौतम ! ते साकारउ पगवाळो पण होय अने अनाकारउपयोगवाळो पण होय. [प्र॰] हे भगवन् ! ते कया संघयणमां होय ? [उ॰] हे गौतम ! ते	
2	साकारउ पंगवाळा पण हाय अने अनेकारउपयोगवाळा पण होय. [प्र०] इ भगवन् ! ते कया संघयणमा हाय ! [उ०] ह गातम ! ते	
C	वज्र ऋषभनाराचसुंघयणवाळो होय. [प्र०] हे भगवन् ! ते कया संस्थानमां होय ? [उ०] हे गौतम ! तेने छ संस्थानमांनुं कोइ पण	
5	एक संस्थान होय. [प्र०] हे भगवन् ! ते केटली उंचाइवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते जघन्यथी सात हाथ अने उत्क्रुष्टथी	
G	रे। पांचसा धनुषना उचाइवाळा होय. । प्र०। ह भगवन् ! त कटला आयुषवाळा हाय ! । उ०। ह गातम ! त जघन्यथा काइक वधार । 🗴	
Ŕ	आठ वर्ष, अने उत्कृष्टथी पूर्वकोटिआयुषवाळो होय. [प्र०] हे भगवन् ! झुं ते वेदसहित होय के वेदरहित होय ? [उ०] हे गौतम!	
2	ते वेदसहित होय पण वेदरहित न होय. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते वेदसहित होय तो ज़ुं १ स्त्रीवेदवाळो होय, २ पुरुषवेदवाळो	

 A State of the set of the set of the set of the set	णं भंते ! केवतिया अज्झवसाणा पन्नत्ता?, गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पन्नता, ते णं भंते ! पसत्था अप्प- सत्था ?, गोयमा ! पसत्था नो अप्पसत्था, से णं भंते ! तेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वद्यमाणेहिं अणतेहिं नेर इयभवरगहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ अणंतेहिं तिरिक्खजोणिय जाव विसजोएइ अणंतेहिं मणुस्सभवरगह- हिंतो अप्पाणं विसंजोएइ अणंतेहिं देवभवरगहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, जाओवि यसे इमाओ नेरइयतिरि- क्खजोणियमणुस्सदेवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपयडीओ, तासिं च णं उवरगहिए अणंताणुबंधी कोहमाणमा- यालोभे खवेइ, अणं० २ अपचक्खाणकसाए कोहमाणमायालोभे खवेइ अप्प० २ पचक्खाणावरणकोहमाणमाया लोभे खवेइ पच०२ संजलणकोहमाणमायालोभे खवेइ संज० २ पंचविहंनाणाव० नवविहं दरिसणाव० पंचविह-	* * * * * * * * * * * * * * * *	९ ञ त्तके उद्देश्वः ४ ॥७६१॥	
A SA	च्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुन्ने केवल्वरनाणदंसणे समुप्पन्ने (सूत्रं ३६७)। [प्र०] हे भगवन् ! ग्रुं ते (अवधिज्ञानी) सकषायी होय के अकषायी होय ? [उ०] हे गौतम ! ते सकषायी होय, पण कषाय-	25-405		

च्याख्या-

प्रज्ञप्तिः

119૬૨11

1×

8

A-9-4-

a a a a a a a

t seals

ख्याता अध्यवसायो कह्यां छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते अध्यवसायो प्रश्नस्त होय के अप्रश्नस्त होय ? [उ०] हे गौतम ! प्रश्नस्त अध्यव- सायो होय, पण अप्रश्नस्त न होय. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अवधिज्ञानी) द्वद्वि पामता प्रश्नस्त अध्यवसायोवडे अनंत नारकना भवोथी पोताना आत्माने विम्रुक्त करे, अनंत तिर्थचोना भवथी आत्माने विम्रुक्त करे, अनं तमनुष्यभवोथी आत्माने विम्रुक्त करे, अने अनंत देवभवोथी आत्माने विम्रुक्त करे. तथा तेनी जे आ नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति अने देवगति नामे चार उत्तर प्रकृतिओ छे, तेनी अने बीजी प्रकृतिओना आधारभूत अनंतानुबंधी कोध, मान, माया अने लोभनो क्षय करे, तेनो क्षय करीने अप्रत्याख्यान कषायरूप कोध, मान, माया अने लोभनो क्षय करे, क्षय करीने प्रत्याख्यानावरण कोध, मान, माया अने लोभनो क्षय करे, तेनो क्षय करी संज्वलन कोध, मान, माया अने लोभनो क्षय करे, पछी पांच प्रकारे ज्ञानावरणीय कर्म, नव प्रकारे दर्शनावरणीय कर्म, पांच प्रकारे अंतराय कर्म, तथा मोडनीय कर्मने छे दायेल मस्तकवाळा ताडव्रक्षना समान (क्षीण) करीने कर्म रजने विखेरी नांख- नार अपूर्व करणमां प्रवेद्य करेला एवा तेने अनंत, अनुत्तर, व्याघातरहित, आवरणरहित, सर्व पदार्थने ग्रहण करनार, प्रतिपूर्ण श्रेष्ठ एवं केवलझान अने केवलदर्शन उत्पन्न थाय छे. ॥ ३६७ ॥	९ सतके उद्देश ः४ ॥७६ २॥
से णं भंते ! केवलिपन्नत्तं धम्मं आघवेज वा पन्नवेज वा परूवेज वा ?, नो तिणहे समहे, णण्णत्थ एगणा- एण वा एगवागरणेण वा, से णं भंते ! पच्वावेज वा मुंडावेज वा ?, णो तिणहे समहे, उवदेसं पुण करेजा, से	

च्याख्या- प्रव्वसिः &७६३॥	CASABCASCASCASCASCASCASCASCASCASCASCASCASCASC	णं भंते ! सिज्झति जाव अंतं करेति ?, हंता सिज्झति जाव अंतं करेति ॥ (सुत्रं ३६८) ॥ [ब्र॰] हे भगवन् ! ते (केवलज्ञानी) केवलिए कहेल धर्मने कहे, जणावे अने प्ररूपे ? [उ॰] हे गौतम ! ते अर्थ योग्य नथी, परन्तु एक न्याय-उदाहरण अने एक (प्रश्नना) उत्तर ग्निवाय. (अर्थात् ते अश्वत्वा केवली एक उदाहरण या एक प्रश्नना उत्तर शिवाय धर्मनो उपदेश न करे.) [प्र॰] हे भगवन् ! ते (केवली) कोइने प्रवल्या आपे, द्वंडे-दीक्षा आपे ? [उ॰] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी, पण मात्र ('अम्रुकनी पासे प्रवल्या ग्रहण करो' एवो) उपदेश करे. [प्र॰] हे भगवन् ! ते (अश्वत्वा केवलज्ञानी) सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो अंत करे ? [उ॰] हा, सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो अन्त करे. ॥ ३६८ ॥ से णं भंते ! किं उड्ढं होज्जा अहो होज्जा तिरियं होजा ?, गोयमा ! उड्ढं वा होजा अहे वा होजा तिरियं वा होजा, उड्ढं होजमाणे सदावइवियडावइगंधावइमालवंतपरियाएसु वद्ववेयद्रुपच्वएसु होजा, साहरणं पडुच मोम- णसवणे वा पडंगवणे या होजा, अहे होज्जामाणे गड्डाए वा दरीए वा होजा, साहरणं पडुच पायाले वा भवणे वा होजा, तिरियं होज्जमाणे पन्नरससु कम्मभूमीसु होजा, साहरणं पडुच अड्ढाइजे दीवससुदे तदेकदेसभाए होजा, ते णं भंते ! एगसमएणं केवतिया होजा?, गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं दस, से तेणहेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ असोचा णं केवल्लिस वा जाव अत्थेगतिए केवल्यित्वत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए अत्थेग- तिए असोचा णं केवलि जाव नो लभेज्ज सवणयाए जाव अत्थे केवल्यातिए नाणं उप्पाडेज्जा अत्थेगतिए केव- लनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥ (सूत्रं ३२९) ॥	x & 2 & 0 & 0 & 0 & 0 & 0 & 0 & 0 & 0 & 0	९ ञ तके उद्दे ग्रः ४ ॥७६ ३॥	
---------------------------------	---	--	---	---	--

च्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥७६४॥	[प०] हे भगवन् ! ते (अश्वत्वा केवलज्ञानी) ऊर्ध्वलोकमां होय, अधोलोकमां होय के तिर्यंग लोकमां होय ? [उ०] हे गौतम ! ते ऊर्ध्वलोकमां पग होय, अधोलोकमां पण होय अने तिर्यग् लोकमां पण होय. जो ते ऊर्ध्वलोकमां होय तो ग्रब्दापाति, विकटा- पाति, गंधापाति, अने माल्यवंत नामे दृत्तवैतात्व्य पर्वतीमां होय. तथा संहरणने आश्रयी सौमनस्यवनमां के पांडुकवनमां होय. जो ते अधोलोकमां होय तो गर्ता—अधोलोकग्रामादिमां के गुफामां होय, तथा संहरणने आश्रयी सौमनस्यवनमां के पांडुकवनमां होय. जो ते अधोलोकमां होय तो गर्ता—अधोलोकग्रामादिमां के गुफामां होय, तथा संहरणने आश्रयी पातालकलज्ञमां के भवनमां (भवनवासि देवोना रहेठाणमां) होय, जो ते तिर्यग्लोकमां होय तो ते पंदर कर्मभूमिमां होय, अने संहरणने आश्रयी अठी द्वीप अने समुद्रोना एक भागमां होय. [प०] हे भगवन् ! ते (अश्वत्वा केवलज्ञानी) एक समये केटला होय ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी एक, बे, त्रण अने उत्कृष्टथी दस होय. माटे हे गौतम ! ने हेतुथी एम कह्युं छे के, केवली पासेथी यावत् सांभळया विना कोइ जीवने केव- लिए कहेल धर्म-श्रवणनो लाभ थाय अने केवली पासेथी सांभळया सिवाय कोई जीवने केवलिप्रणीत घर्म श्रवणनो लाभ न थाय, यावत् कोइ जीव केवल्ज्ञानने उत्पन्न करे अने कोइ जीव केवल्ज्ञानने न उत्पन्न करे. ॥ ३६९ ॥ सोचाणं भंते ! केवलिस्स वा जाव तपक्तिस्य उवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ?, गो यमा ! सोच्चाणं केवलिस्स वा जाव तपक्तिस्य क्वेत्विरात्तं धम्मं एवं जा चेव असोचाए वत्तव्वया सा चेव सोच्चएवि भाणियव्वा, नवरं अभिलावो सोच्चेति, सेसं तं चेव निरवसेसं जाव जस्स णं मणपज्जवनाणावरणि- ज्ञाणं कम्माणां खाओवसमे काले भवहे जद्द जस्प जं केवल्लगणार पिजज्याण केम्माणं खिए कडे जवइ से णं सोचा- केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं लब्भ्य जायाए केवलं बोहिं बुज्झेज्जा जाव केवलनाणं	८ अतक उद्देश ः४ ॥७ ६४॥
	े केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा केवलिपन्नत्त धम्म लब्भइ सवणयाए केवलं बोहिं वुज्झेज्जा जाव केवलनाणं 🧳	2

प्रकांसः ि इभाग उक्कांसण असंखज्जाइ अलाए लायप्रमाणमत्ताइ खण्डाइ जाणइ पासइ !! स ण मत ! कातस अस्सास ि उद्देव	शतके (चःष्ठ ३६ ५॥
---	--------------------------------

प्रबन्धिः क्रिंगा हाज्या अयागा हाजाः, एव जागावआगा संघयण सठाण उच्चत्त आउय च,एयाणि सव्वाणि जहा असा- क्र प्रबन्धिः क्रिंचाए तहेव भाणियव्वाणि।से णं भंते! किं संवेदए०१,पुच्छा,गोयमा!संवेदए होजा अवेदए वा, जह अवेदए होजा 🐇 उद्दे	चतके (दा:४ 9 ६ ६॥
--	---------------------------------------

म्याख्या-प्रइप्तिः

ାଡ଼ହେ**ା**

भान, अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञानमां होय. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अवधिज्ञानी) सयोगी होय के अयोगी होय ? [उ०] एतें कह्यां प्रमाणे योग, उपयोग, संघयण, संस्थान, उंचाइ, अने आयुष् ए बधा जेम 'असोचा' ने कह्या (स्र० १२-२०) तेम अहीं कहेवां. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अवधिज्ञानी) छुं वेदसहित होय-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! वेदसहित होय के बेदरहित पण होय. [प्र०] हे भगवन् ! जो वेदरहित होय तो छुं ते उपशांतवेदवाळो होय के क्षीणवेदवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! उपशांतवे- द्वाळो न होय, पण क्षीणवेदवाळो होय. [प्र०] हे मगवन् ! जो वेदसहित होय तो छुं ते स्रीवेदवाळो होय, पुरुषवेदवाळो होय, पुरुषवेदवाळो होय, नपुंसकवेदवाळो हो हो के पुरुषनपुंसकवेदवाळो होय [उ०] हे गौतम ! ते स्रीवेदवाळो होय, पुरुषवेदवाळो होय, पुरुषवेदवाळो होय ? पण होय. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अवधिज्ञानी) छुंसकपायी होय के अकषायी होय, पुरुषवेदवाळो होय के पुरुषनपुंसकवेदवाळो तपण होय. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अवधिज्ञानी) छुंसकपायी होय के अकषायी होय, पुरुषवेदवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! नपुंसकवेदवाळी होय के पुरुषनपुंसकवेदवाळो होय [उ०] हे गौतम ! ते स्रीवेदवाळो होय, पुरुषवेदवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! वराशांतकषायी न होय, पण क्षीणकषायी होय. [प्र०] हे भगवन् ! जो से स्वषायी होय ? [उ०] हे गौतम ! उपशांतकषायी न होय, पण क्षीणकषायी होय. [प्र०] हे भगवन् ! जो सकषायी होय तो ते केटला कषायोमां होय ? [उ०] हे गौतम ! ते चार कपायोमां, त्रण कपायोमां होय . [प्र०] हे भगवन् ! जो सकपायी होय तो ते केटला कपायोमां होय ? [उ०] हे गौतम ! ते चार कपायोमां, त्रण कपायोमां होय तो संज्वलन मान, माया अने लोभमां होय. जो वे कपायोमां होय तो संज्वलन माया अने लोभमां होय. जो त्रण कषायमां होय तो एक संज्वलन लोभमां होय. तस्स णं भंते! केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता?,गोयमा! असंखेज्जा. एवं जहा असोचाए तहेव जाव केवलवर- नाणपदंसणे ससुरुज्जइ, से णं भंते! केवलिएपन्नते धम्मं आघवेऊ वा पन्नवेज्ज वा पन्नवेज्ज वा ?, इंना आघवेज्ज वा

 पन्नबेज्ज वा परूबेज्ज वा,से णं भंते ! पच्वाबेज था मुंडावेज्ज वा?, हंता गोयमा ! पच्वावेज वा मुंडावेज्ज वा, तस्स णं भंते! पसिस्साबि पच्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा?, हंता पच्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा, तस्स णं भंते! पसिस्साबि पच्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा?, हंता पच्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा, तस्स णं भंते! पसिस्साबि पच्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा?, हंता पच्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा, तस्स णं भंते! पसिस्साबि पच्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा?, हंता पच्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा, तस्स णं भंते! पसिस्साबि पच्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा?, हंता पच्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा, मंगे मंते! सिल्झति जाव अंतं करेइ?, हंता पच्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा, मंगे मंते! सिस्साबि सिज्झति जाव अंतं करेन्ति ?, हंता सिज्झति जाव अंतं करेइ?, हंता सिज्झ ह वा जाव अंतं करेइ. तस्स णं भंते! सिस्सावि सिज्झति जाव अंतं करेन्ति ?, हंता सिज्झति जाव अंतं करेइ?, हंता उद्देशाभ्र करेन्त, तस्स णं भंते! पसिस्सावि सिज्झति जाव अंतं करेन्ति, एवं चेव जाव अंतं करेन्ति , तस्स णं भंते! पसिस्सावि सिज्झति जाव अंतं करेन्ति, एवं चेव जाव अंतं करेन्ति । से णं भंते ! करेन्ति , तस्स णं भंते ! पसिस्सावि सिज्झति जाव अंतं करेन्ति, एवं चेव जाव अंतं करेन्ति । संगं भंते ! पिसस्सावि सिज्झति जाव अंतं करेन्ति, एवं चेव जाव अंतं करेन्ति , गोयमा ! जंब्रिंगे ! वोच्चलति या होज्जा ?, गोयमा ! ७द्ध खुच्च होजा जहं कर्या गति कहं ते करित्त तस्य गं भंते ! परिसस्सावि सिज्झति जाव अंतं करेन्ति , एवं खुच्च हन्ती त्रा कोल्ल कर्वा जा व तिन्नि वा चा तत्व करेक्र स्ता गं अतं कर्वल्या अत्येणतिए नो केवलताणं उपपाहेज्जा । त्र कहं भाव कर्वा जाव केवलिञ्चा सिंग केवल्ला जत्व केवलिञ्च वा जाव केवलिञ्च सियाए वा जाव अत्येगतिए केवलनाणं उपपाहेज्जा अत्येगतिए नो केवल्ताणं उपपाहेज्जा । [ण्व] हे भावत्त ! तेने करेला अध्य साय करे केवल्त्या च जरे केवलदर्यन उत्यन्न थाय क्रे लांस्स करेल्या । [ण्व] हे भावत्य ! तेने करेला पत्र कर्व कर्य कर्व कर्व कर्व कर्वा करे केवल्दर्यन उत्यन्न थाय क्रे लांस्य प्रज्य अपे के क्रित्र कर्व प्र प्रक्य प्रि केवल्य ज्य प्रत्य आपे दीक्षा जरे करे प्रक्य प्र प्रत्व कर्य जत्य त्र त्र कर्य प्रि केवल्या आपे, दीया आपे ! दिंव जित्व या अ

■याख्या- प्रकासिः ॥७६९॥	📲 'असीचा' केवली संबंध कह्यू (मु. ३१) ते भगाणे जाणवुं, यावत् (अढी द्वीव समुद्र के) तेना एक भागमां होय. पि० हे भगवन् !	a di la di	९ ञतके उद्देश्वःध ॥७ ६९॥
-------------------------------	--	------------	--

अत्र वांदवा निकळी. धर्मोपदेश कर्यो पर्षद् विसर्जित थइ. ते काले-ते समये श्रीपार्श्वप्रभुना शिष्य गांगेय नामे अनगार ज्यां श्रमण 🛱 अगवन् महावीर विराजमान हता त्यां आव्या, आवीने श्रमण भगवंत महावीरनी पासे थोडे दूर बेसीने तेणे श्रमण भगवंत महावीरने

गाउँँएगा गागेय ! पृथिवीकायिक जीवो सन्तर उत्पन्न थता नथी, पण निरंतर उत्पन्न थय छे. ए प्रमाणे यावद् वनस्पतिकायिक जीवो सुधी जाणबुं. बे इन्द्रिय जीवोथी मांडी यावद् वैमानिको नैरयिकोनी पेठे (स॰ २) जाणवा. ॥ ३७१ ॥ संतरं भंते ! नेरइया उववहंति निरंतरं नेरइया उववहंति ?, गंगेया ! संतरंपि नेरइया उववहंति निरंतरंपि नेरइया उववहंति, एवं जाव थणियकुमारा, संतरं भंते ! पुढविकाइया उववहंति ? पुच्छा, गंगेया ! णो संतरं पुढविकाइया उववहंति, एवं जाव थणियकुमारा, संतरं भंते ! पुढविकाइया उववहंति ? पुच्छा, गंगेया ! णो संतरं पुढविकाइया उववहंति, निरंतरं पुढविकाइया उववहंति एवं जाव वणस्सइकाइया नो संतरं, निरंतरं उव्वहंति, संतरं पुढविकाइया उव्वहंति निरंतरं युढविकाइया उव्वहंति ?, गंगेया ! संतरंपि बेइंदिया उव्वहंति निरंतरंपि बेइं- संतरं भंते ! बेइंदिया उव्वहंति निरंतरं बेंदिया उव्वहंति ?, गंगेया ! संतरंपि बेइंदिया उव्वहंति निरंतरंपि बेइं- दिया उव्वहंति, एवं जाव वाणमंतरा, संतरं भंते ! जोइसिया चयंति ? पुच्छा, गंगेया ! संतरंपि जोहसिया चयंति निरंतरंपि जोइंसिया चयंति एवं जाव वेमाणियावि (सूच्च ३७२) ॥ [प०] हे भगवन् ! नैरयिको सांतर च्यवे छे के निरंतर च्यवे छे ? [उ०] हे गांगेय ! नैरयिको सांतर पण च्यवे छे अने निरं र पण च्यवे छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितक्रुमार सुधी जाणवुं [प०] हे भगवान् ! प्रिथिकोतियिक जीवो सांतर च्यवे छे ? -इत्यादि	९ शतके उद्देशः (100१)।
---	-------------------------------------

म्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥७७२॥	ES & B & B & B & B & B & B & B & B & B &	प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! पृथिवीकायिक जीवो निरंतर च्यवे छे पण सांतर च्यवता नथी. ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिक जीवो सान्तर च्यवता नथी, पण निरन्तर च्यवे छे. [प्र०] हे भगवन् ! बेइन्द्रिय जीवो सांतर च्यवे छे के निरंतर च्यवे छे ? [उ०] हे गांगेय ! बेइन्द्रिय जीवो सांतर पण च्यवे छे अने निरंतर पण च्यवे छे. ए प्रमाणे यावद् वानव्यन्तर सुधी जाणवुं. [प्र०] हे भग वन् ! ज्योतिषिक देवो सांतर च्यवे छे ?-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ज्योतिषिक देवो सांतर पण च्यवे छे अने निरंतर पण च्यवे छे. ए प्रमाणे यावद् वैमानिक देवो सुधी जाणवुं. ॥ ३७२ ॥ कइचिहे णं भंते ! पवेसणए पन्नत्ते?, गंगेया ! चउन्विहे पवेसणए पन्नत्ते, तंजहा-नेरइयपवेसणए तिरियजो- णियपवेसणए मणुस्सपवेसणए देवपवेसणए । नेरइयपवेसणए णं भंते ! कहविहे पन्नत्ते ?, गंगेया ! सत्तविहे पन्नत्ते, तंजहा-रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए ॥ एगे णं भंते ! नेरइए नेरइयपवेसणएणं पविसमाणे किं रयणप्पभाए होज्जा सकरप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?, गंगेया! रयणप्पभाए वा होजा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।दो भंते ! नेरइया वेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्प पपाए होजा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?, गंगेया! रयणप्पभाए एगे वाऌयप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्तरप्पभाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वाऌयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्तरप्पभाए भाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वाऌयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्तरप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वाऌयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए	TO ASPACE ASPACE	उद्देश ः ५ ॥७७ २॥
-----------------------------------	--	--	------------------	------------------------------------

●यारूया- प्रक्रसिः	Stor of the S	एगे अहेसत्तमाए ढोजा, एवं एकेका पुढवी छड्डेयव्वा जाव अहवा एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा ॥ [प्र०] हे भगवन् ! प्रवेशनक (उत्पत्ति) केटला प्रकारे कहेल छे ? [उ०] हे गांगेय ! प्रवेशनक चार प्रकारे कह्यां छे. ते आ प्रमाणे-१ नैरयिकप्रवेशनक, २ तिर्थचयोनिकप्रवेशनक, ३ मनुष्यप्रवेशनक अने ४ देवप्रवेशनक. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकप्रवे	९ भतके उद्देशः५
11 90311	K SA SA SA SA SA SA SA SA	शनक केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गांगेय ! सात प्रकारे कहुं छे. ते आ प्रमाणे-१ रत्तप्रभाष्टथिवीनैरयिकप्रवेशनक, यावद् ७ अधःसप्तमप्रथिवीनैरयिकप्रवेशनक. [प०] हे भगवन् ! एक नारक जीव नैरयिकप्रवेशनकद्वारा प्रवेश करतो शुं १ रत्नप्रभाष्टथिवीमां होय, २ शर्कराप्रभाष्टथिवीमां होय के यावद् ७ अधःसप्तमप्रथिवीमां होय ? [उ०] हे गांगेय ! ते १ रत्नप्रभाष्टथिवीमां पण होय, यावद् ७ अधःसप्तमप्रथिवीमां एण होय. [प०] हे भगवन् ! बे नारको नैरयिकप्रवेशनकद्वारा प्रवेश करता शुं रत्नप्रभाष्टथिवीमां उत्पन्न थाय के यावद् अधःसप्तमप्रथिवीमां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गांगेय ! ते बन्ने १ रन्तप्रभाष्टथिवीमां होय, के यावद् ७ अधः सप्तमनरकप्रथिवीमां होय. ? अथवा एक रत्नप्रभाष्टथिवीमां होय अने एक शर्कराप्रभाष्टथिवीमां होय. २ अर्थवा एक रत्नप्रभाष्टथिवीमां होय अने एक वाद्धकाप्रभाष्टथिवीमां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गांगेय ! ते बन्ने १ रन्तप्रभाष्टथिवीमां होय, के यावद् ७ अधः सप्तमनरकप्रथिवीमां होय. ? अथवा एक रत्नप्रभाष्टथिवीमां होय अने एक शर्कराप्रभाष्टथिवीमां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभाष्टथिवीमां होय अने एक वाद्धकाप्रभाष्टथिवीमां होय. यावत् ६ एक रत्नप्रभामां होय अने एक अधःसप्तमनरकप्रथिवीमां होय. (३ एक रत्नप्रभा पृथिवीमां होय अने एक पंकप्रभाष्टथिवीमां होय. ४ अथवा एक रत्नप्रभाष्टथिवीमां होय अने एक धूमप्रभाष्टथिवीमां होय. ५ अथवा एक रत्नप्रभाष्टथिवीमां होय अने एक तमःप्रभाष्टथिवीमां होय. ६ अथवा एक रत्नप्रभाष्टथिवीमां होय अने एक वात्यक्रप्रभाष्ट वीमां होय. ए रीते रत्नप्रभा साथे छ विकल्प थाय छे.) १ अथवा एक शर्कराप्रभाष्टथिवीमां होय अने एक वात्यकाप्रभाष्टथिनीमां होय. यावत् ५ अथवा एक शर्कराप्रभामां होय अने एक अधःसप्तम नरकप्रथिवीमां होय. (२ एक शर्कराप्रभाष्टथिवीमां होय. यावत् ५ अथवा एक शर्कराप्रभामां होय अने एक अधःसप्तम नरकप्रथिवीमां होय. (२ एक श्रर्कराप्रभाष्टथिनीमां होय. यावत् ५ अथवा एक शर्कराप्रभामां होय अने एक अधःराप्रभाण्टथिवीमां होय. अने एक वात्यकाप्रभाष्ठविनीमां	11093H

म्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥७७४॥	पांच विकल्प भर्कराप्रभा साथे थाय छे.) १ अथवा एक वालुकाप्रभामां होय अने एक पंकप्रभामां होय. (२ अथवा एक वालुका- प्रभामां होय अने एक धूमप्रभामां होय, ३ अथवा एक वालुकाप्रभामां होय अने एक तमःप्रभामां होय.) ए प्रमाणे यावत् ४ अथवा एक वालुकाप्रभामां होय अने एक अधःसप्तम नरकप्रधिवीमां होय. ए प्रमाणे आगलआगलनी एक एक पृथिवी छोडी देवी, यावत् एक तमामां होय अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. (एटले वालुकाप्रभामां साथे चार विकल्प थाय छे. १ अथवा एक पंकप्रभामां होय अने एक धूमप्रभामां होय. २ अथवा एक पंकप्रभामां होय अने एक तमःप्रभामां होय, ३ अथवा एक पंकप्रभामां होय अने एक धूमप्रभामां होय. २ अथवा एक पंकप्रभामां होय अने एक तमःप्रभामां होय, ३ अथवा एक पंकप्रभामां होय अने एक धूमप्रभामां होय. २ अथवा एक पंकप्रभामां होय अने एक तमःप्रभामां होय, अथवा एक पंकप्रभामां होय. एक तमःतमामां होय. ए रीते पंकप्रभा साथे त्रण विकल्प थाय छे. १ अथवा एक धूमप्रभामां होय अने एक तमःप्रभामां होय, २ अथवा एक धूमप्रभामां होय अने एक तमःतमामां होय. ए प्रमाणे धूमप्रभा साथे वे विकल्प थाय छे. १ अथवा एक तमःप्रभामां होय, अवा एक धूमप्रभामां होय. ए रीते तमःप्रभामां होय. ए प्रमाणे धूमप्रभा साथे वे विकल्प थाय छे. १ अथवा एक तमःप्रभामां होय अने एक तमतमाप्रभामां होय. ए रीते तमःप्रभा साथे एक विकल्प थाय छे) तिन्नि भंते!नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा?,गंगेया!रयण- एभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा,अहवा एगे रयणप्पभाए दो सकरप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयण-	९ श्रतके उदेशःभ अ उदेशःभ ॥७७४॥
,	े प्पभाए दो अहेमत्तमाए होज्ञा६ अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्ञा जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्ञा १२ अहवा एगे सक्करप्पभाए दो वाऌयप्पभाए होज्ञा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए दो अहे-	A¥ A A

ध्याख्या- प्रक्रप्तिः ॥७७५॥	A A A A A A A A A A A A A A A A A A A	सत्तमाए होज्जा १७ अहवा दो सकरप्पभाए एगे वात्छ्यप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो सकरप्पभाए एगे अहेस- त्तमाए होज्जा २२ एवं जहा सकरप्पभाए वत्तव्वया भणिया तहा सव्वपुढवीणं भाणियव्वा जाव अहवा दो त- माए एगे अहेमत्तमाए होज्जा, ४-४-३-३-२-२-१-१ (४२) [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता त्रण नैरयिको शुं रत्नप्रभामां होय के यावत् अधःसप्तम पृथिवीमां होय ? [उ०] हे गांगेय ! ते त्रण नैरयिको १ रत्नप्रभामां पण होय अने यावत् ७ अधःसप्तम पृथिवीमां पण होय. १ अथवा एक रत्नप्र भामां अने बे शर्कराग्रभामां होय. यावत् ६ एक रत्नप्रभामां होय अने वे अधःसप्तम पृथिवीमां पण होय. १ अथवा एक रत्नप्र भामां अने बे शर्कराग्रभामां होय. यावत् ६ एक रत्नप्रभामां होय अने वे अधःसप्तम नरकमां होय. (ए प्रमाणे १–२ ना रत्नप्रभामां साथे अनुक्रमे बीजी नरकपृथिवीओनो संयोग करतां छ विकल्प थाय.) १ अथवा वे रत्नप्रभामां अने एक शर्कराग्रभामां होय. यावत् ६ वे रत्नप्रभामां होय अने एक अधःसप्तम नरकपृथिवीमां होय (ए प्रमाणे २–१ ना बीजा छ विकल्पो थाय.) १ अथवा एक शर्क- राग्रभामां अने वे वालुकाप्रभामां होय. यावत् ५ अथवा एक शर्कराग्रभामां अने वे अधःसप्तम नरकमां होय. (ए रीते १–२ ना पांच विकल्प थाय.) १ अथवा वे शर्कराग्रभामां अने एक वालुकाग्रभामां होय. यावत् ५ अथवा वे शर्कराग्रभामां अने एक अर्वराग्रभामां प्रविकल्प थाय.) १ अथवा वे शर्कराग्रभामां अने एक वालुकाग्रभामां होय. यावत् ५ अथवा वे शर्कराग्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. (ए प्रमाणे २–? ना पांच विकल्प थाय.) जेम शर्कराग्रभानी वक्तव्यताकही रुम साते पृथिवीओनी कहेवी. (ते आ प्रमाणे–१ एक बालुकाग्रभामां अने वे पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ४ एक वालुकाग्रभामां छोय ए ममाणे यावत् ४ वे बालुका- प्रभामां होय अने एक तत्रतमामां होय. १ अथवा वे वालुकाग्रभामां होय अने एक पंकप्रभामां होय ए भमाणे यावत् ४ वे वालुका- प्रमामो होय अने एक तत्रतमामां होय. ए प्रमाणे २–१ ना चार विकल्प थाय. १ अथवा एक पंकप्रभामां होय अने वे भूमप्रमामां	*00 *00 *00 *00 *100 *00 *	
-----------------------------------	---------------------------------------	--	----------------------------	--

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra

प्रज्ञाप्तिः 🐉 होय. एम १-२ ना बे विकल्पो थाय. १ अथवा बे धुमप्रभामां होय अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा बे धूमप्रभामां होय अने	श्वतके (स्न ः भ 9७६॥
---	-----------------------------------

6 4 2 4 2 4 2 4 2 4 2 4 2 4 2 4 2 4 2 4	धूमप्पभाए होज्जा १७ जाव अहवा एगे सकरप्पभाए एगे वाऌयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होजा १९ अहवा एगे सकरप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा २० जाव अहवा एगे सकरूरु एगे पंक०एगे अहेसत्तमाए होज्जा २२ अहवा एगे सकरप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा २३ अहवा एगे सकरप्पभाए एगे धूमप्प० एगे अहेसत्तमाए होज्जा २४ अहवा एगे सकरप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २५ अहवाएगे वाऌय- प्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा २६ अहवा एगे वाऌयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे वाऌय- प्पभाए एगे वाऌयप्पभाए एगे पूमप्पभाए होज्जा २६ अहवा एगे वाऌयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा २७ अहवा एगे वाऌयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा २६ अहवा एगे वाऌयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे वमाए होज्जा २७ अहवा एगे वाऌयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा २६ अहवा एगे वाऌयप्पभाए एगे अहेमत्तमाए होज्जा ३० अहवा एगे वाऌयप्पभाए एगे तमाए होज्जा २९ अहवा एगे वाऌयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेमत्तमाए होज्जा ३० अहवा एगे वाऌयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३१ अहवा एगे पंकप्पभाए एगे वाऌयप्पभाए एगे वमाए होज्जा ३२ अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेमत्तमाए होज्जा ३२ अहवा एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा ३२ अहवा एगे पंकप्रसाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेमत्तमाए होज्जा ३२ अहवा एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा ३२ आहवा एक रत्नप्रभामा एगे धूमप्पभाए एगे ताराए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३५ १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक वर्कराप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक पंकप्रभामां होय. यावत् ५ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां छने एक अर्धराप्रभामां छोय. (३ एक रत्न प्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. ४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ५ अथवा एक रत्नप्रभामां छने कर्कराप्रभामां छने एक तमःतमाप्रभामां होय. ए प्रमाणे रत्नप्रभा साथे पांच विकल्प थाय.) १ अथवा		९ शतके उद्देश्च ः ५ ॥७७७॥
A SA	अने एक पकप्रभामा होय. यावत् ५ अथवा एक रत्नप्रभामा एक शकराप्रभामा अने एक अधःसप्तम पृथिवामा होय. (३ एक रत्न- प्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. ४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक तम प्रभामां होय. ५ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक तमःतमाप्रभामां होय. ए प्रमाणे रत्नप्रभा साथे पांच विकल्प थाय.) १ अथवा	94-96-94-9	

ञ्याख्या-प्रक्वप्तिः

||999||

www.kobatirth.org

ष्याख्या- प्रज्ञप्तिः ॥७७८॥	S S	प्रमाणे शर्कराप्रभाने छोडीने चार विकल्प थाय.) १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. यावत् ३ अथवा एक रत्नप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. (२ अथवा एक रत्नप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक तमःतमःप्रभामां होय. ए रीते वालकाप्रभा छोडीने त्रण		ৎ হাবকे उद्देश ः ५ ॥७७८॥
-----------------------------------	-----	--	--	--

म्याख्या- प्रइप्तिः ॥७७९॥	A DE A DE A DE A DE	तमःप्रभामां होय. ३ अथवा एक घर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक तमःतमःप्रभामां होय. एम वालुकाप्रभाने छोडीने त्रण विकल्प थाय.) १ अथवा एक ग्रर्कराप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा एक ग्रर्कराप्रभामां एक धूम प्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. (एम पंकप्रभाने छोडीने वे विकल्प थाय.) १ अथवा एक ग्रर्कराप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. (ए रीते धूमप्रभाने छोडीने एक विकल्प थाय.) ए प्रमाणे ग्रर्करा० ना ४-३-२-१ मळीने दश विकल्पो थाय छे. १ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. २ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ३ अथवा एक वालुकाप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. २ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ३ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. (ए रीते वालुका॰ साथे त्रण विकल्प थया.) १ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमामां होय. २ अथवा एक वालुकाश्रभामां अने एक उम्प्रभामां छोय. १ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमामां होय. २ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां को एक अधःसप्तम नरकमां होय. (पंक० छोडीने बे विकल्प.) १ अथवा एक वालुकाप्र- भामां एक तमामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. (ए एक विकल्प मळी वालुका॰ साथे छ किकल्प थया.) १ अथवा एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. ३ अथवा एक पंकप्रभामां एक तमःप्रभामां छो एक अधःसप्तम नरकमां होय. (एम पंक० साथे त्रण विकल्प थया.) १ अथवा एक धूमप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. ((धूम॰ साथे एक विकल्प थयो.) १५-१०-६-३-	3 10 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20 20	सतके स्र‡६ ७९॥
	X HO HO HO HO HO HO HO		A 20 4 30 4 2	

चत्तारि भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होजा ? पुच्छा, गंगेग रयणप्पभाए वा होजा जाव अहेसत्तमाए वा होजा ७, अहवा एगे रयणप्पभाए तिन्नि सक्करप्पभा होजा अहवा एगे रयणप्पभाए तिन्नि वाळुयप्पभाए होजा एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए तिन्नि अहेसत्तमाए होजा ६ अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होजा एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो अहेसत्तभाए होजा ६ अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होजा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो अहेसत्तभाए होजा १२, अहवा तिन्नि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होजा, एवं जाव अहवा तिन्नि रयणप्पभाए पभाए एगे अहेसत्तमाए होजा १८, अहवा एगे सक्करप्पभाए तिन्नि वाळुयप्पभाए होजा, एवं जहेव रयणप्प भाए उवरिमाहिं समं चारियं तहा सक्करप्पभाएवि उवरिमाहिं समं चारेयव्वं ५, उवं एकेक्षाए समं चारियव्वं जाय अहवा तिन्नि तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा १२-६-३-(६३) [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता चार नैरयिको ग्रं रत्नभामां होय ?-इत्यादि प्रश्न [उ०] हे गांगेय ते चारे १ रत्नप्रभामां अने वण शर्कराप्रभामां होय २ अथवा एक रत्नप्रभामां छोय त्र वा वक्रत्य थया.) अथवा एक रत्नप्रभामां अने वण शर्कराप्रभामां होय २ अथवा एक रत्नप्रभामां छोत्र विकर्प थया.) श्रव्वा एक रत्नप्रभामां अने वण शर्कराप्रभामां होय (एम ?-३ ना छ विकल्प थया.) १ अथवा वे रत्नप्रभामां अने श्रकराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ अथवा वे रत्नप्रभामां छोत् वे अधःसप्तम पृथिवीमां होय. (ए प्रमाणे वीजी रीते २-२ व छ विकल्प थया.) १ अथवा वण रत्नप्रभामां अने एक शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यात् ६ अथवा वण रत्नप्रभामां अने एक	९ शतके उद्देशःभ ॥७८०॥
--	-----------------------------

अधःसप्तम प्रथिवीमां होय. (ए त्रीजी रीते) ३-१ ना छ विकल्प थया. ए प्रमाणे रत्नप्रभानी साथे अढार विकल्प थाय छे.) १ अथवा एक शर्कराप्रभामां अने त्रण वाळुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभानो उपरनी नरकप्रथिवीओ साथे संचार (योग) कर्यो तेम शर्कराप्रभानो पण उपरनी नरकप्रथिवीओ साथे संचार करवो. एवी रीते एक एक नरक प्रथिवीओ साथे योग करवो. यावत अथवा त्रण तमामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. ण्याच्या-1150611 11928# अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सकरप्पभाए दो बालु यप्पभाए होजा अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सकर० दो पंक० होजा एवं जाव एगे रयणप्पभाए एगे सकर० दो अहसत्तमाए होजा ५ अहवा एगे रयण० दो सकर० एगे वालुयप्पभाए होजा एवं जाव अहवा एगे रयण० दो सकर० एगे अहेसत्तमाए होजा १० अहवा दो रयण० एगे सकर॰ एगे वालुयप्पभाए होजा, एवं जाव अहवा दो रयण॰ एगे सकर॰ एगे अहेसत्तमाए होजा १५ अहवा पगे रयण॰ पगे वालुय॰ दो पंकप्पभाष होजा प्वं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुय॰ दो अहेसत्तमाष होजा ४ एवं एएणं गमएणं जहा तिण्हं तियजोगो तहा भाणियव्वो जाव अहवा दो धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होजा १०५ १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने वे वाळुकाप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभाां एक शर्कराप्रभामां अने वे पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने वे अधःसप्तम नरकप्रथिवीमां होय. (ए रीते १-१-२ ना पांच विकल्प थया.) १ अथवा एक रत्नप्रभामां वे शर्कराप्रभामां अने एक वाळुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ एक

प्रकृतिः

प्रबंधिः कि नरकप्रथिवीमां होय. (ए रीते २-१-१ ना पांच विकल्प थया, अने त्रणे विकल्पना मळीने पदर विकल्पी थया.) १ अथवा एक प्रबंधिः के रत्नप्रभामां एक वालकाप्रभामां अने वे पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत ४ एक रत्नप्रभामां एक वालकाप्रभामां अने वे अधःसमय	स्वतके देश्र म्प ७८ २॥
--	---

www.kobatirth.org

एगे पंक० एगे अहेसत्तमाए होज्ञा १३ अहवा एगे रयण०एगे वाऌ्रया०एगे धूम०एगे तमाए होज्जा १४ अहवा एगे 🖇 रयणप्पभाए एगे वाऌ्रय०एगे धूम० एगे अहेसत्तमाए होजा १५ अहवा एगे रयण०एगे वाऌ्रय०एगे तमाप पगे 🧍 ९ **शतके** अहेसत्तमाए होजा १६ अहवा एगे रयण० एगे पंक० एगे धूम०एगे तमाए होजा १७ अहवा एगे रयण०एगे पंक० । उद्दे**शः**भ एगे धूम०एगे अहेसत्तमाए होजा १८ अहवा एगे रयण० एगे पंत० एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १९ IIVOZZH अहवा एगे रयण०एगे धूम० एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २० अहवा एगे सकर० एगे वालुय० एगे पंक० एगे धूमप्पभाए होज्जा २१ एवं जहा रयणप्पभाए उवरिमाओ पुढवीओ चारियाओ तहा सकरप्पभाएवि उवरि-माओ चारियव्वाओ जाव अहवा एगे सकार० एगे धूम० एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३० अहवा एगे वाऌ्रय० एगे पंक॰ एगे धूम० एगे तमाए होज्जा ३१ अहवा एगे वाऌ्रय० एगे पंक० एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३२ अहवा एगे बालुय॰ एगे पंत॰ एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३३ अहवा एगे वालुय० एगे धूम० एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३४ अहवा एगे पंक० एगे धूम० एगे तमाए एगे अहसत्तमाए होज्जा ३५ ॥ १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक अर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक पंकप्रभामां होय २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक अर्कराप्रभामां एक अर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक अर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने क्र एक तमःप्रभामां होय. ४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक अर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकपृथिवीमां होय.

व्याख्या-

प्रकासिः

1190311

≠्या ख्या- प्रश्वप्तिः ॥७८४॥	(चार विकल्प थया.) १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक पंक- प्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. (त्रण विकल्प थया.) १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक श्रकराप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसप्तम प्रथिवीमां होय. ३ अथवा एक तमःप्रभामां एक कर्कराप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम प्रथिवीमां होय. (ए त्रण विकल्प थया.) १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक कर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक अधःसप्तम प्रथिवीमां होय. (ए त्रण विकल्प थया.) १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. (त्रण विकल्प थया.) १ अथवा एक रत्नप्रभामां अने एक अधःसप्तम प्रथिवीमां होय. (वे विकल्प थया.) १ अथवा एक रत्न- प्रभामां एक वालुकाप्रभामां होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामां एक पंकप्रभामां होय. (वे विकल्प थया.) १ अथवा एक रत्न- प्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पुमप्रभामां अने एक अधःसप्तम प्रथिवीमां होय. (वे विकल्प थया.) १ अथवा एक रत्न- प्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक तमःप्रभामां औने एक अधःसप्तम प्रथिवीमां होय. (एक विकल्प थयो.) १ अथवा एक रत्न- प्रभामां एक पुक्रभामां एक घूमप्रभामां औने एक अधःसप्तम प्रथिवीमां होय. (एक विकल्प थयो.) १ अथवा एक रत्न- प्रभामां एक पुक्रभामां एक घुमप्रभामां औने एक अधःसप्तम प्रधिवीमां होय. (एक विकल्प थयो.) १ अथवा एक उत्न- अधःसप्तम प्रथिवीमां होय. (वे विकल्प थया.) १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक पंकप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम प्रथिवीमां होय. (वे विकल्प थया.) १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. (एक विकल्प थयो.) १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक धूक्रभामां ज्रे एक अधःस्तम नरकमां होय. (एक विकल्प थयो. ए प्रमाणे बधा मळीने रत्नप्रभानाना संयोगवाळा ४–३–२–३–२–१–१–१–१–१–१वीश विकल्प थया.) १ अथवा		ৎ ব্যবক 5 दे ন্ন ঃ দ ॥ ৩৫ ৪॥
---	---	--	--

ण्याच्या-प्रवसिः

H96411

KARADO ADO ADO ADO ADO ADO ADO ADO	एक शर्कराप्रभामां एक वाद्धकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभाष्टथिवीनो बीजी उपरनी प्रथिवीत्रो साथे संचार (योग) कयों, तेम शर्कराप्रभा ष्टथिवीनो पण वीजी वधी उपरनी ष्टथिवीओ साथे योग करवो; यावत् १० अथवा एक झर्कराप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. (शर्कराना संयोगवाळा दश विकल्प थया.) १ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां एक अधःसप्तम प्रथिवीमां होय. ३ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक तमःप्रभामां छक धूमप्रभामां अने एक अधःसप्तम प्रथिवीमां होय. ३ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम प्रथिवीमां होय. ४ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक तमामां अने एक अध्रभ्य तमःप्रभामां डोय. (ए प्रमाणे वालुकाप्रभाना संयोगवाळा चार विकल्प थया.) १ अथवा एक पंकप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. (ए प्रमाणे वालुकाप्रभाना संयोगवाळा चार विकल्प थया.) १ अथवा एक पंकप्रभामां एक पूमप्रभामां एक तमाम मळीने चर नैरयिकने आश्रयी एकसंयोगी ७, दिकसंयोगी ६३, त्रिकसंयोगी १०५ अने चतुःसंयोगी पात्रीश विकल्प थया. अने सर्व मळीने चर नैरयिकने आश्रयी एकसंयोगी ७, दिकसंयोगी ६३, त्रिकसंयोगी १०५ अने चतुःसंयोगी २५ वधा मळीने वसो दस विकल्पो थाय छे.) पंच अंते ! नेरइया नेरइयप्यवेसणएणं पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ? पुच्छा, गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा अहवा एगे रयण० चत्तारि सक्ररप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए तिन्नि अहेसत्तमाए होज्जा अहवा ती त्रियण० दो सक्करप्पभाए होज्जा एवं जाव अहेसत्तमाए होज्जा अहवा चत्तारि	र प्र ।।७८५॥ र र र र र र र र र र र र र र र र र र र
------------------------------------	--	---

म्याख्या-प्रकृतिः

1192811



John Star	रयण० एगे सकरप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा चत्तारि रयण० एगे अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे सकर० चत्तारि वाऌयप्पभाए होज्जा एवं जहा रयणप्पभाए समं उवरिमपुढधीओ चारियाओ तहा सकरप्पभाएवि समं
A COROLAND	चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा एवं जहा रयणप्पभाए समं उचरिमपुद्धीओ चारियाओ तहा सकरप्पभाएवि समं चारेयव्घाओ जाव अहवा चत्तारि सकरप्पभाष एगे अहेसत्तमाए होज्जा एवं एक्षेकाए समं चारेयव्वाओ जाव अहवा चत्तारि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयण॰ एगे सकर॰ तिन्नि क्लुयप्पभाए होज्जा
SC AF SC	[म०] हे भगवन् ! पांच नैरयिको नैरयिकप्रवेशनवडे प्रवेश करता छं रत्नप्रभामां होय-इत्यादि प्रश्न. [उ॰] हे गांगेय ! १ रत्नप्रभामां पण होय, अने यावत् ७ अधःसप्तम पृथिवीमां पण होय. (ए प्रमाणे एक संयोगी सात विकल्प थया.) अथवा एक
196 A	रत्नप्रभामां अने चार शर्कराप्रभामां होय. यावत् ६ अथवा एक रत्नप्रभामां अने चार अधःसप्तम नरकषां होय. (ए प्रमाणे 'एक अने चार' विकल्पना रत्नप्रभा साथे बीजी पृथ्वीओनो योग करतां छ भांगा थाय.) १ अथवा बे रत्नप्रभामां अने त्रण शर्कराप्रभामां
8 - A - B	होय. ए प्रमाणे यावत् ६ अथवा बे रत्नप्रभामां अने त्रण अधःसप्तम पृथिवीमां होय. (ए रीते 'बे ने त्रण' विकल्पना छ भांगा थया.) १ अथवा त्रण रत्नप्रभामां अने बे शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ त्रण रत्नप्रमामां अने बे अधःसप्तम पृथिवीमां होय. (ए
Jo the K	रीते 'त्रण ने बे' विकल्पना छ भांगा थया.) १ अथवा चार स्त्नप्रभामां अने एक इर्काराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ अथवा चार रत्नप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां पण होय. (एम 'चार ने एक' विकल्पना छ, अने बधा मळीने रत्नप्रभाना संयोग-
A Cont	माळा चोवीग्र विकल्प थया.) १ अथवा एक शर्कराप्रभामां अने चार वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभानी साथे बीजी उपरनी नरक प्रथिषीओनो योग कर्यो, तेम शर्कराप्रभानी साथे उपरनी नरक प्रथिवीओनो संयोग करवो. यावत २० अथवा चार

v	ww.kobatirth.org	

प्रक्रांते: 👔 ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शकराप्रभामां अने त्रण अधःसप्तम पृथिवीमां होय. (ए प्रमाणे 'एक एक ने त्रण' 💱 उ	९ भतके उद्देन्न ः 4 ॥७८ ७॥
--	---

अथवा एक रत्नप्रभामां वे शर्कराप्रभामां अने वे वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा एक रत्नप्रभामां वे शर्करा भगामां अने वे अधःसप्तम नरकमां होय. ('एक वे वे' ना विकल्पने आश्रयी ए पांच मंग थया.) १ अथवा वे रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने वे वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावद् ५ अथवा वे रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने वे अधःसप्तम नरकमां होय. ('वे एक वे' विकल्पने आश्रयी ए पांच मंग थया.) १ अथवा एक रत्नप्रभामां होय. ('एक त्रण एक' ने आश्रयी पांच होय. ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा एक रत्नप्रभामां त्रण शर्कराप्रभामां त्रकराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा पक रत्नप्रभामां त्रण शने एक वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा एक रत्नप्रभामां त्रण शर्कराप्रभामां अने एक अधःसप्तम्भमां होय. ('एक त्रण एक' ने आश्रयी पांच मंग थया.) १ अथवा वे रत्नप्रभामां वे शर्कराप्रभामां त्रण शर्कराप्रभामां अने एक अधःसप्तम्भमां होय. ('एक त्रण एक' ने आश्रयी पांच मंग थया.) १ अथवा वे रत्नप्रभामां वे शर्कराप्रभामां अने एक वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ वे रत्नप्रभामां अने प्रभामां अने एक अधःसप्तममां होय. ('वे वे एक'ने) आश्रयी पांच मंग थया.) १ अथवा त्रण रत्नप्रभामां होय. ('ए 'त्रण प्रभामां डोय. ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा त्रण रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक अधःसप्तममां होय. (ए 'त्रण एक एक'नी अपेक्षाए पांच मंग थया.) (३०). १ अथवा वण रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने त्रण पंक्रप्रभामां होय. ए प्रमाणे एक रमयी जेम चार नैरयिकोनो त्रिकसंयोग कहो तेम पांच नैरयिकोनो पण त्रिकसंयोग कहेवो. परन्तुत्यां एकनी संचार कराय छे, हह दोन्नि, सेसं तं एगे वालुय० दो अहे- भाए होज्जा एवं जाव १० संकरम १० संकरमा १४ संकरमा १४ संकरमा १४ संकरमा १४ संकरमा १४ संकरमा १४ संकरमा १४ संवरमा १४ दं वराम १४ संवरमा १४ संवरमा	९ वतके उद्देश ग्भ ॥७८ ८॥
--	---

म्याख्या- प्रक्वप्तिः ॥७८९॥	A PORTESTICA SACRAGE A CARDEN SACRAGE	रयण० एगे सकर० एगे वाऌ्उय० एगे पंकप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा दो रयण० एगे सकर० एगे वाऌ्उय० एगे अहेसत्तमाए होज्जा १६ अहवा एगे रयण० एगे सकर० एगे पंक० दो धूमप्पभाए होज्जा एवं जहा चउण्हं चउकसंजोगो भणिओ तहा पंचण्हवि चउक्कसंजोगो भाणियव्वो, नवरं अव्भहियं एगो संचारेयव्वो, एवं जाव अहवा दो पंक० एगे धूम० एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ॥ अहीं बेनो संचार करवो. बाकी सर्व पूर्वोक्त जाणतुं; यावत अथवा त्रण धूमप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. (२१०). अथवा एक रत्नप्रभामां एक शत्कराप्रभामां एक वात्तक्राप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वात्तक्राप्रभामां एक वात्तक्राप्रभामां होय. (ए चार विकल्प थया.) १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वात्तक्राप्रभामां अने वे अधःसप्तम पृथिवीमां होथ. (ए चार विकल्प थया.) १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां व वात्तुकाप्रभामां अने वे अधःसप्तम पृथिवीमां होथ. (ए चार विकल्प थया.) १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां वे वात्तुकाप्रभामां होय. (४ भंग.) १ अथवा एक रत्नप्रभामां वे शर्कराप्रभामां एक वात्तक्राप्रभामां वे वात्तुकाप्रभामां त्रो ए प्रमाणे यावत् ४ अथवा एक रत्नप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ४ एक रत्नप्रभामां एक वात्तकाप्रभामां अने एक पंकप्रभामां होय. प प्रमाणे यावत् ४ अथवा एक रत्नप्रभामां वे शर्कराप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकप्रथिवीमां होय. (४ भंग.) ? अथवा वे रत्नप्रभामां एक वात्रुकाप्रभामां एक वात्रकाप्रभामां होय. (४ भंग) ? अथवा पवत् ४ अथवा वे रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वात्रक्राप्रभामां उने एक अधःसप्तम एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां अने वे धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम चार नैर्यिकोनो चतुःसंयोग कहो, तेम पांच नैरयिकोनो पण चतुःसंयोग कहेवो. पर तु अहीं एकनो अधिक संचार (योग) करवो. ए प्रमाणे यावत् अथवा वे पंकप्रभामां एक	at state the set	
-----------------------------------	---------------------------------------	--	------------------	--

So the Sol	धूमप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसप्तम नरकप्रथिवीमां होय. अहवा एगे रघण० एगे सकर्०एगे वाळुय०एगे पंक० एगे धूमप्पभाए होज्जा१ अहवा एगे रघण० एगेसकर०	90-42-96-96-96-
CARCANCE ACCENCE ACCENCE	एगे वालुय०एगे पंक०एगेतमाए होजा २ अहवा एगे रयण०जाव एगे पंक०एगे अहेसत्तमाए होजा ३ अहवा एगे रयण०एगे सक्कर०एगे वालुयप्पभाएएगे धूमप्पभाएएगे तमाए होजा४अहवा एगे रयण०एगे सक्कर०एगे वालुय०एगे धूमाए एगे अहेसत्तमाए होजा ५ अहवा एगे रयण०एगे सक्कर०एगे वालुय०एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा ६	
K & A & A	अहवा एगे रचण॰एगे सकर०एगे पंक० एगे धूम०एगे तमाए होजा ७ अहवा एगे रचण०एगे सकर०एगे पंक०एगे धूम० एगे अहेसत्तमाए होजा ८ अहवा एगे रचण० एगे सकर० एगे पंक॰ एगे तम० एगे अहेसत्तमाए होजा ९ अहवा एगे रचण० एगे सकर० एगे धूम० एगे तम० एगे अहेसत्तमाए होजा १० अहवा एगे रचण० एगे वाऌ्य०	30-34-30-44-0
LO ROA	एगे पंक० एगे धूम० एगे तमाए होजा ११ अहवा एगे रयण० एगे वाऌय० एगे पंक० एगे धूम० एगे अहेसत्तमाए होजा १२ अहवा एगे रयण० एगे वाऌय० एगे पंक० एगे धूम० एगे अहेसत्तमाए होजा १३ अहवा एगे रयण० एगे वाऌय०एगे धूम० एगे तम० एगे अहेसत्तमाए होजा १४ अहवा एगे रयण० एगे पंक० जाव एगे अहेसत्तमाए	14-95-96-96-96-96-96-96-96-96-96-96-96-96-96-
Control of the contro	होजा १५ अहवा एगे सकर० एगे वाऌ्य० जाव एगे तमाए होजा १६ अहवा एगे सकर० जाव एगे पंक० एगे धूम० एगे अहेसत्तमाए होजा १७ अहवा एगे सकर०जाव एगे पंक० एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा १८ अहवा एगे सकर० एगे वाऌ्य० एगे धूम० एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होजा १९ अहवा एगे सकर० एगे पंक० जाव	24-00-4-C

ब्याख्या-

प्रज्ञप्तिः

1109011

९ ञतके

उद्देश**!%**

म्या रूया- प्रद्वप्तिः ॥७९१॥	ACTION SACTOR AND A SACTOR AND A SACT	एगे अहेसत्तनाए होज्जा २० अहवा एगे वाऌुय॰ जाव एगे अहे सत्तमाए होजा २१ ॥ अथवा १ एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां जने एक तमःप्रभामां होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामां यावत् एक पंकप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. ४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां यावत् एक पंकप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. ४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक श्रक्तप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ५ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरक्तमां होय. ६ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. ७ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धुमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ८ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्करात्रभामां एक तंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःस्तम नरकमां होय. ९ अथवा एक रत्नप्रभामां एक श्र्मराभामां एक दर्कराद्रभामां एक तमःग्रभामां अने एक तमःतमःग्रभामां होय. १० अथवा एक रत्नप्रभामां एक श्र्मप्रभामां एक तमःग्रभामां एक तमःग्रभामां अने एक तमःतमःग्रभामां होय. १० अथवा एक रत्नप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमःग्रभामां अने एक अधःसप्तम नरक्तमां होय. ११ अथवा एक रत्नप्रभामां एक चलुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमामां होय. १२ अथवा एक रत्नप्रभामां होव. ११ अथवा एक रत्नप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमामां होय. १२ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसप्तम नर- कमां होथ. १३ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक तमःप्रभामां उने एक अधःसप्तममां होय. १६ अथवा एक रत्नप्रभामां खेन खल्काप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमःप्रभामां अवे एक अधःसप्तममां होय. १४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमःप्रभामां उने एक आधासप्तममां होय. १४ अथवा एक प्रत्नप्रभामां होय. १५ अथवा एक रत्न- प्रभामां एक पंकप्रभामां होय. १६ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां होय. १५ अथवा एक रत्न- प्रभामां होय. वत्त त्वयामामां होय. १६ अथवा एक शर्करामामां भ वतुलक वा एक तर्त-	of the of	९ शतके उद्देन्न ः५ ॥७९ १॥
---	---------------------------------------	---	--	--

	१७ अथना एक घर्कराप्रभामां यावत् एक पंकप्रभामां एक घूममभामां अने एक अधःसप्तममां होय. १८ अथना एक घर्कराप्रभामां भावट् एक पंकप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसप्तममां होय. १९ अथना एक घर्कराप्रभामां एक नालुकाप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसप्तममां होय. १९ अथना एक घर्कराप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसप्तममां होय. १९ अथना एक घर्कराप्रभामां यावत् एक अधःसप्तममां होय. २० अथना एक घर्कराप्रभामां यानत् एक अधःसप्तममां होय. २० अथना एक घर्कराप्रभामां एक नलुकाप्रभामां यानत् एक अधःसप्तममां होय. २० अथना एक चर्कराप्रभामां यानत् एक अधःसप्तममां होय. २० अथना एक घर्कराप्रभामां एक नलुकाप्रभामां यानत् एक अधःसप्तममां होय. २० अथना एक वालुकाप्रभामां यानत् एक अधःसप्तममां होय. २० अथना एक घर्कराप्रभामां यानत् एक अधःसप्तममां होय. २० अथना एक घर्कराप्रभामां यानत् एक अधःसप्तममां होय. च्रू क्रिंग्रभामां एक चलुकाप्रभामां यानत् एक अधःसप्तममां होय. च्रू व्यकर्कराप्रभामां यानत् एक अधःसप्तममां होय. च्रू व्यक्तर्भरभामां यानत् एक अधःसप्तममां होय. च्रू व्यकर्भरभामां यानत् एक अधःसप्तममां होय. च्र एक वालुकाप्रभामां यानत् एक अधःसप्तममां होय. छन्भते ! नेरइया नेरइयप्रपचेस्तमाणां पि स्थणप्तभाए होज्जा ? पुच्छा, गंगेया ! रयणप्तभाए वा होज्जा जान अहेसत्तमाए ना होज्जा ७ अहवा एगे रयण० पंच सक्करप्तभाए होज्जा अहवा एगे रयण० पंच नालुयप्तभाए ना होज्जा जान अहवा एगे रयण० पंच अहेसत्तमाए होज्जा अहवा दो रयण० तिन्नि सक्कर० एवं एएणं कमेणं जहां पंचण्हं दुयासंजोगो तहा छण्हवि भाणियव्वो नवरं एको अन्भहिओ संचारेयव्वो जान अहवा पंच तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयण०एगे सक्कर० चतारि नालुयप्तभाए होज्जा अहवा एगे सक्कर० चतारि पंकप्तभाए होज्जा एवं जान अहवा एगे रयण० एगे सक्कर० चतारि अहेसत्तमाए होजा अहवा एगे रयण० दो सक्कर० तिन्नि वालुयप्रपभाए होज्जा, एवं एएणं कमेणं जहा पंचण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा छण्डवि भाणियव्वो नवरं एको अहिओ उचारेयव्वो, संसं तं चेव ३४, चउकसंजोगोवि तहेव, पंचगसंजोगोवि तहेव, नवरं एको अव्भहिओ संचारेयव्वो जान पच्छिमो भंगो अहवा दो नालुय॰ एगे पंक०एगे धूम०एगे तम०	to the set of the set of the set	ৎ হারক উইয় গ্দ ॥৩ ९२॥
--	--	----------------------------------	---

व्याख्या- प्रक्वतिः ॥७९३॥	भ हाजा ३ अहवा एग रयण० जाव एग वालुय० एग यूम० जाव एगअहसत्तमाए हाजा ४ विक्संयोगाः ३०५ १) १ अहवा एगे रयण० एगे सकर० एगे पंक० जाव एगे अहेसत्तमाए होजा ५ अहवा एगे रय- चतुष्कसंयोगाः ३५० ()	९ त्रतके उद्देन्न ः ५ ॥७ ९३॥
---------------------------------	--	---

जाणवुं. ते प्रमाणे छ नारकोनो चतुःसंयोग अने पंचसंयोग पण जाणवो. परन्तु तेमां एक नैरयिक अधिक गणवो. यावत छेछो मंग- अथवा बे वाछकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक तमःतमःप्रभामां होय. १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक अकराप्रभामां यावत् एक तमामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां यावत् एक धूमप्रभामां छोय. १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक अर्कराप्रभामां यावत् एक तमामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां यावत् एक धूमप्रभामां होय. १ अथवा एक रत्नप्रभामां वाछकाप्रभामां एक धूमप्रभामां यावत् एक अधःसप्रम वाछकाप्रभामां एक घूमप्रभामां यावत् एक अधःसप्रम वाछकाप्रभामां एक बाछकाप्रभामां यावत् एक अधःसप्रम एक अर्कराप्रभामां एक वाछकाप्रभामां यावत् एक अधःसप्रम एक अर्कराप्रभामां एक वाछकाप्रभामां यावत् एक अधःसप्रम पक्ष अर्कराप्रभामां एक वाछकाप्रभामां यावत् एक अधःसप्रम पक्ष करेप्रभामां एक वाछकाप्रभामां यावत् एक अधःसप्रम पक्ष रकरायोगाः भग्ध किकसंयोगाः भग्ध जहा छण्हं दुयासंजोगो तहा सत्तण्हवि भाणियव्वं नवरं एगो अव्महिओ संचारिज्जइ, सेसतं जहा छण्हं दुयासंजोगो तहा सत्तण्हवि भाणियव्वं वयरं एगो अव्महिओ संचारिज्जइ, सेसतं पंचकसंयोगाः ११५ भिष्टकसंयोगाः १३५ भिर्यकसंयोगाः १३५	Kit of the start of the start of the start the
पट्कसंयोगाः ४२ सप्तकसंयोगः १२ सप्तकसंयोगः १ जाव एगे अहेसत्तमाए होज्ञा अहवा एगे रयण० एगे सक्कर० जाव एगे अहेसत्तमाए होज्ञा ॥	\$ \$ \$

1189811

९ वतके

उदेश**%**

119881

www.kobatirth.org

त्रतके

	Č,
ण्यारूया- प्रक्रप्तिः	Je the of

ાહ્ય લા

	Ž	[प्र०] हे भगवन् ! सात नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता (शुं रत्नप्रभामां होय ?) इत्यादि संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे	ð F
-	ð A	गांगेय ! (ते साते नैरयिको) रत्नप्रभामां पण होय अने यावद् अधःसप्तम नरकपृथिवीमां पण होय. (एक संयोगी सात विकल्प थया.) अथवा एक रत्नप्रभामां अने छ शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे ए क्रमथी जेम छ नैरयिकोनो द्विकसंयोग कह्यो तेम सात नैरयिकोनो	5 C
	R	अयवा एक रतप्रमामा अने छ राकरात्रमामा हाय. ९ प्रमाण ए प्रम्या अने छ नरायकाना हिकस्यांग कथा तन तात नरायकाना पण जाणवो. पण विशेष ए छे के एक नरयिकनो अधिक संचार करवो, बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. जेम छ नैरयिकोनो त्रिकसंयोग,	r K
	ACAES FOR SACRES ACAES ACAES	चतुःसंयोग, पंचसंयोग अने षट्संयोग कह्यो तेम सात नैरयिकोनो पण जाणवो; परन्तु विशेष ए छे के एक एक नैरयिकनो अधिक संचार करवो, यावत षट्कसंयोग−'अथवा बे शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां यावत् एक अधःसप्तम नरकमां होय' त्यांसुधी जाणवुं (सप्त-	A S
	ان م م	संयोगी एक विकल्प-) अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां यावत् एक अधःसप्तम नरकमां होय.	at a
	Se l	' अह भंते ! नेरतिया अष्टानां जीवानां नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा पुच्छा, गंगेया ! रयणप्पभाए वा होजा अहवा एगे रयणप्पभाए वा होजा अहवा एगे रयण० सत्त सक्करप्पभाए होजा एवं दुयासंजोगो जाव	E S
	Ś	छक्कसंजोगो य जहा सत्तण्हं ^{द्विक} १४७ _{त्रिक} , ७३५ यव्वो सेसं तं चेव जाव छ- _{चितु} , १२२५ कसंजोगस्स अहवा तिन्नि सक्कर० एगे वाऌय० जाव एगे अहेसत्तमाए	S S
	S S	यव्या सस त चव जाव छ- _{(चतु॰ १२२५}) कसजागरस अहवा तिन्नि सकरण् एग वालुयण् जाव एग अहसत्तमाए होजा अह्वा एग रयण॰ पंच॰ ^{७३५} जाव एगे तमाए दो अहेसत्तमाए होजा अहवा एगे रयण॰ जाव दो ^{पट॰ १४७}	
	S D	तमाए एगे अहेसत्तमाए सिंग्त [ु] होज्ञा एवं संचारेयव्वं जाव अहवा दो रयण० एगे सक्कर० जाव एगे अहेसत्तमाए होज्ञा !!	\$ \$
	GI	अहसरामार हाजा ॥	GI

For Private and Personal Use Only

ण्याख्या-

प्रज्ञप्तिः

ાહઙફાા'

LORDER LORDER LORDER LORDER	[प्र०] हे भगवन् ! आठ नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता ग्रुं रत्नप्रभामां होय ?-इत्यादि प्रश्न. [उ १ रत्नप्रभामां पण होय; यावद् ७ अधःसप्तम पृथिवीमां पण होय. अथवा १ 'एक रत्नप्रभामां अने सात शर्कराप्र ए प्रमाणे जेम सात नैरयिकोनो द्विकसंयोग, त्रिकसंयोग, चतुष्कसंयोग, पंचसंयोग अने षट्कसंयोग कह्यो तेम आठ न कहेवो. परन्तु विशेष ए के एक एक नैरयिकनो अधिक संचार करवो. बाकी बधुं छ संयोग सुधी पूर्व प्रमाणे जाणवुं. (छे अथवा त्रण शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां यावत् एक अधःसप्तम नरकमां होय. १ अथवा एक रत्नप्रभामां यावत अने बे अधःसप्तम पृथिवीमां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां यावत् बे तमामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां हो सर्वत्र संचार करवो. यावत् ७ अथवा बे रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां यावद् एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. १४७, ७३५, १२२५, ७३५, १४७ अने ७. ए बधा मळीने आठ जीवने आश्रयी ३००३ विकल्पो थाय छे.)	भामां होय.' रियिकोनो पण छो विकल्प–) एक तमामां यि. ए प्रमाणे	
A CAR DE A DE A DE	नव भंते ! नेरतिया नेरतियपवेसणएणं पविसमाणा किं पुच्छा, गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्ञा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा अहवा एगे रयण० अट्ट सकरप्पभाए होज्जा एवं दुयासंजोगो जाव स त्तगसंजोगे य जहा अट्टण्हं भणियं तहा नवण्हंपि भाणियव्वं नवरं एकेको अब्भहिओ संचारेयव्वो सेसं तं चेव पच्छिमो आऌावगो अहवा तिन्नि रयण० एगे सक्कर० एगे वाऌ्रय जाव एगे अहेसत्त- माए वा होज्जा ॥	असंयोगाः ७ द्विकसं० १६८ त्रिकसं ९८० चतुष्कसं० १९६० पंचकसं० १९७० षट्कसं० ३९२ सप्तकसं० २८ ५००५	うやうやうやうや

मात्री: भामा पण होय' इत्याद आठ नरायकाना जम दिकसयाग ात्रकसयाग, चतुष्कसयाग, पंचकसयाग, षद्कसयाग,) यावत् संसकस- अ अस्तिः योग कह्यो तेम नव नैरयिकोनो पण कहेवो. परन्त विशेष ए छे के एक एक नैरयिकनो अधिक संचार करवो. बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे	ং স্বৰক য়েল্বাৎ ৩ ९ ৩৪
--	--------------------------------------

संखेजा भंते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा पुच्छा, गंगेया! रयणप्पभएवा होजा जाव अहेसत्तमाए वा होजा ७ अहवा एगे रयण॰ संखेजा सकरप्पभाए होजा एवं जाव अहवा एगे रयण॰ संखेजा अहेंसत्तमाए होजा अहवा दो रयण॰ मंखेजा सकरप्पभाए वा होजा एवं जाव अहवा दो रयण॰ संखेजा अहेसत्तमाए होजा अहवा तिन्नि रयण॰ संखेजा सक्करप्पभाए होजा एवं एएणं कमेणं एक्केको संचारेयव्वो जाव आहवा दस रयण॰ संखेजा **उदेश%** सकरप्पभाए होजा एवं जाव अहवा दस रयण० संखेजा अहेसत्तमाए होजा अहवा संखेजा रयण० संखेजा सक-X 119821 रप्पभाए होजा जाव अहवा संखेजा रयणप्पभाए संखेजा अहेसत्तमाए होजा अहवा एगे सक्कर० संखेजा वालुय-प्पभाए होजा एवं जहा रयणप्पभाए उवरिमपुढवीएहिं समं संचारिया एवं सक्करप्पभाएवि उवरिमपुढवीएहिं समं चारेयव्वा, एवं एकेका पुढवी उवरिमपुढवीएहिं समं चारेयव्वा जाव अहवा संखेजा तमाए संखेजा अहेसत्तमाए होजा अहवा एगे रयण० एगं सक्तर० संखेजा वालुयप्पभाए होजा अहवा एगे रयण० एगे सकर० संखेजा पंक-प्पभाए होजा जाव अहवा एगे रयण० एगे सकर० संखेजा अहेसत्तमाए होजा अहवा एगे रयण० दो सकर० संखेजा वाऌयप्पभाए होजा अहवा एगे रयण० दो सकर० संखेजा अहेसत्तमाए होजा अहवा एगे रयण० तिन्नि सकर० 8 संखेआ वाऌयप्पभार होजा, एवं एएणं कमेणं एकेको संचारेयव्वो अहवा एगे रयण० संखेजा सकर० संखेजा वाऌ-यप्पभाए होजा जाव अहवा एगे रयण०संखेजा वालुय०संखेजा अहेसत्तमाए होजा अहवा दो रयण०संखेजा सकर० संखेजा वालुयप्पभाए होजा जाव अहवा दो रयण॰ संखेजा सकर॰ संखेजा अहेसत्तमाए होजा अहवा तिन्नि

म्याख्या-

त्रव्धिः

व्यारूया- प्रग्नाप्तिः N७९९॥	रयण० संखेजा सकर० संखेजा वाऌयप्पभाए होजा, एवं एएणं कमेणं एकेको रयणप्पभाए संचारेयव्वो जाव अहवा संखेजा रयण० संखेजा सकर० संखेजा वाऌयप्पभाए होजा जाव अहवा संखेजा रयण० संखेजा सकर० संखेजा अहेसत्तमाए होजा अहवा एगे रयण० एगे वाऌय० संखेजा पंकप्पभाए होजा जाव अहवा एगे रयण० एगे वाऌय० संखेजा अहेसत्तमाए होजा अहवा एगे रयण० दो वाऌय० संखेजा पंकप्पभाए होजा, एवं एएणं कमेणं तियासंजोगो चउक्कसंजोगो जाव सत्तगरांजोगो य जहा दसण्हं नहेव भाणियव्वो पच्छिमो आलावगो सत्तसंजोगस्स अहवा संखेजा रयण० संखेजा सकर० जाव संखेजा अहेसत्तमाए होजा ॥ [प्र०] हे भगवन ! संख्याता नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता शुं रलप्रभामां होय ? इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! संख्याता नैरयिको ? रत्नप्रभामां पण होय अने यावद् ७ अधःसप्तम प्रथिवीमां पण होय. (एक संयोगी मात विकल्प थया.) ? अथवा एक रत्नप्रभामां होय अने संख्याता शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ एक रत्नप्रभामां होय अने संख्याता अधःसप्तम प्रथिवीमां पण होय. (छ विकल्प थया.) ? अथवा वे रत्नप्रभामां अने संख्याता श्रक्तप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ वे रत्नप्र भामां अने संख्याता अधःसप्तम प्रथिवीमां पण होय. (ए क संयोगी वावत् ६ वे रत्नप्रभामां होय. ए प्रमाणे पान्त् द वे रात्मप्रभामां होय. ए प्रमाणे पान्त् द अथवा दस रत्नप्रभामां जने संख्याता श्रक्तप्रभामां जने संख्याता श्रक्तप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावद् ६ अथवा दस रत्नप्रभामां जने संख्याता अधःसप्तम प्रथिवीमां होय. १ अथवा संख्याता श्रक्तप्रभामां दोय. ए प्रमाणे यावद् ६ अथवा दस रत्नप्रभामां जने संख्याता अधःसप्तम प्रथिवीमां होय. १ अथवा संख्याता रक्तप्रभामां अने संख्याता श्रकेराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावद् ६ अथवा संख्याता रक्तप्रभामां अने संख्याता अधःसत्तम प्रियिनी होय. १ अथवा	* S & S & S & S & S & S & S & S & S & S	९ ज्ञतके उद्देश्वाद्य ॥७ ९९॥
------------------------------------	--	---	--

व्याख्या-**प्रव**क्षिः

1100011

Francis and the second of the	एक शर्कराप्रभामां अने संख्याता वालुकामां होय. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभाष्टथिवीनो बीजी प्रथिवी साथे योग कर्यो तेम शर्कराप्रभा पृथिवीनो पण उपरनी वर्षी प्रथिवीओ साथे योग करवो. ए प्रकारे एक एक प्रथिवीनो डपरनी पृथिवीओ साथे योग करवो. यावद् अथवा संख्याता तमःप्रभामां अने संख्याता अधःसप्तम नरकमो पण होय. (ए प्रमाणे द्विकसंयोगी विकल्पो थया.) १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने संख्याता पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् अथवा एक रत्नप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां ओने संख्याता पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् अथवा एक रत्नप्रभामां होय. अथवा एक रत्नप्रभामां वे शर्कराप्रभामां अने संख्याता पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् अथवा एक रत्नप्रभामां होय. अथवा एक रत्नप्रभामां वे शर्कराप्रभामां अने संख्याता अधःसप्तम- प्रथिवीमां होय. अथवा एक रत्नप्रभामां वालुकाप्रभामां होय. अथवा एक रत्नप्रभामां होय. ए प्रमाणे ए कमथी एक एक नैर- यिकनो संचार करवो. अथवा एक रत्नप्रभामां संख्याता शर्कराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय. यावद् अथवा एक रत्न- प्रभामां संख्याता वालुकाप्रभामां अने संख्याता श्रकराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय. यावद् अथवा एक रत्न- प्रभामां संख्याता वालुकाप्रभामां अने संख्याता श्रकराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय. यावद् अथवा एक रत्न- प्रभामां संख्याता वालुकाप्रभामां अने संख्याता श्रकराप्रभामां अने संख्याता आधःसप्तमपृथितीमां होय. अथवा त्रण रत्न- प्रभामां संख्याता श्रकराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे ए क्रमथी रत्नप्रभामां होय. अथवा त्र वर्त अथवा संख्याता रत्नप्रभामां संच्याता श्रकराप्रभामां होय. ए प्रमाणे एक वालुकाप्रभामां छने संख्याता श्र- अर्थवा संख्याता रत्नप्रभामां संख्याता श्रकराप्रभामां होय. यावद् अथवा संख्याता संख्याता श्रकराप्रभामां अने संख्याता अर्वराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय. आवव् एक रत्नप्रभामां संख्याता श्रकराप्रभामां अने संख्याता श्वक्रप्रभामां अने संख्याता अधःसप्तमप्रथिवीमां होय. अथवा एक रत्नप्रभामां वे वालुकप्रभामां होय. यावत् अथवा एक रत्नप्रभामां त्व लिकप्रभामां अने संख्याता अधःसप्तमप्रथिवीमां होय. अथवा एक रत्नप्रभामां होय. यावत् अथवा एक रत्नप्रभामां एक वा	* & & & & & & & & & & & & & & & & & & &	ৎ হবকঁ উ ইয়ঃশ ॥८ ∙০ #	
---	---	---	---	--

च्या रूया- प्रक्वप्तिः ⊪८०१॥		रत्नप्रभामां असंख्याता शकेराप्रभामां यावद् असंख्याता अधःसप्तमपृथिवीमां पण होय.	Charles a hard a hard a hard a hard a	९ श्वतके उद्देश्व ः ॥८० १॥
	2	a side with the side of the state of the state of the side of the	G	

	रयण॰ सक्करप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा ५ अहवा रयण॰ वालुय॰ पंकप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयण॰ वालुय॰ अहेसत्तमाए होज्जा ४ अहवा रयण॰ पंकप्पभाए धूमाए होज्जा एवं रयणप्पभं अमुपंतेस जहा तिण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयण॰ तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा १५ अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुय॰ पंकप्पभाए य होज्जा अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुय॰ धूमप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुय य अहेसत्तमाए य होज्जा ४ अहवा रयण॰ सम्कर॰ पंक॰ धूमप्पभाए य होज्जा एवं रयणप्पभं अमुपंतेसु जहा चउण्हं चउक्कसंजोगोभणितोतहा भाणियव्वं जाव अहवा रयण॰ धूम॰्पभाए य होज्जा एवं रयणप्पभं अमुपंतेसु जहा चउण्हं चउक्कसंजोगोभणितोतहा भाणियव्वं जाव अहवा रयण॰ धूम॰्पभाए य होज्जा एवं रयणप्पभं अमुपंतेसु जहा चउण्हं चउक्कसंजोगोभणितोतहा भाणियव्वं जाव अहवा रयण॰ धूम॰्पभाए छाव पंक॰ तमाए य होज्जा अहवा रयण॰ सक्कर॰ विष्कर॰ वालुय॰ धूम॰ तमाए य होज्जा १ अहवा रयण॰ जाव पंक॰ अहेसत्तमाए य होज्जा ३ अहवा रयण॰ सक्कर॰ वालुय॰ धूम॰ तमाए य होज्जा १ एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा पंचण्हं पञ्चकसंजोगो तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयण॰ पंक॰ तमाए य होज्जा १ एवं रयणप्तभं अमुयंतेसु जहा रयण॰ सक्कर॰ जाव धूमप्पभाए तमाए य होज्जा १ अहवा रयण॰ जाव धूम॰ अहेसत्तमाए होज्जा अहवा रयण॰ सक्कर॰ जाव धूमप्पभाए तमाए य होज्जा १ अहवा रयण॰ जाव धूम॰ अहेसत्तमाए य होज्जा ५ अहवा रयण॰ वालुय॰ जाव अहेसत्तमाए होज्जा ६ अहवा रयण॰ सक्कर॰ पंक॰ जाव अहेसत्तमाए य होज्जा ५ अहवा रयण॰ वालुय॰ जाव अहेसत्तमाए होज्जा ६ अहवा रयण॰ सक्कर॰ पंक॰ जाव अहेसत्तमाए य होज्जा ७ ॥	र क र र र र र र र र र र र र र र र र र र
--	--	---

९ त्रतके

उद्देशः५

11002#

ण्यारूया-प्रबक्तिः

11C0311

A Cy

A CO A CO A

KACKACIFICA SCACE

[प्र•] हे भगवन् ! नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता नैरयिको उत्क्रष्टपदे ग्रुं रत्नप्रभामां होय ?-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! १ सर्व नैरयिको उत्क्रष्टपदे रत्नप्रभामां होय. (द्विकसयोगी छ विकल्प-) १ अथवा रत्नप्रभामां अने झर्कराभामां होय. २ अथवा रत्नप्रभा अने वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावद् अथवा ६ रत्नप्रभा अने अधःसप्तमप्रथिवीमां पण होय. (त्रिकसंयोगी १५ चिकल्प-) १ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावद् ५ रत्नप्रभा शर्कराप्रभा अने अधःसप्तमप् थिवीमां होय. ६ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावद् ५ रत्नप्रभा शर्कराप्रभा अने अधःसप्तमप् थिवीमां होय. ६ अथवा रत्नप्रभा वालुकाप्रभा अने पंकप्रभामां पण होय. यावद् १० अथवा रत्नप्रभा वालुकाप्रभा अने अधःसप्तम- पृथिवीमां होय. ११ अथवा रत्नप्रभा पंकप्रभाअने धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभाने ग्रुक्या शिवायत्रण नैरयिकोनो त्रिक- संयोग कश्चो तेम अहीं कहेवुं. यावद् १५ अथवा रत्नप्रभा, तमःप्रभा तमःतमःप्रभामां पण होय.(चतुःसंयोगी २० विकल्प) १ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा अने पंकप्रभामां होय. २ अथवा रत्नप्रभा शर्कराग्रभा वालुकाप्रभा अने धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे रत्नप्रभा वालुकाप्रभा अने पंकप्रभामां होय. २ अथवा रत्नप्रभा शर्कराग्रभा वाल्कराप्रभा वर्कराप्रभा वर्क अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा अने अधःसप्तमप्रथिवीमां पण होय. ५ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा पंकप्रभा अने धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे रत्नप्रभा ने मूक्या शिवाय जेम चार नैरयिकोनो चतुष्कसंयोग कश्चो छे तेम अहीं कहेत्रो. यावद् २० अथवा रत्नप्रभा भूमप्रभा तमःप्रभा अने तमःत्रभा यावत् पंकप्रभा अने तमप्रभामां होय. ३ अथवा रत्नप्रभा शार्वर्राप्रभा वालुकाग्रभा वर्कप्रभा अने धूमप्रभामां होय. २ अथवा रत्नप्रभा यावत् पंकप्रभा अने तमप्रभामाां होय. ३ अथवा रत्नप्रभा यावत् पंकप्रभा अने अधःसप्तमपृथिवीमां होय. ४ अथवा रत्नप्रभा झर्कराप्रभा वालुकात्रभा धूमप्रभा अने तमप्रभामां होय. ए प्रभाणे रत्नप्रभा यावत् पंकप्रभा अने धूमप्रभा ताः होय. २ अथवा रत्नप्रभा वालुकात्रभा अने तमप्रभामा वोत् प्रभामा यावद् अधःसप्तमप्रथिवीमां होय. (पद्कसंयोगी छ
--

R	विकल्प-) १ अथवा रत्नप्रभा
P	राप्रभा वालुकाप्रभा धूमप्रभा तमःप्रभा अने तमःतमःप्रमामां होय. ५ अथवा रत्नप्रभा क्षर्कराप्रभा पंकप्रभा यावद् अधःसप्तमपृथि- 🚀
Ľ	वीमां होय. ६ अथवा रत्नप्रभा वालुकाप्रभा यावद् अधःसप्तमपृथिवीमां होय. (सप्तसंयोगी १ विकल्प-) अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा, 👔
Ê	यावद् अधःसप्तमपृथिवीमां होय. (ए रीते उत्क्रष्ट पदना १-६-१५-२०-१५-६-१ मळी ६४ विकल्पो थाय छे.)
364-96-4:15	
Je &	
A St	
2	ू मि मि में
G	ि ि मिल्ला व विसेसाहिया वा ?, गंगेया ! सब्बत्थोवे अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए तमापुढविनेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे एवं पडिलोमगं जाव रयण- प्पभापुढविनेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे ॥ (सूत्रं ३७३) ॥

ञ्याख्या- प्रवसिः	कमा कया प्रवंशनका कया प्रवंशनकाथा यावद् विशेषाधिक छेऽ [उ०] हे गागेय र सौथी अल्प अधःसप्तमपृथिवीनरायकप्रवेशनक छे. तेना करतां तमापृथिवीनैरयिकप्रवेशनक असंख्येयगण छे. ए प्रमाणे विपरितकमशी यातन स्वयभाषणितीनैरयिकप्रवेशनक	र् ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
1418. HO0411	असंख्यातगुण छे. ॥ ३७३ ॥ तिरिक्खजोणियपवेसणए णं भंते ! कतिबिहे पन्नत्ते ?, गंगेया ! पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा-एगिंदियतिरिक्ख जोणियपवेसणए जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए । एगे भंते ! तिरिक्खजोणिए तिरिक्खजोणियपवेसण- एणं पविसमाणे किं एगिंदिएसु होज्जा जाव पंचिंदिएसु होज्जा ?, गंगेया ! एगिंदिएसु वा होज्जा जाव पंचिंदि- एसु वा होज्जा । दो भंते ! तिरिक्खजोणिया पुच्छा, दियएसु वा होज्जा, अहवा एगे एगिंदिएसु होज्जा सणए तहा तिरिक्खजोणियपवेसणएबि भाणियव्वे जोणिया पुच्छा, गंगेया ! सब्वेवि ताव एगिंदिएसु । भ्राः १४ २५ थवं १४ २५ भ्राः १४ २५ भ्राः	本 3 3 3 3 4 3 4 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5

l	यतिरिक्खजोणियपवेसणयस्स य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा १, गंगेवा ! सब्वत्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिय-	
	🛛 यतारक्खजाणयपंवसणयस्स य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा १, गंगेवा ! सब्वत्थोवा पचिदियांतरिक्खजाणिय-🗄 🗚	
	पवेसणए चउरि दियतिरिक्खजोणिय॰ विसेमाहिए तेइंदिय॰ विसेसाहिए बेइंदिय॰ विसेसाहिए एगिंदियतिरि-॰	
व्यारूया-	🖌 क्स विसेसाहिए ॥ (सुन्नं ३७४) ॥	ৎ হাবক
प्रबाप्तिः	🕻 [प॰] हे भगवन् ! तिर्यंचयोनिकप्रवेशनक केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गांगेय ! पांच प्रकारे कह्युं छे. ते आ प्रमाणे 🧩	ত ই হা গ্
IICOEII	८ -एकेन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनक, यावत पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनक. [प्र०] हे भगवन् ! एक तिर्यंचयोनिक जीव तिर्यंचयोनि-	IICo CH
	कप्रवेशनकवडे प्रवेश करती छं एकेन्द्रियोमां होय के यावत् पंचेन्द्रियोमां होय १ [उ०] हे गांगेय ! १ एक तिर्यंचयोनिक जीव 💃	
	🖒 एकेन्द्रियमां होय अने यावत् ५ पंचेन्द्रियमां पण होय. 🗊०) हे भगवन् ! बे तिर्यंचयोनिक जीवो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! 🤌	
	🖁 १ एकेन्द्रियोमां पण होय अने यावत् ५ पंचेन्द्रियोमां पण होय. अथवा एकएकेन्द्रियमां अने एक बेइन्द्रियमां पण होय. ए प्रमाणे	
	🛉 जेम नैरयिकप्रवेशनकमां कह्यं तेम तिर्यंचयोनिकप्रवेशनकमां यावत् असंख्येय तिर्यंचयोनिको सुधी कहेवुं. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यं- 🕅	
	🗴 चयोनिको उत्क्रष्टपणे (ग्रुं एकेन्द्रियोमां होय के यावत् पंचेन्द्रियोमां होय. १) ए प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ते बधा एकेन्द्रियोमां 🥳	
	र्द्र होय. अथवा एकेन्ट्रियो अने वेइन्द्रियोमां पण होय. ए प्रमाणे जेम नैरयिकोनो संचार कर्यों तेम तिर्यंचयोनिकोनो पण संचार करवो. 🧕	
	🖞 एकेन्द्रियोने मुक्या सिवाय द्विकसंयोग, त्रिकसंयोग, चतुष्कसंयोग अने पंचकसंयोग उपयोगपूर्वक कहेवो. यावत् अथवा एकेन्द्रि 🕉	
	१ एकेन्द्रियोमां पण होय अने यावत् ५ पंचेन्द्रियोमां पण होय. अथवा एकएकेन्द्रियमां अने एक बेइन्द्रियमां पण होय. ए प्रमाणे जेम नैरयिकप्रवेशनकमां कहुं तेम तिर्यंचयोनिकप्रवेशनकमां यावत् असंख्येय तिर्यंचयोनिको सुधी कहेवुं. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यं- चयोनिको उत्कृष्टपणे (शुं एकेन्द्रियोमां होय के यावत् पंचेन्द्रियोमां होय. १) ए प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ते बधा एकन्द्रियोमां होय. अथवा एकेन्द्रियो अने बेइन्द्रियोमां होय के यावत् पंचेन्द्रियोमां होय. १) ए प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ते बधा एकन्द्रियोमां होय. अथवा एकेन्द्रियो अने बेइन्द्रियोमां पण होय. ए प्रमाणे जेम नैरयिकोनो संचार कर्यो तेम तिर्यंचयोनिकोनो पण संचार करवो. एकेन्द्रियोने मुक्या सिवाय द्विकसंयोग, त्रिकसंयोग, चतुष्कसंयोग अने पंचकसंयोग उपयोगपूर्वक कहेवो. यावत् अथवा एकेन्द्रि योमां बेइन्द्रियोमां यावत् पंचेन्द्रियोमां पण होय. [प्रि०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनक, यावत् पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनि- क्रुवेशनकमां कयुं प्रवेशनक कोनाथी यावद् विशेषधिक छे ? [उ०] हे गांगेय ! पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनक सौथी अल्प छे,	
	🕺 कप्रवेशनकमां कयुं प्रवेशनक कोनाथी यावद् विशेषाधिक छे १ [उ०] हे गांगेय ! पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनक सौथी अल्प छे, 岁	

ञ्याख्या-प्रवसिः

1100SI

T =	तेथी चउरिन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनक विशेषाधिक छे, तेना करतां त्रीन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनकविशेषाधिक छे, तेना करतां बेइन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनक विशेषाधिक छे, अने तेना करतां एकेन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनक विशेषाधिक छे. [प्र०] हे भग- वन् ! मनुष्यप्रवेशनक केटला प्रकारे कहुं छे ? [उ०] हे गांगेय ! बे प्रकारे कहुं छे, ते आ प्रमाणे-संमूच्छिममनुष्यप्रवेशनक अने गर्भजमनुष्यप्रवेशनक .'' ३७४ ॥ मणुस्सपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ?, गंगेया ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा-संमुच्छिममणुस्सपवेसणए ग- ब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणए य । एगे भंते ! मणुस्से मणुस्सपवेसणएणं पविसमाणे किं संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होजा ?, गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होजा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा । दो भंते ! मणुस्सा॰ पुच्छा, गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा । दो भंते ! मणुस्सा॰ पुच्छा, गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा । दो संसुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा एगे गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा । दो संसुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा एगे गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा, एवं एएणं कमेणं जहा नेरइयपवेसणए तहा मणुस्सपवेसणएवि भाणियच्वो जाव दस ॥ संखेज्जा भंते ! मणुस्सा पुच्छा, गंरोया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा अहवा एगे संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणु णुस्सेसु वा होज्जा अहवा दो संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्वंतियमणुस्सेसु होज्जा एवं एकेकं	२ ततक २ ततक उद्देश्वः ८ ४ ८ २ ८
14.00 4 C	णुस्सेसु वा होज्जा अहवा दो संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा एवं एकैकं उस्सार्रितेसु जाव अहवा संखेज्जा संमुच्छिममणुस्सेंसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ॥ [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यप्रवेशनकवडे प्रवेश करतो एक मनुष्य शुं संमूच्छिम मनुष्योमां होय के गर्भज मनुष्योमां होय ?	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

व्यारूया- प्र व्व सिः ॥८०८॥	[उ०] हे गांगेय ! ते संमूच्छिम मतुष्योमां पण होय अने गर्भजमतुष्योमां पण होय. [प०] हे भगवन् ! वे मतुष्यो मतुष्यप्रवेश- नकवडे प्रवेश करता-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! वे मतुष्यो संमूच्छिम मतुष्योमां पण होय अने गर्भज मतुष्योमां पण होय. अथवा एक संमूच्छिम मतुष्यमां होय अने एक गर्भजमतुष्यमां होय. ए प्रमाणे ए कमथी जेम नैरयिकप्रवेशनक कहां तेम मतुष्य- प्रवेशनक पण यावद् दश मतुष्यो सुधी कहेतुं. [प०] हे भगवन् ! संख्याता मतुष्यो मतुष्यप्रवेशनकवडे प्रवेश करता-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! तेओ संमूच्छिम मतुष्यमां पण होय अने गर्भज मतुष्यमां एण होय. अथवा एक संमूच्छिम मतुष्योमां होय अने संख्याता गर्भज मतुष्योमां होथ. अथवा वे संमूच्छिम मतुष्योमां होय अने संख्याता मतुष्यो मत्र प्रवेशनकवडे प्रवेश करता-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! तेओ संमूच्छिम मतुष्यमां पण होय अने गर्भज मतुष्यमां पण होय. अथवा एक संमूच्छिम मतुष्योमां होय अने संख्याता गर्भज मतुष्योमां होथ. अथवा वे संमूच्छिम मतुष्योमां होय अने संख्याता गर्भज मतुष्योमां होय. ए प्रमाणे एक एक वधारता यावद् अथवा संख्याता संमूच्छिम मतुष्योमां अने संख्याता गर्भज मतुष्यमां होय. असंखेलजा भंते! मणुस्सा पुच्छा,गंगेया! सव्वेवि ताव संमुच्छिममणुस्सेसु होजा अहवा असंखेजा संमु च्छिममणुस्सेसु एगे गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होजा अहवा असंखेजा गव्भवक्कंतियमणुस्सेसु वो गब्भवक्कंतियमणु- संसेसु होजा एवं जाव असंखेजा संमुच्छिममणुस्सेसु होजा भहवा आंसखेजा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु या गव्भवक्कंति भंते ! मणुस्सा पुच्छा, गंगेया ! सव्वेवि ताव संमुच्छिममणुस्सेसु होजा अहवा संमुच्छिममणुस्सेसु य गब्भवर्क्क तियमणुस्सेसु वा होजा । एयस्स णं भंते ! संमुच्छिममणुस्सपवेसणगस्स गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणगस्स य कयरे २ जाव विसेसाहिया ?, गंगेया ! सव्वत्थोवा गबभवक्कंतियमणुस्सपवेसणए संमुच्छिममणुस्सपवेसणए असंखेगुज्जणे ॥ । (सूत्रं ३७५)॥	্রু তইয়াশ
	ရှိ असंखेगुज्जणे ॥ (सूत्रं ३७५)॥	¥

व्याख्या- प्रक्वािः ₩८०९॥	[प्र0] हे भगवन् ! असंख्याता मतुष्यो संबन्धे प्रश्न. [उ0] हे गांगेय ! ते बघा संमूर्च्छिम मतुष्योमां होय. अथवा असंख्याता संमूर्च्छिम मनुष्योमां होय अने एक गर्भज मतुष्योमां होय. अथवा असंख्याता संमूर्च्छिम मतुष्योमां होय अने वे गर्भज मतुष्योमां होय. ए प्रमाणे यावत् असंख्याता संमूर्च्छिम मतुष्योमां होय अने संख्याता गर्भज मतुष्योमां होय. [प्र0] हे मगवन् ! मतुष्यो होय. ए प्रमाणे यावत् असंख्याता संमूर्च्छिम मतुष्योमां होय अने संख्याता गर्भज मतुष्योमां होय. [प्र0] हे मगवन् ! मतुष्यो इत्कृष्टपपे (कया प्रवेशनकमां होय ?) ए संबन्धे प्रश्न. [उ0] हे गांगेय ! ते बधाय संमूर्च्छिम मतुष्योमां होय. अथवा संमूर्च्छिम मतुष्यो अने गर्भज मतुष्योमां पण होय. [प्र0] हे भगवन् ! संमूर्च्छिममतुष्यप्रवेशनक अने गर्भजमतुष्यप्रवेशनकमां कुयुं प्रवेशनक कोनाथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ0] हे गांगेय ! सौथी अल्प गर्भजमतुष्य प्रवेशनक डे, अने संमूर्च्छिम मतुष्यप्रवेशनक असंख्यग्रण डे. ॥ ३७५ ॥ देवपवेसणए णं भंते ! कतिविहि पन्नत्ते ?, गंगेया ! चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा-भवणवासिदेवपवेसणए जाव वेमाणियदेवपवेसणए। एगे भंते! देवपवेसणएणं पविसमाणे किं भवणवासीसु होज्जा वाणमंतरजोहसियवेमाणिएसु होजा ?, गंगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा वाणमंतरजोइसियवेमाणिएसु वा होज्जा । दो भंते ! देवा देवपवेसणए पुच्छा, गंगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा वाणमंतरजोइसियवेमाणिएसु वा होज्जा अहवा एगे भवणवासीसु एगे वाणमंतरजोइसियवेमाणिएसु होज्जा एवं जहा तिरिक्खजोणियपवेसणए तहा देवपवेसणए विध्रायवे जाव असंखेजन्ति । उकोसा भंते! पुच्छा,गंगेया! सच्वेवि ताव जोइसिइसु होज्जा अहवा जोइसियभवणवासीसु य होज्जा	5 404 3 3 3 3 4 3 3 3 3 3 4 3 4 3 4 3 4 3 4
	🕈 अहवा जाहासयवाणमतरसु य हाज्जा अहबा जाहासयवमाणिएसु य हाजा अहवा जाहासएसु य भवणवासासु	<u>ç</u>

For Private and Personal Use Only

च्यारूया- प्रद्वप्तिः ॥८१०॥	र प्रतार मयुणया। सुद्यप्रविश्वास यो जमा(रिद्यप्रविश्वास जार्रा जर्पविस्ता स्ति स्ति प्रति प्रति प्रति प्रति प् स्स य कयरे २ जाव विसेसाहिया वा ?, गंगेया ! सव्वस्थोवे वेमाणियदेवपवेसणए भवणवासिदेवपवेसणए अ- संखेड्जगुणे वाणमंतरदेवपवेसणए असंस्वेज्जगुणे जोइसियदेवपवेसणए संखेज्जगुणे ॥ (सूत्र ३७६) ॥ [प्र०] हे भगवन् ! देवप्रवेशनक केटला प्रकारे कर्धु छे ? [उ०] हे गांगेय ! चार प्रकारे कर्द्यु छे. ते आ प्रमाणे — ? भव- नवासिदेवप्रवेशनक, यावद् ४ वैमानिकदेवप्रवेशनक. [प्र०] हे भगवन् ! एक देव देवप्रवेशनकद्वारा प्रवेश करतो श अवनवासिमां होय, वानव्यंतरमां होय, ज्योतिषिकमां होय के वैमानिकमां होय ? [उ०] हे गांगेय ! १ भवनवासिमां होय, २ वानव्यंतर, ३ ज्यो- तिष्क अने ४ वैमानिकमां पण होय. [प्र०] हे भगवन् ! बे देवो देवप्रवेशनकवडे प्रवेश करता-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ते बे देवो १ भवनवासिमां होय, २ वानव्यंतर, ३ ज्योतिष्क अने ४ वैमानिकमां पण होय. अथवा एक भवनवासिमां होय अने एक वानव्यंतरमां होय. ए प्रमाणे जेम तिर्यंचयोनिकप्रवेशनक कर्द्यु छे तेम देवप्रवेशनक पण यावद् असंख्याता देवोसुधी जाणवुं. [प्र०] हे भगवन् ! देवो उत्कष्टपणे (कया प्रवेशनकमां होय ?)-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ते बधा ज्योतिषिकमां होय. अथवा ज्यो	१ वत् २ ३त् उदेशम् ॥८१०	۲
	े जिने स्वन्तनाता अन् वानव्यतरना हाय. जयवा ज्यात्त्यक, चयनपति जन क्यानिसना हाय. जयया व्यति सं, यत्य पत् पत् पत्	×	

भू भनकथी यावद् विशेषाधिक छे? [उ०] ह गागय ! साथा अल्प मनुष्यप्रवसनक छे, तथा नरायकप्रवसनक असल्पात जुप छ, तेना करतां असंख्यातगुण देवप्रवेशनक छे अने तेनाथी असंख्यातगुण तिर्यचयोनिकप्रवेशनक छे. ॥ ३७७ ॥ संतरं भंते! नेरइया उववर्ज्ञति निरंतरं नेरइया उववर्ज्ञति संतरं असुरकुमारा उववर्ज्ञति निरंतरं असुरकु संतरं भंते! नेरइया उववर्ज्ञति निरंतरं नेरइया उववर्ज्ञति संतरं असुरकुमारा उववर्ज्ञति निरंतरं असुरकु मारा जाव संतरं वेमाणिया उववर्ज्ञति निरंतरं वेमाणिया उववर्ज्ञति संतरं नेरइया उववर्द्धति निरंतरं नेरतिया अववर्द्धति जाव संतरं वाणमंतरा उववर्द्धति निरंतरं वाणमंतरा उववर्द्धति संतरं जोइसिया चयंति निरंतरं जोइ- सिया चयंति संतरं वेमाणिया चयंति निरंतरं वेमाणिया चयंति?, गंगेया! संतरंपि नेरतिया उववर्ज्ञति निरंतरंपि	व्याख्या- प्रकारिः HC११॥	संतरं भंते! नेरइया उववर्ज़ति निरंतरं नेरइया उववर्ज़ति संतरं असुरकुमारा उववर्ज़ति निरंतरं असुरकु भारा जाव संतरं वेमाणिया उववर्ज़ति निरंतरं वेमाणिया उववर्ज़ति संतरं नेरइया उववर्द्धति निरंतरं नेरतिया विजनवर्द्धति जाव संतरं बाणमंतरा उववद्धति निरंतरं वाणमंतरा उववर्द्धति संतरं जोइसिया चयंति निरंतरं जोइ-	
--	--------------------------------	--	--

प्रइप्तिः ॥८१२॥ भ्रि प्रां जाव थणियकुमारा नो संतरं पुढविकाइया उववर्द्यति निरंतरं पुढविकाइया उववर्द्यति एवं जाव वणस्सइकाइया सेसा जहा नेरइया, नवरं जोइसियवेमाणिया चर्यति अभिलावो, जाव संतरंपि वेमाणिया चर्यति निरंतरंपि वेमाणिया चर्यति ॥ [प्र] दे भगवन् ! नैरयिको सान्तर (अन्तरसहित) उत्पन्न थाय छे के निरंतर (अन्तररहित) उत्पन्न थाय छे ? असुरकुमारो सान्तर ऊत्पन्न थाय छे के निरन्तर उत्पन्न थाय छे ? यावत् वैमानिक देवो सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरन्तर उत्पन्न थाय छे ? नैरयिको सान्तर उद्वेते छे-नीकळे छे के निरन्तर उद्वर्ते छे ? यावत् वमानिक देवो सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरन्तर उद्वर्ते छे ? ज्योतिष्को सान्तर च्यवे छे के निरन्तर च्यवे छे ? अने वैमानिको सान्तर च्यवे छे के निरन्तर उद्वर्ते छे ? ज्योतिष्को सान्तर च्यवे छे के निरन्तर पण उत्पन्न थाय छे. यावत् रतनितकुमारो सान्तर अने निरन्तर उत्पन्न थाय छे. पृथिवीकायिको सन्तर उत्पन्न थाय छे अने निरन्तर पण उत्पन्न थाय छे. एप्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिको पण निरन्तर उत्पन्न थाय छे. तथा वाकीना	
---	--

९ ततके

उदेशः५

1162311

X

≯

3

3

¥

3

CA SCA SCA

उद्देतें छे. ए प्रमाणे यावद् वनस्पतिकाथिको पण जाणवा. बाकीना बधा जीवो नैरयिकोनी पेठे सान्तर अने निरन्त मास्या- प्रवासिः संतो भंते ! नेरतिया उववज्रांति असतो भंते ! नेरइया उवदज्रांति ?, गंगेया ! संतो नेरइ संतो भंते ! नेरतिया उववज्रांति असतो भंते ! नेरइया उवदज्रांति ?, गंगेया ! संतो नेरइय नो असंतो नेरइया उववज्रांति, एवं जाव वेमाणिया, संतो भंते ! नेरतिया उववद्वंति असंतो नेरइय गंगेया ! संतो नेरइया उववज्रांति असतो नेरइया उववद्वंति, एवं जाव वेमाणिया नवरं जोहस् चयंति भाणियव्वं। सओ भंते! नेरइया उववज्रांति असतो भंते? नेरइया उववज्रांति सतो असुरकुमा जाव सतो वेमाणिया उववज्रांति असतो वेमाणिया उववज्रांति मतो नेरतिया उववद्वंति असतो नेरइ सतो असुरकुमारा उववद्वंति जाव सतो वेमाणिया चयंति असतो वेमाणिया चयंति ?, गंगेया ! उववड्रजंति नो असओ नेरइया उववज्रांति सो असतो वेमाणिया उववज्र्जति सतो नेरतिया उववद्वंति ?, गंगेया ! उववड्रजंति नो असओ नेरइया उववज्रांति नो असतो वेमाणिया उववज्र्जति सतो नेरतिया उववद्वंति ?, गंगेया ! उववर्डति जाव सतो वेमाणिया चयंति नो असतो वेमाणिया उववज्र्जति सतो नेरतिया उववद्वंति नो अ उववद्वंति जाव सतो वेमाणिया चयंति नो असतो वेमाणिया उववज्र्जति सतो नेरतिया उववद्वंति नो अ उववद्वंति जाव सतो वेमाणिया चयंति नो असतो वेमाणिया उववज्र्जति सतो नेराणिया चयंति ?, गंगेया ! पासेणं अरहया उववज्र्जति जाव सओ वेमाणिया चयंति नो असतो वेमाणिया ज्यवत्र्जति सतो नेराणिया चयंति ?, गंगेया ! पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं सासए छोए बुइए अणादीए अणवयग्गे जहा पंचमसए ज से छोए, से तेणट्रेणं गंगेया ! एवं तुच्चइ जाव सतो वेमाणिया चयंति नो असतो वेमाणिया चयंति ?,	रन्तर च्यवे छे. या उववर्ज़ति उववहंति १, यवेमाणिएसु रा उववर्ज़ति या उववर्ड्नति सतो नेरइया र उववर्ज्जति सतो नेरइया नेरइया उव- से नूणं भंते ! ाव जे लोकइ
---	--

[प्र०] हे मगवन् ! सट्-विद्यमान नैरयिको उत्पन्न थाय छे के असट्-अविद्यमान नैरयिको उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गांगेय ! स्ट्-विद्यमान नैरयिको उत्पन्न थाय छे, पण असट् नैरयिको उत्पन्न थता नथी. ए प्रमाणे यावद् वैमानिक पर्यन्त जाणतुं. [प्र0] स्ट्-विद्यमान नैरयिको उद्वर्ते छे के अविद्यमान नैरयिको उद्वे छे ? [उ०] हे गांगेय ! विद्यमान नैरयिको उद्वे छे पण स्ट्र मगवन् ! विद्यमान नैरयिको उद्वर्ते छे के अविद्यमान नैरयिको उद्वे छे ? [उ०] हे गांगेय ! विद्यमान नैरयिको उद्वर्ते छे पण अविद्यमान नैरयिको उद्वर्ते नाथी. ए प्रमाणे यावद् वैमानिको सुधी जाणतुं. विशेष ए छे के ज्योतिष्क अने वैमानिकोमां 'च्यवे छे' अविद्यमान नैरयिको उद्वर्ते ता नथी. ए प्रमाणे यावद् वैमानिको सुधी जाणतुं. विशेष ए छे के ज्योतिष्क अने वैमानिकोमां 'च्यवे छे' स्ट्रो पाठ कहेवो. [प्र0] हे भगवन् ! सद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे के असद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे हे सद् असुरकुमारो उत्पन्न थाय स्ट्रो पाठ कहेवो. [प्र0] हे भगवन् ! सद् नैरयिको उद्यते छे ? ए प्रमाणे यावत् सद् वैमानिको उत्पन्न थाय छे के असद् असुरकुमारो उत्पन्न थाय स्ट्रो पाठ कहेवो. [प्र0] हे भगवन् ! सद् नैरयिको उद्वते छे ? ए प्रमाणे यावत् सद् वैमानिको उत्पन्न थाय छे के असद् वैमानिको उत्पन्न थाय स्ट्रे ? सद् नैरयिको जद्वते छे के असद् नैरायिको उद्वते छे ? [उ0] हे गांगेय ! सद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे पण असद् नैरयिको जत्पन्न थता नथी. सद् असुरकुमारो उत्पन्न थात छे ए ण असद् असुरकुमारो उद्वते छे के असद् नैरयिको उद्वर्तता नथी. यावद् सद् वैमानिको उत्पन्न था छे पण असद् वैमानिको उत्पन्न थता नथी. सद् नैरयिको उद्वतेंछे पण असद् नैरयिको उद्वर्तता नथी. यावद् सद् वैमानिको उत्पन्न थाय छे पण असद् वैमानिको उत्पन्न थता नथी. स्र् वैरायिको उद्वतेंछे पण असद् वैरियको उद्वत्ता नथी. यावद् सद् वैमानिको पण असद् नैरयिको उत्पन्न थता नथी. ए प्रमाणे यावद् सद् वैमानिको च्यवे छे पण असद् वैगानिको च्यवता नथी ? द भगवन् ! द्रु ते निश्वित छे ? [उ0] हे गांगेय ! खरेखर पुरुषादानीय अर्हत् श्रीपश्चिनये औ को को के ते होत्वथो हे गांग्य एम कछ्य द्रियादि पांचमा शतकमां कद्या प्रकामां ज्या त्र जे अवलोकी सकाय–जाणी स्रकाय ते लोक, ते हेत्वथी हे गांगेय एम कछ्य

मातिः ही नरइया उववज्जात जाव सजा यमाणिया चयात मा जसजा यमाणिया चयातः, गगयाः सय एत एव जागा है। जा जा का जाता है ज	, त्रतके देशः ८१५॥
--	--------------------------

व्याख्या-

त्रज्ञप्तिः ॥८१६॥

A C & C & C & C & C & C & C & C & C & C	जाणवुं, यावत् केवलिनुं ज्ञान निरावरण होय छे,' माटे हे गांगेय ! ते हेतुथी एम कहुं छुं के 'हुं स्वयं जाणुं छुं-इत्यादि यावद् असद् वैमालिको च्यवता नथी.' सयं भंते ! नेरइया नेरइएसु उववज्रान्ति असयं नेरइया नेरइएसु उववज्रांति ?, गंगेया ! सयं नेरइया नेरइ- एसु उववज्रांति नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्रांति श. से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुचइ जाव उववज्रांति ?, गंगेया ! कम्मोदएणं कम्मगुरुयत्ताए कम्मभारियत्ताए कम्मगुरुसंभारियत्ताए असुआणं कम्माणं उदएणं असुआणं क- माणं विवागेणं असुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं नेरइया नेरइएसु उववज्रांति, नो असयं नेरइया नेरइएम उववज्रांति, से तेणट्ठेणं गंगेया ! जाव उववज्रांति । सर्यं भंते ! असुरकुमारा पुच्छा, गंगेया ! सयं असुरकुमारा जाव उववज्रांति नो असयं असुरकुमारा जाव उववज्रांति, से केणट्ठेणं तं चेव जाव उववज्रांति ?, गंगेया ! कम्मो दएणं कम्मोवसमेणं कम्मविगतीए कम्मविसोहीए कम्मविसुद्धीए सुभाणं कम्माणं उदएणं सुभाणं कम्मान् प्रणं कम्मोवसमेणं कम्मविगतीए कम्मविसोहीए कम्मविसुद्धीए सुभाणं कम्माणं उदएणं सुभाणं कम्मान् प्रणं कम्मोवसमेणं क्रमविगानीणं सयं असुरकुमारा असुरकुमाराए जाव उववज्रांति, नो असयं असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए उववज्रांति, से तेणट्टेणं जाव उववज्रांति, एवं जाव थणियकुमारा ॥ [प्र0] हे भगवन् ! नैरयिको नैरयिकमां स्वयं उत्पन्न थाय छे के अस्वयं उत्पन्न धाय छे. ? [उ0] हे गांगेय ! नैरयिको नैर- यिकमां स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण अस्वयं उत्पन्न थता नथी. [प्र0] हे भगवन् ! एम जा हेतुथी कहो छो के 'स्वयं यावद् उत्पन्न थाय छे' ? [उ0] हे गांगेय ! कर्मना उदयथी, कर्मना गुरुपणाथी, कर्मना भारेपणाथी, कर्मना अत्यन्त भारेपणाथी, अग्रुभ कर्मोना	2 + 0 + 0 + 0 + 0 + 0 + 0 + 0 + 0 + 0 +	शतके २ १५ १६:1
---	---	---	------------------------------------

ख्याख्या- प्रइप्तिः ॥८१७॥	KARARARAR	उदयथी, अग्रुभ कर्मोना विपाकथी अने अग्रुभ कर्मोना फल-विपाकथी नैरयिको नैरयिकोमां स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण नैरयिको नैरयिकोमां अस्वयं उत्पन्न थता नथी; ते हेतुथी हे गांगेय ! एम कहेवाय छे के यावत् 'तेओ स्वयं उत्पन्न थाय छे.' [म०] हे भगवन् ! असुरकुमारो स्वयं (असुरकुमारपणे उत्पन्न थाय छे ?) इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! असुरकुमारो स्वयं उत्पन्न थाय छे.' [म०] हे भगवन् ! असुरकुमारो स्वयं (असुरकुमारपणे उत्पन्न थाय छे ?) इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! असुरकुमारो स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण अस्वयं उत्पन्न थता नथी.[म०] हे भगवन् ! एम आ हेतुथी कहो छो के तेओ 'स्वयं यावद् उत्पन्न थाय छे' ? [उ०] हे गांगेय ! कर्मना उदयथी, (अश्रुभ) कर्मना उपश्रमथी, अश्रुभ कर्मना अभावथी, कर्मनी विश्वोधिथी, कर्मनी विशुद्धिथी, शुभ कर्भोना उदयथी, शुभ कर्मोना विपाकथी अने शुभ कर्मोना फल-विपाकथी असुरकुमारो असुरकुमारपणे स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण असुरकु- मारो असुरकुमारपणे अस्वयं उत्पन्न थता नथी. माटे हे गांगेय ! ते हेतुथी एम कहेवाय छे के, यावत् 'उत्पन्न थाय छे.' ए प्रमाणे	30-14-06-14-06-	९ चतके उद्देवः५ ॥८१७॥
	******	यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. सयं भंते ! पुढविकाइया० पुच्छा, गंगेया ! सयं पुढविकाइया जाव उववर्ज्ञति नो असयं पुच्छा जाव उवव- ज्जंति, से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव उववर्ज्ञति ?, गंगेया ! कम्मोदएणं कम्मगुरूयत्ताए कम्मभारियत्ताए कम्मगुरूसंभारियत्ताए सुभासुभाणं कम्माणं उदएणं सुभासुभाणं कम्माणं विवागेणं सुभासुभाणं कम्माणं फल- विवागेणं सयं पुढवि काइया जाव उववज्जंति नो असयं पुढविकाइया जाव उववज्जंति, से तेणट्टेणं जाव उवव- ज्जंति, एवं जाव मणुस्सा, पणमंतरजोइसिया वेमाणिया जहा असुरक्कमारा, से तेणट्टेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ सयं वेमाणिया जाव उववज्जंति नो असयं जाव उववज्जंति ॥ (सूत्रं ३७८) ॥	z	

[प्र0] हे भगवन् ! प्रथिवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे !-इत्यादि प्रश्न. [उ0] हे गांगेय ! प्रथिवीकायिको स्वयं उत्पन थाय छे पण अस्वयं उत्पन्न थाता नथी. [प्र0] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'प्रथिवीकायिको स्वयंउत्पन्न थाय छे' [उ0] हे गांगेय ! कर्मना उदयथी, कर्मना एरुपणाथी, कर्मना भारथी, कर्मना अत्यन्त भारथी, छुभ अने अग्रुभ कर्मोना उदयथी छभ अने अग्रुभ कर्मोना विपाकथी अने शुभाशुभ कर्मेना फरुविपाकथी प्रथिवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण यावद् अस्वय उत्पन्न थता नथी. माटे हे गांगेय ! ते हेतुथी एम कहुं छुं के-यावत् 'प्रथीवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे. एण प्रवाद उत्पन्न थता नथी. माटे हे गांगेय ! ते हेतुथी एम कहुं छुं के-यावत् 'प्रथीवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे. एण प्रावत् मनु प्रयो सुधी जणवुं. जेम असुरकुमारोने कहुं तेम वानव्यंतर, ज्योतिपिक अने वैमानिको संबन्धे कहेतुं. माटे हे गांगेय ! ते हेतुथी एम कहुं छुं के-यावत् 'वैमानिको स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण अस्वयं उत्पन्न थता नथी.' ॥ २७८ ॥ तष्पभिद्वं के-यावत् 'वैमानिको स्वयं अत्पन्न थाय छे, पण अस्वयं उत्पन्न थता नथी.' ॥ २७८ ॥ तष्पभिद्वं च णां से गंगेथे अणगारे समणं भगवं महावीरं पचिम्जाणाइ सञ्चनन्तु सञ्चदरिसी, तए णं से गंगेये अणगारे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ करेत्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामि णं भंते ! तुज्झं अंतियं चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं एवं जहा कालासबेसियपुत्ते तहेव भाणियव्वं जाव सञ्चवुत्वखप्पहीणे ॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! ॥ (सूत्रं ३७९) ॥ गंगेयो समत्तो ॥ ९ । ३२ ॥ त्यार पछी श्रीगांगेय अनगार श्रमण भगवन् महावीरते सर्वज्ञ अने सर्वदर्यी जाणे छे. त्यारबाद ते गांगेय अनगार श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार आदक्षिणा प्रदक्षिणा करे छे, करीने वांदे छे, नमे छे; वांदीने, नमीने तेणे एम कछुं के-हे भगवन् त्यारी पासे चार महावत धर्मथी पांच महात्रतधर्मने प्रहण करवा इच्छे छुं. ए प्रमाणे चर्रु कालासवेसिक प्रुननी पेठे यावत् ते 'सर्व	the set of the	९ ञ्चतके उद्देश ः ५ ॥८१ ८॥
--	----------------	---

व्यारूया- प्रह्नसिः	दुःखथी मुक्त थया' त्यां सुघी कहेवुं. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे. ॥ ३७९ ॥ भगवत् मुधर्मस्वामीप्रणीत श्रीमद् भगवतीस्रत्रना ९ मा शतकमां पांचमा उद्देशानो मूलार्थ संपूर्ण थयो.	२ इ.स. <u>२</u>	, शतके देवाःद
1168911	उद्देशक ६.	2 11	1683H
	तेणं काल्ठेणं तेणं समएणं माहणकुंडग्गामे नयरे होत्था, वन्नओ, बहुसालए चेतिए, वन्नओ, तत्थ णं माह- णकुंडगामे नयरें उसभदत्ते नाम माहणे परिवसति अड्ढे दित्ते वित्ते जाव अपरिभूए रिउवेदजजुवेदसामवेदअथ- व्वणवेद जहा खंदओ जाव अन्नेसुय बहुसु बंभन्नएसु नएसु सुपरिनिट्टिए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे उव- लद्धपुण्णपावे जाव अप्रपाणं भावेमाणे विहरति, तस्सणं उसभदत्त्तमाहणस्स देवाणंदा नामं माहणी होत्था, सुकु- लद्धपुण्णपावे जाव अप्रपाणं भावेमाणे विहरति, तस्सणं उसभदत्त्तमाहणस्स देवाणंदा नामं माहणी होत्था, सुकु- लद्धपुण्णपावे जाव अप्रपाणं भावेमाणे विहरति, तस्सणं उसभदत्त्तमाहणस्स देवाणंदा नामं माहणी होत्था, सुकु- मालपाणिपाया जाव पियदंसणा सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुन्नपावा जाव विहरइ । तेणं काल्ठेणं तेणं समएणं सामी समोसढे, परिसा जाव पज्जुवासति, तए णं से उसभदत्ते माहणे इमीसे कहाए लद्धट्टे समाणे हट्ठ जाव हियए जेणेव देवाणंदा माहणी तेणेव उवागच्छति २ देवाणंदं माहणिं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुष्पिए! समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव सव्वन्नू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव सुइंसुहेणं विहरमाणे जाव बहुसालए चेइए अहापडिरूवं जावविहरति, तं महाफलं खलु देवाणुप्रिए ! जाव तहारूवाणं अरिहंताणं भगवंताणं नामगोयस्सचि सवणयाए,किमंग पुण अभिगमणवंदणनमंसणपडिपुच्छणपज्जुवासणयाए?	No.	

व्याख्या- प्रबक्तिः ॥८२०॥	एगस्सवि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अद्रस्स गहणयाए ?, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिए ! समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो जाव पज्जुवासामो, एयण्णं इहभवे य परभवे य हि- याए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ। तए णं सा देवाणंदा माहणी उस भदत्तेणं माहणेणं एवं युत्ता समाणी हट्टजाव हियया करयलजावकट्ठु उस भदत्तस्स माहणस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, ते काले, ते समये बाझणकुंदग्राम नामे नगर हतुं. वर्णन. बहुवालक नामे चैत्य हतुं. वर्णन. ते बाझणकुंदग्राम नामे नगरमां ऋषभदत्त नामे ब्राझण रहेतो हतो. ते आढ्य-धनिक, तेजस्वी, प्रसिद्ध अने यावत अपरिभूत- कोइथी पराभव न पामे तेवो हतो. वळी ते ऋण्वेद, यजुर्वेद, सामवेद अने अथर्वणवेदमां निपुण अने स्कंदक तापसनी पेठे यावत् बाझणोना बीजा घणा नयोमां इग्र हतो. ते अमणोनो उपासक, जीवाजीव तत्त्वने जाणनार, पुण्य-पापने ओळखनार अने यावत् आत्माने भावित करतो विहरतो हतो. ते ऋषभदत्त बाझणने देवानंदा नामे बाझणी स्त्री हती. तेना हाथ पग सुक्रुमाल हता, यावत् तेनुं दर्शन प्रिय हतुं अने तेनुं रूप सुन्दर हतु. वळी अमणोनी उपासिका (देवानंदा) जीवाजीव अने पुण्यपापने जाणती विहरती हती. ते काले, ते समये महावीरस्वामी समोसर्या. पर्यत् यावत् पर्श्वपासना करे छे. त्यारपछी ते ऋषभदत्त बाझण अमण भगवान् महावीरना आगमननी आवात जाणीने खुग्र ययो, यावत् उछासित इदयवाळो थयो, अने ज्यां देवानंदा बाझाणी हती त्यां आच्यो. त्यां आवीने तेणे देवानंदा बाझाणीने जा प्रमाणे कर्मु के-'ह देवानुप्रिये ! ए प्रमाणे अर्ही तीर्थनी आदि करनार यावत् सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी श्रमण भगवान् महावीर आकाश्वानं रहेला कावत्र वर्ड यावत् सुखपूर्वक विहार करता बहुशालक नामे चैत्यमां योग्य अवग्रहने ग्रहण करीने यावत् विहरे छे. हे देवानुप्रिये ! यावत्	xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx	अतके देखा ६ ८२०॥
---------------------------------	---	--	--------------------------------------

९ त्रतके

उद्देशः६

16281

1	<u>ک</u>		
	Č	तेवा प्रकारना अईत् भगवंतना नाम∽गोत्रना पण अवणथी मोटुं फल प्रप्त थाय छे, तो वळी तेओना अभिगमन (सामा जवुं), वंदन,	Č,
व्या रूया-) A	नमन, प्रतिप्रच्छन अने पर्युपासन करवाथी फल थाय तेमां छुं कहेवुं ? तथा एक पण आर्य अने धार्मिक सुवचनना श्रवणथी मोटुं	*
म्रज्ञ सिः	S	फल थाय छे, तो वळी विपुछ अर्थने ग्रहण करवावडे महाफल थाय तेमां छुं कहेवुं ? माटे हे देवानुप्रिये ! आपणे जइए अने अमण	S i
1162811	Ğ	भगवंत महावीरने वन्दन−नमन करीए, यावत् तेमनी पर्युपासना करीए. ए आपणने आ भवमां तथा परभवमां हित, सुख, संगतता,	
	P	निःश्रेयस अने छुम अनुबंधने माटे थशे. ज्यारे तेऋषभदत्त ब्राह्मणे देवानंदा ब्राह्मणीने ए प्रमाणेकहुं त्यारे ते खुश थइ, अने यावत्	Э Э
	S	उछसितहृदयवाळी थईने पोताना करतलने यावत् मस्तके अंजलिरूपे करी ऋषभदत्त ब्राह्मणना ए कथनने विनयपूर्वक स्वीकारे छे.	A B
	(C)	तए णं से उमभदत्ते माहणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणु·	a a
	\mathbf{k}	ष्पिया!लहुकरणजुत्तजोइयसमखुरवालिहाण सम लिहियसिंगेहिं जंबूणयामयकलावजुत्त परिविसिट्ठेहिं रययामया-	P
	8	घंटासुत्तरज्जुयपवरकंचणनत्थपग्गहोग्गहियएहिं नीऌप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिरयणघंटिय-	S
	Ç	जालपरिगयं सुजायजुगजोत्तरज्जुयजुगपसंत्थसुविरचियनिम्मियं पवरलक्खणोववेयं [ग्रन्थाग्रम् ६०००] धम्मियं	Se !
	ž	जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्टवेह २ मम एयमाणत्तियं पचप्पिणह,तएणं ते कोडुंबियपुरिसा उसभदत्तेणं माहणेणं	\mathbf{k}
	Z	एवं वुत्ता समाणा हट्ट जाव हियया करयल॰ एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं जाव पडिसुणेत्ता खि-	Š.
	the the set for the set of the	प्पामेव लहुकरणजुत्त जाव धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेत्ता जाव तमाणत्तियं पचप्पिणंति,	Ç
	¢	त्यारबाद ते ऋषभदत्त ब्राह्मण पोताना कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे, बोलावीने तेओने तेणे आ प्रमाणे कह्युं के—हे देवानुप्रियो !	È

व्याख्या- प्रइतिः ॥८२२॥	युवान बळदोथी युक्त; अनेक प्रकारनी मणिमय घंटडीओना समूद्दथी व्याप्त, उत्तम काष्ठमय धोंसरु अने जोतरनी बे दोरीओ उत्तम रीते जेमां गोठवेली छे एवा; प्रवरलक्षणयुक्त, धार्मिक, श्रेष्ठ यानरथने तैयार करी हाजर करो अने आ मारी आज्ञा पाछी आपो'. ज्यारे ते ऋषभदत्त ब्राह्मणे ते कौटुंबिक पुरुषोने एम कह्युं त्यारे तेओए खुञ्च थइ यवद् आनंदितहृ्दयवाळा थइ, मस्तके करतलने जोडी एम कह्युं के— 'हे स्वामिन् ! ए प्रमाणे आपनी आज्ञा मान्य छे'. एम कही विनयपूर्वक वचनने स्वीकारी जलदी चालवावाळा बे बळदोथी जोडेला, यावत् धार्मिक अने प्रवर यानने (रथने) शीघ्र हाजर करीने यावत् आज्ञाने पाछी आपे छे. तए णं से उसभदत्त माहणे ण्हाए जाव अप्पमहरुघाभरणालंकियसरीरें साओ गिहाओ पडिनिक्खमति साओ गिहाओ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवर दुरूढे। तए णं सा देवाणंदा माहणी अंतो अंतेउरांसि ण्हाया कयबलि- कम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता, किं च वरपादपत्तनेउरमणिमेहलाहारबिरइयउचियकडगखुड्ढायएकावलीकंठ- सुत्तउरत्थगेवेज्जसोणिसुत्तगनाणामणिरयणभूसणविराहयंगी चीणंसुयवत्थपवरपरिहिया दुग्रुल्लसुक्तमालउत्तरिज्ञा	ণ ও ভবক উ উ বিয়াহ প জ জ জ জ জ জ জ জ জ জ জ জ জ জ জ জ জ জ	
e e e e e e e e e e e e e e e e e e e	सुव्वोउ यसुरभिकुसुमवरियसिरया वरचंदणवंदिया वराभरणभूसियंगी कालागुरुधूवधूविया सिरिसमाणवेसा जाव अप्पमहरुघाभरणालंकियसरीरा बहूहिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं वामणियाहिं वडहियाहिं बब्बरियाहिं ईसिग-	A:	

ध्या रूया- प्रज्ञसिः ॥८२३॥	र्रे त्यारबाद ते ऋषभदत्त ब्राह्मण स्नान करी यावत् अल्प अने महामूल्यवाळां आभरणोथी पोताना शरीरने अलंकृत करी पोताना घरथी बहार निकळे छे. बहार निकळीने जे ठेकाणे बहारनीउपस्थान शाला छे, अने ज्यां धार्मिक यानप्रवर छे त्यां आवीने ते रथ उपर चढे छे. त्यारबाद ते देवानंदा ब्राह्मणी अंदर अंतःपुरमां स्नान करी, बलिकर्म —पूजा करी, कौतुक-(मषीतिलेक) मंगल अने प्रायश्चित्त करी, पगमां पहेरेला सुंदर नू पुर. मणिनो कंदोरो, हार, पहेरेलां उचित कडां, वींटीओ, विचित्रमणिमय एकावली (एक- सरंवाळा) हार. कंठसत्र, छातीमां रहेला प्रेवर न पुर. मणिनो कंदोरो, हार, पहेरेलां उचित कडां, वींटीओ, विचित्रमणिमय एकावली (एक- सरंवाळा) हार. कंठसत्र, छातीमां रहेला प्रेवेयक (लांबा हार), कटीसत्र, अने विचित्रमणि तथा रत्नोना आभूषणथी शरीरने सुशोमित करी, उत्तम चीनांग्रुक वस्नने पहेरी, उपर सुकुमाल रेशमी वस्नने ओढी, बधी ऋतुना सुगंधी पुष्पोथी पोताना केशने गुंथी, कपाळमा चंदन लगावी, उत्तम आभूषणथी शरीरने शणगारी, कालागरुना धूपवडे सुगंधित थइ, लक्ष्मीसमानवेशवळी, यावत्त अल्प अने बहु- मल्यवाळां आभरणोथी शरीरने अलंकृत करी. घणी कब्ज दासीओ, चिलातदेशनी दासीओ, यावत अनेक देश विदेन्नथी आवीने	९ भरतके उदेशः ।।८२३॥ २ </th
	एकठी थयेली, पोताना देशना पहेरवेश जेवा वेशने धारण करनारी, इंगितवडे-आकृतिवडे-चिन्तित अने इष्ट अर्थने जाणनारी,	

प्रबातिः 🥻 रथ) डभो छे त्यां आवे छे.	९ श्रतके उदेश्र १ ॥८ २४॥
-------------------------------------	---

	आवीने यावत् ने धार्मिक उत्तम स्थ उपर चढे छे. त्यारबाद ते ऋषभदत्त ब्राह्मण देवानंदा ब्राह्मणीनी साथे धार्मिक अने श्रेष्ठ यान (रथ) उपर चढीने पोताना परिवारनी साथे ब्राह्मणक्कुंडग्राम नामे नगरना मध्यभागमांथी निकळे छे. निकळीने जे स्थळे बहु शालक चैत्य छे त्यां अवे छे. त्यां आवी तीर्थकरना छत्रादिक अतिज्ञयोने जुए छे; जोईने धार्मिक श्रेष्ठ रथने जुभो राखे छे. जुभो	ि २ ९ वतके २ उदेवः ६
HC9411 4978	राखौ तेना उपरथी नीचे उतरे छे. उतरीने श्रमण भगवंत महावीरनी पासे पांच प्रकारना अभिगमवडे जाय छे. ते आ प्रमाणे- 'सचिच द्रव्योनो त्याग करवो'-इत्यादि बीजा शतकमां कह्या प्रमाणे यावत् त्रण प्रकारनी उपासनावडे उपासे छे. ते देवानंदा झाह्यणी पण धार्मिक यानप्रवरथी नीचे उतरे छे, उतरीने घणी क्रुब्जदासीओना यावत् मान्य पुरुषना समूद्दथी परिवृत थईने श्रमण भगवंत महावीरनी पासे पांच प्रकारना अभिगमवडे जाय छे. ते आ प्रमाणे-१ सचिच द्रव्यनो (फलादिनो) त्याग करवो. २ अचित द्रव्यनो (आभरणादिनो) त्याग नहि करवो, ३ विनयथी शरीरने अवनत करवुं, ४ भगवंतने चक्षुथी जोतां अंजलि करवी. अ भि मननी एकाप्रता करवी. ए पांच अभिगम वडे ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने श्रमण भगवंत महावीरने प्रण वार प्रदक्षिणा करे छे. करीने वांदे छे, नमे छे. वांदी अने नमी ऋषभदत्त ब्राह्मणने आगळ करी पोताना परिवारसहित उभी रहीने ग्रुश्रूषा करती, नमती अभिग्रुख रहीने विनयवडे हाथ जोडी यावत् उपासना करे छे ॥ ३८० ॥ तए णंसा देवाणंदा माहणी आगयपण्हाया पप्फुय- लोयणा संवरियवल्यवाहा कंचुयपरिक्खित्तिया धारा- हयकलंबगंपिव सम् स्मावियरोमकूवा समणं भगवं महाबीरं अणिमिसाए दिट्टीए देहमाणी चिट्टति ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महाबीरं बंदति नमंसति चंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-किण्णं भंते! एसा देवाणंदा भगवं गोयमे समणं भगवं महाबारं बंदति नमंसति चंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-किण्णं भंते! एसा देवाणंदा	

IIC 75 II	माहणी आगयपण्हवा तं चेव जाव रोमकूवा देवाणुप्पिए अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी चिट्टइ ?, गोयमादि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-एवं खलु गोयमा ! देवाणंदा माहणी मम अम्मा, अहन्नं देवाणं- दाए माहणीए अत्तए, तए णं सा देवाणंदा माहणी तेण पुब्वपुत्तसिणहाणुराएणं आगयपण्हया जाब समूसवि- यरोमकूवा मम अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी २ चिट्ठड़ ॥ (सूत्रं ३८१)॥ त्याबाद ते देवानंदा ब्राह्मणीने पानो चढयो-तेना स्तनमांथी दूधनी धारा छूटी, तेना लोचने आनंदाश्चर्थी मिनां थयां, तेनी हर्षथी एकदम फुल्ती भ्रुजाओने तेना कडाओए रोकी, (हर्षथी श्ररीर प्रफुछित्र थतां) तेनो कंचुक विस्तीर्ण थयो, मेघनी धाराथी विकसित थयेला कदंबपुष्पनी पेठे तेना रोमकूप उमां थया, अने ते श्रमण भगवंत महावीरने अनिमिष दृष्टिथी जोती जोती उभी रही. [प्र॰] त्यारे 'भगवन्'! एम कही भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीरने वांदे छे, नमे छे. वांदीने-नमीने तेणे आ प्रमाणे कहुं- हे भगवन् ! आ देवानंदा ब्राह्मणीने पानो केम चढ्यो, अर्थात् तेना स्तनमांथी दूधनी धारा केम वर्छ्टी इत्यादि पूर्वे कह्या प्रमाणे यावत् तेने रोमांच केम थयो ? अने देवानुप्रिय तरफ अनिमिष नजरे जोती जोती केम उभी छे ? [उ॰] 'हे गौतम ?' एम कही	उदेश्वः ६ ॥८२६॥
	िपिंग] त्यारे 'भगवन्' ! एम कही भगवान् गौतम अमण भगवंत महावीरने वांदे छे, नमे छे. वांदीने-नमीने तेणे आ प्रमाणे कहुं- हे भगवन् ! आ देवानंदा ब्राह्मणीने पानो केम चढ्यो, अर्थात् तेना स्तनमांथी दूधनी धारा केम वछूटी इत्यादि पूर्वे कह्या प्रमाणे यावत् तेने रोमांच केम थयो ? अने देवानुप्रिय तरफ अनिमिष नजरे जोती जोती केम उभी छे ? [उ०] 'हे गौतम !' एम कही अमण भगवान् महावीरे भगवंत गौतमने आ प्रमाणे कह्युं-हे गौतम ! ए प्रमाणे खरेखर आ देवानंदा ब्राह्मणी मारी माता छे, हु देवानंदा ब्राह्मणीनो पुत्र छुं. माटे ते देवानंदा ब्राह्मणीने पूर्वना पुत्रस्नेहानुरागथी पानो चढचो, अने तेना रोमकूप उभा थया, अने मारी साह्य अनिमिष नजरथी जोती डभी छे. ॥ ३८१ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे उसभदत्तरस माहणस्स देवाणंदाए माहणीए तीसे य महतिम-	

ण्या रूया- मबाप्तिः ॥८२ ७॥	S.	सयमे॰२त्ता जेणैव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पया- हिणं जाव नमंसित्ता एवं वयासीआलित्ते णं भंते ! लोए पलित्ते णं भंते ! लोए आलित्तपलित्ते णं भंते ! लोए जराए मरणेण य, एवं एएणं कमेणं इमं जहा खंदओ तहेव पव्वइओ जाव सामाइयमाइयाइं एकारस अंगाइं अहिज्बइ जाव बहूहिं चउत्थछट्टटमदसमजाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामन्न- परियागं पाउणइ २ मासियाए संछेहणाए अत्ताणं इसेति मास॰ २ सर्टिं अत्ताइं अणसणाए छेदेति सर्टिं २ त्ता जस्सट्टाए कीरति नग्गभावे जाव तमट्टं आराहइ जाव तमट्टं आराहेत्ता जाव सव्यदुक्खप्पहीणे। त्यारबाद अमण भगवान् महावीरे ऋषभदत्त बाह्रण, देवानंदा बाह्रणी अने अत्यंत मोटी ऋषि पर्षदने धर्म कहाे. यावत् पर्षद	うちょうやうやうやうやうや	९ वतके उदेव ः ६ ॥८२ ः॥
	XANA SALA		54-54-54-5	

	एम कही ते (ऋषभदत्त बाह्यण) ईशान दिशा तरफ जाय छे, त्यां जइने पीतानी मेळे आभरण, माला अने अलंकारने उतारे छे,	3
व्याख्या-	उतारीने पोतानी मेळे पंचमुष्टिक लोच करे छे. लोच करीने ज्यां अमण भगवंत महावीर छे त्यां आवे छे. आवीने अमण भगवंत	र्ग री ९ ञतके
प्रज्ञप्तिः 🧳	महावीरने त्रणवार प्रदक्षिणा करी यावत नमी तेणे आ प्रमाणे कह्युं के–'हे भगवन् ! जरा अने मरणथी आ लोक चोतरफ प्रज्वलित	
162611	थयेलो छे, हे भगवन् ! आ लोक अत्यन्त प्रज्वलित थयेलो छे, हे भगवन् ! लोक चोतरफ अने अत्यन्त प्रज्वलित थयेको छेए	+ 11676H
X	प्रमाणे ए क्रमशी स्कंदकतापसनी पेठे तेणे प्रव्रज्या लीधी, यावत सामायिकादि अगीयार अंगोनुं अध्ययन करे छे, यावद् घणा उप-	8
1 A	वास, छट्ठ, अट्ठम अने द्ञम यावद् विचित्र तपकर्म वडे आत्माने भावित करतो ते घाण वरस सुधी साधुपणाना पर्यायने पाळे छे.	Я́ Я
\$\$ \$ \$\$	पाळीने मासिकी संलेखना वडे आत्माने वासित करीने साठ भक्तोने अनग्नन करवावडे व्यतीत करीने जेने माटे नग्नभाव-निर्ग्रन्थपणानो	*
(X		Ś
So the So the So	तए णं सा देवाणंदा माहणी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोचा निमम्म हटठतुटा समणं	\$ 2
	भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं जाव नमंसित्ता एवं वयासी-एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! एवं जहा	
	उसभदत्तो तहेव जाव धम्माइक्खियं। तए णं समणे भगवं महावीरे देवाणंदं माहणिं सयमेव पव्यावेति सय०२	8
a de la de l	सयमेव अज्जचंदणाए अज्जाए सीसिणित्ताए दलयइ॥तए णं सा अज्जचंदणा अज्जा देवाणंद माहणिं सयमेव पव्वा-	P
	वेति सयमेव मुंडावेति सयमेव सेहावेति एवं जहेव उसभदत्तो तहेव अज्जचंदणाए अज्जाए इमं एयारूवं धम्मियं उवदेसं सम्मं संपडिवज्जइतमाणाएतह गच्छइ जाव संजमेण संजमति,तए णं सा देवाणंदा अज्जा अज्जचंदणाए	
(s	उबदेसं सम्मं मंपडिवज्जइ तमाणाए तह गच्छह जाव संजमेण संजमति. तए णं सा देवाणंदा अज्जा अज्जचंदणाए	× I
14		∳ il

ण्या रूया- प्रबासिः	अज्जाए अंतियं सामाइयमाइयाइं एकारस अंगाइं अहिज्जइ सेसं तं चेव जाव सव्वदुक्खप्पहीणा ॥(सूत्रं ३८२)॥ हवे ते देवानंदा ब्राह्मणी अमण भगवंत महावीरनी पासे धर्मने सांभळी, हृदयमां अवधारी आनन्दित अने संतुष्ट थइ, अने अमण भगवंत महावीरने त्रणवार प्रदक्षिणा करी यावत् नमस्कार करी आ प्रमाणे बोली-'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे,'-ए प्रमाणे ऋषभदत्तनी जेम् यावत् तेणे भगवंत कथित धर्म कह्यो. त्यारबाद अमण भगवान् महावीर पोते देवानंदा ब्राह्म-	∦ ९ वतक ∱ु उद्देवः६
	अ णीने दीक्षा आपे छं, दीक्षा आपीन पोर्त आयेचदना नामें आयोने शिष्यापणे सौंप छं. त्यारबाद ते आयेचदना आयों पतिज ते है देवानंदा बाह्यणीने दीक्षा आपे छे, रवयमेव मुंडे छे, स्वयमेव शिक्षा आपे छे ए प्रमाणे देवानंदा ऋषभदत्त बाह्यणनी पेठे आर्यचं-	11029.11 11029.11 1029.11
	दनाना आ आवा प्रकारना धार्मिक उपदेशने सम्यक् प्रकारे स्वीकार करे छे, अने तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्ते छे, यावत् संयमवडे प्रवर्ते छे. त्यारपछी देवानंदा आर्या आर्यचंदना आर्यांनी पासे सामायिकादि अगीयार अंगोनुं अध्ययन करे छे. बाकीनुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं, यावत् ते (देवानंदा) सर्वदुःखथी ग्रुक्त थाय छे. ॥ ३८२ ॥ तस्स णं माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स पचन्धिमेणं एत्थणं खत्तियकुंडग्गामेनामं नगरे होत्था, वन्नओ, तत्थ षं खत्तिचकुंडग्गामे नयरे जमालीनामं खत्तियकुमारे परिवसति अढ्ढे दित्ते जाव अपरिभूए उप्पि पासायवरगए फुड्डमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसतिबद्धेहिं नाडएहिं णाणाविहवरतरुणीसंपउत्तेहिं उवनचिज्जमाणे उवनचिज्जमाणे उवगिज्जमाणे २ डवलालिज्जमाणे उव० २ पाउसवासारत्तसरदहेमंतवसंतगिम्हपज्जंते छप्पि उज्ज जहाविभ- बेणं माणमाणे २ कालं गाल्टेमाणे इट्ठे सइफरिसरसरूवगंघे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पचणुब्भवमाणे विहरइ।	

प्रवक्तिः ।।८३०।।	तए णं खत्तियकुंडग्गामे नगरे सिंघाडगतियचउक्तचचरजाव बहुजणसदेइ वा जहा उववाहए जाव एवं पन्नवेह एवं परूवेइ-एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे आइगरे जाव सव्वन्त् सव्वदरिसी माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स बहिया बहुसालए चेइए अहापडिरूवं जाव विहरह, तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अर- हंताणं भगवंताणं जहा उववाहए जाव एगाभिमुहे खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्हांमज्झेणं निग्गच्छंति निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नगरे जेणेव बहुसालए चेइए एवं जहा उववाहए जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवा- संति । तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स तं महया जणसद्दं वा जाव जणसन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था-किन्नं अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नगरे इंदमहेइ वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था-किन्नं अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नगरे इंदमहेइ वा दहमहेइ वा मुग्रंदमहेइ वा णागमहेइ वा जक्खमहेइ वा भूयमहेइ वा क्र्वमहेइ वा तडागमहेइ वा नईमहेइ वा दहमहेइ वा पच्वयमहेइ वा क्रिया खत्तियपुत्ता भडा भडपुत्ता जहा उववाइए जाव सत्थवाहप्यभिइए पहाया क- यबलिकम्मा जहा उववाहए जाव निग्गच्छंति ?, एवं संपेहेइ एवं संपेहित्ता कंचुइज्जुरिसं सदावेति कंचु॰ २ एवं वयासी-किण्णं देवाणुपिया ! अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नगरे इंदमहेइ वा जाव निग्गच्छंति ?, तए णं से कंचुइज्ज- पुरिसे जमालिणा खत्तियकुमारेणं एवं चुत्ते समाणे हटतुट्टे समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणगहियवि-	उदेशः६ ॥८३०॥
	अ पुरिस जमालिणा खात्तयकुमारण एव बुत्त समाण इहतुङ समणस्त मगवआ महावारस्त आगमणगाहयाव ही णिच्छए करयल॰ जमालि खत्तियकुमारं जएणं विजएणंबद्धावेइ बद्धावेत्ता एवं वयासी-णो खल्ठ देवाणुप्पिया !	Ş

ण्यारूया-प्रइसिः ⊪८३१॥

₽ ₩	अज्ञ खत्तियकुंडग्गामे नयरे इंदमहेइ वा जाव निग्गच्छइ, एवं खल्ठ देवाणुप्पिया ! अज्ञ समणे भगवं महावीरे जाव सन्वन्तू सन्वदरिसी माहणकुंडगामस्स नयरस्स बहिया बहुसालए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं जाव विह- रति, तए णं एए बहवे उग्गा भोगा जाव अप्पेगइया वंदणवत्तियं जाव निग्गच्छंति । तए णं से जमाली खत्ति- यकुमारें कंचुइज्ञपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा निसम्म हट्ठतुट्ठ॰ कोडुंवियपुरिसे सद्दावेद्द कोडुंवियपुरिसे सद्दा- वइत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्टवेह उवट्टवेत्ता मम एयमाण- त्तियं पचप्पिणह, तए णं ते कोडुंवियपुरिसा जमालिणा खत्तियकुमारेणं एवं वुत्ता समाणा जाव पचप्पिणंति, हवे ते ब्राह्मणकुंडग्राम नगरनी पश्चिम दिशाए ए खठे क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगर हतुं. वर्णन. ते क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगरमां जमालि नामनो क्षत्रियकुमार रहेतो हतो. ते आढ्य-धनिक, तेजस्वी अने यावद् जेनो पराभव न थइ श्रके एवो (समर्थ) हतो. ते पोताना उत्तम प्रासाद उपर जेमां मृदंगो वागे छे एवा, अने अनेक प्रकारनी सुंदर युवतिओवडे भजवाता बत्रीग्र प्रकारना नाटकोवडे (हत्वने अनुसारे) हस्तपादादि अवयवोने नचावतो २, स्तुति करातो २, अत्यन्त खुग्न करातो २ प्राट्टए, वर्षा, श्वरद, हेमंत, वसंत, अने ग्रीष्म पर्यन्त ए छए ऋतुओमां पोताना वैभव प्रमाणे सुखनो अनुभव करतो २, समयने गाळतो. मढुप्यसंबन्धी पांच प्रकारना इष्ट श्वन्द, स्पर्थ, रस, रूप अने गन्धरूप कामभोगोने अनुभवतो विहरे छे. त्यारबाद क्षत्रियकुंडग्राम नामना नगरमां ग्रुगटक, त्रिक, चतुष्क अने चत्वरमां यावत् घणा माणसोनो कोलाहरु थतो इतो-इत्यादि औपपातिक स्वत्रमां कह्या प्रमाणे कहेवुं; यावत् धणां माणसो परसपर ए प्रमाणे जणावे छे, यावत् ए प्रमाणे प्ररूपे छे के-हे देवानुप्रियो ! ए प्रमाणे खरेखर तीर्थनी आदिना करनारा,	¥	उद्देखः ६ ॥८३१॥
۲ ۲	माणसो परसपर ए प्रमाणे जणावे छे, यावत् ए प्रमाणे प्ररूपे छे के-हे देवानुप्रियो ! ए प्रमाणे खरेखर तीर्थनी आदिना करनारा,	Ż	

4.20 4.00 4.00 4.00 4.00	यावत् सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी अमण भगवन् महावीर आ बाह्मणडुंडग्राम नामे नगरनी बहार बहुशाल नामना चैत्यमां यथाबोग्य अव- ग्रहने ग्रहण करी यावत् विहरे छे, तो हे देवानुप्रियो ! तेवा प्रकारना अर्हत् भगवंतना नामगोत्रना अवणमात्रथी पण मोटुं फल थाय छे'इत्यादि औपपातिक सत्रने अनुसारे वर्णन करवुं. यावत् ते जनसमूह एक दिश्वा तरफ जाय छे, अने क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगरना मध्यभागमांथी वहार निकळे छे, निकळीने ज्यां बाह्मणकुंडग्राम नामे नगर छे, अने ज्यां बहुझालक चैत्व छे त्यां आवे ए प्रमाणे बयुं औपपातिक सत्रने अनुसारे कहेतुं. यावत् त्रण प्रकारनी पर्युपासना करे छे. त्यार पछी ते घणा मनुष्यना शब्दने यावत् जनाना कोलाइलने सांभळीने अने अवधारीने क्षत्रियकुमार जमालिना मनमां आवा प्रकारनो आ विचार यावत् उत्पन्न थयो-'श्ं आजे क्षत्रियकुंडग्राम नगरमां इन्द्रनो उत्सव छे, स्कन्दनो उत्सव छे, वासुदेवनो उत्सव छे, नगनो उत्सय छे, यक्षनो उत्सव छे. भूतनो उत्सव छे, कूवानो उत्सव छे, तळावनो उत्सव छे, नदीनो उत्सव छे, द्रहनो उत्सव छे, पर्वतनो उत्सव छे द्रश्वनो उत्सव छे चैत्यनो उत्सव छे या स्तूपनो उत्सव छे, तळावनो उत्सव छे, नदीनो उत्सव छे, द्रहनो उत्सव छे, पर्वतनो उत्सव छे द्रश्वनो उत्सव छे चैत्यनो उत्सव छे या स्तूपनो उत्सव छे, के जेथी प बधा ज्यकुलना, मोगकुलना, राजकुलना, इक्ष्वाकुकुलना, झातकुलना अने कुरू- वंशना क्षत्रियो, क्षत्रियपुत्रो, मटो, अने भटपुत्रो, इत्यादिऔपपातिकस्वत्रने अनुसारे कहेतुं, यावत् सार्थवाह प्रमुख स्नान करी, बलि- कर्म (पूजा) करी इत्यादि औपपातिकसत्रमां वर्णन कर्या प्रमाणे यावत् बहार निकळे छे ? एम विचार करे छे. विचार करीने जमालि कंचुकिने बोलावे छे, बोलावीने तेने आ प्रमाणे कह्यु -'हे देवानुप्रिय ! श्चं आजे क्षत्रियकुंडग्राम नामना नगरमां इन्द्रनो उत्सव छे के यावत् आ बधा नगर बहार निकळे छे ? ज्यारे ते जमालि नामना क्षत्रियकुमारे ते कंचुकि पुरुपने ए प्रमाणे कह्यु अने संतुष्ठ थयो, अने ते अमण भगवन् महादीरना आगमननो निश्रय करीने हाथ जोर्डा जमालि नामे क्षत्रियकुमारे ने याये वाने वाय करी ने वज्य	A So the So the So the	९ অतके उद्देश्न ः६ ॥८३२॥
S	अने संतुष्ट थयो, अने ते श्रमण भगवन् महावीरना आगमननो निश्रय करीने हाथ जोडी जमालि नामे क्षत्रियक्रुमारने जय अने विजय	Ś	

ध्या ख्या- प्रक्रसिः ॥८३३॥	वढे वधावे छे. वधावीने तेणे आ प्रमाणे कह्यं-'हे देवानुप्रिय ! आजे क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगरमां इन्द्रनो उत्सव छे-इत्यादि तेथी यावत् बधा नीकळे छे, एम नथी, पण हे देवानुप्रिय ! ए प्रमाणे अमण भगवान् महावीर यावत् सर्वज्ञ, सर्वदर्झी बाह्यणकुंडग्राम नामे नगरनी बहार बहुग्राल नामे चैत्यमां यथायोग्य अवग्रद ग्रहण करीने यावत् विहरे छे. तेथी ए उग्रकुलना, भोगकुलना क्षत्रियो-इत्यदि यावत् केटलाक बांदवा माटे नीकळे छे. त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमार कंचुकि पुरुष पासेथी ए वातने सांभळी, हृदयमां अवधारी हर्षित अने अने संतुष्ट थई, कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे, बोलावीने तेणे आ प्रमाणे कह्यु कि-'हे देवानुप्रियो ! तमे शीव्र चारपंटावाळा अश्वरथने जोडीने हाजर करो अने हाजर करीने आ मारी आज्ञा पाछी आपो'. त्यारवाद जमालि श्वत्रियकुमारे ए प्रमाणे कह्युं एट छे ते कौटुंबिक पुरुषो ते प्रमाणे अमल करी यावत् तेनी आज्ञा पाछी आपो'. त्यारवाद जमालि श्वत्रियकुमारे ए प्रमाणे कह्यु जहा उवबाहए परिसावन्नओ तहा भाणियब्वं जाव चंदणाकिन्नगायसरीरे सब्वालंकारविश्वसिए मज्जणघराओ पहि- निक्त्समइ मज्जणघराओ पडिनिक्खमित्ता जेणेब वाहिरिया उचटाणसाला जेणेव चाउग्वंटे आसरहे तेणेव उवा- गच्छह तेणेव उवागच्छित्ता चाउग्वंटं आसरहं दुरूहेइ चाउ० २ त्ता सकोरंटमछड्रदामेणं छत्रेणं घरिज्वमाणेणं महया अडचडकरपहकरवंदपरिक्त्रियो खत्तियकुडागामं नगरं मज्झांमज्झेणं निग्गच्छह निग्गच्छित्ता जेणेव माहणक्कुंडग्गामे नगरे जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छह तेणेव उवाच्छित्ता तुरए निगिण्हेह तुरए २ त्ता रहं ठवेइ रहं ठवेत्ता रहाओ पचोरहाति रहा० २ त्ता प्रफ्तंबोलाडव्हमादीयं वाहणाओ य विमज्जेह २ त्ता एग-	AN	९ त्रसके उद्देग्न ः६ ॥८३ ३॥
	माहणकुंडग्गामे नगरे जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवाच्छित्ता तुरए निगिण्हेइ तुरए २ त्ता रहं ठवेइ रहं ठवेत्ता रहाओ पचोरुहति रहा॰ २ त्ता पुप्फतंबोलाउहमादीयं वाहणाओ य विसज्जेइ २ त्ता एग-	200 A	

मबतिः ॥८३४॥	साडियं उत्तरासंगं करेइ उत्तरासंगं करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइब्भूए अंजलिमउलियहत्थे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ तेणेव उवागच्छित्ता समर्ण भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाह्रिणपयाहिणं करेइ २ तिक्खुत्तो २ जाव तिबिहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ। तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स खत्ति- यकुमारस्स तीसे य महतिमहालियाए इसिजावधम्मकहा जाव परिसा पडिगया, त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमार ज्यां सानग्रुह छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने स्नान करी, तेणे बलिकर्म (पूजा) कर्युं-इत्यादि यावत् जेम औपपातिकसूत्रमां पर्षदत्तुं वर्णन कर्युं छे तेम अहिं जाणवुं, यावत् चंदनथी जेना शरीरे विलेफ्न करायेछं छे एवो ते जमालि सर्व अलंकारथी विभूषित थई स्नानग्रुद्दथी बहार निकळे छे. बहार निकळीने ज्यां बहार उपस्थानशाला छे, अने ज्यां चारघंटावाळो अश्वरथ उभो छे त्यां आवे छे. त्यां आविने ते चारघंटावाळा अश्वरथ उपर चढे छे. चढीने माथा उपर घारण कराता कोरंटपुष्पनी माळावाळा छत्रसहित, महान् योद्धाओना समूहथी विंटायेलो ते क्षत्रियकुंडय्राम नामे नगरना मध्यभागथी बहार निकळे छे. निकळीने ज्यां बाह्यणकुंडय्राम नगर आवेछं छे, अने ज्यां बहुशाल नामे चैत्य छे त्यां आवे छे. त्यां आवे चे त्यां आवीने घोडाओने रोके छे, अने रथने उभो राखे छे. रथने उभो राखी, रथथी नीचे उतरे छे. उतरीने पुष्त, तांबुल, आयुधादि तथा उपानहनो (पगरखानो) त्याग करे छे त्याग करीने एक सळंगवस्तुचुं उत्तरासंग करे छे. करीने कोगळो करी चोक्खा अने परम पवित्र थईने अंजलिवडे वे हाथ जोडीने ज्यां श्रमण भगवन महावीर छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी यावत त्रिविध पर्युपास-	Concentration of the section	९ शतके उदेश ः६ ॥८३४४
ALCON ALCON	ुप्त, ताबुल, आयुवाद तथा उमा राखा, रथया माथ उतर छ. उतराम पुण्प, ताबुल, आयुवादि तथा उपानहमा (पगरखामा) स्थान करण् त्याग करीने एक सळंगवस्ननुं उत्तरासंग करे छे. करीने कोगळो करी चोक्खा अने परम पवित्र थईने अंजलिवडे बे हाथ जोडीने ज्यां श्रमण भगवन् महावीर छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी यावत् त्रिविध पर्युपास- नाथी उपासे छे. त्यारपछी श्रमण भगवंत महावीर जमालि नामे क्षत्रियक्कमारने अने ते अत्यन्त मोटी ऋषि पर्षदाने यावत् धर्मोण्देश	\$7:F87	

म्याख्या- प्रकारिः ॥८३५॥	करे छे. यावत् ते पर्षद् (धर्मोपदेश अवण करीने) पाछी गई. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे समणस्स अगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोचा निसम्म हद्द जाव उद्दाए उद्वेह उद्दाए उद्देत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता एवं वयासी-सदहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं पत्तयामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं अब्मुद्देमि णं भंते ! निग्गंथं पाव- यणं एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! आ बितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! जाव से जहेयं तुज्झे वदह, जं नवरं देवा- यणं एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! आ बितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! जाव से जहेयं तुज्झे वदह, जं नवरं देवा- यामि, । अहासुहं देवणुप्पिया ! मा पडिबन्धं ॥ ३८३ ॥ त्यारबाद ते जमालि नामे क्षत्रियकुमार अमण भगवान् महावीरनी पासेथी धर्मने सांभळी, इदयमां अवधारीने हर्षित अने संतु- इद्दरयवाळो थयो, अने यावत् उभो थइने अमण भगवान् महावीरनी वासे परदक्षिणा करी, बंदन-नमस्कार करी तेणे आ प्रमाणे कर्बु- हे भगवन् ! हुं निर्भ्रथना प्रवचननी श्रद्धा करुं छु, हे भगवन् ! हुं निर्भ्रथना प्रवचन उपर विश्वास करुं छुं, हे भगवन् ! हुं निर्भ्रथना प्रवचन उपर रुचि करुं छुं, अने हे भगवन् ! निर्भ्रथना प्रवचनानु तैयार थयो छुं. वळी हे भगवन् ! जे तमे	11634H
	निप्रंथना प्रवचन उपर रुचि कहं छुं, अने हे भगवन् ! निप्रंथना प्रवचनानुसारे वर्तवाने तैयार थयो छुं. वळी हे भगवन् ! जे तमे उपदेशो छो ते निर्ग्रन्थ प्रवचन एम ज छे, हे भगवन् ! तेमज छे. हे भगवन् ! सत्य छे, हे भगवन् ! असंदिग्ध (निश्चित) छे, परन्तु हे देवानुप्रिय ! मारा माता पितानी रजा मागीने हुं आप देवानुप्रियनी पासे ग्रुंड-दीक्षित थइ गृहवासनो त्याग करी अनगारिकप- णाने स्वीकारवा इच्छुं छुं.' हे देवानुप्रिय ! जेम छुख उपजे तेम करो, प्रतिबंध न करो.' ॥ ३८३ ॥ (अनुसंधान भाग चोथामां)	

